www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

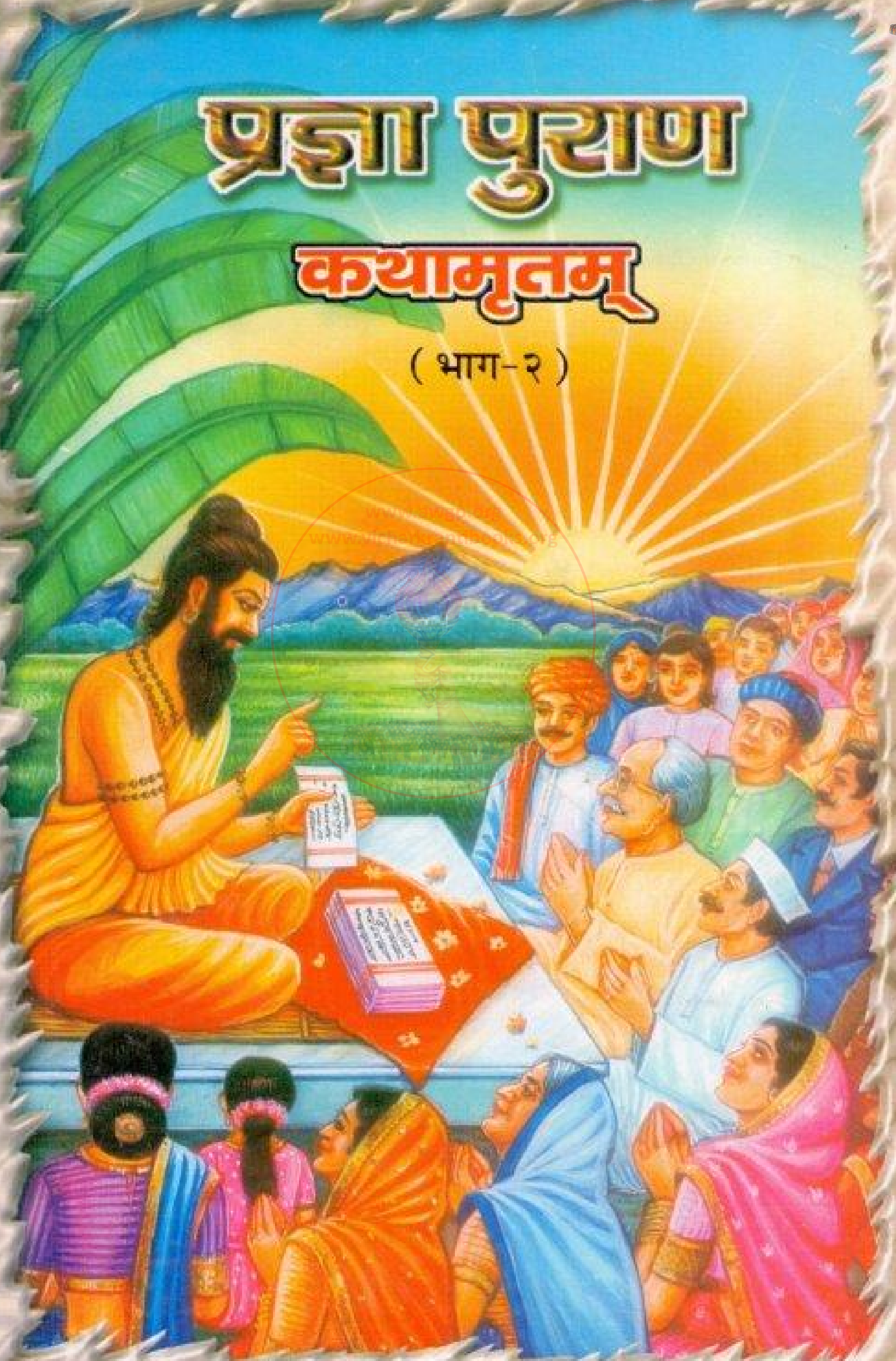

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

VICHARKRANTI PUSTAKALAY

SURAT, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

# प्रज्ञा पुराण कथामृतम्

## (भाग-दो)

*

लेखिका :
डॉ. सुशीला गुप्ता
डी. लिट्.

www.vicharkrantibooks.org

*

प्रकाशक :
युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट
गायत्री तपोभूमि, मथुरा
फोन : (०५६५) २५३०१२८, २५३०३९९
मो. ०९९२७०८६२८७, ०९९२७०८६२८९
फैक्स नं०- २५३०२००

पुनरावृत्ति सन् २०१४

मूल्य-१४०.०० रुपये

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

# विषयानुक्रम

# प्रज्ञा पुराण कथामृतम् (भाग-दो)


| क्र. | दिवस | प्रकरण | पृष्ठ |
|---|---|---|---|
| १. | प्रथम दिवस | देवसंस्कृति जिज्ञासा प्रकरण | १-४४ |
| २. | द्वितीय दिवस | वर्णाश्रम धर्म प्रकरण | ४५-८१ |
| ३. | तृतीय दिवस | वृद्धजन-माहात्म्य प्रकरण | ८२-११६ |
| ४. | चतुर्थ दिवस | संस्कार-पर्व माहात्म्य प्रकरण | ११७-१६४ |
| ५. | पंचम दिवस | मरणोत्तर जीवन प्रकरण | १६५-२०६ |
| ६. | षष्ठम दिवस | तीर्थ-देवालय प्रकरण | २०७-२४३ |
| ७. | सप्तम दिवस | आस्था संकट एवं प्रज्ञावतार प्रकरण | २४४-२८० |


*

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

### श्री गुरवे नमः

# आभार-समर्पण

मेरे पूर्वजन्मों के संचित पुण्यों के फलस्वरूप पूज्य गुरुदेव के दर्शन हुए और माँ गायत्री की असीम कृपा बरस पड़ी। उनकी प्रेरणा से प्रज्ञा पुराण पर डी. लिट्. किया, जिसमें अनेक बाधाएँ आने पर भी सफलता मिली। इसके पश्चात 'प्रज्ञावतरण' नामक पुस्तक वंदनीया माताजी ने मुझ से लिखवाई। शांतिकुंज में प्रज्ञा पुराण की कथा के बीच में जो संगीत दिया जाता था, वह मेरे मन को इतना भाया कि मेरे मन में संपूर्ण ग्रंथ को ही राधेश्यामी तर्ज पर लिखने की इच्छा जाग उठी। संगीत की प्रभावोत्पादकता सर्वविदित है, इसके द्वारा मनोरंजन के साथ-साथ उपदेश देकर विचार-परिवर्तन किया जा सकता है।

इस कार्य में मुझे सबसे अधिक आशीर्वाद मिला गायत्री तपोभूमि के व्यवस्थापक पितृतुल्य पंडित लीलापत शर्मा जी का, जिन्होंने मुझे इस कथा को सुनाने का आदेश दिया और उनका आशीर्वाद पाकर जब मैं कथावाचक बनकर मंच पर बैठी तो उन्होंने मेरा तिलक कर स्वयं नीचे बैठकर कथा को सुना। मेरे लिए यह परम सौभाग्य का दिन था, जब पूज्य पंडित जी ने मुझे आशीर्वाद दिया कि तुम्हारी यह कथा देश-विदेश में गूँजेगी। उनके आशीर्वाद का ही प्रतिफल है कि मुझे कनाडा (टोरन्टो) जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ और मैंने इस कथा को विदेश में सुनाया।

इस ग्रंथ की रचना में परम आदरणीय सर्वश्री प्रणव पंड्या जी, वीरेश्वर उपाध्यायजी, श्यामबिहारी दुबे जी, डॉ. विष्णुशरण इंदुजी, शचींद्र भटनागर जी, डॉ. आर. पी. कर्मयोगी जी एवं द्वारिका प्रसाद चैतन्य जी का प्रोत्साहन, मार्गदर्शन एवं सहयोग



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

भुलाया नहीं जा सकता। इनका आभार प्रकट करने की क्षमता मुझ में नहीं है। मैं माँ गायत्री, परम पूज्य गुरुदेव एवं वंदनीया माता जी से इन सबके दीर्घ स्वस्थ जीवन की प्रार्थना करती हूँ। मैं जाने-अनजाने गीतकारों के प्रति भी आभार प्रकट करती हूँ, जिनके गीतों को मैंने इस कथामाला में पिरोया है।

अंत में, मैं यह पुस्तक समर्पित करती हूँ अपने पतिदेव को जिन्होंने गुरु की भाँति सदैव मेरा मार्गदर्शन किया है। आज वे स्थूल रूप में मेरे समक्ष नहीं हैं, किंतु सूक्ष्म रूप में उनका मार्गदर्शन ही मेरे जीवन का आधार है।

यह पुस्तक सर्वसाधारण भावुक जनता को प्रज्ञा पुराण का संदेश देने के लिए लिखी गई है। अतः 'सीय राममय सब जग जानी। करहु प्रनाम जोरि जुग पानी' के अनुसार सबको प्रणाम करते हुए 'प्रज्ञा पुराण कथामृतम्' (भाग दो) आपके समक्ष प्रस्तुत कर रही हूँ और समस्त सुधी पाठकों से अनुरोध करती हूँ कि इसमें जो कुछ अच्छा लगे उसे गुरुदेव का प्रसाद तथा जो गलत लगे उसे मेरा प्रमाद समझकर मेरी त्रुटियों से मुझे अवगत कराने की कृपा करें।

**तमसो मा ज्योतिर्गमय। असतो मा सद्गमय। मृत्योर्माऽमृतंगमय।**

**—डॉ. सुशीला गुप्ता**



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

# विनम्र-निवेदन

भारतीय संस्कृति के उपासक आचार्य पं० श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा रचित प्रज्ञा पुराण को उनके समस्त साहित्य सागर का सार कहा जा सकता है। कथा साहित्य की लोकप्रियता को देखते हुए आचार्यश्री ने प्रज्ञा पुराण की रचना की, जिसमें आधुनिक परिस्थितियों तथा आवश्यकताओं के अनुरूप कथाओं के माध्यम से मानव के अचिंत्य चिंतन को बदलने के उद्देश्य से दैनंदिन समस्याओं का समाधान प्रस्तुत किया गया है। प्रज्ञा पुराण ग्रंथ रामायण तथा गीता के समान ही प्रेरणाप्रद है।

आधुनिक युग की इस प्रेरक कृति प्रज्ञा पुराण को जन-जन तक पहुँचाने के उद्देश्य को लेकर इस पुस्तक की रचना की गई है। प्रज्ञा पुराण का मूल ग्रंथ संस्कृत में है, उन श्लोकों की हिंदी में व्याख्या कर कथाओं के द्वारा युग चेतना जगाने का प्रयत्न किया गया है। संगीत की लोकप्रियता सर्वविदित है, उसमें हृदय-तंत्री को झंकृत करने की अपूर्व क्षमता है, अत: मनोरंजन के साथ-साथ जन-कल्याण की भावना को ध्यान में रखकर **प्रज्ञा पुराण कथामृतम्** (भाग दो) पुस्तक में श्लोकों की व्याख्या को राधेश्यामी तर्ज पर गेय पदों में प्रस्तुत किया गया है, जिससे प्रज्ञा पुराण का संदेश घर-घर, ग्राम-ग्राम, नगर-नगर तक पहुँच सके। लोकरंजन के साथ लोकमंगल का यह सर्वसुलभ मार्ग है। बहन सुशीला गुप्ता का यह अभूतपूर्व एवं सराहनीय प्रयास है। हम उनके यशस्वी जीवन की कामना गायत्री माता से करते हैं। गुरुदेव ने एक स्थान पर लिखा है कि लेखनी तो सदा क्रियाशील रहेगी, चिंतन हमारा ही सक्रिय रहेगा, हाथ भले ही किसी के भी हों।



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

**प्रज्ञा पुराण कथामृतम्** (भाग दो) पुस्तक में सात दिवस की कथाओं के माध्यम से सात प्रकरणों को प्रज्ञा पुराण से लिया गया है। स्वयं पढ़ने के अतिरिक्त सामूहिक सत्संग में इसे हारमोनियम, तबले अथवा ढपली के साथ सुनाया जा सकता है। पुराणों की कथाएँ सभी श्रद्धालु बड़े प्रेम से सुनते हैं। प्रज्ञापुराण कथा प्रज्ञापुत्रों द्वारा देश-विदेशों में सुनाई जा रही है। हर व्यक्ति इस कथा को सुना सके, इसी लक्ष्य को लेकर **प्रज्ञा पुराण कथामृतम्** (भाग दो) पुस्तक की रचना की गई है। आस्था संकट की इस वेला में सांस्कृतिक पुनर्जागरण हेतु क्या व कैसे किया जाना चाहिए, पुस्तक में स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है।

कथा सुनाने के लिए युग निर्माण योजना, मथुरा से प्रकाशित 'प्रज्ञावतरण' नामक पुस्तक की कथाएँ भी सहायक सिद्ध हो सकती हैं। कथावाचक को प्रज्ञा पुराण के चारों खंडों का अध्ययन अवश्य करना चाहिए, क्योंकि उसमें कथाओं का भंडार है, उसकी जानकारी अति आवश्यक है। परिजनों को चाहिए कि अपने क्षेत्र में कथा कहने में सक्षम तथा संगीत की संगति देने वाले परिजनों की टोली बनाकर कथा का अभ्यास करें तथा क्षेत्र में स्थान-स्थान पर कथाओं के आयोजन संपन्न कराएँ।

**व्यवस्थापक**
युग निर्माण योजना,
मथुरा



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

# प्रज्ञा पुराण कथा की पूर्व व्यवस्था एवं आयोजन

## भूमिपूजन एवं शोभा यात्रा

प्रज्ञा पुराण कथा के आयोजन का प्रचार-प्रसार बैनरों एवं प्रचार-पत्रकों द्वारा व्यापक रूप से किया जाए।

प्रथम दिन भूमिपूजन, दीपयज्ञ अथवा अग्निहोत्र द्वारा 'कर्मकांड भास्कर' पुस्तक की सहायता से कराया जाए। शक्तिपीठ, प्रज्ञापीठ, मंदिर आदि पवित्र स्थान पूर्व से ही संस्कारित होते हैं, अत: वहाँ भूमिपूजन आवश्यक नहीं है। भूमिपूजन प्रात: कराने के उपरांत उसी दिन शोभा यात्रा निकाली जा सकती है अथवा अगले दिन भी निकाली जा सकती है। शोभा यात्रा में पाँच महिलाएँ सुसज्जित कलश एवं अन्य भाई-बहन लाल-पीले कपड़े में लिपटे प्रज्ञा पुराण ग्रंथ सिर पर रखकर चलें। यथासंभव सभी पीत वस्त्र धारण करें। लाउडस्पीकर से नारे, गीत आदि गाते चलें। सबसे आगे झंडा रहे। बैनर तथा तख्तियों पर मिशन के नारे अथवा सद्वाक्य लिखे हुए हों। अंत में गायत्री माता, गुरुदेव एवं माताजी के चित्रों की सुसज्जित झाँकी रहे। सबसे आगे बैंड बाजे की व्यवस्था भी की जा सकती है।

## मंच सज्जा

कथा का मंच यथासंभव आकर्षक सजाया जाए। देवमंच पर गायत्री माता, गुरुदेव, माताजी तथा मशाल के चित्र लगाए जाएँ। दीपक एवं कलश देवमंच पर रखे जाएँ। पूजा की थाली में रोली, चावल, नैवेद्य, पुष्प, मालाएँ आदि रखे जाएँ। व्यास का आसन कुछ ऊँचा एवं सुसज्जित रहे। व्यास के सम्मुख चौकी पर प्रज्ञा पुराण



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

लाल कपड़े में लिपटा हुआ स्थापित रहे। मंच पर संगीत टोली के बैठने की व्यवस्था भी रहे। माइक एवं प्रकाश की समुचित व्यवस्था रहे।

## प्रतिदिन कार्यक्रम इस तरह प्रारंभ करें

(१) उद्घोषक द्वारा माइक पर सभी सम्मानित श्रोताओं का आभार, सम्मान प्रकट करते हुए शांति एवं व्यवस्था बनाने का अनुरोध किया जाए। तत्पश्चात संगीत टोली द्वारा गायत्री मंत्र प्रतिदिन के लिए निर्धारित गुरु वंदना एवं प्रज्ञागीत गाए जाएँ।

(२) उद्घोषक द्वारा कथावाचक के आने की सूचना देना तथा किसी वरिष्ठ परिजन द्वारा कथावाचक को सम्मान सहित लाकर पुष्प वर्षा करते हुए मंच पर बिठाना। उद्घोषक द्वारा कथावाचक का सूक्ष्म परिचय देना।

(३) मुख्य अतिथि (पति-पत्नी) द्वारा प्रज्ञा पुराण का पूजन तथा कथावाचक का तिलक एवं माल्यार्पण किया जाए। अन्य सम्मानित अतिथियों द्वारा संगीत टोली का तिलक एवं माल्यार्पण किया जाए। प्रज्ञा पुराण पूजन में पवित्रीकरण, स्वस्तिवाचन, गुरु वंदना, ईश वंदना, गणपति वंदना, सरस्वती वंदना, गौरी वंदना, व्यास वंदना, प्रज्ञा पुराण पूजन एवं साष्टांग नमस्कार करें, जिनके मंत्र नीचे दिए गए हैं।

(४) कथावाचक द्वारा मुख्य अतिथि तथा सम्मानित अतिथियों का तिलक, माल्यार्पण कर सम्मान अथवा आशीर्वाद। दुपट्टा तथा प्रज्ञा पुराण भी भेंट किए जा सकते हैं।

(५) संगीत टोली द्वारा कीर्तन के उपरांत कथा प्रारंभ की जाए। हर कथा से पूर्व कथावाचक द्वारा भाव भरी वंदना अग्रलिखित मंत्रों द्वारा अवश्य की जाए।

| | |
|---|---|
| वेदमाता गायत्री की | जय |
| परमपूज्य गुरुदेव की | जय |
| वंदनीया माताजी की | जय |
| प्रज्ञा पुराण की | जय |
| भारतीय संस्कृति की | जय |



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

## पवित्रीकरणम्

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा, सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं, स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥
ॐ पुनातु पुण्डरीकाक्षः, पुनातु पुण्डरीकाक्षः, पुनातु।

## गुरु वंदना

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः, गुरुरेव महेश्वरः।
गुरुरेव परब्रह्म, तस्मै श्री गुरवे नमः॥
अखण्डमण्डलाकारं, व्याप्तं येन चराचरम्।
तत्पदं दर्शितं येन, तस्मै श्री गुरवे नमः॥
अज्ञानतिमिरान्धस्य, ज्ञानाञ्जनशलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन, तस्मै श्री गुरवे नमः॥

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

## ईश वंदना

त्वमादिदेवः पुरुषः पुराणः त्वमस्य विश्वस्य परं निधानम्।
वेत्तासि वेद्यं च परं च धाम, त्वया ततं विश्वमनन्तरूपम्॥
नमस्ते सते ते जगत्कारणाय नमस्ते चिते सर्वलोकाश्रयाय।
नमोऽद्वैततत्त्वाय मुक्तिप्रदाय नमो ब्रह्मणे व्यापिने शाश्वताय॥

## गणेश स्तुति

अभीप्सितार्थसिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः।
सर्वविघ्नहरस्तस्मै, गणाधिपतये नमः॥

## सरस्वती वंदना

सरस्वत्यै नमो नित्यं, भद्रकाल्यै नमो नमः।
वेद वेदान्तवेदाङ्ग, विद्यास्थानेभ्य एव च॥

## गायत्री वंदना

ॐ आयातु वरदे देवि ! त्र्यक्षरे ब्रह्मवादिनि।
गायत्रिच्छन्दसां मातः ब्रह्मयोने नमोऽस्तु ते॥



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

## गौरी वंदना

सर्वमङ्गलमांगल्ये, शिवे सर्वार्थसाधिके !
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि, नारायणि ! नमोऽस्तु ते॥

## व्यास वंदना

व्यासाय विष्णुरूपाय, व्यासरूपाय विष्णवे।
नमो वै ब्रह्मनिधये, वासिष्ठाय नमो नमः॥

## प्रज्ञा पुराण पूजन

ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य, बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं, यज्ञ
ꣳ समिमं दधातु। विश्वेदेवासऽइह मादयन्तामो३म्प्रतिष्ठ॥

## साष्टांग नमस्कार

ॐ नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्रमूर्तये, सहस्रपादाक्षिशिरोरुबाहवे।
सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते, सहस्रकोटीयुगधारिणे नमः॥

## मुख्य यजमान द्वारा कथावाचक का कलावा व तिलक किया जाए

ॐ स्वस्ति न ऽ इन्द्रो वृद्ध श्रवाः, स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिः, स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥

### संकल्प : ( केवल प्रथम दिन )

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य, अद्य श्रीब्रह्मणो द्वितीये परार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे, वैवस्वतमन्वन्तरे, भूर्लोके, जम्बूद्वीपे, भारतवर्षे, भरतखण्डे, आर्यावर्त्तैकदेशान्तर्गते..........क्षेत्रे, मासानां मासोत्तमेमासे.......... मासे......... पक्षे.....तिथौ........वासरे......गोत्रोत्पन्नः........नामाऽहं सत्प्रवृत्ति-संवर्द्धनाय, दुष्प्रवृत्ति-उन्मूलनाय, लोककल्याणाय, आत्मकल्याणाय, वातावरण-परिष्काराय, उज्ज्वलभविष्यकामनापूर्तये च प्रबलपुरुषार्थं करिष्ये, अस्मै प्रयोजनाय च कलशादि आवाहितदेवता-प्रज्ञा पुराण पूजनपूर्वकम् श्रवण कर्मसम्पादनार्थं संकल्पम् अहं करिष्ये।



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रतिदिन प्रज्ञा पुराण कथा के अंत में यह आरती गाई जानी चाहिए। आवश्यकतानुसार थालियों में आरती सजाकर विशिष्ट व्यक्तियों से आरती कराई जाए। आरती के पश्चात प्रसाद वितरण तथा छठवें दिन सायंकाल सामूहिक दीपयज्ञ किया जाए।

## आरती श्री प्रज्ञा पुराण की

आरती श्री प्रज्ञा पुराण की, युगद्रष्टा के दिव्य ज्ञान की।
दीन दयाल दुखी जन जन है, त्रय तापों से तापित मन है।
दूषित हुआ मनुज चिंतन है, विकृत होता जन जीवन है।
युक्ति बताएँ आप त्राण की, आरती श्री प्रज्ञा पुराण की।
जन मंगल की चिंता जिनको, मेरा द्वार खुला है उनको।
साधुवाद हे नारद तुमको, जन सेवक से ममता तुमको।
मिली कृपा करुणा निधान की, आरती श्री प्रज्ञा पुराण की।
नारद समाधिस्थ हो जाओ, युग का समाधान फिर पाओ।
लो प्रज्ञा पुराण ले जाओ, प्रज्ञापुत्रों को समझाओ।
यह कृति है युग समाधान की, आरती श्री प्रज्ञा पुराण की।
यह प्रभु का प्रज्ञावतार है, युग पीड़ा का शमनसार है।
दुश्चिंतन का यह उतार है, विधि भव रोगों के निदान की।
पीड़ा युग के विकल प्राण की, आरती श्री प्रज्ञा पुराण की।
आरती श्री प्रज्ञा पुराण की, युगद्रष्टा के दिव्य ज्ञान की।
आरती श्री प्रज्ञा पुराण की।

अंतिम दिन सामूहिक यज्ञ किया जाए तथा पूर्णाहुति के पश्चात यदि संभव हो सके तो प्रसाद रूप में अमृताशन (खिचड़ी, खीर) इत्यादि की व्यवस्था की जा सकती है।



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

# प्रज्ञा पुराण कथा की सरिता घर-घर बहे

लोकशिक्षण को ग्राह्य बनाने और जनसामान्य को सीखने-सिखाने की लगन बहुत समय से रही है। गुरुकुल आरण्यकों की व्यवस्था के पीछे यही भाव रहा है। समूचे समाज तक यह शिक्षण की प्रक्रिया पहुँच सके, इसके लिए मनीषियों ने कथा-कीर्तन का विधान बनाया। उद्देश्य यही रहा कि यदि समाज विद्यालय तक नहीं पहुँच सकता तो विद्यालय को समाज तक पहुँचना चाहिए। समूचा समाज शिक्षार्थी बने और सारी धरती पाठशाला। इस स्वरूप को विकसित करने के लिए तरह-तरह के धर्मानुष्ठानों का विधान किया गया।

संसार का बहुसंख्यक समुदाय भावों की भाषा समझता और कर्म में जीता है। शोध का संसार विचारों का है। प्राचीनकाल के ऋषि-मुनि गुफाओं और वनों में एकांत में बैठकर मानव की अंत: प्रवृत्तियों के रहस्यों और उसकी बाहरी प्रवृत्ति के साथ सामंजस्य के बारे में खोज किया करते थे। इन मूल्यवान तथ्यों को व्यवहार में उतारने की विधि का प्रश्न बना ही रहता था। जनजीवन तत्त्वचिंतन का नहीं, कला का रसिक है और वह कर्म की ओर आकर्षित होता है। जन-मन की इसी अभिरुचि को ध्यान में रखकर वेदों को काव्य रूप में और धर्मानुष्ठानों को कर्म के रूप में निरूपित किया गया।

उपनिषदों और दर्शनों में शोध के निष्कर्ष सूत्र की भाषा में दिए गए। सर्वसाधारण इन्हें सोचे, समझे और तदनुरूप जीवन जी सके, इसी विचारधारा को लेकर पुराणों की धारा बह निकली। अठारह पुराण और इक्कीस उपपुराणों के साथ, रामायण और महाभारत के साथ समूचा कथा साहित्य वेदों और दर्शनों की तुलना में कई गुना है। **'सूचनात सूत्रम्'** सूत्र संकेत भर करते हैं। जिस ओर उनका संकेत है, उस तरफ



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सामूहिक जनजीवन चल पड़ने के लिए मचल उठे। यह तभी संभव है, जब सूत्रों का भाव भली प्रकार हृदय की गहराई में बैठ जाए।

हृदय के कपाट खुले नहीं रहते, उन्हें खोलना पड़ता है और यह खोलने की क्रिया अपने आप में कला है। कला का अर्थ है—ग्रहणशीलता का जागरण। कला संपर्क में आने वाले मनों को बरबस अपनी ओर खींच-घसीट ले जाती है। कला अपने आप में पूर्ण नहीं। किसी-न-किसी तरह दर्शन का अवलंबन अनिवार्य होता है। 'कला के लिए कला' का आधुनिक विचार अपरिपक्व और उथली सोच का परिणाम है। जैसे पाक कला के सिद्धहस्त द्वारा बने व्यंजन देखकर किसी के मुँह में पानी आ जाता है और उसकी प्रशंसा होने लगती है, परंतु यदि व्यंजनों में जहर मिला हो तो परिणाम रोग-शोक-मृत्यु ही होंगे। अतः महत्त्वपूर्ण यह है कि पाक कला विशेषज्ञ के विचार और भाव क्या हैं ?

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

कलाओं में साहित्य सर्वश्रेष्ठ है। इस पर समाज का जीवन और उसका मानसिक स्वास्थ्य टिका है। पुराणकार यह जानते थे कि दर्शन विचारों की अनुभूति है और कला विचारों की अभिव्यक्ति। आजकल जनता की विचारधारा विकृत हो गई है, इसलिए कला भी विकृत हो गई है। यदि कलाकारों में सद्विचारों का अभाव रहा, तो उनकी कला समाज में प्राण और प्रेरणा नहीं भर सकती। ऐसे कलाकार प्रशंसा, प्रोत्साहन, पुरस्कार और उपाधियाँ पाकर भी पीड़ा और पतन देने वाले ही सिद्ध होते हैं। कथाओं के विस्तृत तंत्र का प्रयोजन यही है कि मानव की आस्थाओं और आचरण दोनों को उत्कृष्ट कैसे बनाया जाए ? रीति-रिवाजों, नियम-मर्यादाओं और आचार-व्यवहार का शिक्षण ही कथा साहित्य का उद्देश्य रहा है। राम कथा ने जनजीवन में मर्यादाओं का रोपण किया तो श्रीमद्भागवत कथा ने संवेदना अंकुरित की। मृत्यु का रहस्य बताने और शोक-निवारण में हरिवंश पुराण की कथाएँ जीवन रहस्य का बोध कराती हैं। महाभारत तो कथा शैली में ज्ञान का विश्वकोश ही है।



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अन्य धर्मों में भी कथाओं का प्रचलन रहा है। बाइबिल के उपदेश कथा-भंडार ही हैं। जैन कथाओं और बौद्ध जातक कथाओं की शैली भी यही है। उपदेश के समय श्रोता के मन में प्रश्न उठता है कि इसे किसी अन्य ने भी पालन किया है या नहीं, अन्यथा हम ही क्यों भोग-विलास को छोड़कर आदर्श के मार्ग पर चलें? कथा का सरिता-प्रवाह इन प्रश्नों का समाधान निकालता चलता है।

भारतीय संस्कृति में कथा को एक धर्मानुष्ठान का स्वरूप दिया गया है। श्रोता और वक्ता दोनों को कुछ खास कर्मकांडों को पूरा करके अपनी मनोभूमि का निर्माण करना होता है। नैमिषारण्य कभी इस तरह के धर्मानुष्ठानों का केंद्र होता था, जहाँ से सूत-शौनक परंपराएँ गाँव-गाँव पहुँचती थीं। आज भी उनके चिह्न नौ दिवसीय रामकथा और सात दिवसीय भागवत कथा के रूप में देखने को मिलते हैं। कथावाचक साधक हो तो उसकी साधना से दृष्टांतों की मार्मिकता श्रोताओं के हृदय में संवेदनाओं का अंकुरण करती है। इन कथाओं को सुनकर अपराधियों को भी बदलते देखा गया है। तुलसीदास से रामकथा सुनकर रामचरितमानस की पोथी चुराने आए दो चोरों का हृदय परिवर्तन विख्यात है। रामानुज की भागवत कथा ने दुर्दांत नामक भयंकर दस्यु को संत बना दिया। शुकदेव जी से कथा सुनकर राजा परीक्षित को मोक्ष प्राप्त हो गया। परीक्षित जैसे श्रोता हों और शुकदेव जी जैसे निस्पृह साधक वक्ता हों तो मोक्ष आज भी संभव है।

शहरी वातावरण में तड़क-भड़क, मशीनी जिंदगी और टी. वी., कम्प्यूटर का प्रचलन, कथा आयोजनों के लिए उपयुक्त वातावरण का निर्माण नहीं कर पाता, लेकिन भारत के ग्रामीण अंचल के लिए कथा समारोह आज भी वरदान हैं। कथा समारोहों के साथ कीर्तन का गहरा संबंध है। कीर्तन में नृत्य और संगीत का समावेश है। भजन में संगीत और गीत का गुंफन है। कथा में ये दोनों जुड़े रहने चाहिए। भजन में टोली के गायक जनसमूह को भी यदि शामिल करें, कीर्तन तो स्वतः सामूहिक होने लगता है। भजन के बोल सभी दोहराएँ तो अच्छा रहता है। भजन-कीर्तन की प्रक्रिया मनुष्य में भावोल्लास विकसित करती है। मशीनी जिंदगी जी रहा इनसान न तो



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

खुलकर हँस सकता है और न रो सकता है। बस घुटन-सिसकन-तड़पन ही उसके पल्ले पड़ती है। कीर्तन मनोविकारों के विरेचन और रूपांतरण की प्रक्रिया है। इस जनांदोलन में चैतन्य महाप्रभु के गौड़ीय संप्रदाय और महाराष्ट्र के वारकरी संप्रदाय का विशेष योगदान रहा है। प्रेमोन्मत्त होकर स्वर-ताल की बात भूलकर नृत्य के साथ जो कीर्तन किया जाता है, वह हनुमदीय पद्धति है। जैसे मीरा का कीर्तन। स्वर-ताल के साथ तांडव नृत्य नियमों के साथ किया जाने वाला कीर्तन शांभवी पद्धति है। वाद्यों के या बिना वाद्यों के बैठकर या खड़े होकर भगवन्नाम का संकीर्तन नारदीय पद्धति है। कथा के बीच-बीच में नामध्वनि, पद कीर्तन वैयासकीय पद्धति है। चैतन्य महाप्रभु के कीर्तन ने जघाई-मघाई दस्युओं का जीवन बदल दिया। प्राचीन कथा एवं भजन-कीर्तन की शिक्षण शैली को भूल जाने के कारण मानव जीवन दुर्दशा के गर्त में चला गया। इसे परिमार्जित करते हुए नए सिरे से युगानुकूल निर्धारण करने की अकुलाहट ने परमपूज्य गुरुदेव को प्रज्ञा पुराण की रचना करने को विवश किया। समय परिवर्तनशील है। उसकी परिस्थितियाँ, मान्यताएँ, प्रथाएँ, समस्याएँ एवं आवश्यकताएँ भी बदलती रहती हैं। उनके समयानुकूल समाधान खोजने पड़ते हैं। यह कार्य ऋषिकल्प ही करने में समर्थ होते हैं। युगऋषि ने इसी परिवर्तित सृष्टि-क्रम को ध्यान में रखते हुए प्रज्ञा पुराण की रचना छह खंडों में की है, जिसमें से चार खंड प्रकाशित हो चुके हैं। इसके साथ युग संकीर्तन की वैयासकीय एवं नारदीय पद्धतियाँ भी जुड़ी हुई हैं।

कथाएँ मनुष्य जीवन को बहुत प्रभावित करती हैं। प्राचीनकाल में विष्णु शर्मा नामक पंडित जी ने राजा के दुष्ट पुत्रों को कथाएँ सुनाकर सदाचारी बना दिया था। हितोपदेश और पंचतंत्र की कहानियाँ इसके प्रमाण हैं। होम्योपैथी की मीठी गोलियों की तरह कथाओं के माध्यम से मानव के दृष्टिकोण को बदला जा सकता है। यहाँ प्रश्न यह भी उठ सकता है कि जब पहले से १८ पुराण, २१ उपपुराण और विशाल कथा साहित्य मौजूद था तो पूज्यवर को प्रज्ञा पुराण रचने की आवश्यकता क्यों अनुभव हुई ? इस विषय में यह कहा जा सकता है कि रोगी का उपचार उसके रोग



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

के अनुसार ही किया जा सकता है। त्रेता में रावण ने धन और शक्ति एकत्रित कर ली, तो उसे अहंकार हो गया। अहंकार ही विनाश का कारण होता है, यह समझाने के लिए रामायण की रचना हुई। महाभारत काल में धृतराष्ट्र के पुत्रमोह के कारण विनाश की कथा महाभारत ग्रंथ में समझाई गई और अर्जुन के कुटुंब-मोह को दूर करने के लिए गीता लिखी गई। आज का मानव अनास्था के कारण भौतिकवादी बनकर दुर्बुद्धिग्रस्त हो गया है तो युग व्यास पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने व्यक्ति के विचारों एवं दृष्टिकोण को बदलने के उद्देश्य से प्रज्ञा पुराण की रचना की। इस ग्रंथ की विशेषता यह है कि इसमें काल्पनिक देवी-देवताओं, राजा-महाराजाओं और सिद्ध-साधकों की असंभव सी लगने वाली चमत्कारिक घटनाओं के स्थान पर वर्तमान युग की सत्य ऐतिहासिक घटनाओं को कथा रूप में दिया गया है, जिससे मनुष्य समझ ले कि सद्बुद्धि के द्वारा साधारण मनुष्य कितना महान बन सकता है ?

देवसंस्कृति की इस कथा-संकीर्तन सरिता को घर-घर, गाँव-गाँव पहुँचाने का दायित्व युग के भगीरथों को पूरा करना है। इस कथा को कम पढ़े-लिखे, श्रद्धावान परिजन एक-दो महीने के अभ्यास से कहने में समर्थ हो सकें, इसके लिए सात दिवसीय ज्ञानयज्ञ सप्ताह की कथा सात प्रकरणों को लेकर इस अनुपम, सुबोध ग्रंथ 'प्रज्ञा पुराण कथामृतम्' (भाग दो) की रचना की गई है। इस ग्रंथ में कथा की पूर्व व्यवस्था एवं नित्यप्रति होने वाले कर्मकांड की विधि भी दी गई है। इस ग्रंथ का भलीभाँति स्वाध्याय करके कोई भी परिजन कथा सुनाने में सफल हो सकता है। संगीत (गाने व बजाने) वाले परिजन गाँव-गाँव मिल जाते हैं। ऐसे परिजनों के साथ इस ग्रंथ की सहायता से कुछ दिन अभ्यास करने पर प्रज्ञा पुराण कथा की टोली तैयार हो जाती है। ऐसी टोलियाँ गाँव-गाँव में बना ली जाएँ और एक गाँव के लोग दूसरे गाँवों में कथा कहने लगें तो बहुत उपयोगी सिद्ध होगी। प्रज्ञा पुराण कथामृतम् ग्रंथ को घर-घर में पढ़ाया जाए। परिवार के लोग मिलकर गाएँ और कोई एक कथा पढ़कर सुनाए तो प्रतिदिन थोड़ी देर का सत्संग परिवार में हो सकता है। ऐसा प्रचलन प्रारंभ किया जाना चाहिए।

❖



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

वेदमूर्ति, तपोनिष्ठ, युगऋषि पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

# युग ऋषि परम पूज्य पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

बड़प्पन और महानता लगभग असंबद्ध और प्रतिकूल हैं। एक को खोकर ही दूसरे को पाया जा सकता है। सद्गुरु के मार्गदर्शन ने उन्हें विवेक दिया, विश्वास दिया और साहस दिया। इन तीन अवलंबनों को पाकर वे महानता की राह पर चल पड़े। कौन क्या कहता है, यह उन्होंने सुना ही नहीं। महानता की राह पर ही जीवनपर्यंत उँगली पकड़कर छोटे बच्चों को चलाते रहे। उनके मार्गदर्शक की कृपा को सराहा जाए या शिष्य की समर्पणभरी निष्ठा को। दादा गुरु ने अपना तप और आत्मबल शिष्य पर उड़ेल दिया और शिष्य ने अपना आपा और अस्तित्व ही उन्हें समर्पित कर दिया। तन तो तुच्छ है, अपनी कोई इच्छा तक शेष नहीं रहने दी। जो मार्गदर्शक की इच्छा वही अपनी इच्छा। तर्क-कुतर्क की कोई गुंजाइश ही नहीं। दुनियाँ वाले आरंभ से ही हँसते थे और उसी क्रम में उनकी कसौटी पर हम लोग भी हँसी और उपहास के पात्र बने हैं। जहाँ तृष्णा, कामना और अहंता की पूर्ति ही लाभ, सौभाग्य और वरदान माना जाता हो, वहाँ गुरुदेव की ही तरह सच्चे अध्यात्मवादी को उपहास का पात्र बनना ही पड़ेगा। यहाँ हर चीज मूल्य देकर खरीदी जाती है। भौतिक संपदाओं की कीमत पर ही आत्मिक विभूतियाँ खरीदी जाती हैं।

हिमालय पिता ने गुरुदेव का व्यक्तित्व विनिर्मित किया। गुण, कर्म और स्वाभाव की उत्कृष्टता उसी की देन है। शारीरिक स्वास्थ्य और मानसिक संतुलन उन्हें पिता का दिया हुआ है। दृष्टिकोण में उत्कृष्टता, लक्ष्य की ऊँचाई, सर्वतोमुखी प्रतिभा, अविचल साहस और अटूट धैर्य जैसी दिव्य संपदाओं को लेकर ही वे ऊँचे उठे और महामानव के स्तर तक पहुँचे। यदि ऊपर से यह अनुग्रह न मिला होता, तो अपने बलबूते इतना उपार्जन करना तो दूर, इतनी सफलता मिलना असंभव नहीं तो कठिन अवश्य था।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

साधनों की दृष्टि ... कहना चाहिए। पैसे की दृष्टि से हाथ खाली, माँग ... आवश्यकता का ... भी न चले। भरपूर विज्ञापन ... उपेक्षा आदि ... बाधक कारणों के रहते हुए ... मेरुकी ... के मार्गदर्शक की प्रत्यक्ष अ... उन्हें ... जब भाषण देने खड़े होते, तो ... मादन रहता। लेखनी मस्ती पैदा ... उनका लिखा ... बिना ... चमत्कार है, ... ने करोड़ों को उनके प्रवाह में ... और सा... लिए विवश कर दिया। ... नए प्रति... ने सम... हलचल पैदा कर दी। ... कार्यक्रमों की योजना, ... महाभारत का व्यूह ... दूरदर्शिता के ... है ... सफलता ... प्रतिक्रिया तत्काल ... है ... के पीछे ... की ... प्रतिभा नहीं, वरन् निश्चि... महान् मार्गदर्श... ही मूल कारण है। ... निर्माण अभि... होती ... उससे उनके मार्गदर्शक ... अनु... अ... कीम... कर पाया ... सिद्ध करने ... था।

... ब्रह्मवर्चस, आत्मबल ... माता ... । वे धनी नहीं थे, पर उनकी दिव्य संपदा ... किसी को खाली हाथ ... जाने देते। जो भी ... उसकी व्यक्तिगत व्यथा, चिंता ... सम... सामर्थ्य के अनुसार सहायता में ... नहीं की। ... नहीं, चमत्कार दिखाकर आ... उससे कुछ काम ... भी नहीं सूझी। रोते हुए आने वाले हँसते हुए लौटे। ... अनुदान जो बादलों की

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तरह निरंतर बरसते रहे, आखिर कहाँ से आते? ये अनुदान वेदमाता के थे। ब्रह्मवर्चस् और ऋषितत्त्व की सारी संपदा इन्हें गायत्री माता के कोष से मिलती रही। हिमालय पिता ने व्यक्तित्व, मार्गदर्शक ने कृतित्व और गायत्री माता ने ब्रह्मवर्चस् प्रदान किया। ये तीनों ही चीजें उन्होंने कष्ट सहकर ही नहीं खरीदीं, वरन् उपलब्धि का प्रयोग मात्र लोकमंगल के लिए करने की शर्त के साथ स्वीकार किया। गुरुदेव की आत्मीयता का विकास ही है, जिसने लाखों व्यक्तियों को मजबूत रस्सी के साथ जकड़कर उनके साथ बाँध दिया। विद्वत्ता, प्रतिभा, भाषण, लेखन, संगठन और आंदोलन आदि बहुत छोटे आधार हैं। यह कला दूसरों को भी अच्छी तरह आती है, पर वे इतना सघन कुटुंब कहाँ बना पाते हैं। उनकी कला केवल आकर्षण का केंद्र बनी रहती है। ऐसे व्यक्तित्व किसी को घनिष्ठ आत्मीयता से बाँध लेने और उनसे साहसपूर्ण कार्य करा सकने में समर्थ नहीं होते। पूज्य गुरुदेव ने हिमालय के वातावरण में अंतर्मुखी होकर प्रकृति के कण-कण में व्याप्त दिव्यता को पढ़ा, समझा और वे तत्त्वदर्शी के स्तर तक पहुँचे।

कष्ट-पीड़ितों और अभावग्रस्तों को उनका अनुदान सदा मिलता रहा। रोते को हँसाने में उन्हें मजा आता। यह उनका सबसे बड़ा विनोद-व्यसन कहा जा सकता है। जिन्हें वे कुछ ऊँचा उठा देखते, उनकी कामनाओं और तृष्णाओं को तृप्त नहीं, वरन् समाप्त करते और उन्हें बड़प्पन से छुड़ा कर महानता में संलग्न करते। जिन्हें और भी ऊँचा समझते उन्हें और भी ऊँचा उपहार देते। अहंता और तृष्णा छोड़े बिना ब्रह्मवर्चस् मिलता नहीं। जिसे सबसे अधिक प्यार करते, उसकी तृष्णा और अहंता छीनकर अपने सदृश बनाने का प्रयास करते। मनुष्य में देवत्व के उदय और धरती पर स्वर्ग के अवतरण का स्वप्न उन्होंने इसी आधार पर देखा। स्वर्ग की ज्ञान-गंगा को धरती पर लाने के प्रयास में भगीरथ की तरह जूझते रहे और गायत्री माता की दिव्य सत्ता उन्हें मुक्त हस्त से सहायता प्रदान करती रही।

स्वर्ग, मुक्ति, सिद्धि और विभूति की कामनाएँ उनके लिए निरर्थक थीं। बार-बार जन्म लेना, मरना और निरंतर सर्वतोभावेन परमात्मा के इशारों पर चलते रहना

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ही उनका लक्ष्य था, जिसने उन्हें दिव्य माता, दिव्य पिता और दिव्य गुरु की महान् उपलब्धियाँ देकर अनाथ से सनाथ बनाया।

अखंड दीपक पर पुरश्चरणों की शृंखला संपन्न करते हुए उन्होंने भावना क्षेत्र में यह निष्ठा परिपक्व की कि जीवन को ज्वलंत दीपशिखा की तरह अंतरंग एवं बहिरंग क्षेत्र में प्रकाश उत्पन्न करने के लिए तिल-तिल जलते रहने की प्रक्रिया व्यवहार में लाई जाए। यदि दीप उपकरण के साथ-साथ वे आत्मज्योति को प्रकाशवान् बनाने का लक्ष्य सामने रखकर न चले होते, तो उनकी अखंड ज्योति भी मात्र रोशनी पैदा करने का तुच्छ-सा प्रयोजन पूरा कर सकी होती।

गुरुदेव की सबसे बड़ी देन यह है कि उन्होंने आस्तिकता की गरिमा को अपने जीवन की प्रयोगशाला में यथार्थ सिद्ध किया और उन लोगों का मुँह बंद किया जो इसे भ्रम या छद्म कहते रहे। गुरुदेव ने अपने लेखों और प्रवचनों में ही नहीं, आचरण की भाषा में भी यह कहा कि यदि देवसान्निध्य, ईश्वरीय अनुग्रह और आत्मबल अभीष्ट है, तो सबसे प्रथम चरण दृष्टिकोण के परिष्कार का उठाया जाना चाहिए। अपने को मात्र शरीर और मन से बना मांसपिंड मानकर वासना-तृष्णा के, पेट-प्रजनन के तुच्छ प्रयोजनों में ही संलग्न नहीं रहना चाहिए, वरन् कुछ आत्मकल्याण की, मानवीय गरिमा की और जीवनोद्देश्य की बात भी सोचनी चाहिए और उसके लिए कुछ कारगर प्रयत्न भी करने चाहिए।

पूज्य गुरुदेव के संकल्प के साथ गुरु का बल और महाकाल का आश्वासन था कि वे किसी से भी बिना सहायता माँगे विचार क्रांति का माहौल तैयार करेंगे। उन्होंने सब कुछ दाँव पर लगा दिया। कुछ धनपति वित्तीय समूहों ने उनके शुभ संकल्प को सुनकर धनराशि देने की बात कही, तो उन्होंने अस्वीकार कर दी। यह उनके ब्राह्मणत्व को एक चुनौती थी। हम सब भी इसी प्रकार लोभ-मोह में ग्रस्त, पेट और प्रजनन में व्यस्त, वासना-तृष्णा का पशु जीवन जीने से इनकार कर दें। हम भी युगऋषि के आदर्शों को अपनाने का साहस करें।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

परम वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

# वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा

वंदनीया माताजी के जन्म के साथ ही भविष्यवक्ताओं ने बताया कि एक दैवी सत्ता शक्ति रूप में उनके घर आई है। साधारण से असाधारण बनती हुई यह ऐसे उत्कर्ष को प्राप्त होगी कि करोड़ों व्यक्तियों की श्रद्धा का पात्र बनेगी। हजारों-लाखों व्यक्ति इस अन्नपूर्णा के द्वार पर भोजन करेंगे। कोई भी, कभी भी इसका आशीर्वाद पा लेगा, तो वह खाली हाथ नहीं जाएगा।

एक ऐश्वर्यशाली संपन्न घर में जन्म लेने के बावजूद सादगी भरा जीवन ही उन्हें पसंद था। रेशमी कीमती वस्त्रों की तुलना में गाँधी बाबा की बात कहकर सभी को खादी अपनाने की प्रेरणा देतीं और स्वयं भी वही पहनतीं। औरों को भोजन कराने, उनका आतिथ्य करने, उनके साथ सम्मानपूर्वक व्यवहार में वे सबसे आगे बढ़कर चलतीं। जिसने भी एक बार उनके हाथों प्यार भरे स्पर्श के साथ भोजन कर लिया, वह उन्हें सदा याद रखता। विवाह के बाद बड़ी प्रतिकूल परिस्थितियों में वे उस जमींदार घराने में पहुँची, जहाँ आचार्य जी ओढ़ी हुई गरीबी का जीवन जी रहे थे। जैसा पति का जीवन, वैसा ही अपना जीवन। जहाँ उनका समर्पण, उसी के प्रति अपना भी समर्पण। यही संकल्प लेकर वे जुट गयीं, कंधे से कंधा मिलाकर पूर्व जन्मों के अपने आराध्य इष्ट के साथ। २४ वर्षों के २४ महापुरश्चरणों का उत्तरार्द्ध चल रहा था। जब गायत्री तपोभूमि की स्थापना का समय आया, तब पूज्य गुरुदेव १०८ कुडीय यज्ञ कर २४ वर्षीय अनुष्ठान की समाप्ति करना चाह रहे थे। स्वयं अपनी ओर से पहल करके वंदनीया माताजी ने अपने सारे जेवर अपने आराध्य के कार्य को सफल बनाने के लिए दे दिए। माताजी ने लिखा है—"परिजनों की इस माँ ने अपने जीवन का हर क्षण एक समर्पित शिष्य की तरह जिया है। अपने आराध्य की इच्छा को पूरा करने का अथक प्रयास किया है। प्रत्यक्ष दृश्यपटल पर भले हम दिखाई न भी पड़ें, तो हमारा कृतित्व जो अब तक गुरुसत्ता की

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अनुकंपा से बन पड़ा है, सबके लिए प्रेरणा का केंद्र बना रहेगा एवं हमारे बच्चे उत्तराधिकारी बनते हुए आदर्शों के क्षेत्र में प्रतिस्पर्द्धा करते हुए उज्ज्वल भविष्य समीप लाते दिखाई पड़ेंगे, ऐसा हमारा दृढ़ विश्वास है।"

गुरुदेव के तप की प्रभा जहाँ अपने तीव्र आकर्षण से चकाचौंध करती है, वहाँ वंदनीया माता जी का अपरिमित वात्सल्य हृदय की गहराइयों को तृप्त करता है। माता जी और गुरुदेव के रहस्यमय जीवन की अबूझ पहेली भले ही समझ में न आए, पर इतना अवश्य है कि यदि माता जी न होतीं, तो मिशन का इतना विस्तार संभवतः न होता। यानि कि शक्ति न होती, तो शायद शिव अपना लीला-विस्तार न कर पाते। पूज्य गुरुदेव ने लिखा, "माताजी भगवान के वरदान की तरह हमारे जीवन में आईं। उनके बगैर मिशन के उदय और विस्तार की कल्पना करना तक कठिन था। उन्होंने अपने आने के पहले दिन से ही स्वयं को तिल-तिल गलाने का व्रत ले लिया। विरोध का तत्त्व तो उनमें जैसे था ही नहीं। यदि वे चाहतीं, तो साधारण स्त्रियों की तरह मुझ पर रोज नई फरमाइशों के दबाव डाल सकती थीं। ऐसे में न तो तपश्चर्या बनती [illegible] साथ लगते। फिर जो कुछ आज तक हो सका, उसका कहीं नामोनिशान तक नहीं होता।"

वंदनीया माताजी ने लिखा है—"जहाँ तक कष्ट सहने का प्रश्न है, सारा जीवन तितीक्षा के अभ्यास में ही लगा है। गुरुदेव की छाया में रहकर अधिक नहीं, तो इतना तो सीखा ही है कि आगत आपत्तियों के समय धैर्य, साहस और विवेक को दृढ़तापूर्वक अपनाए रहना चाहिए। व्यथा को इस तरह दबाए रहना चाहिए कि समीपवर्ती किसी अन्य को उसका आभास न होने पाए। मानव जीवन सुखों के साथ दुखों का भी युग्म है। संपत्ति ही नहीं विपत्ति भी भगवान मानव कल्याण के लिए भेजते हैं। गुरुदेव के संपर्क में ऐसे पाठ पढ़ती रही हूँ कि रुदन को मुस्कान में कैसे बदला जाना चाहिए?"

पूज्य गुरुदेव ने लिखा है—"माताजी का दर्जा ऊँचा बैठता है, क्योंकि उनका

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

[illegible] सहयोग ही नहीं, वात्सल्य भी हमने [illegible] पूर्वक परिपोषण देती रही हैं। उनका [illegible] किया जा सकता। वे अनवरत रूप से [illegible] निजी जीवन में भी धर्म-धारणा पर [illegible] में चला सकने में असाधारण सहा[illegible] श्रद्धा कहा जा सकता है। उनकी [illegible] ऐसा नहीं है, जिसमें श्रद्धा कूट-कूट [illegible] हमारी प्रज्ञा से निष्ठावान् नहीं बने हैं, वरन् [illegible] पाकर निष्ठावान् बने हैं। मिशन को अग्रगामी [illegible] किया, जब इसका लेखा-जोखा भगवान् [illegible] कदाचित मूर्धन्यों में माता जी का नाम ही अग्रणी होगा। [illegible] व साथ न रही होतीं, तो इतना सब कर पाते क्या, [illegible] ल्य ने हमारी ही तरह समूचे गायत्री परिवार को [illegible] वातावरण को कृतकृत्य किया है।

[illegible] प्रयाण के पूर्व माता जी ने कहा [illegible] र, मम [illegible] यह संगठन खड़ा किया [illegible] का [illegible]। मिशन [illegible] भविष्य निश्चित ही उज्ज्वल है। मुझे अपने पुत्र-पुत्रियों पर पूरा विश्वास है कि स्नेह की डोर में परस्पर बँधे इस मिशन के संस्थापकों व दैवी संचालन तंत्र के नियामक ऋषिगणों द्वारा निर्धारित लक्ष्य अवश्य पूरा होगा।"

गुरुदेव ने लिखा है, "मिशन को बढ़ाने में माताजी ने हमारे बाँए या दाँए हाथ की नहीं, हृदय की भूमिका निभाई है। उन्हीं की भावनाओं के संचार से मिशन पलता और बढ़ता रहा है। आरा [illegible] भी उनका प्यार-दुलार पाकर धन्य हुए हैं [illegible] आघातों के चलते कौन जाने हम कब टूट-बिखर कर [illegible] मयी हैं, प्यार तो जैसे उनके रोम-रोम में [illegible] ना तो नहीं आता, पर ममत्व लुटाने में वे [illegible] री तरह वे बौद्धिक चातुर्य की धनी न हों, [illegible]

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पूँजी उनके पास हमसे कई गुनी अधिक है। इसी कारण हम उन्हें सजल-श्रद्धा कहते हैं। मिशन के प्रत्येक परिजन ने उन्हें इसी रूप में अनुभव किया है। वे बेटा-बेटी और बहू का मोह इतनी आसानी से छोड़कर हरिद्वार के जंगल में बसने के लिए तैयार हो जाएँगी इसका मुझे भी विश्वास न था। मैंने अपने मन के असमंजस को छिपाते हुए जब उनसे शांतिकुंज में तप-साधना की बात कही, तो वे बिना एक पल की देर लगाए, तुरंत तैयार हो गईं। हमें भी उनके इस साहस भरे समर्पण को देखकर आश्चर्य-मिश्रित प्रसन्नता हुई।''

वंदनीया माता जी ने हम लोगों के लिए लिखा है, ''श्रवणकुमार की तरह मुझे व मेरी गुरु सत्ता को घर-घर पहुँचाओ। घर-घर तक नूतन चेतना का संदेश पहुँचाओ। कर दो आलोकित युग चेतना के प्रकाश से हिमालय से विंध्याचल व विंध्याचल से सतपुड़ा दंडकारण्य एवं अरावली से कन्याकुमारी तक के हर क्षेत्र को। इन पावन सरिताओं की हर बूँद को व मातृभूमि को सांस्कृतिक दासता से मुक्ति दिलाकर इसे पुनः देव संस्कृति की चेतना से अनुप्राणित कर दो। आगे तुम्हें और भी बड़े-बड़े कार्य करने हैं। सारे राष्ट्र को जगाना है। तुम सभी मेरे वरिष्ठ पुत्रों में से हो। अब इस परिवार संस्था में अहंकारियों का कोई स्थान नहीं है। तुम सभी अच्छे हो, मुझे आशा है, तुम में से किसी का अहंकार टकराएगा नहीं व टीम-भावना के साथ तुम काम करते चले जाओगे। स्वभाव में जहाँ कहीं भी थोड़ी बहुत कमियाँ हैं, उन्हें दूर कर अच्छी आदतों में बदलने की कोशिश करो। अपनी-अपनी योग्यता बढ़ाओ। तुम समर्पण करोगे, तो गुरुजी की आवाज ही तुम्हारे चोगे से निकलेगी। तुम सबको देखना है कि आगे क्या होता है, जो काम होंगे, वे माता जी नहीं बेटे जी करेंगे। ये और भी शानदार होंगे। अब हम मिशनरी भावना की तरह फैलते चले जाएँगे। देखते-देखते कई गुना हो जाएँगे। तुम में से विवेकानंद निकलेंगे, दयानंद निकलेंगे और देखते जाओ तुम से वह करा लेंगे, जो तुमने सोचा भी नहीं था।''

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

**आद्यशक्ति माँ गायत्री**

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

# देवसंस्कृति की माता—गायत्री

भारतीय संस्कृति में प्रतीकवाद का महत्त्वपूर्ण स्थान है। सबके लिए सरल, सीधी पूजा-पद्धति का आविष्कार करने का श्रेय भारत को ही प्राप्त है। पत्थर, मिट्टी, धातु, चित्र इत्यादि की प्रतिमा को मध्यस्थ बनाकर हम सर्वव्यापी अनंत शक्तियों और गुणों से संपन्न परमात्मा को अपने सम्मुख उपस्थित देखते हैं। भावुक भक्तों, विशेषतः नारी-उपासकों के लिए तो किसी प्रकार की मूर्ति का आकार रहने से उपासना में बड़ी सहायता मिलती है। मानस-चिंतन और एकाग्रता की सुविधा को ध्यान में रखते हुए प्रतीक रूप में मूर्ति-पूजा की योजना बनी है। साधक अपनी श्रद्धा के अनुसार भगवान की कोई भी मूर्ति चुन लेता है और साधना करने लगता है। उस मूर्ति को देखकर हमारी अंतःचेतना ऐसा अनुभव [illegible] हमारा मिलन हो रहा है। मूर्ति-पूजा में भावना [illegible] गौण है, [illegible] का ही यह श्रेय देना पड़ेगा कि वह भग[illegible] भावनाओं का उद्रेक और संचा[illegible] रूप से हमारे अंतःकरण में कर[illegible]

गायत्री दूरद[illegible] विवेक प्रज्ञा की देवी, नारी में देवत्व की विशि[illegible] का भान, उसके प्रति पवित्रतम [illegible] सद्भावना की धारणा, वाहन हंस नीर-क्ष[illegible] विवेक, उचित-अनुचित के वर्ग[illegible] की प्रखरता, दाग-धब्बे रहित धवल कले[illegible] ती चुनने अथवा लंघन करने की प्र[illegible] श्रेष्ठतम को ही स्वीकार करने की प्र[illegible] क हाथ में पुस्तक, स्वाध्याय में अगाध [illegible] दूसरे हाथ में कमंडल, [illegible] शीलता और प्रामाणिक पात्रता से भरा-पूरा [illegible]

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

ऋतंभरा प्रज्ञा का [illegible] है। [illegible] क्या है? वह प्रज्ञा, वह धारणा, वह निष्ठा जो आदमी को ऊँचा उठा देती है, ऊँचा उछाल देती है, जिसकी प्रेरणा से आदमी ऊँची बातों पर विचार करता है और ऊँचा उठता चला जाता है, उसे ऋतंभरा प्रज्ञा कहते हैं। गायत्री का वाहन हंस है। हंस एक प्रतीक है। हंस वह व्यक्ति है, जिसकी दृष्टि ऋतंभरा प्रज्ञा के अनुकूल है। हंस कीड़े नहीं खाता, वह मोती चुगता है। जो ठीक है, उचित है उसी को करेगा, जो अनुचित है उसके बगैर काम नहीं चलेगा, तो मर जाएगा, भूखा रह लेगा, चाहे मरना ही क्यों न पड़े, पर न तो कुछ अनुचित करेगा और न अभक्ष्य खाएगा। हंस उस व्यक्ति का नाम है, जो नीर और क्षीर का भेद करना जानता है। इसे ही जाग्रत करने के लिए गायत्री-साधना की जाती है। छोटे बालक को बताया जाता है कि गायत्री माता हंस पर सवारी करती है और हाथ में पुस्तक और कमंडल लिए रहती

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

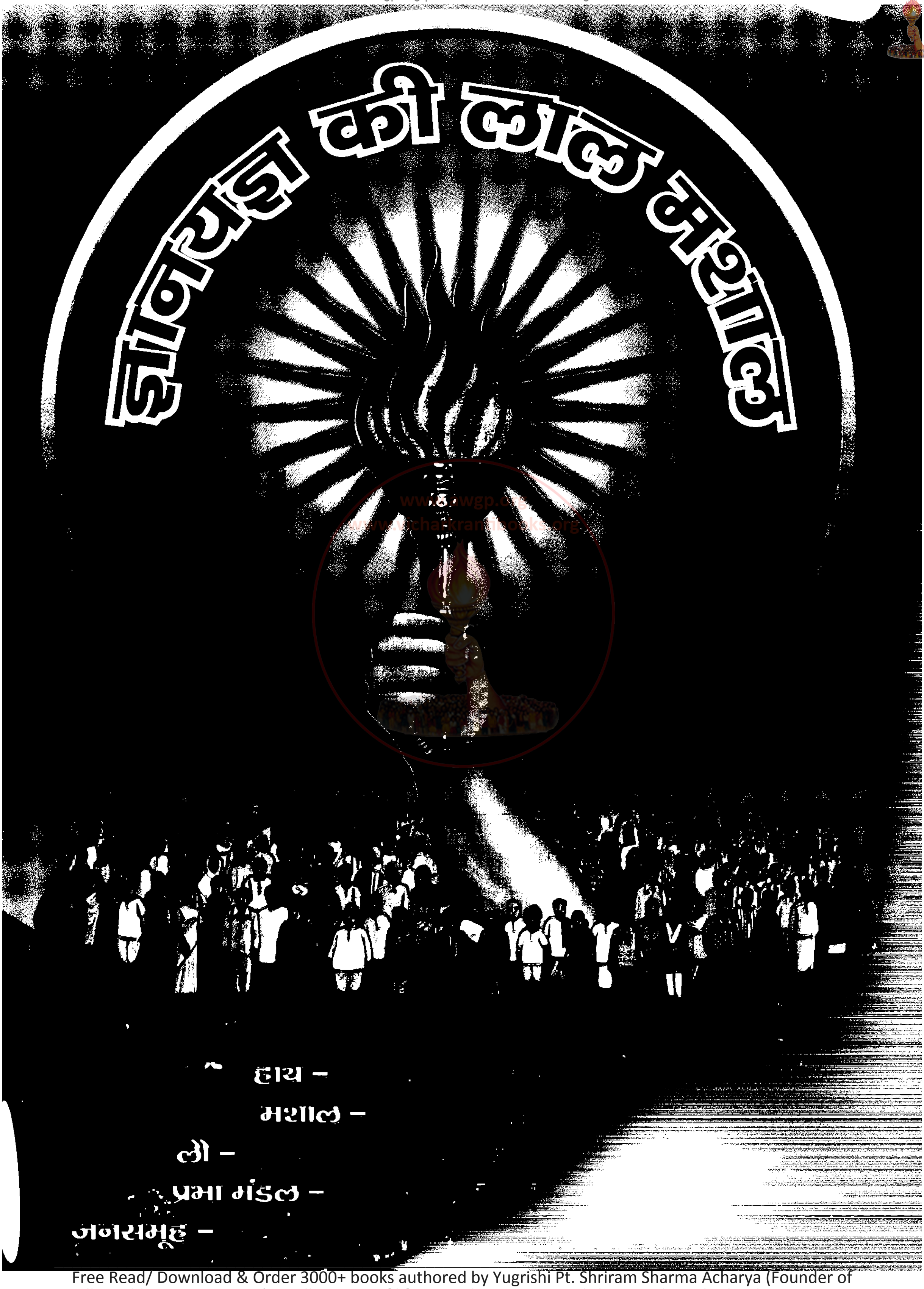


Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

है। गायत्री माता सिद्धियों और चमत्कारों की देवी है, वह शांति और वरदान की देवी है। वह ऐसी देवी है, जिसको प्राप्त करने के बाद और कुछ प्राप्त करना बाकी नहीं रह जाता।

गायत्री माता जवान स्त्री है। जवान स्त्री के प्रति हमारे अंदर मातृ-बुद्धि पैदा हो, आँखों में शुद्धता, पवित्रता का भाव पैदा हो, इसीलिए गायत्री माता को जवान स्त्री के रूप में बनाया गया है। पूजा के माध्यम से हम अपनी चरित्रनिष्ठा, विचारशीलता और आंतरिक उदारता का विकास करते हैं। उपासना इसी के लिए की जाती है।

गायत्री माता वेदमाता है। सारे वेदों का जन्म गायत्री से ही हुआ है। उसी ने सारी संस्कृति और सभ्यता को जन्म दिया। अत: गायत्री माता वेदमाता बनी। इसके बाद गायत्री माता देवमाता बनी। हिंदुस्तान के निवासी देवता थे। वे स्वयं तो कम खाते थे, पर दूसरों को अधिक खिलाते थे। यहाँ के नागरिकों ने सारी दुनियाँ को अपनी संपदा बाँट दी, इसलिए वे देवमानव कहलाए। अकेले खाते समय उन्हें मन में अप्रसन्नता होती और दूसरों को खिलाते समय वे प्रसन्न होते। जब गायत्री माता हमारे हृदय में उदय होती है, तो हमारे जीवन को चमकाकर रख देती है। वह हमारे विचारों में परिवर्तन कर देती है। हमें केवल अपना परिवार ही नहीं, सारा समाज और देश दिखलाई पड़ता है और हम देवता बनते चले जाते हैं। गायत्री माता हंस पर बैठकर कमंडल लेकर नहीं आती। वह करुणा के रूप में, दया के रूप में हमारे अंदर आती है। यही उसका स्वरूप है, जो हमें देवता बनाकर चला जाता है और हम देवता जैसा जीवन जीने लगते हैं। गायत्री माता की कृपा से हम लोकमंगल हेतु अपनी बुद्धि, धन और समय को लगाने लगते हैं। हमारा जीवन धन्य हो जाता है। सारे संसार में गायत्री मंत्र का विस्तार हो। यह मात्र हिंदुओं तक ही सीमित न रहे, यह ब्राह्मणों का ही होकर न रह जाए, बल्कि विश्वमानव का मंत्र बने। विश्वमाता से मतलब है कि सारा विश्व एक नए आधार पर एक होने जा रहा है। एक नई संस्कृति आ रही है। एक नया सार्वभौम धर्म आ रहा है। सारी दुनियाँ इस एक ही केंद्र के ऊपर इकट्ठी होने जा रही है। हम सब एक आचारसंहिता और एक मातृभाव में बँधने जा रहे हैं। गायत्री माता ईमानदारी, नेकनीयती, सज्जनता और शराफत की देवी है। हंस इसका वाहन है। गायत्री माता की स्थापना करके हम राजहंस पैदा करना चाहते हैं। गायत्री उपासकों में राजहंस की वृत्ति पैदा करना चाहते हैं।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लाल मशाल के प्रतीक को ही गुरु के रूप में मान्यता दी जाती है। ज्ञान क्रांति की लाल मशाल युग शक्ति के प्रतीक के रूप में विकसित हुई है। इस प्रतीक और उसके साथ जुड़े विचार-दर्शन की जानकारी सबको होनी चाहिए। जनसमूह-भली चाह, अच्छी सोच वाले सभी वर्गों के नर-नारी हैं। हाथ-समूह की संगठित शक्ति है। मशाल-नव सृजन का संकल्प है। लौ-नव सृजन के लिए दिव्य ऊर्जा अनुदान है। प्रभा मंडल-ईश्वरी चेतना का सतत् संरक्षण है।

ज्ञानयज्ञ की लाल मशाल में मेरे हर प्रियजन को कुछ श्रद्धा स्नेह डालते ही रहना है, इसे किसी भी कीमत पर बुझने नहीं देना है। इस अनुरोध की ओर से मुँह मोड़कर हम उस कृपणता का ही परिचय देंगे, जिसमें आत्मधिक्कार और लोकोपवाद की भर्त्सना की जलन ही पल्ले बँधेगी।

इन दिनों स्रष्टा की अदम्य और प्रचंड अभिलाषा एक ही है कि इस सड़ी दुनियाँ को बदलने में कायाकल्प जैसा नया सुयोग बनाया जाए। यही है इक्कीसवीं सदी बनाम उज्ज्वल भविष्य । यही है मनुष्य में देवत्व का उदय और प्रतिभा परिष्कार का महाभियान। इसी को लोग विचार क्रांति की लाल मशाल का प्रज्ज्वलन भी कहते हैं। इस दैवीय उत्कंठा की पूर्ति में जो जितना सहायक बनेंगे, वे उतना ही अपने को समग्र रूप से कृतकृत्य हुआ अनुभव करेंगे।''

## हमारा संकल्प

लक्ष्य विशाल विस्तृत है । जनमानस के परिष्कार के लिए प्रज्ज्वलित ज्ञानयज्ञ के, विचार क्रांति के, लाल मशाल के टिमटिमाते रहने से काम नहीं चलेगा। उसके प्रकाश को प्रखर बनाने के लिए जिस तेल की आवश्यकता है, वह पूज्य गुरुदेव की प्रत्येक संतान के भाव भरे त्याग से निचोड़ा जा सकेगा। मनुष्य में देवत्व का उदय संसार के समस्त उत्पादनों की तुलना में अधिक महत्त्वपूर्ण उपार्जन है। इस कृषि कर्म में हमें शीत व वर्षा की परवाह न करके निष्ठावान कृषक की तरह लगना चाहिए। धरती पर स्वर्ग का अवतरण एक नंदन वन खड़ा करने के समान है।

पूज्य गुरुदेव के आदर्शों की रक्षा और युग निर्माण योजना के विश्वव्यापी प्रचार-प्रसार की जिम्मेदारी हमें सौंपी गई है। हम प्रतिज्ञा करते हैं कि इस जिम्मेदारी को गायत्री तपोभूमि एवं शांतिकुंज के सभी कार्यकर्त्ता व्यक्तिगत महत्त्वाकांक्षाओं को भुलाकर परस्पर एक शक्ति, एक मन होकर काम करके पूरा करेंगे। परम पूज्य गुरुदेव ने हमारे हाथों में जो नव जागृति की मशाल सौंपी है। जब तक हमारे शरीरों में रक्त की एक भी बूँद शेष रहती है, तब तक उसे बुझने न देंगे, भले ही अपना सारा जीवन ही जल-खप जाए।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

# ज्ञानयज्ञ की [illegible]

जनमानस का भावनात्म[illegible] विचार क्रांति की मशाल इस ज्ञानयज्ञ के अंतर्गत [illegible] देश और समाज का आशाजनक उत्कर्ष [illegible] से हमें मूढ़ता और रूढ़िवादिता के गर्त में [illegible] इस क्षेत्र में दीन-हीन और निराश निरुपाय [illegible] है [illegible] इसके बिना कल्याण का और कोई मार्ग [illegible] ग्रसित समाज के लिए उद्धार के सभी द्वार बंद रहते [illegible] प्र[illegible] चिंतन [illegible] होता है। लोभ में विवेकवान् रहते हैं। समृद्धि [illegible] चलती है। इन्हीं सत्प्र[illegible] का जनमानस में रोपण और अभिवर्धन [illegible] विचार क्रांति का [illegible] मात्र उद्देश्य है। ज्ञानयज्ञ की लाल मशाल [illegible] प्रज्वलित की गई है।

पूज्य गुरुदेव [illegible] नव निर्माण की लाल मशाल में हमने सर्वस्व [illegible] तेल [illegible]कर उसे प्रकाशवान् रखा है। अब परिजनों की जिम्मेदारी है कि [illegible] रखने के लिए हमारी ही तरह अपने अस्तित्व के सार तत्त्व को [illegible] परिजनों पर यह कर्तव्य और उत्तरदायित्व [illegible] इस आशा के साथ हम विदा [illegible] रहे हैं कि महानता की दिशा में कदम [illegible] की प्रवृत्ति अपने परिजनों में घटेगी नहीं, बढ़ेगी ही।

गायत्री तपोभूमि स्थित युग निर्माण योजना का केंद्र हमारी जलाई हुई मशाल को भविष्य में हमसे भी अच्छी तरह जलाए रखने में समर्थ होगा। इस ईश्वरीय प्रयोजन के पीछे भगवान [illegible] गुरुदेव का, हमारा तथा उत्तराधिकारियों के भाव भरे पुरुषार्थ का जो प्रचंड बल है, वह उसे घटने या गिरने न देगा। अभियान गतिशील होगा और विश्वमानव के भविष्य को उज्ज्वल बनाने में ऐतिहासिक भूमिका प्रस्तुत करेगा।

समर्थ गुरुदी[illegible] दे सकने योग्य अभी कोई अनुचर हम नहीं छोड़ सके हैं। असमर्थ व्यक्ति [illegible] उत्तरदायित्व अपने कंधों पर उठा लेंगे, तो उनकी कमर टूट जाएगी [illegible] डूब जाएगा, इसलिए भविष्य में गायत्री मंत्र की [illegible] मशाल के प्रतीक को ही गुरु बनाया जाए। [illegible] सकेगा, पर वह स्वयं गुरु न बन सकेगा। [illegible] राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में ध्वज को ही गुरु [illegible] है, उसी प्रकार गायत्री परिवार युग निर्माण अभियान [illegible]

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ॐ श्री गुरवे नमः

# प्रज्ञा पुराण कथामृतम्

## प्रथम दिवस

## देवसंस्कृति जिज्ञासा प्रकरण

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

### गुरु वंदना

गुरुवर आज तुम्हारी, वाणी बदलेगी संसार।
नमन है तुमको बारम्बार, नमन है तुमको बारम्बार॥
वचन तुम्हारे हर लेंगे अब, सब मन का अँधियार।
नमन है तुमको बारम्बार, नमन है तुमको बारम्बार॥
शापित मानवता में तुमने, नूतन प्राण जगाए।
संस्कृति के मरुस्थल में तुमने, अमृत कण बरसाए॥
निर्मम हृदयों में सरसाई, करुणा की रसधार।
नमन है तुमको बारम्बार, नमन है तुमको बारम्बार॥
अत्याचार बहुत हैं, हाहाकार, मचा है भारी।
आज अनैतिकता से जग में, फैली है लाचारी॥
इस विपत्ति में दिया, संजीवनी विद्या का उपचार।
नमन है तुमको बारम्बार, नमन है तुमको बारम्बार॥

श्रद्धेय आत्मीय परिजनो, प्रज्ञापुत्रो, दूर-दूर से आए हुए नैष्ठिक साधको, माताओ, बहनो तथा इस कथा में समागत बंधुओ! आप सभी का स्वागत है। आप इतनी दूर से कष्ट उठाकर यहाँ आए हैं, हम आप सबका अभिनंदन करते हैं। आज का दिन हम सबके लिए बहुत ही सौभाग्य का दिन है कि हम सब यहाँ प्रज्ञा पुराण की कथा सुनने और सुनाने के लिए



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

एकत्रित हुए हैं। सच तो यह है कि कथा सुनाने की क्षमता हम में कहाँ है, हम तो उन गुरुदेव के संदेशवाहक हैं, उनका संदेश सुनाने के लिए यहाँ आए हैं, जिन्होंने सारे वेदशास्त्रों का सार ग्रहण कर हम जैसे भूले-भटकों के लिए न जाने कितने अनमोल ग्रंथ लिखे हैं, उसी परंपरा में एक अमूल्य ग्रंथ है, वह 'प्रज्ञा पुराण' जिसकी कथा आप सुनने आए हैं। क्या है यह प्रज्ञा पुराण? व्यासदेव जी ने अठारह पुराण लिखे हैं, जो ज्ञान-विज्ञान के भंडार हैं, फिर प्रज्ञा पुराण की क्या आवश्यकता पड़ी ? आइए, हम सब इस पर विचार करें।

पुराणों में एक कथा आती है, एक बार महर्षि व्यास जी अपने आश्रम में बैठे हुए थे, बहुत उदास और चिंतित। तभी देवर्षि नारद जी वहाँ आए और कहने लगे—"हे महर्षि व्यास जी! आप वेदज्ञ हैं, तत्त्वों के ज्ञाता हैं, अठारह पुराण, महाभारत जैसे ग्रंथ आपने लिखे हैं फिर आपकी चिंता का कारण क्या है? कृपा कर बताइए।"

यह सुनकर व्यास जी ने कहा—"हे देवर्षि ! मेरी चिंता का कारण यही है कि मैंने इतना सब कुछ लिखकर मानव को मानवता का संदेश दिया, तो भी मनुष्य को ऐसी सद्बुद्धि नहीं मिली कि वह सुखमय जीवन जी सके। वह आज भी उसी तरह भटक रहा है और परोपकार करने के बजाय एकदूसरे को परेशान करने में लगा है। मैं क्या करूँ ? समझ में ही नहीं आता।"

महापुरुषों की यही विशेषता होती है। वे दूसरों का दुःख दूर करने के लिए प्रयत्नशील रहते हैं। देवर्षि ने कहा—"हे ऋषि श्रेष्ठ! आपने पुराणों में ज्ञान-विज्ञान की बातें तो लिखी हैं, किंतु भक्तिरस से परिपूर्ण साहित्य



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

नहीं लिखा, अतः भक्तिरस की रचना कीजिए, जिससे जनता का कल्याण होगा और आपको भी शांति मिलेगी।" तब उन्होंने भगवान के समस्त अवतारों की लीला का वर्णन करते हुए भागवत पुराण की रचना की, जिससे जनता तथा व्यास जी दोनों को ही आनंद की अनुभूति हुई।

आज के इस विज्ञान के युग में मनुष्य, हृदय की संवेदना एवं भक्तिभाव को भूलकर बुद्धिवादी व तर्कवादी बन गया है, इसलिए आज वह इस बौद्धिकता एवं भौतिकता की चकाचौंध में पड़कर अपने को विधाता समझ बैठा है। वह न सोचने योग्य बातें सोचता है और न करने योग्य कार्य करता है। अतः उसकी सद्प्रज्ञा को जाग्रत करने के लिए इस युग के व्यास आचार्य श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने यह 'प्रज्ञा पुराण' नामक ग्रंथ लिखा है, क्योंकि इस समय मनुष्य को सद्बुद्धि की ही आवश्यकता है।

'प्रज्ञा' शब्द का अर्थ है—प्रकृष्ट ज्ञान। वह अविचल बुद्धि जो बड़े से बड़े संकटों में भी विचलित न हो, सुख-सुविधाओं को पाकर अहंकार ग्रस्त न हो, जो हानि-लाभ, जीवन-मरण, यश-अपयश में एक समान रहे, क्योंकि जिसके पास अपनी बुद्धि नहीं है, शास्त्र उसका क्या लाभ कर सकते हैं ? नेत्रविहीन को दर्पण से क्या लाभ ? देवता भी जिसकी सहायता करते हैं, वे लाठी लेकर उसके शत्रुओं को नहीं भगाते, अपितु उसे सद्बुद्धि देते हैं। आप सबने कहानी सुनी होगी—खरगोश एवं शेर की। एक छोटे से खरगोश ने शेर को कुएँ में कुदवाकर मारा डाला। यह उसकी बुद्धि एवं शेर की दुर्बुद्धि का ही प्रभाव था।



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इस ग्रंथ का नाम 'प्रज्ञा पुराण' इसीलिए रखा गया, क्योंकि जिस युग में भगवान ने जिस रूप में अवतार लिया है, व्यास जी ने उनकी लीलाओं का वर्णन कर उसका नामकरण भी उसी अवतार के आधार पर रखा है, जैसे—ब्रह्मपुराण, शिवपुराण, वराहपुराण, नृसिंहपुराण आदि। क्योंकि इस युग में बुद्धिभ्रष्ट लोगों को सद्मार्ग पर लाने के लिए प्रज्ञावतार की ही आवश्यकता है, अतः इस ग्रंथ का नाम 'प्रज्ञा पुराण' रखा गया है। आइए सुनते हैं, प्रज्ञा पुराण कथा तथा प्रज्ञा पुराण गीत।

**प्रज्ञा पुराण गीत**

ध्यान से सुन लो प्रज्ञा पुराण, दिव्य युगऋषि की वाणी रे।
दिव्य युगऋषि की वाणी रे, अखिल जग की कल्याणी रे॥
यही है इस युग की गीता, यही है संस्कृति की सीता।
मिटाती भेदभाव मन का, हटाती कल्मष है तन का॥
सुखी हो मानवता सारी, ऐसी सुख की कहानी रे।
ध्यान से सुन लो प्रज्ञा पुराण, दिव्य युगऋषि की वाणी रे॥

भारत देश धर्म प्रधान देश है। यहाँ व्रत-उपवास कथाओं का बहुत प्रचलन है। यह सब इसीलिए है कि मनुष्य इन कथाओं से आदर्श ग्रहण करके सच्चा इनसान बन सके। उसी परंपरा में आज यह कथा कही जा रही है। आज का विषय है—देवसंस्कृति जिज्ञासा। प्रज्ञा पुराण के चतुर्थ खंड के प्रथम अध्याय का शुभारंभ है यह कथा। क्या है यह देवसंस्कृति ? हमारी यह भारतीय संस्कृति ही देवसंस्कृति है। इसे देवसंस्कृति इसलिए कहा गया है क्योंकि यह मनुष्य में देवत्व का निर्माण करती है। जिस प्रकार खेत में ऊबड़-खाबड़ पौधों को निकालकर, काँट-छाँटकर सुंदर बनाया



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जाता है, उसी प्रकार मनुष्य की उच्छृंखल प्रवृत्तियों पर नियंत्रण कर उसमें दिव्य-गुणों का आरोपण किया जाता है, इस संस्कृति की यही विशेषता है। जिस प्रकार किसान बीज बोकर उसे सींचता है, उसी प्रकार पूर्वजन्म के संचित सुसंस्कारों को उपयुक्त वातावरण देकर मानव को सुसंस्कारी बनाना; त्याग, तपस्या, परोपकार जैसे दिव्य गुणों को विकसित कर मनुष्य को देवता बनाना, इस संस्कृति का उद्देश्य है।

'संस्कृति' शब्द का अर्थ है—वह कृति, वह कार्यपद्धति जो संस्कारयुक्त हो अर्थात शुद्ध की हुई, तपाई हुई संशोधित, बुराइयों से दूर, अच्छाइयों से भरपूर। इसमें 'भारतीय' शब्द जोड़कर इसे भारतीय संस्कृति कहा गया। इसका तात्पर्य यह नहीं कि यह संस्कृति केवल भारत के लिए है, अपितु इसका तात्पर्य यह है कि इसके जन्मदाता भारतीय ऋषि हैं। भारत इस संस्कृति की जन्मभूमि है। यहीं पर सबसे पहले ज्ञान का सूर्य उदित हुआ, जिसका प्रकाश सारे विश्व में फैल गया। यहाँ के ऋषियों ने देशकाल की सीमाएँ तोड़कर '**वसुधैव कुटुंबकम्**' का शंखनाद कर दिया। 'यह मेरा है, यह तुम्हारा' यह तो संकुचित दृष्टिकोण वाले व्यक्ति सोचते हैं, परंतु उदारचरित वाले मनुष्यों के लिए तो सारी पृथ्वी ही कुटुंब है। अतः समस्त विश्व का कल्याण चाहने वाली इस संस्कृति को विश्व द्वारा वरण कर लिया गया। '**सा प्रथमा संस्कृति विश्ववारा**' कहकर समस्त विश्व द्वारा इसे सम्मानित किया गया और यह विश्वव्यापी बन गई। हो सकता है, उस समय बहुत सी संस्कृतियाँ रही हों, परंतु विश्वव्यापी तो वही हो सकती है, जिससे किसी का विरोध न हो। अतः विदेशियों ने भी इसे सम्मानित किया।



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सिकंदर के गुरु अरस्तु ने सिकंदर से कहा था—"तुम भारत से दो चीजें लेकर आना—एक गीता तथा तथा भारत का एक संत।" सिकंदर ने भारत के संत दंडीस्वामी को जब बुलवाया तो उन्होंने आने से साफ मना कर दिया। उन्होंने कहा—"मेरा शहंशाह तो केवल एक परमप्रभु है। मैं किसी बादशाह को नहीं जानता।" सिकंदर आश्चर्यचकित रह गया, कैसे संत थे इस देश के, जो आध्यात्मिक ज्ञानसंपदा के समक्ष तीनों लोकों की संपदा को तुच्छ समझते थे। इन्हीं संतों के कारण यह भारतीय संस्कृति विश्ववंद्य हो गई थी।

भाइयो और बहनो जरा सोचो, आज क्या हो गया है हम लोगों को ? आज भारत की गौरवगरिमा कहाँ खो गई ? आज भारतवासी अपने को दीन-हीन समझकर सबसे अपमानित हो रहे हैं। आज भारत के वीरों की गाथाएँ केवल कथा-कहानी बनकर रह गई हैं। हमें भारत के गौरवमय इतिहास को फिर से लिखना होगा। युगद्रष्टा पं० श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने 'प्रज्ञा पुराण' चतुर्थ खंड के प्रथम अध्याय में महर्षि कात्यायन जी के माध्यम से अपने विचार प्रकट किए हैं और देवसंस्कृति व ब्रह्मविद्या के जागरण का शंखनाद किया है।

प्राचीनकाल में नदियों के पावन तट पर ऋषियों के आश्रम होते थे। ऐसा ही एक आश्रम था—महर्षि कात्यायन जी का, जहाँ के छात्र ब्रह्मविद्या प्राप्त कर लौकिक जीवन में सफल व समर्थ होते थे। उनकी प्रशंसा दूर-दूर तक फैली थी। उसे सुनकर दूर-दूर के विद्यालयों के आचार्य यह देखने आते थे कि वहाँ किस प्रकार शिक्षा दी जाती है ? आइए हम भी वहीं चलते



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हैं, जहाँ महर्षि कात्यायन के माध्यम से गुरुदेव भारतीय संस्कृति एवं ब्रह्मविद्या का संदेश दे रहे हैं—

**गुरुकुलेषु तदाऽन्येषु छात्रा आसंस्तु ये समे।**
**गुरुजनैः सह ते सर्वेऽप्यायाता द्रष्टुत्सुकाः॥**

—४/१/१

**तथ्यानि यानि संप्राप्य स्फुलिंग इव शक्तिमान्।**
**विकासं पूर्णमासाद्य जीवो ब्रह्म भवेद् ध्रुवम्॥**

—४/१/२०

हिमगिरि के मनोरम अंचल में, कात्यायन ऋषि का आश्रम था।
सततत्त्व की खोज में लीन जहाँ, ऋषियों ने किया तप और श्रम था॥
देश-विदेश के छात्र जहाँ, विद्या पढ़ने को आते थे।
चिंतन चरित्र व्यवहारकुशल बन, जीवन सफल बनाते थे॥
एक बार अन्य गुरुकुल के छात्र, आश्रम की प्रशंसा सुनकर के।
आए ऋषि के दर्शन के हित, और बोले शीश झुकाकर के॥
हे देव, आपके आश्रम में, हम दीक्षा लेने आए हैं।
जीवन का पूर्ण विकास करें, वह विद्या लेने आए हैं॥
यह मानव जीवन धन्य बने, कुछ ऐसी विद्या दान करें।
अपना भी हित होवे भगवन, और जग का भी कल्याण करें॥

***आश्रम में फिर शुरू हुआ, एक सप्ताह का सत्र।***
***दूर-दूर के छात्रगण, वहाँ हुए एकत्र॥***

'प्रज्ञा पुराण' कथा सुनने के लिए आए हुए नैष्ठिक साधको, चलिए हम लोग भी महर्षि कात्यायन के आश्रम में चलते हैं, जहाँ गुरुदेव देवसंस्कृति को प्राप्त करने का उपाय बता रहे हैं। हिमगिरि की शीतल छाया, प्रकृति



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

की सुरम्य गोद में बसा हुआ था, वह पवित्र गुरुकुल। वहाँ पर दूर-दूर के छात्र तथा गुरुजनों के आगमन का समाचार सुनकर महर्षि बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने सबके ठहरने की, भोजन की उचित व्यवस्था की और एक सप्ताह के सत्र की घोषणा कर दी। निश्चित समय पर महाप्राज्ञ के समक्ष सभी श्रोतागण एकत्रित हो गए, तब गुरुवंदना के पश्चात एक जिज्ञासु प्राचार्य ने खड़े होकर विनम्र स्वर में गुरुदेव से कहा—"हे महाप्राज्ञ ! हम लोग बहुत दूर-दूर से आपके आश्रम की प्रशंसा सुनकर आए हैं। आपके गुरुकुल से निकलने वाले स्नातक लौकिक जीवन में समर्थ व संपन्न होते हैं तथा आध्यात्मिक क्षेत्र में भी अपने उदात्त चरित्र, महान आचरण के कारण सबसे सम्मानित होते हैं, जबकि अन्य विद्यालयों में विद्यार्थियों को समस्त सुविधाएँ दी जाती हैं तब भी वे असफलता का रोना रोते रहते हैं, इसका क्या कारण है ? कृपया इस शंका का समाधान कीजिए।"

यह सुनकर महाप्राज्ञ अत्यधिक प्रसन्न हुए और शंका समाधान करते हुए बोले—"हे निष्ठावान जिज्ञासुओ ! आप लोग दूर-दूर से यहाँ आए हैं, हम आपका अभिनंदन करते हैं। आपका यह प्रश्न समय के अनुरूप तथा सबके लिए बहुत उपयोगी है। यह ठीक है कि इस समय बड़े-बड़े शहरों में विद्यालयों के बहुत सुंदर भवन बने हैं, उनमें हर प्रकार की सुविधाएँ भी हैं, किंतु केवल बाहरी ठाठ-बाट, कुरसी-मेज एवं अन्य सुविधाएँ तथा बाहरी साज-सज्जा का ध्यान रखना ही विद्याध्ययन के लिए पर्याप्त नहीं है, क्योंकि आपने सुना होगा—सुखार्थी को विद्या कहाँ तथा विद्यार्थी को सुख कहाँ ! सुख के इच्छुक व्यक्ति विद्या को छोड़ दें अथवा विद्या के अभिलाषी



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सुख की इच्छा न करें, तभी विद्या प्राप्त हो सकती है। आजकल विद्यालयों में छात्रों की सुख-सुविधाओं को ध्यान में रखकर जो शिक्षा दी जाती है, उससे छात्रों का सर्वांगीण विकास संभव नहीं है। इसके लिए प्राचीन गुरुकुल प्रणाली को ही अपनाना होगा।''

यह सुनकर महाविद्यालयों से आए हुए छात्रों को आश्चर्य हो रहा था। गरमी-सरदी-बरसात में पेड़ों के नीचे बैठकर छात्र कैसे पढ़ते होंगे ? इतनी सादगी से रहना और सब काम अपने हाथ से करना, इन्हें पढ़ने का समय भी कहाँ मिलता होगा? यह शंका लेकर प्रियव्रत नामक एक छात्र ने संकोच के साथ पूछ ही लिया—''हे महामनीषी ! गुरुकुल के कष्टसाध्य जीवन में पढ़ाई करना कितना मुश्किल है, फिर भी आप गुरुकुल प्रणाली अपनाने को कह रहे हैं, सुविधाओं के अभाव में पढ़ाई कैसे हो सकती है, हम यह जानना चाहते हैं?''

मुस्कराते हुए महामनीषी ने कहा—''हे तत्त्व जिज्ञासुओ! आप सब मेरी बात ध्यानपूर्वक सुनिए। घर में बालक दादा-दादी, नाना-नानी, माता-पिता तथा संबंधियों के साथ रहता है। सभी उसकी सब सुख-सुविधाओं का ध्यान रखते हैं, उन्हें कोई कष्ट नहीं होने देते। अत: उनके साथ रहकर त्याग-तपस्यामय सादा जीवन बिताने की आदत नहीं पड़ सकती। इसीलिए हमारे ऋषियों ने एक व्यक्ति की सौ वर्ष की आयु को चार आश्रमों में बाँटा था। प्रथम आश्रम में ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए २५ वर्ष तक गुरुकुल में रहने की व्यवस्था की थी। प्रत्येक जाति, वर्ण व समुदाय के लिए यह आवश्यक था। वह गुरुकुल या आश्रम में रहकर विद्याध्ययन करे, जिससे



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

घर के वैभव एवं विलासितापूर्ण जीवन से बाहर निकलकर त्याग, तपस्या तथा तितिक्षामय जीवन बिताने का अभ्यास कर सके। यह परंपरा प्राचीनकाल से चली आ रही है।''

त्रेतायुग में राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न को भी गुरुकुल भेजा गया था। राम तो राजा दशरथ की आँखों के तारे, अयोध्या के राजदुलारे थे। उन्हें किस वस्तु का अभाव था? घर पर ही कई-कई अध्यापक पढ़ाने के लिए आ सकते थे, किंतु सद्‌विद्या प्राप्त करने के लिए उन्हें वसिष्ठ ऋषि के आश्रम में भेजा गया, जहाँ पर वे साधारण छात्रों के साथ आश्रम की सफाई, लकड़ी लाना, गोपालन सब कुछ अपने हाथ से करते थे। **'गुरु गृह पढ़न गए रघुराई, अल्पकाल विद्या सब आई'** आपने सुना होगा। इतना ही नहीं, इसके पश्चात वे विश्वामित्र के साथ गए, जहाँ उन्होंने बला-अतिबला विद्या प्राप्त की। वहीं उन्हें वह शक्ति प्राप्त हुई कि वे ताड़का, सुबाहु ही नहीं, बल्कि रावण जैसे शक्तिशाली राक्षस का वध कर सके। **'निशिचर हीन करहु महि, भुज उठाय प्रण कीन्ह।'** यह शक्ति उन्हें गुरुकुल तथा गुरुकृपा से ही मिली थी।

द्वापर युग में संदीपन ऋषि का आश्रम कृष्ण सुदामा की मित्रता का प्रमाण है—**'कहाँ सुदामा वापुरो, कृष्ण मिताई जोग।'** इससे पता चलता है कि गुरुकुल में गरीब व धनी दोनों तरह के छात्रों को एक साथ रहकर एकसा जीवन बिताना पड़ता था। कहाँ नंद के दुलारे यशोदा की आँख के तारे कृष्ण-कन्हैया और कहाँ दीन-हीन सुदामा, परंतु दोनों लकड़ियाँ लेने एक साथ जाते और गुरुमाता उन्हें खाने के लिए चने दे देती



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

थीं। उस आश्रम की शिक्षा का ही यह प्रभाव था कि वे महाभारत के नायक बन सके। सुदामा के साथ भी मित्रता का पालन करने के लिए तीन मुट्ठी चावल के बदले तीन लोक दे डाले—

***देखि सुदामा की दीन-दशा, करुणा करके करुणानिधि रोए।***
***पानी परात को हाथ छुओ नहिं, नैनन के जल सों पग धोए॥***

एक ओर कृष्ण जैसे करुणानिधि एवं दानी, दूसरी ओर सुदामा जैसे निरीह निष्काम याचक। उन्होंने उस संपत्ति को गुरुकुल में लगा दिया। यह गुरुकुल की शिक्षा का ही परिणाम था।

इसके विपरीत उसी समय एक प्रमाण मिलता है, द्रोणाचार्य व कृपाचार्य का। उन्होंने गुरुकुल में नहीं, राजमहल में रहकर कौरव-पांडवों को धनुर्विद्या सिखाई थी, किंतु नैतिक शिक्षा न दे सके। पांडवों की नैतिक शिक्षा तो माता कुंती के द्वारा हो गई, किंतु कौरवों को शिक्षा माता-पिता भी नहीं दे सके। धृतराष्ट्र जन्मांध तो थे ही, पुत्रमोह में भी अंधे हो रहे थे और गांधारी माता ने भी आँखों पर पट्टी बाँध ली। अतः दुर्योधन बचपन से ही उद्दंड तथा अहंकारी हो गया। परिणाम हुआ महाभारत का युद्ध तथा कौरवों का विनाश। अतः आप लोग समझ सकते हैं कि गुरुकुल तथा घर की शिक्षा में क्या अंतर है?

गुप्तकाल में भी तक्षशिला, नालंदा जैसे विश्वविद्यालय थे। गुरुकुल की तरह ही छात्र वहाँ गुरु के निकट रहकर विद्याध्ययन करते थे। जहाँ चाणक्य जैसे निस्पृह आचार्य थे जो राज्यकार्य के लिए दीपक अलग जलाते थे तथा अपने कार्य के लिए दूसरा दीपक रखते थे। ऐसे तपस्वी



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आचार्य ही मुरा दासी के पुत्र चंद्रगुप्त को चक्रवर्ती सम्राट बना सके थे। उस समय चरक, वाग्भट्ट, सुश्रुत, धन्वंतरी जैसे ऋषि आयुर्वेद की शिक्षा देते थे तो हारीत, कणाद, पिप्पलाद ऋषि रसायन विद्या सिखाते थे। विश्वकर्मा, शतोधन मय वास्तुकला व शिल्पकला का विकास कर रहे थे तो वराहमिहिर ज्योतिष विद्या का तथा लीलावती गणित विद्या के प्रसार में लगे थे। व्यास महाभारत लिखकर शास्त्रीय परंपरा का निर्वाह कर रहे थे। पाणिनि-का आश्रम भाषा विज्ञान व्याकरण के लिए प्रसिद्ध था।

कपिल, कणाद, पतंजलि जैसे ऋषि दार्शनिक क्षुधा को तृप्त कर योग-साधना सिखाते थे। वसिष्ठ, शतानंद, शुक्राचार्य, विदुर जैसे तपस्वियों ने राजतंत्र का संचालन किया। महर्षि दधीचि तथा च्यवन आदि ऋषियों ने अंत:स्तल में छिपी शक्तियों को खोज, मानव का मार्गदर्शन किया।

बुद्धकाल में विक्रमशिला, औदतपुर, सोमपुरी, जगद्दल के विहार अध्यापन के केंद्र थे। राजा-महाराजाओं के द्वारा इन आश्रमों की अर्थव्यवस्था सँभाली जाती थी। मगधराज विम्बसार, कौशल नरेश प्रसेनजित, अवंति नरेश प्रद्योत, राजा उदयन, हर्षवर्द्धन आदि राजाओं ने इन बौद्ध विहारों को, संधाराम को चलाने में भरपूर सहयोग दिया, जहाँ मनुष्य त्याग-बलिदान-परमार्थ की विद्या को पाकर जीवन सफल बनाते थे।

यही कारण था कि प्रत्येक व्यक्ति चाहे जो भी काम करे, परंतु उसमें उसके चरित्र की महानता रहती थी। राजे-महाराजे भी तन-मन-धन अर्पित करने को तैयार रहते थे। राजा शिवि ने एक कबूतर के लिए अपने शरीर का मांस ही अर्पण कर दिया, दधीचि ने लोक-कल्याण के लिए



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अस्थिदान दे दिया, मोरध्वज ने पुत्र की बलि दे दी, राजा हरिश्चंद्र ने राज्य ही नहीं पुत्र और पत्नी को भी दाँव पर लगा दिया। पृथ्वीराज को मूर्च्छित देखकर संयमराम ने अपना मांस काटकर पक्षियों को खिला दिया, भामाशाह ने सारी संपत्ति राणा प्रताप को दे दी। भूखे रंतिदेव ने भोजन की थाली भूखे भिखारी को दे दी। सच तो यह है कि यह गुरुकुल प्रणाली मानव के व्यक्तित्व का निर्माण करने वाली थी। ये आश्रम और गुरुकुल ऐसी टकसाल थे, जहाँ मनुष्य ऋषि, संत, महामानव बनकर निकलते थे।

दुर्भाग्यवश मध्यकाल में सामंतशाही परंपरा शुरू हुई। देश विलासिता में डूब गया। राजा-महाराजाओं का जीवन सुख-सुविधाओं से परिपूर्ण हो गया। राजकुमार सोने के पालने में झूलने लगे। गुरुकुल परंपरा समाप्त हो गई। गुरु शिक्षक बन गए, नारी विलासिता का साधन। परिणाम भोग-विलास में डूबकर मनुष्य की मानवी संवेदनाएँ समाप्त हो गईं और मनुष्य का पतन हो गया।

सौभाग्य की बात है कि देश की आजादी के बाद फिर देश के महापुरुषों एवं महात्माओं का ध्यान इस ओर गया। इस परंपरा में रवींद्रनाथ टैगोर ने शांति निकेतन की स्थापना की। महात्मा गांधी ने बेसिक शिक्षा में स्वावलंबन को महत्त्व दिया तथा वर्धा आश्रम में 'सादा जीवन उच्च विचार' वाले व्यक्तियों का निर्माण किया। महामना मालवीय जी का हिंदू विश्वविद्यालय भारतीय संस्कृति का केंद्र बन गया। ऋषि दयानंद ने आर्य संस्कृति के पुनरुद्धार के लिए आर्य समाज को महत्त्व दिया। स्वामी हंसराज ने डी. ए. वी. कॉलेज द्वारा हिंदू संस्कृति का प्रचार-प्रसार किया



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

तथा गुरुकुल कांगड़ी एवं प्रभात आश्रम की स्थापना की। इसी परंपरा में आचार्य श्रीराम शर्मा द्वारा स्थापित शांतिकुंज, हरिद्वार में देवसंस्कृति विश्वविद्यालय की स्थापना की गई है, जहाँ गुरुकुल प्रणाली की परंपरा को पुनर्जीवित किया है। जहाँ विद्यार्थियों के निवास की पूर्ण व्यवस्था है। वास्तव में गुरुकुल का अर्थ है—गुरुगृहवास अर्थात गुरु के आश्रम में उनके समीप रहना। हर समय गुरु के समीप रहने के कई लाभ हैं। उनकी सेवा करने का सौभाग्य मिलता है, उनका आशीर्वाद मिलता है, उनके समीप रहने से अनुशासित जीवन व्यतीत करने की आदत हो जाती है, वहाँ के पवित्र वातावरण व भोजन से मन की उच्छृंखलता एवं कुसंस्कार दूर हो जाते हैं। गुरु की सेवा और उनकी कृपा से ही वह ब्रह्मविद्या प्राप्त होती है, जिसे पाकर मनुष्य ब्रह्मरूप बन जाता है।

गुरुदेव की अमृतमयी वाणी सभी को आश्चर्यचकित कर रही थी। एक जिज्ञासु ने सकुचाते हुए विनम्र स्वर में कहा—"हे महामते, जिस ब्रह्मविद्या को पाकर मनुष्य ब्रह्मरूप हो जाता है, हम उसे जानना चाहते हैं, वह विद्या क्या है ? कृपया बताने का कष्ट करें।"

**भद्रा ! जन्मना मर्त्यः पशुवृत्तियुतो भवेत्।**
**सञ्चितो व्यवहारो यो योनिषु स हि निम्नगः॥**

—४/१/२१

**संबद्धा सुविधाभिस्तु साफल्येन च या तु सा।**
**क्षेत्रस्य भौतिकस्यात्र शिक्षा प्रोक्ता मनीषिभिः॥**

—४/१/२६



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हे भद्रजनो! यह जीव जन्म से, पशुप्रवृत्ति का होता है।
चौरासी लाख योनि में भटक, यह अपनी गरिमा खोता है॥
जब भाग्य उदित होता इसका, यह मानव योनि पाता है।
फिर सद्गुरु से विद्या पाकर, नरपशु भी सुर बन जाता है॥
विद्या और शिक्षा का अंतर, हम आज तुम्हें समझाते हैं।
जो एक समझते दोनों को, वे मनुज कष्ट ही पाते हैं॥
शिक्षा मानव को, सामाजिक उन्नति का पाठ पढ़ाती है।
नर कैसे बने धनी मानी, उसका यह बोध कराती है॥
पर विद्या है जो सदा हमें, मुक्ति की ओर ले जाती है।
जीवन को बनाकर संस्कारी, अमृत का पान कराती है॥

***सा विद्या या विमुक्तये, कहते ऋषि महान।***
***विद्या से ही होता है, मानव का कल्याण॥***

यह प्रश्न सुनकर तत्त्वज्ञानी महर्षि ने मुस्कराते हुए कहा—"हे भद्रजनो, आपका यह प्रश्न समस्त विश्व के लिए कल्याणकारी है। आप सब मेरी बात ध्यानपूर्वक सुनें। बात यह है कि मनुष्य जन्म से पशुप्रवृत्ति का ही होता है। चौरासी लाख योनियों में भटककर सौभाग्यवश यह मानव योनि प्राप्त करता है, किंतु इसके पूर्वजन्म के संस्कार इसे अपनी तरफ खींचते रहते हैं और वह मानव की गरिमा को भूल जाता है। इन कुसंस्कारों को दूर करने के लिए सद्गुरु के सान्निध्य एवं उपयुक्त वातावरण की आवश्यकता होती है, क्योंकि वह जैसे वातावरण में रहता है, वैसा ही आचरण करता है। इसके लिए कहानी सुनाते हैं—एक किसान के बच्चे को एक भेड़िया उठाकर ले गया। वह आगरा के जंगलों में पाया गया था। वह भेड़ियों की



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तरह ही बोलता, खाता, पीता तथा चलता था। इसी प्रकार सियारों की मांद से एक बालक निकाला गया था। वह सियारों की बोली बोलता था, वैसे ही खाता था, उसके नाखून और बाल बढ़े हुए थे। वैसे भी आप देखते होंगे कि शिशु घर में जिस तरह का वातावरण देखता है वैसे ही बोलता, खाता, पीता, रहता और चलना सीख लेता है। गाँव व शहर के बच्चों में यह अंतर देखा जा सकता है।''

यह प्रभाव केवल मनुष्यों तक सीमित नहीं रहता। पशु-पक्षी भी वातावरण से प्रभावित होते हैं। एक व्यक्ति के पास दो तोते थे। एक का मूल्य ५ रु., दूसरे का ५० रु. था। किसी ने इस अंतर का कारण पूछा। उसने कहा—खरीदकर देख लो। उस व्यक्ति ने पहले ५ रु. वाला तोता खरीदा, उसके पिंजड़ा खरीदते ही तोते ने गालियाँ देनी शुरू कर दीं। मारो, काटो, पकड़ो, लूट लो आदि कहकर शोर मचाने लगा। दूसरे तोते को उसने खरीदा तो उसने राम-राम, आइए, पधारिए, सत्यं-शिवं-सुंदरम् तथा संस्कृत के श्लोक बोलने शुरू कर दिए। जब उस व्यक्ति ने उन दोनों तोतों के इस प्रकार बोलने का कारण पूछा तो शिकारी ने कहा—मैंने एक तोता ऋषि के आश्रम से पकड़ा है, दूसरा डाकुओं के अड्डे से। अत: वातावरण का प्रभाव सभी पर पड़ना अवश्यंभावी है। किसी समय में ऋषि आश्रम में मोर की छाया में सर्प विश्राम करते थे तथा शेर-बकरी एक घाट पर पानी पीते थे। अत: मनुष्य के पशुवत कुसंस्कारों को दूर करने के लिए ब्रह्मविद्‌गुरु जो विशेष ज्ञान देते हैं, उसे ही ब्रह्मविद्या कहते हैं। हे साधको, आपने पूछा है कि यह ब्रह्मविद्या क्या है ? यह अमृत विद्या वह पारसमणि है, जिसके सामने तीनों लोकों का राज्य भी तुच्छ है।



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

यही विद्या माँगी थी, नचिकेता ने यमराज से। उपनिषदों में कथा आती है कि नचिकेता के पिता वाजिश्रवा ने एक बहुत बड़ा यज्ञ किया। बहुत कुछ दान भी दिया, किंतु कंजूसी के कारण कुछ बूढ़ी गाएँ भी दान में दे दीं। नचिकेता को बहुत बुरा लगा और उसने कहा—"पिताश्री यह कैसा दान है ? दान में तो अच्छी और प्रिय वस्तुएँ देनी चाहिए।" पिता ने उसकी धृष्टता से अप्रसन्न होकर कहा—"प्रिय तो मुझे तू भी है, मैं तुझे दान देता हूँ।" नचिकेता ने कहा—"आप मुझे किसको दान देंगे ?" पिता ने क्रोध में कहा—यमराज को और नचिकेता चल दिया यमराज के पास।

तीन दिन तक वहाँ भूखा और प्यासा बैठा रहा। तीन दिन बाद यमराज को पता चला कि एक अतिथि तीन दिन से द्वार पर भूखा-प्यासा बैठा है तो बहुत दुखी हुए। उसे बुलाया और तीन वर माँगने को कहा। नचिकेता ने पहला वर क्या माँगा, आप जानते हैं ? उसने कहा—"मेरे पिता मुझसे अप्रसन्न हो गए हैं, आप मुझे यह वर दें कि मेरे पिता मुझसे प्रसन्न हो जाएँ।" जिस पिता ने उसे यमराज को दे दिया, वह उन्हीं की प्रसन्नता माँग रहा है, यह उस समय की पितृभक्ति का उदाहरण है।

यमराज ने कहा—"तथास्तु" अब दूसरा वर माँगो। नचिकेता ने दूसरा वर माँगते हुए कहा—"स्वर्ग व मुक्ति को प्राप्त करने का उपाय बता दीजिए।" यमराज ने उसे वह यज्ञ करने की विधि बताई, जिससे स्वर्ग व मोक्ष प्राप्त हो सकते हैं और उसका नाम नचिकेता यज्ञ रखा तथा उससे तीसरा वर माँगने के लिए कहा। नचिकेता ने तीसरा वर माँगते हुए कहा—"महाराज, आप सब कुछ दे सकते हैं तो मैं वह वस्तु आप से माँगता हूँ



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जिसे पाकर कुछ माँगने की इच्छा शेष नहीं रहती। मुझे ब्रह्मविद्या, आत्मज्ञान की अनमोल वस्तु दीजिए। मैं उसे ही पाना चाहता हूँ।"

यमराज आश्चर्यचकित होकर बोले—"अरे, यह क्या माँगता है तू? मैं तुझे लंबी आयु, सोने-चाँदी के भंडार, स्वर्ग का ऐश्वर्य, चक्रवर्ती राज्य सब कुछ दे सकता हूँ, अतः इस आत्मज्ञान की बात छोड़ और कुछ माँग।" किंतु नचिकेता ने कहा—"महाराज ! ये सब वस्तुएँ नश्वर हैं, इनसे तृप्ति नहीं होती, मुझे तो वही अनश्वर संपत्ति (आत्मज्ञान) ब्रह्मविद्या ही चाहिए। तब यमराज ने उसे ओ३म् नाम का वह अमृत पिलाया कि नचिकेता अमर हो गए।"

यही विद्या माँगी थी मैत्रेयी ने। याज्ञवल्क्य बहुत बड़े ऋषि थे, जब वे संन्यास लेने लगे तो उन्होंने अपनी सारी संपत्ति अपनी दोनों पत्नियों में बाँट दी। कात्यायनी तो चुप रही, परंतु मैत्रेयी ने कहा—"आप मुझे जो संपत्ति दे रहे हैं क्या इससे मेरा कल्याण होगा? आप इसे छोड़कर अमृत की खोज में जा रहे हैं, फिर मुझे इस दलदल में क्यों फँसाते हैं? मैं आपके साथ चलूँगी, उस अमृत की खोज में जहाँ आप जा रहे हैं।" मैत्रेयी को कल्याण मार्ग बतलाते हुए याज्ञवल्क्य ऋषि ने कहा था—"सब कुछ उस ब्रह्म को समर्पित करना ही ब्रह्मज्ञान है।" मैं क्या हूँ, कौन हूँ, यह संसार क्या है, यह सृष्टि कहाँ से आती है, कहाँ जाती है, इसका अंत कहाँ है, इसका सृजनहार कौन है? इस पर विश्लेषण करना ही आत्मज्ञान है।

यही ब्रह्मज्ञान जानने की इच्छा प्रकट की थी देवर्षि नारद ने। एक दिन भगवान कृष्ण के पास देवर्षि नारद गए और कहा—"यह ब्रह्मज्ञान क्या है?"



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भगवान ने कहा—"अच्छा, चलो घूमने चलते हैं, वहीं चलकर जवाब देंगे।" थोड़ी दूर चलकर भगवान ने कहा—"देवर्षि, प्यास लगी है, मैं यहाँ बैठता हूँ, थोड़ा जल ले आइए।" देवर्षि जल लेने गए तो देखा एक सुंदरी नदी से जल भर रही है। जैसे ही उसने घड़ा उठाया, पैर फिसल गया। देवर्षि ने दौड़कर उसे सँभाला और उसका घड़ा उठाकर उसे घर तक पहुँचाने गए। लड़की के पिता को जब पता चला कि यह नवयुवक कुलीन ब्राह्मण है तो अपनी पुत्री के विवाह की बात छेड़ी। प्रभु की माया के वशीभूत होकर नारद जी भी यही चाह रहे थे। अतः विवाह के पश्चात देवर्षि वहीं रहने को तत्पर हो गए।

अब नारद जी श्वसुर-गृह में रहकर कथा कहते। उनके एक बेटा भी हो गया। आनंदपूर्वक रह रहे थे कि एक दिन बाढ़ आई। पहले तो वह बेटे को बहाकर ले गई, फिर पत्नी उसे बचाने गई तो वह भी डूब गई। अब नारद जी पत्नी को बचाने चले तो वह भी डूबने लगे, तब बड़ी जोर से चिल्लाए—"हे भगवान बचाओ" और कहानी है कि तभी आँख खुल गई, देखा तो भगवान कृष्ण मुस्करा रहे हैं और कह रहे हैं—"देवर्षि आपके प्रश्न का उत्तर मिल गया न ? इस माया से छुटकारा पाना ही ब्रह्मज्ञान है।" इसी ब्रह्मज्ञान की शिक्षा वेदों व उपनिषदों में दी गई है। यह ब्रह्मज्ञान गुरुकृपा से ही प्राप्त होता है।

ब्रह्मविद्या के विषय में जानकर अध्यापक वर्ग भी आश्चर्यचकित हो रहे थे। यह ब्रह्मविद्या आज किस विद्यालय में सिखाई जाती है, यह जानने के लिए एक प्राध्यापक ने विनम्र स्वर में पूछा—"हे महाप्राज्ञ, अभी आपने



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कहा है कि यह ब्रह्मज्ञान ज्ञानी सद्गुरु के द्वारा ही प्राप्त होता है, शिक्षा के द्वारा नहीं, तो कृपया बताइए कि शिक्षा और विद्या में क्या अंतर है? हम सब यह जानना चाहते हैं।"

**शिक्षाऽप्यस्ति च सा नूनमनिवार्या तथाऽपि तु।**
**अपूर्णेव तथैकांगं विना विद्या-समन्वयात्॥**

—४/१/२७

**महत्त्वपूर्णो मन्तव्यो नरैः सर्वत्र सर्वदा।**
**नो चेन्न स सदाचारं व्यवहर्तुं क्षमो भवेत्॥**

—४/१/३४

है शिक्षा भी आवश्यक जो, नरपशु को सभ्य बनाती है।
पर बिना विद्या के यह शिक्षा, आधी अधूरी रह जाती है॥
शिक्षित होकर भी जो व्यक्ति, केवल अपना ही हित करते।
उनसे तो पशु ही अच्छे हैं, जो मानव के हित हैं मरते॥
लेकर खदान से लोहा ज्यों, भट्ठी में तपाया जाता है।
वैसे अनगढ़ नर को विद्या से, सुगढ़ बनाया जाता है॥
शिक्षा का और सद्विद्या का, सुमधुर मिलन यदि हो जाए।
फिर राग-द्वेष अहंकार छोड़, यह मनुज देवता बन जाए॥

***मानव जीवन सफल हो, मिले ज्ञान विज्ञान।***
***दोनों के संयोग से, जग का हो कल्याण॥***

यह जिज्ञासा सुनकर महामनीषी बहुत प्रसन्न हुए और कहने लगे—"हे जिज्ञासुओ, शिक्षा एवं विद्या में अंतर समझना आवश्यक है। अधिकांश व्यक्ति दोनों को एक ही समझते हैं और जीवन के उद्देश्य से भटक जाते



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

हैं। शिक्षा का अर्थ है—जानकारी को व्यापक बनाना, बुद्धि विस्तार करना। शिक्षा मनुष्य को लौकिक जगत की उपलब्धियाँ, धन-दौलत एवं सुख-सुविधाएँ देती है, किंतु विद्या मनुष्य का आत्मिक उत्थान करती है, मनुष्य को भोग-विलास से हटाकर उसे त्यागी, तपस्वी एवं परोपकारी बनाती है। दूसरे शब्दों में, शिक्षा मनुष्य को सभ्य बनाती है तथा विद्या सुसंस्कारी बनाती है। ये दोनों ही मनुष्य के लिए उपयोगी हैं किंतु विद्या को समाविष्ट किए बिना शिक्षा अधूरी है। बुद्धिहीन, दिशाहीन शिक्षा व्यक्ति को विनाश की ओर ले जाती है।"

ऐसी शिक्षा जो मनुष्य को केवल भौतिक चकाचौंध दिखाकर अनैतिकता की ओर ले जाती है, विनाश हेतु शस्त्र और बमों के निर्माण-कार्य में लगाती है, उसे विद्या नहीं कह सकते। आज की समस्याओं का सबसे बड़ा कारण यही है कि आज केवल शिक्षा दी जाती है जो मनुष्य के बंधन का कारण बन रही है, जबकि विद्या मुक्ति के लिए होती है—'**सा विद्या या विमुक्तये।**' शिक्षा मानव को नश्वर वस्तुओं की उपलब्धि कराती है जबकि विद्या अमरता की ओर ले जाती है।

आज की शिक्षा में श्रद्धा, समर्पण व विश्वास की भावनाएँ समाप्त हो रही हैं, जो शिष्य में होनी आवश्यक हैं। प्राचीनकाल में आरुणि, उपमन्यु जैसे छात्र होते थे, जो गुरु आज्ञा को पत्थर की लकीर मानकर उस पर अमल करते थे। आजकल अमल कौन करता है? एक कथावाचक ने जब यह कहा तो एक गाँव का व्यक्ति बोला—"जी मैं तो रोज अमल करता हूँ।" तुम किस बात पर अमल करते हो? तो वह बोला—"जी एक तो



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

रोज बीड़ी पीता हूँ और सुरती खाता हूँ, कभी-कभी बोतल भी चढ़ा लेता हूँ।'' पंजाब में अमल नशे को कहते हैं, बताइए ऐसे अमल से क्या लाभ?

आज आरुणि व उपमन्यु जैसे शिष्य कहाँ हैं ? आरुणि गुरु आज्ञा को मानकर मेंड़ बाँधने पर असफल हुआ तो स्वयं उस स्थान पर लेट गया और उपमन्यु ने गुरु आज्ञा मानकर भोजन छोड़ दिया। भूख लगने पर आक के पत्ते खाकर अंधा हो गया और कुएँ में गिर गया, परंतु गुरुकृपा से उसे फिर दिव्यदृष्टि मिली। एकलव्य को द्रोणाचार्य ने शिक्षा देने से मना कर दिया था। उसने द्रोण की मूर्ति बनाकर धनुर्विद्या सीखी, किंतु फिर भी गुरुदक्षिणा माँगने पर सीधे हाथ का अँगूठा दे दिया। आज वह निष्ठा समाप्त हो गई है। आज तो विद्या तोतारटंत विद्या बनकर रह गई है।

एक गुरु के आश्रम में बहुत से तोते थे। एक शिकारी ने देखा तो सोचा जाल बिछा दूँ, बहुत से तोते एक साथ मिल जाएँगे। गुरुजी ने देखा तो चिंतित हुए। उन्होंने तोतों को सिखाया—बहेलिया आएगा, जाल बिछाएगा—नहीं चुगेंगे-नहीं फँसेंगे, नहीं चुगेंगे-नहीं फँसेंगे, नहीं चुगेंगे-नहीं फँसेंगे। गुरुजी तो निश्चिंत हो गए। बहेलिये को भी कुछ चिंता हुई, पर एक दिन उसने जाल बिछा ही दिया। सभी तोते कह रहे थे—नहीं चुगेंगे-नहीं फँसेंगे और दाने के लालच में जाल में फँसते जा रहे थे। तोतारटंत विद्या से क्या लाभ हो सकता है? क्या पानी का नाम लेने से प्यास बुझ सकती है? क्या चीनी-चीनी कहने से मुँह मीठा हो सकता है?

***औषध के गुणगान से रोग दूर नहीं होए।***
***जो औषधि सेवन करे वही निरोगी होए॥***



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इसी प्रकार एक व्यक्ति ने पढ़ा 'सु' माने अच्छा, 'कु' माने बुरा। बस उसने 'कु' शब्द अपनी डिक्शनरी से बिलकुल निकाल दिया। बस 'सु' को याद कर लिया। किसी ने पूछा—"शादी करेंगे। शादी अर्थात ससुराल। वहाँ ससुरजी मिलेंगे, सासूजी मिलेंगी, चलो ठीक है। अब वहाँ पहुँचे तो उस जगह दामाद को कुंवर जी कहते थे। किसी स्त्री ने कहा—"अरे देखो, वे कुंवर जी आ गए।" उसने सुना 'कुंवर जी' तो बोला—"अरे कुंवर जी नहीं सुअर जी कहो सुअर जी।" बताइए ऐसी शिक्षा किस काम की ?

सच तो यह है कि इस समय वेदशास्त्रों की कौन कहे, कई तो रामायण-गीता भी पढ़ना पसंद नहीं करते। यदि पढ़ते भी हैं तो केवल पुण्यप्राप्ति अथवा किसी इच्छापूर्ति के लिए। एक व्यक्ति एक मंदिर में बहुत जोर-जोर से रामायण पाठ कर रहा था। एक संत बैठे हुए सुन रहे थे। बहुत प्रसन्न हो रहे थे कि इस समय भी ऐसे भक्त हैं। जब वह पाठ करके उठा तो उससे पूछा—"बेटा, राम के भक्त हो, क्या रोज पाठ करते हो ?" उसने उनके चरण छूकर कहा—"नहीं महाराज, रोज तो समय नहीं मिलता, मंगलवार को करता हूँ। आज कचहरी में पेशी है, जल्दी में हूँ, आकर बात करूँगा।" संत ने पूछा—"कचहरी में, क्या किसी से कोई मुकदमा चल रहा है ?" बोला—"हाँ, असल में मेरा छोटा भाई है न, उस दुष्ट ने मेरी चार गज जमीन दबा ली, आज उसकी पेशी है। जीत गया तो शाम को प्रसाद बाटूँगा।" यह कहकर वह तो चला गया, पर संत माथा पकड़कर बैठ गए। रामायण का पाठ कर रहा है, राम का चरित्र पढ़ रहा है और छोटे भाई पर चार गज जमीन के लिए मुकदमा। क्या लाभ है, ऐसे



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गीता-पाठ व रामायण-पाठ से, आप ही बताइए। कुसंस्कारी व बुद्धिहीन के लिए उपदेश व कथाएँ भी उलटी पड़ जाती हैं कहा भी है—

***सीख तो बाको दीजिए, जाको सीख सुहाय।***
***सीख न दीजे वानरा, घर बया का जाय॥***

एक बंदर सरदी में ठिठुर रहा था। बया ने कहा—"गरमी में घोंसला या घर बनाते तो इस समय क्यों परेशानी होती?" बंदर ने कहा—"अच्छा, मुझे उपदेश देती है, पहले तुझे ही ठीक करता हूँ।" यह कहकर उसका घोंसला तोड़ दिया। इसी प्रकार एक कथा है कि एक सेठ के तीन पुत्र व दो पुत्रियाँ थीं। सभी मूर्ख थे। एक विद्वान कथावाचक ने कहा—"इन्हें कथा सुनवाइए।" महाभारत की कथा सुनाई गई। एक लड़के ने कहा—"भगवान कृष्ण के १००८ रानियाँ थीं फिर भी गोपियों से रास रचाते थे तो क्या हम दो-चार भी नहीं रख सकते?" दूसरे ने कहा—"भगवान कृष्ण ने रुकमणि तथा अर्जुन ने सुभद्रा का अपहरण किया था तो हम किसी का अपहरण क्यों नहीं कर सकते?" तीसरे ने कहा—"भगवान होकर कृष्ण गोपियों का चीरहरण करते थे, हम तो केवल दुपट्टा ही खींचते हैं।" लड़कियाँ भी कुछ कम न थीं। एक ने कहा—"अरे द्रौपदी के पाँच पति थे।" दूसरी ने कहा—"कुंती के विवाह से पहले कर्ण हुआ था तो हम पर बंधन क्यों ?" यह सुनकर पंडितजी ने कहा—"बच्चों को कथा सुनाने के लिए प्रभावी वातावरण की आवश्यकता है।" सच तो यह है ज्ञान का सागर बहुत गहरा तथा विशाल है। इसे पाने के लिए सतत प्रयास की आवश्यकता है। अतः बच्चों को अच्छे संस्कार देने के लिए माता-पिता



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तथा गुरु सभी को पहले अपने आचार-विचार सुधारने की आवश्यकता है, तभी बच्चों को सुसंस्कारी बनाया जा सकता है।

विद्यालयों के छात्रों के साथ महामनीषी, प्राचार्य ऋतंभर भी आए हुए थे, जिनके हृदय में बच्चों को संस्कारवान बनाने की प्रबल इच्छा थी। वे बड़े ध्यान से गुरुदेव की अमृतवाणी का रसास्वादन कर रहे थे, वे अपने को रोक न सके। उन्होंने विनम्र स्वर में जिज्ञासा प्रकट करते हुए कहा—"हे भगवन, बच्चों को अच्छे संस्कार कैसे दिए जा सकते हैं ? इस विद्या को सीखने एवं सिखाने की विधि बताने की कृपा करें।"

**भद्र एष शुभारंभः पितृभ्यां मर्त्यजीवने।**
**निजे कृत्वा परिष्कारं विधातव्यो यथा च तत्॥**

—४/१/३७

**मनीषिणां महामर्त्यं देवदूतं समिष्यते।**
**संस्कृतेरिदमेवास्ति कार्यं मंगलदं नृणाम्॥**

—४/१/६४

है माता शिशु की प्रथम गुरु, शिशु माँ से शिक्षा पाता है।
फिर पिता, गुरुजन, संबंधी, उसके जीवन निर्माता हैं॥
पर मानवता का पूर्ण विकास, केवल सद्गुरु ही करते हैं।
जीने की राह दिखा मन में, नित नई उमंगें भरते हैं॥
शिशु है गीली मिट्टी समान, उसको जैसा साँचा मिलता।
जैसी शिक्षा मिलती उसको, वह वैसे साँचे में ढलता॥
यह कार्य शिक्षकों का है, वे छात्रों का नवनिर्माण करें।
वे संत सुधारक देवदूत बन, सब जग का कल्याण करें॥



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

***निर्माणों में अनुपम है, गुरु द्वारा निर्माण।***
***गुरुकृपा से होता है, मानव का कल्याण॥***

महाप्राज्ञ कात्यायन जी ने प्रसन्न मुद्रा में कहा—"हे महामनीषी ऋतंभर जी! आप अपने नाम के अनुरूप स्वयं ही प्रज्ञावान हैं, किंतु विश्व-कल्याण की दृष्टि से आपने यह प्रश्न पूछा है तो सुनिए—इस सुसंस्कारी विद्या का शुभारंभ जन्म के साथ ही होने लगता है। माता-पिता की जीवनचर्या का प्रभाव शिशु पर अवश्य पड़ता है। जैसा बीज होता है, वैसी ही पौध उगती है। बबूल का बीज बोकर, आम खाने की आशा नहीं की जा सकती।" सच तो यह है कि संतान को जन्म देने से पहले ही माता-पिता को अपनी मनोभूमि सुसंस्कृत कर लेनी चाहिए, तभी श्रेष्ठ संतान हो सकती है।

माता-पिता के पश्चात गुरु ही बालकों के व्यक्तित्व का निर्माण करते हैं। यह निर्माण केवल पाठ्य पुस्तकों के द्वारा नहीं हो सकता। इसके लिए छात्रों के सामने गुरु को अपने आदर्श प्रस्तुत करने की आवश्यकता है। इसीलिए प्राचीनकाल में गुरुकुल में गुरु के समीप रहकर छात्रों के जीवन का पूर्ण विकास होता था। वहाँ रहकर वे गुरुपत्नी में माता, गुरु में पिता तथा सहयोगियों में भाई-बहन का रूप देखते थे तो '**वसुधैव कुटुंबकम्**' की भावना उत्पन्न हो जाती थी।

बालक के व्यक्तित्व का निर्माण करने के लिए माता-पिता तथा गुरु को अपना आचरण ठीक रखना पड़ता है। एक बार गुरुदेव के आश्रम में एक महिला अपने बच्चे को लेकर गई—"गुरुदेव ! यह मिठाई बहुत खाता है, इसे समझाइए।" उन्होंने कहा—"एक सप्ताह बाद आना।" जब वह



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

एक सप्ताह बाद गई तो गुरुदेव ने कहा—"बेटे, मिठाई ज्यादा मत खाओ, नुकसान देती है।" महिला ने कहा—"यह बात तो आप पहले भी कह सकते थे।" उन्होंने कहा—"लेकिन कैसे कहता ? मैं तो स्वयं मिठाई ज्यादा खाता हूँ। इस सप्ताह मैंने मिठाई नहीं खाई, तब इससे कहा है।" हे भद्रजनो, शिक्षा देकर, पदवी दिलाकर वैभव संपन्न बनाना ही सद्‌गुरु अथवा देवसंस्कृति का उद्‌देश्य नहीं है। जन्म के पूर्व से लेकर मृत्युपर्यंत यह प्रक्रिया चलती है, तभी मनुष्य संत, देवता, ऋषि अथवा महामानव बनता है।

महाप्राज्ञ की वाणी सुनकर श्रोतागण चकित हो रहे थे। आधुनिक शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्र गुरुकुल के छात्रों को देखकर उन्हें गँवार, मूर्ख तथा गरीब घराने के समझकर उन्हें हीन दृष्टि से देख रहे थे, अब वे समझ रहे थे कि सचमुच ये छात्र ही विद्यार्थी कहलाने योग्य हैं, किंतु अभी भी उनके मन में एक शंका थी कि इस युग में मनुष्य केवल ब्रह्मविद्या प्राप्त कर भौतिक विज्ञान को जाने बिना सामाजिक व आर्थिक उन्नति कैसे कर सकता है ? अतः उन्होंने महाप्राज्ञ से इस शंका का समाधान करने की प्रार्थना की। महाप्राज्ञ ने उनकी शंका का समाधान करते हुए कहा—

**विज्ञानं भौतिकं लोके पदार्थस्य तदौजसः।**
**उपयोगं प्रशास्त्येव नियन्त्रणमथापि च॥**

—४/१/६५

**अतो विश्वस्तरेणेयं श्रेष्ठां याता च मान्यताम्।**
**निर्माति मानवं या तु देवं वै देवसंस्कृतिः॥**

—४/१/७०



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भौतिक विज्ञान है आवश्यक, ऊर्जा उपयोग है सिखलाता।
पर बिना प्रज्ञा के यह ज्ञान, कभी हानि भी है पहुँचाता॥
भौतिक विज्ञान के आविष्कार, मानव को सुखी बनाते हैं।
पर जब विध्वंस वे करते हैं, तो अभिशाप बन जाते हैं॥
यदि सृजन कार्य में लग जाएँ, तो वे वरदान बन सकते हैं।
फिर तो मानव के रोग-शोक, सब कष्टों को हर सकते हैं॥
विज्ञान और अध्यात्मवाद का, मधुर मिलन यदि हो जाए।
तो स्वार्थ-सुखों को छोड़ मनुज, परहित चिंतन में लग जाए॥

***धन की सुख सुविधाएँ हैं, भौतिकी का अनुदान।***
***सद्प्रज्ञा का जागरण, संस्कृति का वरदान॥***

शांतभाव से महामनीषी कहने लगे—"हे भद्रजनो, आपकी यह जिज्ञासा युग के अनुरूप है। समय परिवर्तनशील है और समय के साथ-साथ सभ्यता का विकास होता है। उसके लिए भौतिक ज्ञान ही नहीं, अपितु अन्य ज्ञानों का अध्ययन करना भी आवश्यक है। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि प्राचीनकाल में इस देश में आध्यात्मिक ब्रह्मविद्या के साथ-साथ भौतिक विज्ञान भी चरम सीमा पर था। विज्ञान मनुष्य को बाहरी सुख-सुविधाएँ प्रदान करता है तो आध्यात्मिक ज्ञान का वरदान है, प्रतिभा का सदुपयोग। ये दोनों ही मानव जीवन के लिए उपयोगी हैं, किंतु दोनों को समन्वित रूप में प्रस्तुत करना, मानव जीवन की विशेषता है। आध्यात्मिक ज्ञान का समावेश होने से ही वैज्ञानिक आविष्कार मानव के लिए उपयोगी हो सकते हैं।" इसलिए वैदिक ऋषि कहते हैं—



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

**विज्ञान सारथिर्यस्तु मनः प्रग्रहवान नरः।**
**सोऽध्वना पारमाप्नोति तद् विष्णोः परमं पदम्॥**

हे मनुष्य, विज्ञान को सारथि बनाकर आगे बढ़। जो ऐसा करता है, वह विष्णु का परमपद पाता है। अतः यह कहा जा सकता है कि जिस दिन धर्म एवं विज्ञान का मिलन हो जाएगा, उस दिन धरती स्वर्ग बन जाएगी। प्राचीनकाल में सुख-समृद्धि का यही रहस्य था कि मनुष्य विज्ञान के आविष्कार सृजन के लिए करते थे, विध्वंस के लिए नहीं।

इस समय विज्ञान की उन्नति आकाश को चूम रही है, मनुष्य चाँद और मंगल ग्रह पर पहुँच रहा है, पर यह प्राचीन भारत की उन्नति के समक्ष कुछ भी नहीं है। रामायण में वर्णित पुष्पक विमान की समता आज तक कोई विमान नहीं कर सका। उस पुष्पक विमान में राम के साथ पूरी सेना थी। रावण स्वयं वेदपाठी विद्वान था, किंतु बहुत बड़ा वैज्ञानिक भी था। उसने यज्ञानुष्ठान द्वारा वह सिद्धि प्राप्त की थी कि इंद्र, अग्नि, वायु, पृथ्वी सभी को उसने वश में कर रखा था, इसलिए कहा जाता था कि रावण ने देवताओं को कैद कर लिया था। कई बार विभीषण ने राम को बताया था कि यदि रावण अपना यज्ञ पूरा कर लेगा तो उसे कोई नहीं हरा सकता, इसलिए यज्ञ में बाधा डालो, अर्थात मंत्रशक्ति से चलने वाले आग्नेयास्त्र, वरुणास्त्र, पाशुपतास्त्र उस समय उपस्थित थे। रामायण काल में ऋषि विश्वामित्र ने राम को बला-अतिबला विद्या प्रदान की थी, जिसे आज तक कोई नहीं समझ पाया है। यह विद्या अनायास ही लव-कुश को मिल गई



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

थी। क्या इस समय कोई विद्या ऐसी है कि पिता की विद्या अनायास ही पुत्र को मिल जाए ? उस समय विज्ञान चरम सीमा पर था। मंत्रशक्ति से चलने वाले आग्नेयास्त्र, वरुणास्त्र, पाशुपतास्त्र—ये सब विज्ञान के चमत्कार नहीं तो क्या हैं ? क्या आधुनिक समय में मंत्र पढ़कर इन अस्त्र-शस्त्रों को चलाने की क्षमता किसी वैज्ञानिक में है ?

यह तो हुई त्रेतायुग की बहुत वर्ष पहले की बात। अब द्वापरयुग में महाभारत की बात सुनो। महाभारत में एक राजा का वर्णन है, जिसका नाम शांसु था। उसकी राजधानी हवा में उड़ती-फिरती थी। उस वायुयान में बाजार, दुकानें, होटल, सिनेमाघर, खेल के मैदान, अस्पताल, अदालतें, कार्यालय सब कुछ थे। राजा के मंत्री, पुलिस आदि सब इसमें रहते थे। यह वायुयान, भूमि, जल और आकाश सब जगह चल सकता था। इसका नाम था 'सौभ'। इसे 'सौभनगर' भी कहते थे। इस आफत जैसी राजधानी को लेकर इस राजा ने कृष्ण पर आक्रमण किया तो उन्होंने इसे समुद्र में डुबो दिया।

इसी प्रकार महाभारत में 'पाशुपत अस्त्र' का वर्णन आता है। जब भगवान कृष्ण ने देखा कि युद्ध अनिवार्य है तो उन्होंने अर्जुन को भगवान शिव के पास भेजा, उस अद्भुत अस्त्र को लाने के लिए। अर्जुन ने तपस्या द्वारा वह अस्त्र प्राप्त किया और भगवान शिव ने चलाने व लौटाने की विधि भी सिखाई, किंतु यह आदेश दिया था कि इस अस्त्र को केवल राक्षस या राक्षसवृत्ति वाले लोगों पर ही चलाना, अन्यथा यह अस्त्र तुम्हारा



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ही विनाश करेगा। इसी प्रकार 'नारायण अस्त्र' का नाम भी महाभारत में आता है, यह हथियार द्रोणाचार्य के पास था। इस हथियार के चलते ही सब शस्त्र व्यर्थ हो जाते थे। जब द्रोण ने यह अस्त्र चलाया तो भगवान कृष्ण ने कहा—"तुम सब अपने हथियार फेंककर सिर झुका दो, यही इस अस्त्र से बचने का उपाय है।" अतः आप सब बताइए क्या इस समय कोई वैज्ञानिक अपने गिराए बम को वापस बुला सकता है? या कोई ऐसा शस्त्र या बम है जो निरपराध व्यक्ति पर चलाने से, चलाने वाले को ही नष्ट कर दे ? नहीं है न, किंतु उस समय की यह विशेषता थी कि गुरुविद्या देते समय वचन लेते थे कि इनका दुरुपयोग मत करना। इसी ब्रह्मविद्या की आज आवश्यकता है कि ये आविष्कार मनुष्य के लिए कल्याणकारी बन सकें। आओ हम सब मिलकर उसी विज्ञान की रचना करें, जो मन में दैवी उल्लास भर सके।

## प्रज्ञा गीत

श्रद्धा, प्रज्ञा का संगम हो, विज्ञान हमें वह रचना है।
नभ में उड़ता है पंछी-सा, जल में रह लेता मछली-सा।
भू-गर्भ छेदकर दिखलाया, चंदा तक दौड़ लगा आया॥
हिल-मिलकर धरती पर रह ले, इनसान हमें वह रचना है॥
श्रद्धा.................................
दुर्भाव सताते हैं मन को, इसकी पीड़ा है जन-जन को।
मन का संताप मिटा दे जो, रोतों को सहज हँसा दे जो॥
जो सुधा प्रेम की बाँट सके, रस प्राण हमें वह रचना है॥
श्रद्धा.................................



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पशुता ने नर को लुभा लिया, मानव का गौरव भुला दिया।
पशुता पर अंकुश लगा सके, मानवता सबमें जगा सके॥
पदचिह्नों पर पीढ़ियाँ चलें, प्रस्थान हमें वह रचना है॥
श्रद्धा................................

संगीत मार्ग में भटक गया, सुर-असुर भाव में अटक गया।
जो आदर्शों को जगा सके, वाणी की गरिमा निभा सके॥
मन में दैवी उल्लास भरे, युग गान हमें वह रचना है।
श्रद्धा, प्रज्ञा का संगम हो, विज्ञान हमें वह रचना है॥
श्रद्धा................................

हे भद्रजनो ! तपस्या और विज्ञान के दुरुपयोग के अनेक उदाहरण पौराणिक कथाओं में मिलते हैं—महर्षि विश्वामित्र, ऋषि दुर्वासा क्रोधावेश में आकर जब किसी को शाप देते थे तो उनका तप नष्ट हो जाता था। इसी प्रकार एक कथा सुनिए—एक तपस्वी ने तपस्या की। तपस्या के बाद वह भिक्षा माँगने जा रहा था तो एक चिड़िया की बीट उसके सिर पर गिरी। क्रोधावेश में आकर उसने उधर देखा और कहा—"मर जा" और वह चिड़िया सचमुच मर गई। उसे अपनी तपस्या पर बड़ा गर्व हुआ। वह जा पहुँचा एक गृहस्थ के द्वार पर भिक्षा माँगने।

गृहस्वामिनी अपने पति व श्वसुर को भोजन करा रही थी। उसे भिक्षा लेकर आने में विलंब हुआ तो साधु ने क्रोध से कहा—"इतनी देर कर दी, जानती नहीं मैं कौन हूँ?" उस स्त्री ने कहा—"महाराज, क्रोध मत करिए, मैं चिड़िया नहीं हूँ, जो मर जाऊँगी।" साधु ने आश्चर्य से पूछा—



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

"तुम्हें चिड़िया की बात कैसे पता चली ?" उस स्त्री ने कहा—"मैं अपने पति व परिवार की सेवा करके अपना कर्त्तव्य पूरा करती हूँ, इसी से मुझे सिद्धि मिली है, पर आपकी तपस्या नष्ट हो गई है, आप जाकर पुन: तपस्या कीजिए।" वह साधु शरमिंदा होकर फिर तप करने चला गया।

पुराणों में भस्मासुर नामक राक्षस की कथा है। उसे भगवान शिव ने वरदान दिया कि वह जिसके सिर पर हाथ रखेगा भस्म हो जाएगा। उसने भगवान शिव को ही मारना चाहा, आज भी वही स्थिति सामने है। आज भी विज्ञान भस्मासुर की भाँति अपने बनाने वाले का ही विनाश करने को तत्पर है। इसलिए हे ऋषिगणो ! भारतीय संस्कृति इस समय कराह रही है, उसकी पुकार सुनो।

**प्रज्ञा गीत**

संस्कृति रही कराह, न मेरा रूप बिगाड़ो रे।<br>
अगर मनुजता को सँवारना, मुझे निखारो रे॥<br>
ऋषियों को सादा जीवन जीना था भाया।<br>
विश्ववंद्य 'ऊँचे विचार' से भारत कहलाया॥<br>
मन अपना प्रत्यक्ष देवता, उसे निखारो रे।<br>
न मेरा रूप बिगाड़ो रे॥<br>
ऋषि दधीचि ने जीवन देकर उसकी शान रखी।<br>
उसे बचाने बिके हरिश्चंद्र, शैव्या साथ बिकी॥<br>
भोगवाद के चक्कर में मत उसे बिसारो रे।<br>
न मेरा रूप बिगाड़ो रे॥



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इसे सँवारा अनसूया ने, कुंती मीरा ने।
शंकर, ज्ञानेश्वर, नानक, चैतन्य, कबीरा ने॥
भेदभाव से, ऊँच-नीच से इसे उबारो रे।
न मेरा रूप बिगाड़ो रे॥
युगधारा की दिशा बदलना आज जरूरी है।
संस्कृति के उत्थान बिना हर प्रगति अधूरी है॥
देवोपम संस्कृति से युग का रूप सँवारो रे।
न मेरा रूप बिगाड़ो रे॥
संस्कृति बची अगर तो मानवता बच जाएगी।
यदि न बची तो मानव में पशुता आ जाएगी॥
क्या पशुता स्वीकार विश्व को तनिक विचारो रे।
न मेरा रूप बिगाड़ो रे॥

इतिहास साक्षी है कि जब-जब मनुष्य ने अपने को विधाता मानकर अपनी प्रतिभा का दुरुपयोग किया, वह स्वयं नष्ट हो गया है। प्राचीनकाल में हिरण्याक्ष, हिरण्यकशिपु, रावण, दुर्योधन, कंस आदि का जो दुःखद अंत हुआ है, सब जानते हैं। प्राचीन पौराणिक कथाओं को छोड़िए, आज के युग में प्रत्यक्ष प्रमाण देखे जा सकते हैं। जलियाँवाला बाग में निरीह बालक, वृद्धों तथा बेकसूर व्यक्तियों की हत्या करने वाला जनरल डायर ऊधमसिंह की गोली से मरा। नागासाकी तथा हिरोशिमा पर बम फेंकने वाले प्रख्यात मेजर इथरली को अपने इस कुकृत्य से इतनी आत्मग्लानि हुई कि उसका मानसिक संतुलन बिगड़ गया और वह पागल होकर मृत्यु को प्राप्त हुआ।



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आज विश्व महाविनाश के कगार पर खड़ा है। प्रसिद्ध पाश्चात्य वैज्ञानिक आइंस्टीन जर्मनी के थे। परमाणु बम की खोज में इनका बहुत बड़ा हाथ था। दूसरे महायुद्ध में ये अमेरिका पहुँचे। वहाँ एटमबम को जन्म दिया। एक बार किसी ने उनसे पूछा—"बताइए तीसरे युद्ध में कौन-कौन से हथियार प्रयुक्त होंगे।" उन्होंने कहा था—"तीसरे युद्ध की बात छोड़ो, पर यदि चौथा युद्ध हुआ तो लोग ईंट-पत्थरों से ही लड़ाई लड़ेंगे।"

दूसरे महायुद्ध में कोलोन नामक नगर जर्मनी का सबसे बड़ा शिल्प केंद्र था। वहाँ बड़े-बड़े वायुयान, रॉकेट तथा बम तैयार किए जाते थे। जर्मनी के शत्रुओं ने उसे रातोंरात नष्ट कर दिया। बरतानिया से आकर बम बरसाने वाले बमों ने एक रात में उसका नामोनिशान मिटा दिया। वह श्मशान बनकर रह गया, परंतु इस समय तो हाइड्रोजन बम बन रहे हैं। बटन दबाने पर रॉकेट चलेंगे, विधाता की इस सुंदर सृष्टि को नष्ट करने के लिए न जाने क्या-क्या बन रहा है। ऐसा पाउडर बन रहा है कि हाथ से छूते ही शरीर के अंग गलने शुरू हो जाते हैं। काश, कोई वैज्ञानिक ऐसा आविष्कार करता कि बंजरभूमि उपजाऊ हो जाती, कोई ऐसी दवा बनती कि गूँगे बोल उठते, अंधे देखने लगते। कोई ऐसा पाउडर बनाता जिसे छूकर शारीरिक, मानसिक कष्ट दूर हो जाते। मन में सद्बुद्धि जाग उठती। मैडम क्यूरी ने रेडियम का आविष्कार बीमारी को दूर करने के लिए किया था, उनका नाम इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित है, किंतु आज ये प्रतिभाशाली वैज्ञानिक जो बुद्धि का दुरुपयोग कर रहे हैं, क्या इन्हें मानव कहा जा सकता है ? देवसंस्कृति इन आसुरी प्रपंचों से छुटकारा दिलाती है और उन्हें देवता बनाती है।



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आज भी यज्ञ करते समय '**ॐ अग्नये नमः, ॐ वरुणाय नमः**' आदि मंत्रों द्वारा आहुति देकर तुरंत ही कहते हैं—'**इदं अग्नये इदं न मम**' यह अग्नि के लिए है, मेरे लिए नहीं। वैदिक ऋषि प्रकृति को माँ कहते थे और प्रकृति भी उन्मत होकर मुक्त हाथों से धन-धान्य की वर्षा करती थी। जब माँ की पूजा की जाती है तो माँ के वरदान बरसते हैं, किंतु यदि कोई पुत्र माता का शोषण करे, उसे प्रताड़ित कर उपभोग की वस्तु बना ले तो उसका अपराध अक्षम्य ही होगा, इसीलिए आज प्रकृति माता भी रुष्ट हो गई है। एक ओर विज्ञान के आविष्कार अभिशाप बनकर संसार को नष्ट कर रहे हैं तो दूसरी ओर प्राकृतिक विपदाएँ—भूचाल, बाढ़, अतिवृष्टि, अनावृष्टि आदि संसार का विनाश करने पर लगे हुए हैं। अतः आवश्यकता इस बात की है कि विज्ञान और अध्यात्मवाद का मधुर मिलन हो जाए तो ये आविष्कार सृजन के लिए हों, विनाश के लिए नहीं। ये विज्ञान के आविष्कार अभिशाप नहीं, वरदान बन सकते हैं।

इसलिए हे भद्रजनो, हम विज्ञान की निंदा नहीं करते। प्राचीनकाल में विज्ञान अपनी चरम सीमा पर था, परंतु विज्ञान के आविष्कार यदि मनुष्य की सुख-शांति को नष्ट कर दें, चाँद की ऊँचाई को छूकर भी मानव नरक में भी जगह न पा सके तो उससे क्या लाभ ? अतः आवश्यकता इस बात की है कि इस विज्ञान को आध्यात्मिकता के रंग में रँग दो। माया को सोम-सविता के प्रकाश से प्रकाशित कर दो। मनुष्य की भाव-संवेदनाओं की गंगोत्तरी जो सूख गई है, उसे प्रवाहित कर दो। जरा सोचो, संहार कितना सरल है, उसे तो एक छोटी सी कील भी कर सकती है, किंतु सृजन कितना कठिन है, इसे तो बनाने वाला ही जानता है। आर्थिक उन्नति बुरी नहीं है।



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष के चार फलों में अर्थ धर्म के साथ जुड़ा बैठा है। बुरा है अनैतिकता से धन कमाना, उसका दुरुपयोग। अतः हे नवयुग के सृजन सैनिको ! संसार तुम्हारी तरफ आशा भरी दृष्टि से देख रहा है। इसलिए कहा गया है—

**धर्म और विज्ञान का मिलन**

सही रूप उभरेगा उस दिन, मानव के उत्थान का।
जिस दिन होगा मिलन विश्व में, धर्म और विज्ञान का॥
परंपराओं की तुलना में, तब विवेक ही वंदित होगा।
रूढ़िवाद की रात्रि मिटेगी, नव प्रभात अभिनंदित होगा॥
गूँजेगा सहगान मानवी, शक्ति और सद्ज्ञान का।
जिस दिन होगा मिलन विश्व में, धर्म और विज्ञान का॥
रंग वर्ग जातीय भेद की, टूटेंगी ओछी दीवारें।
नहीं साम्य का हनन करेंगी, संप्रदाय की विषम कगारें॥
जागेगा देवत्व देह धर, तोड़ कवच पाषाण का।
जिस दिन होगा मिलन विश्व में, धर्म और विज्ञान का॥
दिशाहीन उन्मत्त न होगी, भौतिकता की सिद्धि अधूरी।
तय कर लेगा विकसित जीवन, आध्यात्मिक मंजिल की दूरी॥
होगा सदुपयोग मंगलमय, हर विभूति अनुदान का।
जिस दिन होगा मिलन विश्व में, धर्म और विज्ञान का॥
स्वार्थ नहीं परमार्थ बनेगा, चरम लक्ष्य जग में जन-जन का।
ईर्ष्या, द्वेष, कलह, हिंसा से, कलुषित क्षेत्र न होगा मन का॥
परिमार्जन पुरुषार्थ करेगा, बिगड़े भाग्य विधान का।
जिस दिन होगा मिलन विश्व में, धर्म और विज्ञान का॥



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

स्वस्थ्य सृजन का प्रेरक होगा, श्रद्धा और तर्क का संगम।
बुद्धि-हृदय मिलकर छेड़ेंगे, वाणी की सुंदरतम् सरगम॥
निखरेगा हर एक कला में, रूप नए इनसान का।
जिस दिन होगा मिलन विश्व में, धर्म और विज्ञान का॥

श्रोतागण तन्मय होकर महाप्राज्ञ की वाणी का रसामृत पान कर रहे थे। भारतीय संस्कृति की गरिमा सबकी समझ में आ रही थी। साथ ही सभी श्रोतागण विद्या के महत्त्व को समझकर उसे पाने को उत्कंठित हो रहे थे। उनकी समस्त शंकाओं का निराकरण हो गया था। मन में एक जिज्ञासा शेष थी, इसे विश्वव्यापी कैसे बनाएँ? अत: एक जिज्ञासु ने पूछा—"हे महामते, कृपया यह बताइए कि हमारे ऋषियों ने इसे विश्वव्यापी कैसे बनाया था? हम इसे विश्व में कैसे फैला सकते हैं?"

**कल्याणकारिणी नूनमद्वितीयैव विद्यते।**
**देवसंस्कृतिरित्यर्थं मानवं तत्प्रपञ्चत:॥**

—४/१/७६

**संरक्ष्य च सुरौपम्य विकासप्रेरणां तथा।**
**विधिं देवोपमं लोके यच्छतीह निरन्तरम्॥**

—४/१/७७

है अमर हमारी देवसंस्कृति, जो अमृत की वर्षा करती।
जो मृतक तुल्य जीवन जीते, उनमें नव चेतनता भरती॥
करती जो कायाकल्प मनुज का, देवसंस्कृति कहलाती है।
नरपशु को मानव, मानव को ऋषि देव समान बनाती है॥
इस देवसंस्कृति ने जग को, सुख-शांति का वरदान दिया।
'वसुधैव कुटुंबकम्' महामंत्र का, सारे जग में गान किया॥



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्यार की ज्योति जगा इसने, सब जग को नूतन ज्ञान दिया।
सा प्रथमा संस्कृति विश्ववारा, कह सबने इसे सम्मान दिया॥

*यदि चाहते हो बने, संतति उच्च महान।*
*तो अभिभावक बन उसे, दो संस्कृति का ज्ञान॥*

महाप्राज्ञ सत्र की सफलता पर बहुत प्रसन्न थे। उन्होंने प्रेरणाप्रद वाणी में कहा—"हे नवयुग के सृजन सैनिको, छात्र ही राष्ट्र के भाग्य विधाता होते हैं और आचार्य ही छात्रों के निर्माता होते हैं। भारतीय संस्कृति के विश्वव्यापी होने का श्रेय यहाँ के आचार्यों, ऋषियों व उनके शिष्यों को ही दिया जा सकता है, क्योंकि जिनका चरित्र उज्ज्वल हो, जिनका चिंतन श्रेष्ठ हो, जो त्यागी व तपस्वी हों, वे ही दूसरों के चरित्र का निर्माण कर सकते हैं। भारत की उन्नति तथा गौरव-गरिमा में ऋषियों की महानता का इतिहास छिपा पड़ा है।"

भारत के ये लोकसेवी परिव्राजक संत हिमालय की गंगोत्तरी से निकलने वाली गंगा की पावन जलधारा के समान शुष्क प्रदेशों को सींचने के लिए अपना घर छोड़कर दूर-दूर के देशों में गए और वहाँ के ही बनकर रह गए।

जैसे बादल समुद्र से जल लेकर शुष्क धरती को तृप्त करते हैं, वैसे ही इस देश के संत, ऋषि, आचार्य जिस स्थान पर जाते थे, वहाँ वे केवल पूजा-पाठ ही नहीं करते थे, वहाँ की आवश्यकतानुसार कार्यपद्धति को अपनाकर उनकी समस्याओं का समाधान करते थे। '**वसुधैव कुटुंबकम्**' की भावना से प्रभावित ये संत विश्व के कोने-कोने में गए। इन प्रचारकों ने सुदूर देशों की सामंतशाही को हटाकर सुशासन की व्यवस्था की, वहाँ इन्हें चक्रवर्ती सम्राट कहकर सम्मानित किया गया। जहाँ संपत्ति के अभाव



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

में दरिद्रता का साम्राज्य था, वहाँ कृषि, पशुपालन, शिल्प उद्योग धंधों की सुव्यवस्था की, इस कारण उन्हें भूदेव कहा गया। अशिक्षा और अविद्या से छुटकारा दिलाकर जग को आत्मज्ञान का प्रकाश दिया, जिसके कारण भारत को 'जगद्गुरु' की उपाधि मिली। वे जहाँ भी पिछड़ापन देखते थे, वहीं उसे मिटाने के लिए डट जाते थे। वे अपने को मिटाकर भी दूसरों का कल्याण करते थे। इसका विवरण इतिहास के पृष्ठों में भरा पड़ा है।

भारतीय ऋषि अपने शिष्यों को भी धर्मसंस्कृति, देवसंस्कृति के प्रचार-प्रसार के लिए देश-विदेशों में भेजते थे। जिस देश में जाना होता था, वहाँ की भाषा, ज्ञान, संस्कृति, भौगोलिक स्थिति तथा यात्रा की कठिनाइयों की पूर्ण जानकारी देकर भेजा जाता था। इस प्रशिक्षण के लिए अध्यापन केंद्र भी थे, जिन्हें विहार कहा जाता था। ये संस्थाएँ आश्रम व गुरुकुल की भाँति ही होती थीं। विक्रमशिला, नालंदा, औदतपुर आदि १०८ प्रशिक्षण केंद्र थे, जिनका संचालन ये आचार्य व ऋषि करते थे। सुवर्णद्वीप (सुमात्रा) तथा तिब्बत इनके कार्यक्षेत्र थे। इस समय भी गुरुकुल तथा देवसंस्कृति विश्वविद्यालय हरिद्वार और गायत्री तपोभूमि में इसका प्रशिक्षण दिया जा रहा है। देवसंस्कृति के प्रचार-प्रसार का यह विवरण केवल पुराणों में ही नहीं है, अपितु पाश्चात्य विद्वानों ने भी यह स्वीकार किया है कि भारत ने विश्व को अजस्र अनुदान दिए हैं। प्रो० ट्रेलर ने अपने ग्रंथ 'ओरिजन ऑफ आर्यन्स' में इसका विशद विवेचन किया है। 'ऋग्वैदिक इंडिया' में भी इस कथन की पुष्टि की गई है। प्रो० हीरन ने चीन को भारत का ही विकास-विस्तार कहा है।



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्राचीनकाल में ही नहीं, इस समय भी अनेक विदेशी विद्वानों ने इस देवसंस्कृति व भारतभूमि के प्रति अपनी असीम श्रद्धा व्यक्त की है। मैक्समूलर, कामिल बुल्के, डॉ० विल्सन जैसे अनेक उदाहरण प्रस्तुत किए जा सकते हैं।

विदेशों की प्रतिभाशाली नारियाँ भी इस देवसंस्कृति से प्रभावित होकर यहाँ आई हैं। मिस स्लैड यहाँ मीराबेन बनकर गांधीजी के साथ रहीं। भगिनी निवेदिता बनकर मिस मारगेट स्वामी विवेकानंद के साथ यहाँ आईं। उनकी सेवाओं को भुलाया नहीं जा सकता। श्रीमती ऐनीबेसेंट लंदन में जन्मी थीं, उन्होंने यहाँ आकर सेंट्रल हिंदू विश्वविद्यालय की नींव डाली, जिसे बाद में महामना जी ने सँभाला। मदर टेरेसा ने भारत में रहकर जो सेवाएँ की हैं, वे विश्वविख्यात हो गई हैं। फ्रांसीसी दार्शनिक लुई ने भाव भरे शब्दों में कहा है—हे मानव जाति के आदर्शों की पोषक भारतभूमि! तुझे शत-शत प्रणाम।

आओ हम सब भी अपने प्यारे देश की उन्नति की कामना करते हुए भगवान से प्रार्थना करें कि हमारा प्यारा देश फिर से समुन्नत हो।

**गीत**

भारतवर्ष हमारा प्यारा, अखिल विश्व से न्यारा।
सब साधन से रहे समुन्नत, भगवन देश हमारा॥
ब्रह्मतेज युक्त साधक हों सब, सदा लोक हितकारी।
क्षात्र धर्म रक्षक हो सबका, बने न्याय व्रतधारी॥
प्रकृति हमारी गौ बनकर दे, मधुर सरस पय धारा॥
भारत................................



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वृषभ तुल्य बलवान सभी हों, श्रम फिर गौरव पाए।
अश्वों के संचार साधनों में, विद्युत गति आए॥
घटें दूरियाँ सभी, सभी को, देते रहें सहारा॥
भारत.................................

देवी जैसी बनें नारियाँ, शक्तिवती गुण आगर।
नर रत्नों की हों खदान घर, विकसित हों नर-नागर॥
जिनकी गुण गाथा से गूँजित, दिगदिगंत हो सारा॥
भारत.................................

यज्ञ निरत भारत के सुत हों, शूर सुकृत अवतारी।
सभ्य, सुसंस्कृत कर्मशील हों, गुणी सरल सुविचारी॥
वही बनेंगे फिर नवयुग के, पावन सुदृढ़ सहारा॥
भारत.................................

प्रकृति बने माँ, ऋतुएँ दें, अनुदान समय पर सुंदर।
खनिज, अन्न, फल, औषधियाँ, सब मिलें प्रचुर हों सुखकर॥
योग हमारा, क्षेम हमारा, स्वतः सिद्ध हो सारा॥
भारत.................................

देवसंस्कृति की गौरव-गरिमा का वर्णन करते-करते महाप्राज्ञ भाव-विभोर हो गए। उनका कंठ अवरुद्ध हो गया, उन्होंने भाव भरे शब्दों में सबको संबोधित करते हुए कहा—"हे देवसंस्कृति के उपासको, ब्रह्मविद्या के जिज्ञासुओ, पूज्य गुरुदेव के प्रज्ञापुत्रो! आओ हम सब भी अपनी इस पुण्यभूमि को शत-शत नमन करते हुए इस देवसंस्कृति के प्रसार-प्रचार का संकल्प लें। हे अमृत संतानो! बहुत गहरी नींद में सो चुके हो। भारतमाता ही नहीं सारा विश्व तुम्हारी ओर आशा भरी दृष्टि से देख रहा है, अभी कुछ ही समय पूर्व एक महान संत स्वामी विवेकानंद कितने कष्ट उठाकर



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अमेरिका गए थे और उन्होंने वहाँ धूम मचा दी थी। इस समय तो आवागमन के साधन इतने सुलभ हो गए हैं कि मनुष्य कहीं भी सरलता से पहुँच सकता है। इसलिए उठो, जागो और इस देवसंस्कृति के प्रचार के लिए संकल्पित होकर निकल पड़ो।''

हे नवयुग के सृजन सैनिको ! अत्याचार, अनैतिकता, आतंकवाद का दमन करने के लिए तुम परशुराम बनकर जागो, राष्ट्रहित संपदा अर्पित करने के लिए भामाशाह बन जाओ, संस्कृति को विश्वव्यापी बनाने के लिए विवेकानंद, आर्य परंपरा को पुनर्जीवित करने के लिए ऋषि दयानंद बनकर आगे बढ़ो। माताओ और बहनो ! आज सत्यनिष्ठ व्यक्ति भटक रहा है। उस सत्यवान को बचाने के लिए तुम सावित्री बनकर अनैतिकता के यमराज से उसकी रक्षा करो। पति को सत्यवान एवं पुत्र को विवेकानंद बनाने का संकल्प लो। आसुरी संस्कृति का प्रभाव सबको पथभ्रष्ट कर रहा है, इससे टक्कर लेने के लिए लक्ष्मीबाई का रूप धारण कर इस आसुरी संस्कृति से टक्कर लो। यदि तुम लोग जाग उठो तो मंदिर, मसजिद, गुरुद्वारे जाग उठेंगे और भारत फिर उसी जगद्गुरु की उपाधि को प्राप्त कर सकेगा।

हे अमृत संतानो ! देखो विश्वासों के दीप जलाकर माँ तुम्हें पुकार रही है। सदियों से प्यासी है, यह धरतीमाता। इसे रक्त-रंजित होने से बचाकर इसे प्यार के अमृत से सींच दो। इसे प्रकाश से आलोकित कर दो।

तुम्हारे कर्मयोग का मार्ग प्रशस्त है। इस समय विश्व के कोने-कोने में गायत्री परिवार के प्रज्ञापुत्र, गायत्री शक्तिपीठ, आर्यसमाज मंदिर, गुरुद्वारे



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बना-बनाकर इसके प्रचार में लगे हैं। अमेरिका, कनाडा, यूरोप, एशिया, अफ्रीका, आस्ट्रेलिया—विश्व के कोने-कोने में यह ज्ञान ज्योति जलाने का प्रयास गायत्री परिवार द्वारा किया जा रहा है। तुम भी इसमें सहयोगी बनो। विज्ञान के सारथि बनकर उसे आध्यात्मिक रंग में रँग दो। देखो, गीता में सारा ज्ञान, उपदेश देने के बाद भी कहा है—

**यत्र योगेश्वरः कृष्णः यत्र पार्थो धनुर्धरः।**
**तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम॥**

"जहाँ योगेश्वर कृष्ण हैं, जहाँ धनुर्धारी अर्जुन हैं, जहाँ ये दोनों मिलकर काम करते हैं वहाँ शोभा, विजय तथा संपत्ति निश्चित रूप से रहती है, यह मेरी सम्मति है।"

ये योगेश्वर कृष्ण हैं—अध्यात्मवाद, धनुर्धारी अर्जुन हैं—मायावाद। ये दोनों ब्रह्मशक्ति तथा क्षात्रशक्ति हैं। जहाँ दोनों का मिलन होता है, वहाँ व्यक्ति का कल्याण, देश का कल्याण, विश्व का कल्याण होता है, यह निश्चित है। अतः नवयुग के सृजन सैनिको! आओ, इस युग निर्माण की शुभ वेला में मिलकर संकल्प लो। भारतीय संस्कृति के पुनरुत्थान में सहयोगी बन जाओ। आने वाली पीढ़ियाँ तुम पर गर्व करेंगी। ईश्वर तुम्हारी सहायता करे।

**इति श्रीमत्प्रज्ञा पुराणे ब्रह्मविद्याऽऽत्मविद्ययोः, युगदर्शनयुगसाधनाप्रकटीकरणयोः, श्री कात्यायन ऋषि प्रतिपादिते 'देवसंस्कृति जिज्ञासा' इति प्रकरणो नाम प्रथमोऽध्यायः॥ १॥**

## आरती श्री प्रज्ञा पुराण की



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ॐ श्री गुरवे नमः

# प्रज्ञा पुराण कथामृतम्

## द्वितीय दिवस

## वर्णाश्रम धर्म प्रकरण

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

### गुरु वंदना

एक तुम्हीं आधार, सद्गुरु एक तुम्हीं आधार॥
जब तक मिलो न तुम जीवन में, शांति कहाँ मिल सकती मन में।
खोज फिरा संसार, सद्गुरु एक तुम्हीं आधार॥
सद्गुरु............................
कैसा भी हो तैरनहारा, मिले न जब तक शरण सहारा।
हो न सका उस पार, सद्गुरु एक तुम्हीं आधार॥
सद्गुरु............................
हम आए हैं द्वार तुम्हारे, अब उद्धार करो दुःखहारे।
सुन लो करुण पुकार, सद्गुरु एक तुम्हीं आधार॥
सद्गुरु............................
हे प्रभु ! तुम ही विविध रूपों में, हमें बचाते भव कूपों से।
ऐसे परम उदार सद्गुरु, एक तुम्हीं आधार॥
सद्गुरु............................
छा जाता जग में अँधियारा, तब पाने प्रकाश की धारा।
आते तेरे द्वार सद्गुरु, एक तुम्हीं आधार॥
सद्गुरु............................
जब दुःख पाते भटक-भटक कर, तब आते हैं भूल-भटक कर।
एक तुम्हारे द्वार, सद्गुरु एक तुम्हीं आधार॥
सद्गुरु............................



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

*(समय को देखते हुए प्रज्ञा गीत तथा कीर्तन किया जा सकता है।)*

*(प्रथम दिवस की भाँति कथाव्यास द्वारा प्रज्ञा पुराण का पूजन।)*

आदरणीय आत्मीय परिजनों, देवी स्वरूपा बहनो एवं देवतुल्य भाइयो! इस 'प्रज्ञा पुराण' कथा में आप सभी का स्वागत है। आप इतनी दूर से कष्ट उठाकर कथा सुनने आए हैं, हम आप सबका अभिनंदन करते हैं। यह कथा पूज्य गुरुदेव पं० श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा रचित है। हम तो उनके संदेशवाहक बनकर इस कथा के माध्यम से उनका संदेश सुनाने के लिए यहाँ पर आए हैं। इस कथा में कोई त्रुटि हो तो इसे हमारा प्रमाद समझकर क्षमा करें और जो अच्छा लगे उसे पूज्य गुरुदेव का प्रसाद समझकर जीवन में धारण करने का प्रयास करें, तभी कथा का सुनना सार्थक है। एक पंडितजी ने चौबीस बार कथा कही। कथा में भीड़ बढ़ती जाती थी, खूब चढ़ावा आता था, उनका लालच बढ़ता ही चला गया। अत: वे कथावाचक होकर भी पुण्य प्राप्त नहीं कर सके। एक डाकू ने वाल्मीकि की कथा सुनी। उसने सोचा कि ठीक ही तो है, मैं भी किसके लिए पापकर्म करता हूँ, मैं दुष्कर्म क्यों करूँ ? यह सोचकर वह डाकू से पुजारी बन गया। अत: आप भी कथा से सार ग्रहण कर उसे जीवन में अपनाएँ, तभी कथा का लाभ है।

आज कथा का दूसरा दिन है। आपको कल देवसंस्कृति के विषय में बताया था, वह संस्कृति जो विश्व द्वारा वरण की गई थी। क्या विशेषता थी इस संस्कृति में, क्या वह इसलिए पूज्य थी कि यहाँ के व्यक्ति बहुत पूजा-पाठ करते हैं या यहाँ पर बहुत से मंदिर-देवालय हैं। नहीं, इस संस्कृति के विश्ववारा होने का कारण यह था कि यहाँ ज्ञान-कर्म-भक्ति की त्रिवेणी वैदिककाल से लेकर अब तक अविरल बह रही है और अभी भी जनमानस को आप्लावित कर रही है।



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

इस संस्कृति में अनेक संस्कृतियाँ आकर मिलीं, परंतु जैसे गंगा में मिलकर नाले-परनाले गंगाजल बन जाते हैं, उसी प्रकार इस संस्कृति की पावनधारा ने सबको आत्मसात कर लिया। इसका कारण यह भी है कि हमारे ऋषि निरंतर मानव कल्याण का चिंतन करते रहते थे। उन्होंने सामाजिक संगठन के लिए चार वर्ण तथा व्यक्ति-निर्माण के लिए चार आश्रम की व्यवस्था की थी, जिसे वर्णाश्रम धर्म कहा गया। यह व्यवस्था अनूठी ही थी। कर्म के अनुसार समाज के चार वर्ण तथा व्यक्ति की सौ वर्ष की आयु को चार भागों में बाँटकर चार आश्रम बनाए गए। यह व्यवस्था इतनी सटीक थी कि प्रत्येक व्यक्ति संगठित एवं संस्कारित हो और समाज प्रगतिशील हो, किंतु कालांतर में इसमें बहुत विकृतियाँ आ गईं और छुआ-छूत, लड़ाई-झगड़ा, ऊँच-नीच का भेदभाव शुरू हो गया। मध्यकाल में यह भेदभाव जब बहुत अधिक बढ़ गया तो संतों, महापुरुषों ने इसको सुधारने के लिए आवाज उठाई। महात्मा बुद्ध, संत कबीर, महर्षि दयानंद, महात्मा गांधी ने इसके सुधार का प्रयास किया। परमपूज्य गुरुदेव ने भी अपने तपोबल की शक्ति लगाकर इस ऊँच-नीच को दूर करने के लिए गायत्री परिवार की स्थापना की तथा 'प्रज्ञा पुराण' की कथा के माध्यम से महर्षि कात्यायन के द्वारा इस विषय पर अपने विचार प्रकट किए। उन्होंने वर्णाश्रम धर्म के पुनरुद्धार का संदेश महर्षि के माध्यम से दिया है। आज कथा का दूसरा दिन है। चलिए हम भी वहीं चलकर कथा सुनते हैं—

**द्वितीये दिवसे चाद्य सत्रस्यास्यास्तु संस्कृतेः।**
**उत्साहः संगतानां स सन्तोषः श्लाघ्यतां गतौ॥**

—४/२/१



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

**ब्रह्मचर्यं गृहस्थो स वानप्रस्थोऽथ शोभनः।**
**संन्यासश्चेति सर्वेऽपि परस्परगता इव॥**

—४/२/५

द्वितीय दिवस आरण्यक में, महाप्राज्ञ के पास।
पहुँच गए सब भक्तजन, मन में भर उल्लास॥
आरण्यक ऋषि जिज्ञासु ने पूछा फिर शीश झुकाकर के।
वर्णाश्रम की महिमा क्या है, कहिए हे देव कृपा करके॥
हँसकर बोले श्री कात्यायन, सब सुनलो ध्यान लगाकर के।
यह है संस्कृति का मेरुदंड, मैं कहता हूँ समझाकर के॥
सामाजिक संगठन करने को, ऋषियों ने तंत्र बनाए थे।
ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र, ये चार वर्ण कहलाए थे॥
जो मनुज तपस्वी त्यागी थे, वे द्विज ब्राह्मण थे कहलाते।
जो शूर साहसी वे क्षत्रिय, कृषि वणिक वैश्य माने जाते॥

***साधारण जन को दिया, था शूद्रों का नाम।***
***पर समाज में उनका भी, होता था सम्मान॥***

आज कात्यायन ऋषि के आश्रम में संस्कृति सत्र का दूसरा दिन है। सभी जिज्ञासु मन में उत्साह भरकर अपने-अपने स्थान पर एकत्रित हो गए हैं। आज के प्रमुख जिज्ञासु प्रश्नकर्त्ता ऋषि आरण्यक ने सत्राध्यक्ष से देवसंस्कृति की मुख्य विशेषताओं के विषय में पूछा तो महाप्राज्ञ ने कहा— "हे धर्मपरायण साधको! भारतीय संस्कृति का मेरुदंड वर्णाश्रम धर्म है। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र—ये चार वर्ण तथा ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ तथा संन्यास—ये चार आश्रम हैं। दूरद्रष्टा ऋषियों की यह व्यवस्था सार्वभौमिक एवं सर्वकालीन है।"



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

इस व्यवस्था को बनाने की आवश्यकता इसलिए हुई कि आदिकाल में आर्यों की संख्या कम थी और अनार्यों की अधिक अर्थात यहाँ पर बाहर की जातियाँ भी निरंतर आक्रमण करती रहती थीं। आर्य लोग जितना सृजनात्मक कार्य करते थे, अनार्यों के आक्रमण से सारी व्यवस्था बिगड़ जाती थी। खेत उजड़ जाते थे, शिल्प नष्ट हो जाते थे, योजनाएँ बिगड़ जाती थीं, जितना आगे बढ़ते थे उतना पीछे हटना पड़ता था। अत: उन्होंने सबको एक साथ मिलाने के लिए जनता को चार भागों में बाँट दिया। उसे चार वर्ण के नाम से पुकारा गया। अज्ञान से जूझने वाले, अध्ययन-अध्यापन करने वाले समाजसेवी ब्राह्मण कहलाए। शरीर से स्वस्थ, शूरवीर, दुष्टों से जूझने वाले क्षत्रिय तथा वाणिज्य व्यापार द्वारा आर्थिक अभाव से जूझने वाले, धन की व्यवस्था करने वाले वैश्य कहलाए। सेवा में रुचि रखने वाले तथा सामान्य शिल्पकारों को शूद्र कहा गया। जिनकी सिद्धांतों में रुचि नहीं थी, उन्हें यह संज्ञा दी गई।

वैदिक ऋषियों ने उस समय यह विभाजन गुण, कर्म तथा स्वभाव के अनुरूप किया, क्योंकि उस समय यह माना जाता था कि जन्म से तो सभी शूद्र होते हैं। अपने कर्म तथा संस्कारों से ही व्यक्ति ऊँचा उठा है। अत: प्राचीन युग में यह व्यवस्था विकृत नहीं थी। एक ही परिवार में विभिन्न कार्य करने वाले व्यक्ति प्रेमपूर्वक एक साथ रहते थे। ऋग्वेद में एक व्यक्ति कहता है—"मैं कवि हूँ, मेरा पिता वैद्य है तथा माता पिसनहारी।" आर्य ऋषियों ने उन्नति का मार्ग सबके लिए खोल रखा था। पवित्र आचरण द्वारा कोई भी व्यक्ति ऊपर उठ सकता है। इसके विपरीत नीच कर्म करने वाला कोई भी व्यक्ति पतित हो सकता है। आर्षग्रंथों में मनुष्य को, अपने को सुधारने के लिए पूर्ण स्वतंत्रता दी गई है। यजुर्वेद में कोरी, कुम्हार, निषाद,



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मछुआ सभी की वंदना की गई है। स्मृतिग्रंथों में भी मनुष्य को कर्म से ही ब्राह्मण माना गया है।

वैदिक युग में सभी वर्ण समान थे। सभी में सहयोग तथा विवाह आदि भी संपन्न होते थे। यह कहा जा सकता है कि जैसे वीणा के अनेक तार मिलकर झंकार पैदा करते हैं, उसी प्रकार सब मिलकर कार्य करते थे। उस समय ब्राह्मण कुल में उत्पन्न व्यक्ति दुष्ट होने पर भी सम्मानित हो तथा शूद्र कुल में जन्म लेने वाला सदाचारी होकर भी अपमानित हो, ऐसा क्रूर बंधन नहीं था। वेदपाठी रावण, कुंभकरण आदि ब्राह्मण परिवार में जन्म लेकर भी राक्षस कहलाए तथा रत्नाकर, वाल्मीकि आदि ऋषि के पद पर प्रतिष्ठित हुए। विदुर दासीपुत्र होकर भी सम्मानित हुए, दुर्योधन कुरुवंशी होकर भी तिरस्कृत हुए। भगवान कृष्ण ने दुर्योधन के छप्पनभोग छोड़कर विदुर के घर साग खाया था, यह कथा प्रचलित है। इसे आप सभी जानते होंगे। देवर्षि नारद जी ने भी अपने को दासीपुत्र कहा है।

एक बार नारदजी ने भगवान से पूछा—"आपका सबसे बड़ा भक्त कौन है?" उन्होंने कहा—"धर्म व्याध।" यह सुनकर देवर्षि चकित रह गए। जाकर देखा, तो वह व्याध अपने माता-पिता की सेवा करता था, अपने कर्त्तव्य का पूर्ण निर्वाह करता था, अतः उसे भक्तों में सर्वश्रेष्ठ सम्मान मिला।

उस समय विवाह में भी जाति-पाँति का बंधन नहीं था। महर्षि व्यास की माता सत्यवती धीवर कन्या थीं। बाद में उनका विवाह शांतनु से हुआ, वे राजरानी तथा राजमाता बनीं। व्यास जी ने कैवर्त कन्या से विवाह किया था। इतरा दासी के पुत्र होने पर भी ऐतरेय कर्म से महान बने। उन्होंने माता का गौरव एवं कुल परंपरा को बनाए रखने के लिए अपने ग्रंथ का नाम ही



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ऐतरेय ब्राह्मण रख दिया। घटोत्कच की माता हिडिंबा राक्षसी थी। महर्षि कर्वे ने रूढ़िवादिता का विरोध कर जाति से तिरस्कृत होकर भी बाल-विधवा से विवाह किया तथा महर्षि की उपाधि प्राप्त की।

इस प्रकार वैदिक साहित्य, उपनिषद्, ब्राह्मण ग्रंथ, महाभारत तथा पौराणिक कथाओं के आधार पर कहा जा सकता है कि यह वर्ण व्यवस्था जन्म के आधार पर नहीं, कर्म के आधार पर बनाई गई थी। वह युग इतिहास का स्वर्णयुग था। उस समय एक से बढ़कर एक तेजस्वी पुरुष अवतरित होकर धरती को इस प्रकार आलोकित करते रहे जैसे आकाश से स्वर्ग ही धरती पर आ गया हो। ऋषि मानव कल्याण का मार्ग प्रशस्त करते थे तथा सबको समान अधिकार प्राप्त थे।

वैदिक युग की झाँकी प्रस्तुत करते-करते महाप्राज्ञ आत्मविभोर हो गए। श्रोतागण भी लगता था उसी युग में पहुँच गए हैं। सोच रहे थे कितना अच्छा था वह युग। इस समय पता नहीं मनुष्य को क्या हो गया है? एक साधक ने विनम्र स्वर में पूछा—"गुरुदेव! फिर ये परंपराएँ क्यों समाप्त हो गईं ? अब क्या फिर वह युग नहीं आ सकता?" महाप्राज्ञ ने पीड़ा भरे स्वर में एक गीत की पंक्तियाँ गाईं—

**गीत**

कर लो मिलकर नेक कमाई, सतयुग फिर से आएगा।
हमने छोड़ी नहीं बुराई, कलियुग कैसे जाएगा॥
नर तन देकर प्रभु ने, हमको है धनवान बनाया।
हर प्राणी से श्रेष्ठ बनाकर, ऊँचे पद बिठलाया॥
हरदम करता नीच विचार, कलियुग कैसे जाएगा।
कर..............................



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मानव की काया तो पगले, देवों को दुर्लभ है।
भौतिकता की चमक में भूला, खुद बनता निर्धन है॥
सच्चे कर्मों का फल पाए, सतयुग ऐसे आएगा।
कर..............................

जग में दुःख का कारण क्या है, तूने कभी न जाना॥
नीयत में जब खोट भरा हो, तब तो दुःख ही पाना।
जीवन स्वारथ में भरमाया, सतयुग कैसे आएगा॥
कर..............................

जीवन उसने जीना सीखा, जिसने निज को जीता।
दीन-दुखी पीड़ित मानव की सेवा का सुख पीता॥
बन जा प्रेम दया का सागर, सतयुग ऐसे आएगा॥
कर..............................

ईश्वर तू है मंदिर तू है, तुझे ना ज्ञान हुआ है।
इसी भूल के कारण, अब तक तू हैरान हुआ है।
मन मंदिर में कर उजियारा, सतयुग फिर से आएगा॥
कर..............................

महाप्राज्ञ ने कहा—"वत्स ! इसीलिए तो तुम सबको यह कथा सुनाई जा रही है, यह झाँकी प्रस्तुत की है कि फिर से सब प्रज्ञापुत्र मिलकर प्रयत्नशील हों और उस युग को लाने के लिए कृतसंकल्प हों।" दुर्भाग्यवश कालांतर में यह वर्ण व्यवस्था जाति-पाँति के रूप में बदल गई। ऊँच-नीच के भेदभाव के कारण आपस में झगड़े शुरू हो गए। वैदिककाल में ब्राह्मण को मुख, क्षत्रिय को बाहु, वैश्य को उरु तथा शूद्र को पाद माना गया था। इसका अर्थ यह था कि शरीर के सभी अंग बराबर हैं, वे मिलकर कार्य



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

करेंगे तभी कार्य होगा, किंतु बाद में यह मान लिया गया कि ब्राह्मणों का जन्म मुख से हुआ है और देवता केवल उन्हीं से बात करते हैं। जाति-पाँति की, ऊँच-नीच की भावनाओं से मनुष्य व्याकुल हो गया। परिणाम यह हुआ कि संगठन कमजोर हो गया। आपसी झगड़ों ने जाति व देश को बरबाद कर दिया। इसका लाभ दूसरों ने उठाया।

एक चोर चोरी करने निकला। चार व्यक्ति तीर्थयात्रा पर जा रहे थे। एक पंडितजी, एक सेठजी, एक ठाकुर साहब, एक नाई। चोरों ने देखा— ये चार हैं वह अकेला। क्या करूँ ? उसे एक तरकीब सूझी। फूट डालो और लाभ उठाओ। वह पहले शूद्र के पास गया और कहने लगा—"अरे मूर्ख, तू इनके साथ कहाँ जा रहा है ? पंडितजी तो हमारे पूज्य हैं, सेठजी समय पर धन आदि देकर हमारी सहायता करते हैं। ठाकुर साहब हमारे भाई-बंधु हैं। इनका तीर्थयात्रा पर जाना तो ठीक है। तू वहाँ जाकर गंगा को अपवित्र करेगा। निकाल तेरे पास क्या है ?" वे तीनों अपनी प्रशंसा सुनकर प्रसन्न हो गए थे। चोर ने शूद्र का धन छीनकर रस्सी से बाँध दिया। फिर सेठ के पास जाकर बोला—"सेठजी, सारी जिंदगी तो सबका खून चूसकर पैसा इकट्ठा किया है, अब गंगा नहाने चले हो। निकालो क्या है पास में।" कहकर धन लेकर उन्हें भी बाँध दिया। फिर पंडितजी के पास जाकर बोला—"पंडितजी, ये ठाकुर साहब तो अपनी बिरादरी के हैं, पर आपने सारी जिंदगी तो पूजा-पाठ से लोगों को बहकाकर पैसा इकट्ठा किया है, अब पुण्य करने चले हो, निकालो जो पास में है।" उन्हें भी बाँध दिया। बाद में ठाकुर साहब से कहा—"ठाकुर साहब, कहाँ गंगा नहाने जा रहे हो ? जो पास में है दे दो। बाद में हमारे साथ शामिल हो जाना। जो लिया है उससे ज्यादा दिला देंगे।" फूट के कारण चारों को लूट लिया।



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इस प्रकार जाति-पाँति की मूर्खता भरी मान्यताओं ने देश को पतन के कगार पर लाकर खड़ा कर दिया। मुगलों ने तथा अँगरेजों ने इसी आधार पर इस शस्य-श्यामला भूमि को तहस-नहस कर डाला।

कहते-कहते महाप्राज्ञ कुछ देर के लिए चुप हो गए। फिर दुःख भरे स्वर में बोले—"हे धर्म पिपासुओ ! इस समय का सबसे बड़ा दुर्भाग्य यह है कि इस समय सभी वर्णों ने अपनी-अपनी गरिमा को भुला दिया है। इस समय केवल एक ही वर्ण रह गया है वह है—व्यापारी। केवल एक ही बात दिमाग में आती है, पैसा कैसे कमाया जा सकता है? पंडितजी पूजा-पाठ में दक्षिणा इतनी माँगते हैं कि गरीब आदमी पूजा ही न कराए, यहाँ तक कि मृतक श्राद्ध में भी मृतकभोज एवं दक्षिणा का प्रचलन हो गया है। साधारण मनुष्य की श्रद्धा ही उठ गई है। क्षत्रिय भी वेतनभोगी बन रहे हैं जो अधिक धन दे उसी की नौकरी कर लो। वैश्य तो व्यापारी है ही, उसे भी पैसा अधिक कमाने के लिए मिलावट आदि करने में संकोच नहीं होता। डॉक्टर, इंजीनियर, कलाकार सब अपना कर्त्तव्य भूलकर केवल धन के पीछे लगे हैं। आजकल सारा व्यवहार पैसे से ही चल रहा है।"

एक सेठजी की मृत्यु हो गई। जीवन में कुछ दान-पुण्य भी किया था, कुछ पापकर्म, शोषण आदि भी किया था। जब धर्मराज के यहाँ हिसाब-किताब हुआ तो धर्मराज ने कहा—"सेठजी ! आपके लिए कुछ दिन का स्वर्ग है, कुछ दिन का नरक। आप पहले कहाँ जाना पसंद करेंगे?" सेठजी ने कहा—"महाराज ! चाहे स्वर्ग हो चाहे नरक मुझे तो वहाँ भेज दो, जहाँ चार पैसे की आमदनी हो।" अतः इस समय तो पूजा-पाठ, धर्म-कर्म सब कुछ पैसों पर ही निर्भर है। इस समय '**सर्वे गुणाः कांचनमाश्रयन्ति**' की कहावत सच हो रही है।



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वर्तमान परिस्थितियों पर खेद प्रकट करते हुए गुरुदेव महर्षि कात्यायन जी के मुख से कहलाते हैं कि हमारी मूर्खता एवं कट्टरता के कारण आज अपने भी हमसे अलग हो गए हैं। अब यह भावना महामारी की तरह फैल रही है। शूद्र-शूद्र के बीच, ब्राह्मण-ब्राह्मण के बीच वर्गभेद हैं, खान-पान, शादी-विवाह में भी समस्याएँ आ रही हैं। चार वर्ण के स्थान पर इस समय सात हजार जाति-उपजाति बन गई हैं। सभी जन्मजात मान्यता को अपना रहे हैं। समाज दिन-पर-दिन दुर्बल हो रहा है। हिंदू धर्म घट रहा है, क्योंकि छुआछूत से पीड़ित व्यक्ति धर्म बदल रहे हैं। यह बहुत ही दुःख की बात है। इस समय इन जाति-उपजातियों में बँट जाने के कारण देश की अखंडता समाप्त हो रही है और देश रसातल को जा रहा है।

गुरुदेव की पीड़ा भरी वाणी सभी के हृदय झकझोर रही थी। एक जिज्ञासु ने खड़े होकर पूछा—"हे महामते ! यह छूतछात की, भेदभाव की भावनाएँ कब से शुरू हो गईं, मनुष्य एकदम कैसे बदल गया ?"

यह सुनकर महर्षि ने कहा—"वत्स ! परंपराएँ एकदम नहीं बदलतीं। जब खेत में बीज बोते हैं तो खरपतवार बिना बोए ही निकल आती हैं और यदि उन्हें न निकाला जाए तो फसल को चौपट कर देती हैं। इसी प्रकार ये परंपराएँ भी धीरे-धीरे पनपती हैं और इस विषबेलि को शुरू में ही नियंत्रित न किया जाए तो अपना विष सबमें फैला देती हैं। इन कुरीतियों का शुरू में ही नियंत्रण न करने का दुष्परिणाम भुगतना पड़ रहा है।"

इनका प्रारंभ कब हुआ, यह ठीक-ठीक तो नहीं कहा जा सकता। वैदिक युग में जाति का बंधन नहीं था, त्रेता युग में भी राम ने भीलनी के बेर खाए, निषादराज भील तथा केवट को गले लगाया, रीछ-वानरों को सहयोगी बनाया। यह तो ठीक है, किंतु उत्तररामचरित में भवभूति ने शंबूक



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

नामक शूद्र की तपस्या का वर्णन किया है। वह कुएँ में उलटा लटककर तप कर रहा था। शायद वह उसका वर्ण विरोधी विद्रोह था, इसीलिए राम को उसका वध करना पड़ा।

द्वापर युग में यद्यपि कई स्थानों पर यह लिखा है कि व्यक्ति को कर्म से ही सम्मान मिलना चाहिए, जन्म से नहीं, किंतु एकलव्य भील होने के कारण राजकुमारों के साथ धनुर्विद्या की शिक्षा का स्वप्न देखता ही रह गया। वर्णवादी व्यवस्था ने उसकी प्रतिभा को स्वीकार नहीं किया, अपितु द्रोणाचार्य की मिट्टी की प्रतिमा बनाकर उसने जो धनुर्विद्या सीखी उसका भी उसे मूल्य चुकाना पड़ा। गुरुदक्षिणा में उसके दाहिने हाथ का अँगूठा माँगकर द्रोणाचार्य ने अर्जुन के प्रति पक्षपात का प्रदर्शन कर गुरु की गरिमा को धूमिल कर दिया। महारथी कर्ण यद्यपि शूरवीर था, कवच और कुंडल को जन्म से ही पाकर वह अद्वितीय व्यक्तित्व वाला था, किंतु द्रौपदी स्वयंवर में उसे सूतपुत्र कहकर अपमानित किया गया और मत्स्यवेधन का अधिकार नहीं दिया गया। अतः वर्णभेद के बीज तो यहीं से दिखाई देते हैं। संभवतः उस समय '**समरथ को नहीं दोष गुँसाई।**' अर्थात समर्थ व्यक्ति सब कुछ कर सकते थे, पर असमर्थ के लिए ये परंपराएँ प्रारंभ हो गई थीं।

बौद्धकाल तक आते-आते इन परंपराओं तथा कर्मकांडों ने भयंकर रूप धारण कर लिया था। देवी-देवताओं पर बलि की प्रथाएँ भी प्रारंभ हो गई थीं। महात्मा बुद्ध ने इन छुआछूत तथा ऊँच-नीच की परंपराओं को तीखी चुनौती दी और उन्होंने एक बार यह घोषणा कर दी कि व्यक्ति कर्म से महान होता है, जन्म से नहीं। जब इस देश में बुद्ध धर्म की लहर उठी तो



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सारा देश ही बौद्धमय हो गया। सारे देश में एक स्वर गूँज उठा—'**जन्मना जायते शूद्रः, संस्काराद्विज उच्यते।**' उन्होंने अंगुलिमाल जैसे डाकू को बौद्ध भिक्षु बनाया तथा आम्रपाली जैसी नगरवधू को भिक्षुणी।

एक बार संत मंडली को आते देखकर तथागत ने कहा—"भंते, देखो विप्रमंडली आ रही है, उसका स्वागत आसन देकर करो।" एक शिष्य ने कहा—"भगवन ब्राह्मण तो एक ही है, बाकी तो सब शूद्र हैं।" उन्होंने कहा—"ऐसा नहीं कहते भद्र! ये सब कर्म से ब्राह्मण ही हैं, अतः सम्मान के योग्य हैं।" एक बार आनंद भिक्षु को प्यास लगी। कुएँ पर एक स्त्री को पानी भरते देख उन्होंने पानी माँगा, किंतु उस स्त्री ने पानी देने से मना कर दिया क्योंकि वह चांडाल कन्या थी। आनंद ने कहा—"पानी तो गंगाजल की तरह पवित्र होता है। तुम्हारा हाथ लगने से कैसे अपवित्र हो गया?" इस प्रकार की बहुत सी कथाएँ बौद्ध साहित्य में मिलती हैं, जिनसे सिद्ध होता है महात्मा बुद्ध ने एक महान क्रांति की।

इसके पश्चात मध्यकाल तक आते-आते इस प्रथा ने बहुत भयंकर रूप धारण कर लिया, किंतु समय की आवश्यकता महापुरुषों को जन्म देती है। इस समय महात्मा कबीर ने फिर सबको चुनौती देकर कहा—'**जाति-पांति पूछे नहीं कोई, हरि को भजे सो हरि को होई।**'

कबीर जुलाहे थे, संत नामदेव जन्म से दर्जी थे, संत तुकाराम को भी शूद्र कहा जाता है, संत रैदास जन्म से हरिजन थे, काम भी चर्मकार का ही करते थे। उनके विषय में कथा है कि एक बार पूर्णिमा पर सब लोग गंगा नहाने गए तो रैदास ने मना कर दिया और गंगाजी में चढ़ाने को एक पैसा



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दिया। सब साथी पहले तो एक पैसे का मजाक बनाते रहे, पर जब गंगाजी में वह पैसा रैदास के नाम से डाला गया तो गंगाजी का हाथ बाहर आ गया और उन्होंने एक कंगन दिया।

कंगन लेकर वह साथी राजा के यहाँ दे आया, बदले में खूब धन मिला। बाद में रानी के कहने पर राजा ने उस व्यक्ति को बुलाकर दूसरा कंगन लाने को कहा तो वह डर गया। उसने रैदास के पास जाकर प्रार्थना की, क्षमा माँगी और दूसरा कंगन देने को कहा। रैदास ने अपनी पानी की कठौती में हाथ डालकर गंगा मैय्या से प्रार्थना की और उसमें से दूसरा कंगन निकालकर दे दिया। तब से यह कहावत शुरू हो गई—'**मन चंगा तो कठौती में गंगा।**'

इन संतों की बहुत सी कथाएँ प्रचलित हैं, जिनसे सिद्ध होता है कि भगवान सचमुच जाति-पाँति नहीं देखते, वे तो केवल प्रेम के भूखे हैं। इसीलिए तो विदुर का साग, सुदामा के चावल तथा भीलनी के बेर खाकर अपनी सारी संपदा लुटा देते हैं।

नाभाजी डोम वर्ण के थे। गोवा के डॉक्टर गोमेज जन्म से ईसाई थे, पर संस्कृत भाषा पढ़कर वे भारतीय संस्कृति के पुजारी बन गए। एंजिल डेविस नीग्रो परिवार की थीं। उन्हें पददलित और अपमानित होना पड़ा। उन्होंने पढ़ाई कर अध्यापन कार्य शुरू किया और समाज-सुधार किया। आधुनिक युग में महर्षि दयानंद, राजा राममोहन राय, मदनमोहन मालवीय, श्रद्धानंद, विनोबा भावे, महात्मा गांधी ने इस भेदभाव को मिटाने का अथक प्रयास किया है। आर्यसमाज, ब्रह्मसमाज, रामकृष्ण मिशन द्वारा इन्हें ऊँचा उठाने



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

का प्रयास किया जा रहा है, अब तो सरकार द्वारा भी इस ओर प्रयास किए जा रहे हैं, पर इसके लिए ब्राह्मणोचित आचरण कर सबसे प्रेमपूर्ण व्यवहार करने की आवश्यकता है। पूज्य गुरुदेव ने गायत्री परिवार का संगठन कर इस दिशा में अभूतपूर्व कार्य किया है।

ब्राह्मणोचित आचरण की बात सुनकर एक जिज्ञासु ने सरल भाव से पूछा—"हे भगवन ! शूद्र व्यक्ति यदि ब्राह्मण बनना चाहे तो कैसे बन सकता है ? कृपया ब्राह्मण का स्वरूप बताने का कष्ट करें।"

**तुलना ब्राह्मणस्यातो मुखेनोक्ताधियाऽपि च।**
**चिन्तनं स ददात्येवं शिक्षाया वहते धुरम्॥**

—४/२/६५

**सौम्यं विगततृष्णं च सद्गुणैरभिशोभितम्।**
**सेवापरायणं चाऽपि सदाचारयुतं सदा॥**

—४/२/६७

जो सबका हित चिंतन करते, वे ही ब्राह्मण हैं कहलाते।
वे त्यागी, धीर, तपस्वी बन, हैं ब्रह्म तुल्य पूजे जाते॥
अपनी करुणा की धारा से, वे सबकी पीड़ा हरते हैं।
वे स्वयं कष्ट सहकर सबका, आंचल खुशियों से भरते हैं॥
ब्राह्मण कुल में पैदा होकर, यदि कर्म नीच ही करते हैं।
उनसे तो शूद्र ही अच्छे हैं, जो शुभ कर्मों को करते हैं॥
ब्राह्मण का वंशज रावण भी, तो राक्षस ही कहलाया था।
तप के बल पर एक डाकू ने, ऋषि का ऊँचा पद पाया था॥

***सेवा तप और साधना, ब्राह्मण की पहचान।***
***स्वार्थ सुखों को छोड़ जो, करता जग कल्याण॥***



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

"हे तात ! ब्राह्मण की तुलना मस्तिष्क एवं मुख से की गई है, उसे स्वयं अनुशासित रहकर सोच-समझकर बोलना चाहिए तथा उसका जीवन अपरिग्रही,सौम्य, सेवापरायण एवं सदाचार युक्त होना चाहिए।" क्रोधी, ईर्ष्यालु एवं अहंकारी व्यक्ति को ब्राह्मण नहीं कहा जा सकता, भले ही उसने ब्राह्मण कुल में जन्म लिया हो, किंतु ईर्ष्या, अहंकार, क्रोध छोड़कर कोई भी व्यक्ति ब्राह्मण बन सकता है, भले ही वह किसी भी वर्ण में जन्म ले। विश्वामित्र जन्म से क्षत्रिय थे। जब तक उनमें क्रोध रहा, वसिष्ठ ऋषि के प्रति ईर्ष्या तथा अहंकार रहा, उनकी तपस्या स्खलित होती रही, इन दुर्गुणों को छोड़कर वे ब्रह्मर्षि कहलाए।

ब्राह्मण को सेवापरायण होना चाहिए। एक बार किसी शिष्य ने गुरुदेव से पूछा—"गुरुजी तपस्या बड़ी है या सेवा ?" उन्होंने कहा—"वत्स, देखो ऋषि विश्वामित्र ने कठोर तपस्या की थी, किंतु मेनका के आने पर वे तपस्या भंग कर बैठे और जब एक कन्या को जन्म देकर मेनका स्वर्ग वापस चली गई तो दुखी और क्रोधित होकर वे कन्या को जंगल में पेड़ के नीचे रोता छोड़कर फिर तप करने चले गए, किंतु कण्व ऋषि ने उस बालिका को उठाकर पाला। उसको पुत्रीवत स्नेह दिया। बताओ तो दोनों में कौन श्रेष्ठ है ?" शिष्य का समाधान हो गया।

ब्राह्मण को अपरिग्रही होना चाहिए। किसी भी वस्तु के प्रति थोड़ा सा भी मोह व्यक्ति के पतन का कारण बन जाता है। एक पंडितजी गीता पाठ करते थे। एक दिन गीता के कुछ पृष्ठ चूहों ने काट दिए। अब क्या करें ? किसी ने राय दी बिल्ली पाल लो। बिल्ली ने दो-तीन दिन चूहे पकड़े और



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भूखों मरने लगी। फिर चिंता हुई। किसी ने राय दी गाय पाल लो। बिल्ली को भी दूध पिलाना, स्वयं भी पीना। गाय की तलाश में निकले तो एक मित्र ने कहा—"देखो, मेरे एक मित्र की लड़की है, उससे शादी कर लो तो वह दहेज में गाय देगा। बस गाय भी मिलेगी और गाय की सेवा करने वाली भी।" बस शादी हो गई और बच्चों के चक्कर में पड़कर गीता पढ़ना भी भूल गए। सचमुच इस समय ऐसे लोगों की आवश्यकता है जो समय की आवश्यकता को समझकर अपरिग्रही बनकर छुआछूत, ऊँच-नीच की भावना को मिटाने का संकल्प लें।

युगऋषि समस्त शिक्षक वर्ग को संबोधित करते हुए कहते हैं—"हे शिक्षकजनो! समाज व राष्ट्र की उन्नति में शिक्षकों का बहुत सहयोग होता है, क्योंकि शिक्षक छात्रों के निर्माता तथा छात्र देश के भाग्यविधाता होते हैं। आज के छात्रगण ही कल देश के कर्णधार बनेंगे। अतः इस समय वेतनभोगी श्रमिकों की तरह कार्य करके अपनी प्रतिभा का दुरुपयोग न करो। पाठशाला, पुस्तकालय, व्यायामशाला, नारीजागरण आदि रचनात्मक कार्यों का श्रीगणेश करो।"

वर्ण व्यवस्था की महत्ता जानकर एक जिज्ञासु आचार्य ने कहा—"हे देव ! कृपया आश्रम धर्म का महत्त्व समझाने का कष्ट करें।" यह सुनकर कात्यायन ऋषि ने गंभीर स्वर में कहा—

**आश्रमोऽस्ति विभागः स जीवनक्रमगो ध्रुवम्।**
**अस्य स्वीकरणाद्व्यक्तिः सुखं याति समुन्नतिम्॥**

—४/२/१३

**ब्रह्मचर्य इति ख्यातः संयमो यत्र पूर्णतः।**
**मात्रं कामपरित्यागं ब्रह्मचर्यं वदन्ति न॥**

—४/२/१७



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ऋषियों ने जीवन अवधि को था, चार भाग में बाँट दिया।
ब्रह्मचर्य, गृहस्थ और वानप्रस्थ, संन्यास उन्हें था नाम दिया॥
हो ब्रह्मनिष्ठ बालक जिससे, ब्रह्मचर्याश्रम था कहलाया।
कर्त्तव्यनिष्ठ बन भोग करें, गृहस्थाश्रम सबके मन भाया॥
बहुजन हिताय हो यह जीवन, यह वानप्रस्थ सिखलाता है।
सारी धरती अपना कुटुंब, संन्यास हमें बतलाता है॥
है स्वर्णिम युग ये जीवन का, खुशियों से निज जीवन भर लो।
स्नेह प्यार की वर्षा कर, तुम सारा जग अपना कर लो॥

***आश्रम की यह व्यवस्था, जीवन का वरदान।***
***इनका पालन करके ही, बनता मनुज महान॥***

महाप्राज्ञ ने वर्णाश्रम का महत्त्व बताते हुए कहा—"हे महाभाग ! भारतीय संस्कृति में जीवन के हर क्षेत्र में गंभीरता से विचार किया गया है। यह व्यवस्था भारतीय मनीषियों के बुद्धिकौशल की परिचायक है। वर्ण व्यवस्था की भाँति यह भी हिंदू धर्म का एक प्रमुख अंग है, जो प्रत्येक व्यक्ति के लिए लाभदायक है। यह जीवनक्रम का विभाजन है। सौ वर्ष की आयु को भारतीय ऋषियों ने चार भागों में बाँट दिया था, इसे ही चार आश्रम की संज्ञा दी गई—ब्रह्मचर्याश्रम, गृहस्थाश्रम, वानप्रस्थ और संन्यास।"

**ब्रह्मचर्य**—प्रारंभ के पच्चीस वर्ष जीवन में बहुत महत्त्वपूर्ण हैं। मनुष्य का बनना-बिगड़ना इसी अवस्था की गतिविधियों पर आधारित है। किशोरावस्था संवेदनशील होती है। जोश अधिक और होश कम होता है। नया खून, नई उमंगें, नई आशाएँ, कुछ नवीन पाने की लालसा में मन



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मचलता रहता है। अतः यही समय है जब मनुष्य जीवन की राह चुनता है। वह कुसंगति में कुमार्गगामी भी हो सकता है तथा सत्संगति, सद्‌गुरु का सान्निध्य पाकर महामानव भी बन सकता है। इसमें ब्रह्मनिष्ठ गुरु के निकट रहकर त्याग, संयम व सेवा का पाठ पढ़ाना चाहिए। अतः इसे ब्रह्मचर्याश्रम कहा गया।

ब्रह्मचर्य आश्रम मनुष्य के जीवन की नींव है। प्राचीनकाल में २५ वर्ष तक गुरुकुल में गुरु के संपर्क में रहकर इंद्रियसंयम एवं पुरुषार्थ की शिक्षा दी जाती थी। ज्ञान तथा ईश्वर दोनों की प्राप्ति के लिए ब्रह्मचर्य आवश्यक है। राम राजा दशरथ को प्राणों से भी प्यारे थे। उनके वनगमन के पश्चात दशरथ ने अपने प्राण त्याग दिए, किंतु बचपन में उन्हें अच्छी शिक्षा देने के लिए उन्होंने महर्षि वसिष्ठ के आश्रम में भेजा, जहाँ वे इतने शक्तिशाली बन सके कि रावण जैसे राक्षस का वध कर सके। नंद-यशोदा की आँख के तारे कृष्ण ने भी इसी प्रकार आश्रम में रहकर ब्रह्मचर्य पालन कर गुरु आश्रम में शिक्षा पाई थी, तभी उन्होंने महाभारत में अधर्म का विनाश करके धर्म की स्थापना की।

ब्रह्मचर्य का तात्पर्य इस समय केवल यही समझा जाता है कि अविवाहित रहें, किंतु यह शब्द बहुत व्यापक है। इसमें मनुष्य को केवल काम वासना पर ही नहीं, अपितु खान-पान, रहन-सहन, आचार-विचार सभी का संयम रखना आवश्यक है। जीवन में चार संयम अनिवार्य हैं—इंद्रियसंयम, समयसंयम, विचारसंयम तथा अर्थसंयम।

इंद्रियाँ दस हैं, किंतु दो बहुत प्रबल हैं—एक जिह्वा और दूसरी जननेंद्रिय। संयमित आहार से शरीर तथा मन दोनों ही स्वस्थ रहते हैं। एक पंडितजी



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

निमंत्रण पाकर भोजन के लिए गए। स्वादिष्ट भोजन था, अधिक खा गए। पेट में दरद हुआ तो वैद्यजी ने गोली खाने को दी। कहने लगे—"अरे, दो गोली की जगह होती तो दो रसगुल्ले ही और न खा लेता।" तात्पर्य यह है कि इस समय भोजन में इतनी चीज़ें बनती हैं जो एकदूसरे के विपरीत गुण वाली हैं। वे भी एक साथ खाई जाती हैं तथा इतनी ज्यादा तली-भुनी होती हैं कि वे शरीर को हानि पहुँचाती हैं और मन में विकार पैदा करती हैं। ब्रह्मचर्य जवानी में ही नहीं, अपितु जीवनपर्यंत इसका ध्यान रखना आवश्यक है।

मन में वासनाओं का विष भी जीवन में जहर घोल देता है। ब्रह्मचर्य का तेज मनुष्य को तेजस्वी, ओजस्वी बनाता है। मन बड़ा चंचल होता है, इस पर नियंत्रण करने के लिए साधना, स्वाध्याय तथा सादा जीवन एवं उच्च विचार रखने की आवश्यकता है।

"एक बार व्यासजी ने लिखा—'**बलवान इन्द्रियग्रामो विद्वानामपि कर्षयति**' इंद्रियाँ बहुत बलवान होती हैं, वे विद्वानों को भी पतन की तरफ ले जाती हैं। उनके एक शिष्य को अपने ऊपर बहुत अभिमान था। उसने कहा—"गुरुदेव ! यह आपने गलत लिखा है, इसे ऐसे लिखिए कि वे विद्वानों को पतित नहीं कर सकतीं।" गुरुदेव ने कहा—"मैंने जो लिखा है वही ठीक है।" शिष्य उदास हो गया। एक-दो दिन बाद उसने संध्या समय किसी स्त्री के रोने की आवाज सुनी तो एक साथी को लेकर जंगल की तरफ गया। वहाँ देखा कि रात के अँधेरे में बिजली चमक रही थी और एक बहुत सुंदर नवयुवती रो रही थी। पूछने पर उसने बताया कि मेरे पति



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पानी लेने गए थे, पता नहीं कहाँ चले गए ? रात के अँधेरे में मैं क्या करूँ ? उस शिष्य ने कहा—"तुम आश्रम चलो, मैं इस शिष्य को यहाँ छोड़ देता हूँ। वे आएँगे तो यह उन्हें साथ ले आएगा।"

यह कहकर स्त्री को साथ ले आए। एक कमरे में उसके भोजन व सोने की व्यवस्था कर दी। वह स्त्री दरवाजा बंद करके सो गई, पर उस शिष्य के मन में बार-बार उससे मिलने की इच्छा हो रही थी। दरवाजा खटखटाया तो उस स्त्री ने दरवाजा खोलने से मना कर दिया। उसने दरवाजे के अंदर हाथ डालकर साँकल खोल दी, किंतु देखा तो स्त्री की जगह गुरुदेव बैठे थे और उनके हाथ में वही श्लोक था। लज्जित होकर शिष्य गुरुजी के पैरों में गिर पड़ा। कहने का मतलब है कि मनुष्य को मन पर नियंत्रण रखना बहुत आवश्यक है।

वाणी का संयम भी आवश्यक है। सारे झगड़े कटुवचन से ही होते हैं। मीठी वाणी सबको वश में कर लेती है। एक औरत ने अपनी सहेली से कहा—"मेरे पति बहुत गुस्सा करते हैं, घर में रोज लड़ाई होती है।" उसने कहा—"अरे, इसकी तो बहुत अच्छी दवा मेरे पास है, तुम एक काम करना। जब वे कुछ कहें तो मुँह में गोली रख लेना। पर कुछ बोलना मत, नहीं तो दवा का असर खतम हो जाएगा।" उसने ऐसा ही किया, दो दिन बाद बोली—"बहन ! तुम्हारी गोली ने बहुत काम किया। क्या नाम है इस दवा का ? मैं मँगा लूँगी।" उसने कहा—"प्यारी बहन, वह तो मिश्री की डली थी। काम उस गोली ने नहीं, तुम्हारे चुप रहने ने किया है। एक चुप सौ को हराए।"



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ब्रह्मचारी को इंद्रियों पर नियंत्रण रखना चाहिए। समय भी जीवन की अनमोल संपत्ति है। अतः एक-एक क्षण का सदुपयोग करना चाहिए। विचारों पर नियंत्रण रखना भी आवश्यक है, क्योंकि इस उमर में उत्साह बहुत होता है, मन कल्पनालोक में उड़ता है, किंतु मन के लड्डू खाने से काम नहीं चलता। तात्पर्य यह है कि यह ब्रह्मचर्य आश्रम विद्यार्जन का समय है, तपस्या का समय है। इस ब्रह्मचर्य के बल पर ही रामभक्त हनुमान इतना महान कार्य कर सके। महर्षि दयानंद ने ब्रह्मचर्य के बल पर ही शक्ति अर्जित की थी। उन्होंने दो लड़ते हुए साँड़ों को सींग पकड़कर अलग-अलग दिशाओं में फेंक दिया। नेपोलियन, लूथर, न्यूटन, विवेकानंद तथा शंकराचार्य आदि ने इसी ब्रह्मचर्य के बल पर महान शक्ति प्राप्त की थी।

**गृहस्थाश्रम**—ब्रह्मचर्य आश्रम की महत्ता सुनकर एक विरक्त जिज्ञासु ने पूछा—"गुरुदेव ! ब्रह्मचर्याश्रम की बात तो समझ में आती है, किंतु गृहस्थाश्रम में फँसकर तो व्यक्ति मोह-माया में ही फँसकर रह जाता है। अतः सेवा-साधना अविवाहित रहकर ही की जा सकती है, यह ठीक है या नहीं, कृपया बताइए।"

**गृहस्थश्चापरो पादो मात्रमुद्वाह एव न।**
**गृहस्थः प्रोच्यतेऽप्यत्र संस्था तु परिवारगा॥**

—४/२/१८

**समर्था सफला चापि क्रियते चेत्तदैव तु।**
**गृहस्थः प्रोच्यते यत्र वर्गे निर्वाह आदृतः॥**

—४/२/१९

है एक तपोवन गृहस्थाश्रम, इसकी गौरव गरिमा जानो।
सब धर्मों का आधार यही, यह व्यास वाणी है सच मानो॥



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

संन्यासी हो या वानप्रस्थी, चाहे गृहस्थ या ब्रह्मचारी।
घर के आँगन में फलते हैं, अपना घर है एक फुलवारी॥
श्रीराम, कृष्ण, गौतम, गांधी, सब शिक्षा यहाँ पर पाते हैं।
जब कृपादृष्टि होती गुरु की, तब महापुरुष बन जाते हैं॥
मात-पिता, भ्राता, पति-पत्नी, जहाँ मिल-जुलकर सब रहते हैं।
है स्वर्गधाम यह धरती का, परिवार इसी को कहते हैं॥

***धरती पर इस स्वर्ग का, करो स्वयं निर्माण।***
***संयम सेवा साधना, से होगा कल्याण॥***

मुस्कराते हुए महाप्राज्ञ ने कहा—"वत्स, ब्रह्मचर्याश्रम के नियमों का पालन करके मनुष्य गृहस्थाश्रम में प्रवेश करता है। जो व्यक्ति केवल भोग-विलास का सुख पाने के लिए, भौतिक वस्तुओं का उपयोग करने के लिए अथवा संतान उत्पत्ति के लिए विवाह करते हैं, उनके लिए यह आश्रम मोह-माया जाल में फँसाने वाला हो सकता है, किंतु वास्तविकता यह है कि यह आश्रम अन्य सभी आश्रमों से श्रेष्ठ है। यह बताओ यदि गृहस्थाश्रम न हो तो योगी, संन्यासी, महापुरुष कहाँ जन्म लेंगे और कहाँ से उन्हें शिक्षा मिलेगी ? राम, कृष्ण, गौतम, गांधी सभी तो इस परिवार रूपी बगिया के मुस्कराते-खिलखिलाते फूल थे, जिनकी सुगंध से सारा जग महक उठा। विवेकानंद स्वयं संन्यासी थे, किंतु उन्होंने भी यह स्वीकार किया है कि जीवन के महत्त्वपूर्ण आदर्श उन्होंने परमहंस एवं माँ शारदामणि के परिवार में रहकर ही सीखे थे।

ऋषियों ने इस आश्रम को सभी आश्रमों का मेरुदंड कहा है। हमारे अधिकांश ऋषि-मुनि वनों में आश्रम बनाकर गृहस्थी बनाकर ही रहते थे।



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हमारे देवी-देवता भी अधिकांश अपनी शक्तियों के साथ रहते हैं। सच तो यह है कि वे अपनी शक्ति महिमामयी पत्नी को ही मानते हैं। सीता राम की शक्ति हैं, राधा कृष्ण की, माँ पार्वती शिव की शक्ति हैं तो माँ गायत्री एवं सावित्री ब्रह्मा की। वास्तव में सुयोग्य पत्नी पति की पूरक होती है, बाधक नहीं। अतः ऋषियों ने तो इसे '**धन्योगृहस्थाश्रम**' कहकर इस आश्रम को सम्मानित किया है।

सच तो यह है कि गृहस्थ व्यक्ति सबसे बड़ा साधक और तपस्वी है, क्योंकि गृहस्थ के ऊपर माता, पिता, पत्नी, बच्चे, संबंधी, अतिथि तथा समाज सभी की जिम्मेदारी रहती है। इन सबके प्रति कर्त्तव्य पूरा करना सबसे बड़ी तपस्या है। इस आश्रम में रहकर उसे अपने कर्त्तव्य को पूरा करने के लिए जिस त्याग, संयम एवं साधना की आवश्यकता पड़ती है, उसे कोई सच्चा साधक ही पूरा कर सकता है। उसे पग-पग पर अग्निपरीक्षा देनी पड़ती है। इसीलिए कात्यायन ऋषि के माध्यम से गुरुदेव कहते हैं कि गृहस्थ एक तपोवन है जहाँ संयम, सेवा एवं सहिष्णुता की साधना करनी पड़ती है। एक बार एक व्यक्ति घर के वातावरण से दुखी होकर संन्यासी बन गया, पर मन को शांति नहीं मिलती थी। एक दिन गुरुदेव से मन की पीड़ा बताई। गुरुदेव ने कहा—"घर में कौन-कौन हैं ?" उसने कहा—"वृद्ध माता-पिता, पत्नी, बच्चे सभी हैं।" गुरुदेव ने कहा—"बेटे, घर में माता-पिता रो रहे हैं, बच्चे दुखी हैं, पत्नी परेशान है तो यहाँ शांति कहाँ मिलेगी ? तुम घर जाकर ही अपनी जिम्मेदारी पूरी करो, तभी शांति मिलेगी।"

वास्तविकता यह है कि इस समय परिवारों की स्थिति बहुत ही चिंताजनक है। कारण यह है कि आजकल लड़के व लड़कियों को



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पारिवारिक जीवन में त्याग, तपस्या, संयम, सेवा व समर्पण की शिक्षा नहीं दी जाती। प्राचीनकाल में संयुक्त परिवार होते थे तो बच्चों को एकदूसरे के साथ मिल-जुलकर रहने, खाने-पीने की आदत हो जाती थी। इस समय सभ्य तथा संपन्न लोग तो बच्चों को हॉस्टल में रखकर पढ़ाने में गर्व का अनुभव करते हैं। घर पर भी यदि रहते हैं तो बस माता-पिता तथा दो बच्चे। अतः बच्चे अपना स्वतंत्र जीवन जीना चाहते हैं, उन्हें किसी के साथ तालमेल बिठाने का अभ्यास ही नहीं होता, इसलिए विवाह के बाद भी ये समस्याएँ सामने आती हैं। लड़का अलग सर्विस पर हो तो अच्छा है, भले ही क्लर्क हो। ऐसी स्थिति में घर में मिल-जुलकर रहने और सुख-शांति की आशा कैसे की जा सकती है?

लड़कियों को भी गृह विज्ञान के स्थान पर भौतिक विज्ञान की ही शिक्षा दी जाती है परिणामस्वरूप वे इंजीनियर, डॉक्टर, मास्टर, पायलट, नेत्री, अभिनेत्री, विश्वसुंदरी सब कुछ तो बन जाती हैं, पर कुशल गृहिणी नहीं बन पातीं। सर्विस करके वे न तो पति को समय दे पाती हैं और न संतान को। परिणाम यह होता है कि एक तो उस पर घर व बाहर दोनों की जिम्मेदारी आ जाती है, दूसरी ओर कभी-कभी पति अपने मनोरंजन के लिए क्लब, सोसाइटी तलाश कर लेता है, कभी-कभी वह गुमराह भी हो जाता है। शराब आदि में अपनी कमाई खो देता है, जानता है कि पत्नी कमा रही है। ऐसे में जब वह अलग हो जाता है तो स्त्रियों पर आर्थिक जिम्मेदारियाँ आ जाती हैं। वे भी टूटने लगती हैं तथा बच्चों पर भी इसका बुरा प्रभाव पड़ता है।



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इसके लिए आवश्यक है कि लड़कियाँ व लड़के दोनों को ही घर के वातावरण में रहकर त्याग, सेवा, संयम की शिक्षा दी जाए। लड़कियों को गृहकार्य की शिक्षा दी जाए तथा लड़कों को इतनी छूट न दी जाए कि वे बस अपना ही ध्यान रखें। परिवार को सुखमय बनाने के लिए सबका ध्यान रखना आवश्यक है। स्वार्थी व्यक्ति कभी सुखी नहीं रह सकता।

एक व्यक्ति का स्वभाव बहुत क्रोधी था। हमेशा पत्नी को, बच्चों को डाँटता रहता था। माता-पिता का भी सम्मान नहीं करता था। एक दिन पंडितजी आए जो उसके स्वभाव से परिचित थे। पंडितजी से उस व्यक्ति ने पूछा—"मैं व्यापार कर रहा हूँ, उसमें लाभ होगा या नहीं।" पंडितजी ने कहा—"लाभ-हानि की बात छोड़ो, तुम पर तो बहुत क्रूर ग्रह हैं। एक सप्ताह में तुम्हारी मृत्यु का योग है।" यह सुनकर वह घबरा गया। पंडित जी से उपाय पूछा तो उन्होंने कहा—"दान-पुण्य करो, माता-पिता की सेवा करो, बच्चों को प्यार करो, शायद उनके आशीर्वाद से ग्रह टल जाएँ।" यह सुनकर वह बाजार गया सबके लिए कुछ न कुछ खरीदकर लाया। बच्चों को प्यार से खाना खिलाया। माता-पिता से उनकी कुशलक्षेम पूछी। उस दिन उसे बहुत अच्छा लगा। दो दिन इसी तरह बीते। घर का वातावरण ही बदल गया, सबने उसके लिए प्रार्थना की। मंदिर पहुँचा तो पंडितजी ने कहा—"माता-पिता के आशीर्वाद तथा बच्चों की शुभकामना से ग्रह टल गए हैं, पर अब तुम ठीक से रहो।" कहने का तात्पर्य यह है कि मनुष्य स्वयं अपने दुःखों का जाल बुनता है। जिस घर में प्रेम, त्याग तथा एकदूसरे के प्रति समर्पण की भावना है, वही घर धरती का स्वर्ग है।



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

एक आदमी अमृतफल की खोज में निकला। एक आदमी उससे बोला, "मेरे साथ चलो।" घर गया तो पत्नी ने अतिथिदेव को देखकर तुरंत स्वादिष्ट व्यंजन बनाए और बड़े प्रेम से खाना खिलाया। बच्चों ने उसका सम्मान किया। उस आदमी ने कहा—"देखो, आज्ञाकारी बच्चे तथा समर्पित पत्नी ही अमृतफल है, जिसे पाकर घर भी स्वर्ग बन जाता है। अब तुम्हें विषबेल दिखाता हूँ।" वह अपने छोटे भाई के यहाँ ले गया। उसकी पत्नी देखते ही गुस्से से बोली—"रोज मेहमान आ जाते हैं, मुझसे नहीं बनता खाना-बाना। जाओ खुद बनाकर खिलाना हो तो खिला दो या बाजार से ले आओ।" तब उसने कहा—देखो, स्वर्ग-नरक सब धरती पर ही हैं। सुखी, संतुष्ट परिवार स्वर्ग है तो कलह, क्लेश करने वाली पत्नी, दुराचारी बच्चे ही घर को नरक बना देते हैं। पति का दुराचरण भी घर को नरक बना सकता है। अतः पति-पत्नी को काया-छाया की भाँति रहना चाहिए।

एक बार संत कबीर के पास पहुँचकर एक व्यक्ति ने पूछा—"आपके सुखमय जीवन का रहस्य क्या है।" उन्होंने अपनी पत्नी को आवाज दी और कहा—"दीपक जलाकर ले आओ।" पत्नी दिन होने पर भी चुपचाप दीया जलाकर ले आई। उन्होंने कहा—"एकदूसरे के प्रति विश्वास और पूर्ण निष्ठा ही दांपत्य सुख की नींव है। वंदनीया माताजी एवं गुरुदेव इसी अद्भुत समर्पण के आधार पर इतना बड़ा गायत्री परिवार खड़ा करने में सफल हो सके हैं। जिसे युग निर्माण का मंदिर कह सकते हैं।"

**प्रज्ञा गीत**

मंदिर समझो, मसजिद समझो, गिरजा समझो या गुरुद्वारा।
यह युग निर्माण का मंदिर है, आता है यहाँ हर मतवाला॥



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

यहाँ ऊँच-नीच का भेद नहीं, सबका है बराबर मान यहाँ।
हिंदू, मुसलिम, सिख, ईसाई, सब एक डोर से बँधे यहाँ॥
यह विश्व प्रेम का मंदिर है, हर जन है यहाँ जन को प्यारा।
यह युग निर्माण का मंदिर है, आता है यहाँ हर मतवाला॥
निष्काम भाव से जो आकर, चरणों में शीश झुकाते हैं।
समझो कि बिना कुछ माँगे ही, पल में सब कुछ पा जाते हैं॥
पावन चरणों में लोट रहा, जल थल नभ का वैभव सारा।
यह युग निर्माण का मंदिर है, आता है यहाँ हर मतवाला॥
साधन पूजन आराधन में, जो मिलकर हाथ बँटाते हैं।
वे अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष का, लाभ सहज ही पाते हैं॥
यहाँ भक्ति प्रेम के संगम की, बहती है सदा निर्मल धारा।
यह युग निर्माण का मंदिर है, आता है यहाँ हर मतवाला॥
माँ अन्नपूर्णा स्वयं जहाँ, पुत्रों को भोग खिलाती हैं।
षट्‍रस व्यंजन और पंचामृत, भक्तों को पान कराती हैं॥
हर पुत्र दुलारा जननी का, यह भक्त है गुरुवर को प्यारा।
यह युग निर्माण का मंदिर है, आता है यहाँ हर मतवाला॥
यहाँ रामचरित और गीता की, अमृत सी वर्षा होती है।
माँ गायत्री के छंदों की, पावन ध्वनि गुंजरित होती है॥
नित रास रंग रस निर्झर की, बहती उन्मुक्त विमल धारा।
यह युग निर्माण का मंदिर है, आता है यहाँ हर मतवाला॥
यहाँ वेद, पुराण, कुरान, बाइबिल, पर चर्चाएँ होती हैं।
हर देश-विदेश की भाषाएँ, इस मंच से मुखरित होती हैं॥



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

यह सर्वधर्म का महामंच, हर धर्म यहाँ सबको प्यारा।
यह युग निर्माण का मंदिर है, आता है यहाँ हर मतवाला॥

जहाँ पति-पत्नी घुल-मिलकर रहते हैं, वह परिवार स्वर्ग दिखाई देता है। एक उदाहरण मेरी व टॉमस का है। दोनों गरीब होने पर भी बहुत प्रेम से रहते थे। उनका विवाह दिवस आया तो दोनों की जेबें खाली थीं। मेरी के बाल सुनहरे थे। टॉमस की इच्छा थी कि इसके लिए सोने का क्लिप लाकर दे। मेरी चाहती थी कि टॉमस की घड़ी के लिए सोने की चेन उपहार में दे। मेरी ने अपने सुनहरे बाल कटाकर बेच दिए और सोने की चेन खरीद ली। टॉमस ने घड़ी बेच दी और उसके लिए सोने का क्लिप खरीद लिया। जब उपहार देने लगे तो देखा मेरी के बाल गायब हैं, पिन कहाँ लगाएँ? टॉमस की घड़ी नहीं है, चेन कहाँ लगाएँ ? दोनों की आँखों में आँसू आ गए, पर दोनों को जो प्यार की अनुभूति हुई वह क्लिप व चेन से कहीं अधिक आनंददायक थी।

गृहस्थाश्रम की नींव सेवा व समर्पण पर ही आधारित है। सत्यभामा बहुत सुंदर थी। द्रौपदी का रंग श्याम था। उसे लोग कृष्णा कहते थे। एक दिन सत्यभामा ने पूछा—"बहन, तुम पाँच पतियों को कैसे वश में रखती हो? हमसे अकेले कृष्ण ही वश में नहीं आते।" द्रौपदी ने कहा—"बहन, सेवा व समर्पण तथा मृदु वचन ही वश में रखने का उपाय है, साज-शृंगार नहीं।"

इस समय सजने-सँवरने की प्रवृत्ति भी बहुत दिखाई देती है। इस समय लड़कियाँ विश्वसुंदरी बनने में गौरव का अनुभव कर रही हैं, किंतु



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

यह पता होना चाहिए कि यह प्रवृत्ति गुमराह करती है। भारतीय संस्कृति में मन के सौंदर्य का महत्त्व है, बाहरी सौंदर्य का नहीं। एक घर में दो भाई थे। बड़े भाई की बहू गरीब घर की लड़की थी तथा देखने में साधारण थी। छोटे भाई की बहू देखने में बहुत सुंदर, पढ़ी-लिखी तथा बड़े घर की बेटी थी। बड़ी बहू हमेशा सबकी सेवा में लगी रहती थी। छोटी को क्लब, सोसाइटी, सजने से फुरसत नहीं थी। बड़ी बहू ने अपने बीमार सास-ससुर की बहुत सेवा की। छोटी बहू का पति बीमार हुआ तो वह उसे छोड़कर माँ के यहाँ चली गई। सब लोगों ने बड़ी बहू को सम्मान दिया। वास्तव में गुणों का महत्त्व होता है, बाहरी सुंदरता का नहीं। अत: इन सब प्रदर्शनों पर रोक लगानी चाहिए।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

इस समय अनमेल विवाह भी पारिवारिक समस्याओं का कारण हैं। दहेज के कारण कभी पढ़ी-लिखी लड़की की शादी कम पढ़े लड़के से कर देते हैं, कभी बहुत अधिक उम्र के व्यक्ति से कर देते हैं, इन सब कुरीतियों को समाप्त कर देना चाहिए, तभी परिवार संतुलित हो सकेंगे। यह कार्य भी आप सबको ही मिलकर करना है, क्योंकि समाज की उन्नति के लिए सुंदर पारिवारिक व्यवस्था बहुत आवश्यक है।

परिवार का आदर्श प्रस्तुत करते हुए महाप्राज्ञ कहते हैं—"भारतीय गृहस्थ का आदर्श देखना है तो चलो उस हिमालय की तुषारमंडित चोटी पर, जहाँ किशोरी शैलजा शिव को पाने के लिए तपस्या करती हैं। यह भारतीय गृहस्थाश्रम के मंगलमय स्वरूप का शुभारंभ है।" प्रथम दर्शन है। त्याग तपस्या का प्रथम चरण है, कुमार की उत्पत्ति तपस्या का मधुर फल



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

है। शिव परिवार भारतीय गृहस्थ का आदर्श है। अन्नपूर्णा जगदंबे मुक्तहस्त से सबको खिलाती-पिलाती हैं। शिव योगी होकर भी अर्द्धनारीश्वर बन गए हैं। सब कुछ माँ को सौंपकर निश्चिंत हैं। गणेश ऋद्धि-सिद्धि के दाता हैं और कार्तिकेय दुष्टों के संहारक, यही गृहस्थ का पूर्ण आदर्श है। जो व्यक्ति कहते हैं गृहस्थी जंजाल है, माया का पिटारा है, उन्हें राजा जनक एवं महादेवाधिदेव से प्रेरणा लेनी चाहिए।

**आश्रमेषु चतुर्ष्वेव वानप्रस्थो महत्त्वगः।**
**लोकमंगलसिद्धिश्च जायते तत्र संभवा॥**

—४/२/४४

**धनव्ययो न येषु स्याद् योग्यता भावना धिया।**
**मूर्द्धन्या ये विनिर्मान्ति ते नरा लोकसेविनः॥**

—४/२/४८

जो राष्ट्र पुरोहित बनकर के, गुरु ऋण का भार चुकाते हैं।
घर-घर में अलख जगाकर, जो भूलों को राह दिखाते हैं॥
सारी धरती को कुटुंब समझ, जो सब पर प्यार लुटाते हैं।
वे महापुरुष बन वानप्रस्थी, निज नाम अमर कर जाते हैं॥
यह है जीवन का स्वर्णकाल, जो वानप्रस्थ कहलाता है।
कर लोकसेवा बनकर उदार, मानव महान बन जाता है॥
पड़कर बुरी संगति में जो नर, बचपन व जवानी खोते हैं।
वे देख बुढ़ापे की उलझन, अपनी करनी पर रोते हैं॥

***ब्रह्मचारी बनकर करो, अर्जित विद्या ज्ञान।***
***वानप्रस्थी बनकर करो, उसे समाज को दान॥***



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

**वानप्रस्थ**—गुरुदेव की अमृतवाणी सबके हृदय को आनंदित कर रही थी। ब्रह्मचर्य तथा गृहस्थाश्रम का महत्त्व सुनकर एक बहुत कमजोर तथा वृद्ध से दिखाई देने वाले जिज्ञासु ने गुरुदेव से कहा—"हे तपोनिधे ! बचपन तथा गृहस्थी का जीवन तो बहुत आराम से कट जाता है, किंतु इस बुढ़ापे से तो भगवान बचाए। इस समय तो जीवन मौत से भी ज्यादा कष्टदायक लगता है, ऐसा क्यों ? कृपया इस विषय में बताएँ।"

मुस्कराते हुए सत्राध्यक्ष ने कहा—"हे भद्रजनो ! घबराओ मत, इस बुढ़ापे के दु:ख से बचने की बात मैं तुम्हें बताने जा रहा हूँ। बात यह है कि जीवन एक कला है जो इसे जीना जानता है, उसे यह जीवन आनंदमय लगता है, नहीं तो जिंदगी बोझ बन जाती है। कभी-कभी तो बचपन तथा जवानी में ही लोग घबराकर कहते हैं कि इस जिंदगी से तो मौत अच्छी।" कारण यह है कि उन्होंने जीवन जीना नहीं सीखा। सच तो यह है कि यह वानप्रस्थ का समय जीवन का स्वर्णयुग है। इसी समय मनुष्य को लोकमंगलकारी कार्य करने का समय मिलता है। इस समय तक उसने ब्रह्मचर्यकाल में संयमित जीवन बिताकर जो विद्या प्राप्त की थी तथा युवावस्था में गृहस्थी में रहकर जो अनुभव प्राप्त किए थे, जो धन उपार्जित किया था, उसके सदुपयोग का समय यही है। इस समय वह आत्मकल्याण तथा लोक-कल्याण कर सकता है।

यदि मनुष्य सारे संसार को अपना समझे तो यह विश्व ही कुटुंब बन जाता है। इस अवस्था में मनुष्य को परलोक की तैयारी करनी चाहिए। यह तैयारी क्या है ? एक आदमी अकसर श्मशान में जाकर बैठ जाता था। जब सब उससे पूछते कि यहाँ क्यों बैठे हो तो वह कहता—"एक दिन तो यहाँ



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आना ही है, मैं स्वयं ही आ गया।'' सब उसे पागल कहते थे। एक दिन एक सेठ की सवारी उधर से निकली तो सेठ ने उसे बुलवाया और उससे वहाँ बैठने का कारण पूछा, तो उसने कहा—''एक दिन तो तुम्हें भी यहाँ ही आना है।'' सेठजी बहुत क्रोधित हुए। उन्होंने कहा—''तुम मूर्ख हो, मैं अब तक किसी मूर्ख को तलाश कर रहा था। मैं तुम्हें सोने की छड़ी देता हूँ।'' उस पागल ने कहा—''मैं इसका क्या करूँ?'' सेठजी ने कहा—''जो तुमसे भी ज्यादा मूर्ख हो उसे दे देना।'' वह छड़ी हाथ में लेकर घूमता रहता। एक दिन शहर की तरफ गया तो पता लगा कि वे सेठजी बहुत बीमार हैं। उन्हें देखने पहुँच गया। सेठजी से पूछा—''कैसे हो?'' सेठजी ने कहा—''बस अब तो जाने की तैयारी है।'' उसने कहा—''कहाँ जा रहे हो?'' सेठ ने कहा—''जहाँ सब जाते हैं।'' उस व्यक्ति ने कहा—''तो आपने यात्रा की तैयारी तो की होगी? ये धन दौलत क्या-क्या लेकर जा रहे हो।'' सेठ ने क्रोध में कहा—''तुम बहुत मूर्ख हो, वहाँ पर कोई वस्तु कैसे ले जा सकता है?'' उस व्यक्ति ने कहा—''सेठजी मुझसे बड़े मूर्ख तो आप हैं, आपके पास इतनी धन-दौलत, इतने नौकर-चाकर, इतनी शक्ति सब कुछ थी। यदि आप इस धन का तथा अपनी शक्ति का सदुपयोग करते तो यह पुण्य आपके साथ जाता। अब तो समय निकल गया है, पर खैर आप अपनी छड़ी वापस ले लो, क्योंकि मैं अपने से अधिक मूर्ख को तलाश कर रहा था।''

वानप्रस्थियों को संबोधित करते हुए महामनीषी ने कहा—''हे संतजनो! यह जीवन अनमोल है, सारी प्रकृति परोपकार का संदेश दे रही है। भारतीय



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

संस्कृति में पुनर्जन्म का विधान है, जो आपने पूर्वजन्म में किया था, वही इस समय मिल रहा है। अतः इस समय भी कुछ ऐसा कार्य करो कि आगे जाकर यह मानव जन्म मिले। इस समय समाजसेवी समर्पित कार्यकर्त्ताओं का अभाव हो गया है। जाइए, उन देहातों में जहाँ किसान के रूप में भगवान आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं। आज साधु बाबा भी राम नाम जपने में ही अपनी कर्त्तव्यपूर्ति समझते हैं, किंतु सच्ची पूजा भगवान की यही है कि आप तन-मन-धन से दीन-दुखियों की पुकार सुनें।''

*अब छोड़ दे पुजारी, कैसी यह प्रार्थना है।*
*मंदिर से आ अलग हो, क्या उसमें ढूँढ़ता है॥*
*वह है वहाँ जहाँ पर, हल जोतता कृषक है।*
*रास्ता बनाने वाला, पत्थर को तोड़ता है॥*

**संन्यास**—वानप्रस्थ संस्कार का महत्त्व बताकर महाप्राज्ञ ने कहा— ''हे सद्ज्ञानी जिज्ञासुओ! आर्य परंपरा में ७५ वर्ष की आयु के पश्चात संन्यास आश्रम का विधान है। इस समय मनुष्य की शारीरिक शक्ति यदि क्षीण हो जाए तो वह एक स्थान पर रहकर ही समाज की सेवा कर सकता है किंतु इसके लिए भी यह आवश्यक है कि वह अपने आचरण को आदर्श रूप में प्रस्तुत करे।''

भारत में संन्यासी को बहुत सम्मान दिया जाता है। राजा भी उसके लिए सिंहासन छोड़ देता है तथा उसके पैर छूता है। जहाँ भी वह जाता है, सब उसे श्रद्धा की दृष्टि से देखते हैं। वह राजा का भी है गरीब का भी, किंतु दुर्भाग्यवश इस समय देश में इतनी विकृतियाँ आ गई हैं कि गेरुए



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कपड़े पहनकर लोग दूसरों को धोखा देते हैं, इसलिए जनता का विश्वास डगमगा जाता है। इस समय गेरुए कपड़े पहनकर सभी संन्यासी बन जाते हैं, किंतु जिस प्रकार शेर की खाल ओढ़कर गीदड़ शेर नहीं बन जाता उसी प्रकार कपड़े रँगने से व्यक्ति का मन नहीं बदल जाता।

एक महात्मा जी किसी स्थान पर कथा कह रहे थे। कथा कहने का ढंग बहुत आकर्षक था। एक सेठजी ने उन्हें अपने यहाँ रहने का स्थान दे दिया। सेठ जी की पत्नी बहुत धार्मिक थी। वह महात्मा जी का बहुत ध्यान रखती थी, किंतु एक दिन पता चला कि महात्मा जी सेठजी के यहाँ से रुपये तथा गहने चुराकर भाग गए हैं और पुलिस उन्हें तलाश कर रही है। इसी प्रकार हिमालय के दो मौनी बाबाओं का वर्णन है कि हिमालय की तलहटी में दो मौनी बाबा रहते थे। वहाँ काफी जमीन थी, उन्होंने वहाँ की भूमि में कुछ कंदमूल आदि बो दिए। एक की खेती बहुत अच्छी हुई, दूसरे की कुछ कम थी। जिसकी खेती में कम फसल हुई उसने दूसरे के खेत से कुछ कंद उखाड़ लिए। बस दोनों में लड़ाई हुई। एकदूसरे की जटाएँ खींची तो जटाएँ हाथ में आ गईं। आजकल के नकली साधुओं ने देश को पतन के गर्त में गिरा दिया है। इनके दुराचरण पर गुरुदेव खेद प्रकट करते हुए कहते हैं, यदि इस देश के अस्सी लाख बाबा सुधर जाएँ और देश कल्याण का संकल्प लें तो देश फिर से स्वर्ग बन सकता है।"

प्राचीनकाल में वृद्धावस्था आने पर राजा-महाराजा भी घर छोड़कर वन चले जाते थे। रामायण में राजा दशरथ का वर्णन है कि जब उन्होंने देखा कि बाल सफेद होने लगे हैं तो राम को युवराज बनाने की तैयारी शुरू



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

की और अपने आप वन में जाने का निश्चय किया। इसी प्रकार स्वयंभू मनु वृद्धावस्था में भी अपने पुत्रों को राज्य देकर स्वयं वन चले गए।

***बरबस राज सुतहि तब दीन्हा।***
***नारी समेत गमन वन कीन्हा॥***

इस समय की स्थिति पर खेद प्रकट करते हुए महाप्राज्ञ कहते हैं—"कितने दुःख की बात है, भारतभूमि जो कभी परिव्राजकों की केंद्र थी, आज खाली हो रही है। आज भारतमाता आँखें लगाकर उन सुपुत्रों की तलाश कर रही है जो फिर से वानप्रस्थ तथा संन्यासी बनकर वैदिक युग की स्वर्णिम झाँकी को साकार कर सकें।"

गौतमबुद्ध ने घर छोड़कर संसार को मुक्ति का मार्ग दिखाया था। महर्षि दयानंद तथा विवेकानंद ने जो महान कार्य किया, उसके लिए देश व समाज हमेशा उनका ऋणी रहेगा। नवयुवकों तथा वृद्धजनों को उनसे प्रेरणा लेकर इस शुभ कार्य में अग्रसर होना चाहिए। साधु के लिए कहा गया है—

***बहता पानी निर्मला, रुके गंदीला होय।***
***साधु तो रमता भला, दाग न लागे कोय॥***

अंत में सभी को संबोधित करते हुए महाप्राज्ञ कहते हैं—"हे नवयुग के सृजन सैनिको ! देखो इस समय आवश्यकता इस बात की है कि आप सब मिलकर देश की इन कुरीतियों से टक्कर लें और देश के गौरव को बढ़ाने का प्रयत्न करें।" इस समय मनुष्य की आयु कम हो गई है, चेहरे का तेज समाप्त हो गया है, आचार-विचार बिगड़ गए हैं, इसका कारण आश्रम व्यवस्था का बिगड़ना ही है। यह व्यवस्था पुनर्जीवित करनी होगी। आज



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

की परिस्थितियों के अनुसार इसमें परिवर्तन कर सकते हैं। भारत में धर्म व अध्यात्म की कमी कभी नहीं रही। इस भौतिकवादी विचारधारा ने नास्तिकवाद को प्रोत्साहन अवश्य दिया है, किंतु यदि आप सब मिलकर प्रयास करेंगे तो पुनर्जाग्रति होगी और भूले-भटके लोग आत्मकल्याण एवं लोक-कल्याण का मार्ग अपनाएँगे।

संगठन में बहुत शक्ति होती है, जब आप जैसे सेवापरायण, त्यागी, तपस्वी संगठित होकर कार्य करेंगे तो वह शक्ति प्रकट होगी, कि सभी कुरीतियाँ और कुविचार समाप्त हो जाएँगे। जिस देश में पैदा हुए हो उसके पुनर्जागरण के लिए कमर कसकर तैयार हो जाओ।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

इसलिए आप जाति-पाँति के, ऊँच-नीच के भेदभाव को छोड़कर एकसूत्र में बँधने का संकल्प लें, तभी यह देश फिर से जगतगुरु के पद पर आसीन होगा। संसार में एक भाषा होगी, एक धर्म होगा, समस्त विश्व एक हो जाएगा। अब वह समय दूर नहीं है कि जब मनुष्य के मन में देवत्व जगा होगा और धरती पर स्वर्ग का अवतरण होगा। संकल्प लेकर आप लोग विश्व-कल्याण के लिए चलिए। भगवान आपकी सहायता करेगा।

**इति श्रीमत्प्रज्ञापुराणे ब्रह्मविद्याऽऽत्मविद्ययोः, युगदर्शनयुगसाधनाप्रकटीकरणयोः,**

**श्री कात्यायन ऋषि प्रतिपादिते 'वर्णाश्रम धर्म' इति**

**प्रकरणो नाम द्वितीयोध्यायः ॥ २ ॥**

**आरती श्री प्रज्ञा पुराण की**



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ॐ श्री गुरवे नमः

# प्रज्ञा पुराण कथामृतम्

## तृतीय दिवस

### वृद्धजन-माहात्म्य प्रकरण

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

**गुरु वंदना**

गुरुवर तुम्हीं बता दो, किसकी शरण में जाएँ।
किसके चरण में गिरकर, अपनी व्यथा सुनाएँ॥
अज्ञान के तिमिर ने, चारों तरफ से घेरा।
क्या रात है प्रलय की, होगा नहीं सवेरा॥
पथ औ प्रकाश दो तो, चलने की शक्ति पाएँ॥
गुरुवर.......................

जीवन के देवता का, करते रहे निरादर।
कैसे करें समर्पित, जीवन की जीर्ण चादर॥
यह पाप की गठरिया, क्या खोलकर दिखाएँ॥
गुरुवर.......................

दुष्प्रवृत्तियों ने हमको, घेरा कदम-कदम पर।
कभी काम-क्रोध बनकर, कभी माया लोभ बनकर॥
इन दानवों से कैसे, अपना गला छुड़ाएँ॥
गुरुवर.......................

माना कपूत हैं हम, क्या रुष्ट रह सकोगे।
मुस्कान, प्यार, अमृत, क्या दे नहीं सकोगे॥
दाता तुम्हारे दर से जाएँ, तो किधर जाएँ॥
गुरुवर.......................



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

*(प्रथम दिवस की भाँति कथा व्यास द्वारा प्रज्ञा पुराण का पूजन)*
*(समय को देखते हुए प्रज्ञा गीत व कीर्तन किया जा सकता है)*

आत्मीय परिजनो, देवी स्वरूपा बहनो और देवतुल्य भाइयो! आप सब पर ईश्वर की अनुकंपा है कि आप इस कथामृत का पान करने के लिए यहाँ पर उपस्थित हैं, यह महाकाल का अनुदान है, यह कथा गीता के उपदेश की भाँति ही जीने की राह दिखाने वाली है। कल महर्षि कात्यायन ने वर्णाश्रम धर्म की व्याख्या करते हुए बताया था कि यह जीवन एक यात्रा है, इसकी तैयारी जो शुरू से ही करता है उसे इस यात्रा में आनंद आता है, जो बिना तैयारी किए चलता है, उसके सामने कदम-कदम पर बाधाएँ आती हैं। आप यहाँ कथा सुनने आए हैं, कई दिन पहले से तैयारी की होगी, आप दस दिन के लिए आ रहे हैं, क्या-क्या चीजें साथ में रखनी हैं, कितना पैसा साथ में चाहिए? दस दिन तक घर से अनुपस्थित रहेंगे तो घर के कार्य भी निपटाकर चलें कि पीछे परेशानी न हो। आप सोचिए जब दस दिन की यात्रा के लिए इतना सोचना पड़ता है तो इस अनंत यात्रा की तैयारी यदि नहीं की जाएगी तो परेशानी तो आएगी ही। इसकी तैयारी बचपन से ही करनी पड़ती है। बचपन में ब्रह्मचर्याश्रम इस यात्रा का प्रथम स्टेशन है, यह पहला पड़ाव है या पहला ट्रेनिंग सेंटर है जिसे प्राचीनकाल में गुरुकुल कहते थे, जहाँ मनुष्य को जीवन की प्रत्येक परिस्थिति से टक्कर लेने के लिए तैयार किया जाता था। इस समय यह परंपरा समाप्त हो गई। अतः यह यात्रा बाद में बहुत कष्टदायी लगती है। गृहस्थाश्रम इसका दूसरा पड़ाव है, जहाँ पर ब्रह्मचर्याश्रम में अर्जित विद्या, ज्ञान के आधार पर कर्त्तव्यनिष्ठ बनकर जीवन की सुख-संपदा का उपयोग किया जाता है तथा परिवार-



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

निर्माण कर पितृऋण से मुक्ति का अवसर मिलता है। तीसरा पड़ाव वानप्रस्थ है, जहाँ पहुँचकर मनुष्य को सुख-शांति का अनुभव करना चाहिए, क्योंकि जीवनयात्रा समाप्ति पर आ जाती है, पर ऐसा नहीं होता। इस समय तो वह चिंतित और भयभीत दिखाई देता है। कारण स्पष्ट है कि इस समय न ब्रह्मचर्याश्रम के लिए गुरुकुल हैं और न गृहस्थाश्रम के लिए संयुक्त परिवार। जहाँ व्यक्ति परिवार में रहकर समाज-निर्माण की शिक्षा पाता है। इस समय तो केवल गृहस्थाश्रम ही रह गया है शुरू से अंत तक, अतः बुढ़ापे में समस्याओं से जूझना पड़ता है। कल महर्षि कात्यायन जी ने इस विषय पर विचार-विमर्श किया था तो वृद्धजनों को बहुत आश्वासन मिला था। अतः आज कथा सुनने के लिए वयोवृद्ध लोगों की भीड़ उमड़ पड़ी है। आज महर्षि कात्यायन जी ने, महर्षि धौम्य से उनकी समस्याओं का समाधान करने के लिए कहा है, चलिए हम भी चलते हैं, जहाँ कथा हो रही है।

प्रातःकाल आरण्यक में, फिर ब्रह्मविद्या का सत्र हुआ।
ऋषि समुदाय हो पंक्तिबद्ध, फिर आश्रम में एकत्र हुआ॥
एक वृद्ध जिज्ञासु ने ऋषि से, पूछा फिर शीश झुका करके।
हे देव ! है मन में जिज्ञासा, उसे करिए दूर कृपा करके॥
जैसे देखा हो मधुर-स्वप्न, बचपन तो ऐसे बीत गया।
यह युवावस्था भी चली गई, हो जैसे कोई मनमीत गया॥
सब पाप कर्म अब उदय हुए, यह वृद्धावस्था आई है।
इससे तो मरना अच्छा है, यह नाथ ! महादुःखदायी है॥



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

छुटकारा इससे कैसे हो, मन में असमंजस भारी है।
इस मुश्किल को आसान करें, बस इतनी विनय हमारी है॥

***दुखी वृद्ध के वचन सुन, बोले ऋषि महान।***
***समझाता हूँ मैं तुम्हें, सुन लो धरकर ध्यान॥***

प्रात:काल आश्रम में सत्र प्रारंभ हुआ। कल के प्रवचन में वानप्रस्थ एवं संन्यास की महिमा सुनकर आज वयोवृद्धों की अपार भीड़ दिखाई दे रही थी। अत: महर्षि कात्यायन जी ने महर्षि धौम्य को आमंत्रित कर इन लोगों की समस्याओं का समाधान करने के लिए कहा। महर्षि धौम्य मंच पर आसीन हुए तो गायत्री मंत्र के पश्चात एक वृद्ध जिज्ञासु ने हाथ जोड़कर कहा—"हे महामते, कल संन्यास एवं वानप्रस्थ का महत्त्व सुनकर आज बहुत से वृद्धजन अपनी शंकाओं का समाधान कराने के लिए आए हैं। हे महाप्राज्ञ ! बचपन तो मधुर स्वप्न की भाँति खेलते-खाते बीत गया, वह कब चला गया पता ही नहीं चला, युवावस्था भी खाने-पीने तथा जिम्मेदारी पूरी करने में बीत गई, किंतु यह वृद्धावस्था तो जीवन के लिए अत्यंत कष्टदायक बन गई है। कृपया हमें बताइए कि हम क्या करें जिससे यह वृद्धावस्था ठीक प्रकार बीत सके।"

इसी समय एक वृद्ध ने कातर वाणी में कहा—"हे महाप्राज्ञ! मैंने बचपन से बहुत कष्ट उठाए हैं। मेरे माता-पिता नहीं थे, मेरे एक रिश्तेदार ने दया करके मुझे पाला, मेरी शादी की और एक दुकान खुलवा दी। मैंने बहुत परिश्रम करके अपने बेटे को ऊँची शिक्षा दिलाई और जब वह अफसर बन गया तो उसकी शादी एक रईस घर की लड़की से हो गई। अब



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वह अपनी ससुराल में ही रहता है, हम लोगों से कोई मतलब नहीं रखता। हम उसकी पढ़ाई का कर्ज चुका रहे हैं।" यह कहकर उसकी आँखें भर आईं।

एक दूसरे व्यक्ति ने कहा—"गुरुदेव ! मेरी कहानी तो इससे भी ज्यादा दुःखद है।" किसी तरह अपना पेट काटकर मैंने लड़के को पढ़ाया-लिखाया, अच्छी नौकरी मिल गई है। शादी कर दी। पहली दीपावली पर उसे घर बुलाया कि बहूरानी को साथ लेकर घर आए तो कहलवा दिया कि बीमार हूँ नहीं आ सकता। सुनकर मन नहीं माना तो देखने पहुँच गया, देखा तो हॉल में शराब के दौर चल रहे हैं। हाहा-हीही हो रही है। मुझे देखकर बहूरानी ने नौकर को बुलाकर कहा—"देख, गाँव से कोई नौकर आया है, उसे अपने कमरे में बिठा ले और खाना खिला दे।" यह सुनकर मुझे तो चक्कर आ गया। मैं वापस चला आया। एक अन्य व्यक्ति ने दुःख भरी कथा सुनाते हुए कहा—"मुझे खाँसी का रोग है। बहू-बेटों ने मेरी खाट बाहर बरामदे में डाल दी है। मेरे खाने के बरतन अलग हैं। बस सुबह पार्क में बैठकर मौत का इंतजार करता हूँ।"

**निश्चिकाय ततस्तेषां कर्तुं स मार्गदर्शनम्।**
**गृहस्थे वृद्धव्यक्तीनामपि स्थानं महत्त्वगम्॥**

—३/५/८

**आत्मलाभदृष्ट्या च समयोऽयं तु विद्यते।**
**भाग्योदयस्य कर्तेव सुयोग्यो योग उच्यताम्॥**

—३/५/१५



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

हे वृद्धो! सुनो ध्यान देकर,यह तथ्य तुम्हें बतलाता हूँ।
सब धर्मशास्त्र जो कहते हैं, वह मर्म तुम्हें समझाता हूँ॥
हे छात्रगणो और नवयुवको, तुम सब भी ध्यान देकर सुन लो।
जो कहता हूँ उसकी गरिमा, तुम अपने मन में ही गुन लो॥
जहाँ माता-पिता पूजे जाते, उस घर को मंदिर कहते हैं।
है वह धरती का स्वर्ग, और सब देव वहीं पर रहते हैं॥
हैं जन्मदाता वे ही अपने, वे पालन-पोषण करते हैं।
बच्चों को सुविधा देने को, वे स्वयं दुःखों को सहते हैं॥

***वृद्धजनों का जिस घर में, होता है सम्मान।***
***स्वयं लक्ष्मी रहती वहाँ, वह घर स्वर्ग समान॥***

महाप्राज्ञ ने उन सबकी समस्याओं को सुनकर कहा—"हे भद्रजनो, छात्रगणो एवं नवयुवको! तुम सभी ध्यान देकर सुनो। समय का चक्र निरंतर चलता रहता है। आज जो शिशु है वह कल नवयुवक बनेगा और फिर वृद्धावस्था भी आनी ही है। यह स्थिति सभी के साथ आती है। अतः यदि आप स्वयं माता-पिता का सम्मान नहीं करेंगे तो बच्चे भी आपका सम्मान नहीं करेंगे।" मैं तुम्हें वही बता रहा हूँ जो धर्मशास्त्र कहते हैं। परिवार में वृद्धजनों का बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान है। उनका सम्मान होना ही चाहिए, किंतु यह तभी संभव है जब बच्चों को अच्छे संस्कार दिए जाएँ। यदि बच्चे आज बड़ों का सम्मान नहीं करते तो इसके लिए हम लोग ही दोषी हैं। आपने पढ़ा रामचरितमानस में पढ़ा है न—

***प्रातःकाल उठि के रघुनाथा।***
***मात-पिता गुरु नावहि माथा॥***



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आज बच्चों को यह बात कहाँ सिखाई जाती है कि दादा-दादी, नाना-नानी के पैर छुओ। इस समय तो संयुक्त परिवार की प्रथा ही समाप्त हो गई है। इस समय तो बस 'छोटा परिवार, सुखी परिवार' का नारा लगाते हैं और बच्चों को लाड़-प्यार में इतना बिगाड़ देते हैं कि दादा-दादी की तो बात ही क्या वे माता-पिता का भी सम्मान नहीं करते और भाई-बहनें भी आपस में प्यार से नहीं रह सकते। तुम सब कान खोलकर सुन लो, जहाँ माता-पिता का सम्मान होता है, वहाँ देवता निवास करते हैं।

बच्चे जैसा देखते हैं अथवा उन्हें जैसा सिखाया जाता है वैसा करते हैं। एक नवयुवक ने अपनी पत्नी के कहने पर अपने पिता को जंगल में ले जाकर मार डाला और गड्ढे में दबाकर चला आया। उसका पुत्र माता-पिता की योजना सुन रहा था। उसने भी बड़े होकर अपने पिता को जंगल में ले जाकर मार डाला और वहीं गाड़ दिया। उसके पुत्र ने भी जब उसी जंगल में जाकर मारने की योजना बनाई तो पिता ने कहा—"बेटा, मैंने जो भूल की थी उसका परिणाम मुझे मिल रहा है। पिता की भाँति मैं भी उसी तरह मारा जाऊँगा, परंतु तू इस परंपरा को तोड़, नहीं तो यह परंपरा इसी प्रकार चलती रहेगी और तेरा भी नंबर कुछ दिन बाद आ जाएगा। मैं स्वयं कहीं चला जाता हूँ, पर तू मेरे लिए नहीं तो अपनी भलाई के लिए ऐसा मत कर।" तब उसकी आँखें खुल गईं, वह पिता को साथ ले आया। आज अनेक परिवार इसी रूढ़िवादिता के कारण दुर्गति में हैं। बच्चों को अच्छे संस्कार देकर इस समस्या का समाधान हो सकता है। स्कूल की शिक्षा के साथ-साथ बच्चों को व्यावहारिक ज्ञान सिखाना बहुत आवश्यक है। घर में



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बड़ों के साथ सभ्यता से बात करें तथा पास-पड़ोस, स्कूल के बच्चों के साथ सद्व्यवहार की शिक्षा दी जाए तो बच्चे उद्दंड नहीं हो सकते। अकसर देखा जाता है कि बच्चे किसी के साथ झगड़ा करके आते हैं तो माता-पिता अपने बच्चों का पक्ष लेकर लड़ने पहुँच जाते हैं। इससे बच्चे उद्दंड हो जाते हैं और बाद में माता-पिता को ही भुगतना पड़ता है, इसीलिए गुरुदेव कहते हैं कि माता-पिता की एक आँख दुलार की तथा एक आँख सुधार की होनी चाहिए।

माता-पिता का सम्मान करने वाले स्वयं भी सम्मानित होते हैं। आप सबने गणेश जी की कथा सुनी होगी। एक बार सब देवताओं में इस बात पर विवाद हुआ कि सबसे पहले किस देवता का पूजन होना चाहिए? यह तय हुआ कि जो सबसे पहले पृथ्वी की परिक्रमा करके आए उसी की सर्वप्रथम पूजा की जाए। सब देवता अपने-अपने वाहन लेकर चल दिए। गणेश जी का वाहन चूहा था, कैसे परिक्रमा करें? उन्होंने देखा—माँ पार्वती व शिवजी एक स्थान पर बैठे हैं। बस जल्दी से उन दोनों की सात परिक्रमा कर डालीं और बैठ गए। सब देवता वापस आए तो उन्हें बैठा देखकर कहने लगे—"तुम नहीं गए?" उन्होंने कहा—"मैं तो सात परिक्रमा कर चुका हूँ। माता पृथ्वी तथा पिता आकाश तुल्य होते हैं। मैंने माता-पिता दोनों की सात परिक्रमा करके धरती-आकाश दोनों की परिक्रमा कर ली है।" आप सब जानते हैं कि प्रत्येक कार्य में विघ्नविनाशक ऋद्धि-सिद्धि के देवता गणेश जी की पूजा ही पहले की जाती है। इसलिए यदि चाहते हो कि बुढ़ापा आराम से बीते तो बच्चों को अच्छे संस्कार दो।



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

**पक्वं फलं सदा शाखां विहायान्यस्य प्राणिनः।**
**उपयोगाय संयाति तथैवाऽत्रापि चायुषि॥**

—३/५/१६

**युक्तं परिणते एव वानप्रस्थग्रहो नृणाम्।**
**विद्यते शाश्वतीयं च भारतीया परंपरा॥**

—३/५/१७

पका हुआ फल डाली छोड़, जब धरती पर गिर जाता है।
सबको अपना जीवन रस दे, वह दिव्य तृप्ति पा जाता है॥
है यही परंपरा संस्कृति की, अपने सुख औरों को बाँटो।
जो दीन-दुखी व्याकुल निर्बल, उनके सारे संकट काटो॥
है स्वर्णकाल वृद्धावस्था, यह जीवन का अभिशाप नहीं।
यदि औरों को अपना कर लो, तो मिट जाएँ संताप सभी॥
हँसमुख प्रसून सिखलाते हैं, तुम काँटों में भी मुसकाओ।
अपने अनुभव की सुरभि से, तुम सारे जग को महकाओ॥

***मोह-माया को छोड़कर, कर लो सबसे प्यार।***
***अपना भी होवे भला, सुखी रहे संसार॥***

वृद्धजनों को समझाते हुए महाप्राज्ञ ने कहा—"हे भद्रजनो ! दूसरी बात यह है कि जैसे पका हुआ फल डाली छोड़कर दूसरों के काम आता है, वह अपना रस औरों को प्रदान कर देता है उसी प्रकार जीवन की इस ढलती आयु में तुम्हें भी तन-मन-धन से समाज की सेवा करनी चाहिए। यही भारतीय शाश्वत परंपरा है। इस समय आप सबको लोक-कल्याण के लिए अग्रसर होकर अपनी पुण्यराशि अगले जन्म के लिए संचित करनी



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

चाहिए। मोह-माया में फँसकर अपना यह जन्म तो व्यर्थ खो ही रहे हो, अगले जन्म के लिए भी काँटे बो रहे हो, इसलिए अपने परिवार की तरह सबको अपना ही समझो तो इस जीवन में भी आनंद पाओगे और अगला जन्म भी सुधरेगा।"

इस विषय में पुराणों में बहुत सी कथाएँ आतीं हैं। एक बार एक वृद्ध आदमी दुकान पर बैठकर कह रहा था—"हे भोलेशंकर ! अब तो सहा नहीं जाता, मुझे अपने पास बुला लो।" संयोग से माँ पार्वती शिवजी के साथ जा रही थीं। उन्होंने सुना तो भगवान शिव से कहा—"आपका यह भक्त बहुत दुखी है, इसे शिवलोक बुला लीजिए।" शिवजी ने मुस्कराकर कहा—"देवि! ये सब मोह-माया के बंधन में बँधे हैं, कोई शिवलोक नहीं आना चाहता। फिर भी तुम चाहती हो तो नारद जी को भेज दो और उसे बुला लो।" माँ पार्वती ने नारद जी से कहा। नारद जी उसके पास पहुँचे और बोले—"चलो शिवलोक में तुम्हें बुलाया है।" वह आदमी एकदम घबरा गया। बोला—"अरे, अभी मैं कैसे जा सकता हूँ? अभी तो मेरे बेटे की नौकरी भी नहीं लगी, शादी भी नहीं हुई। अभी साल भर बाद आना।" देवर्षि एक साल बाद फिर पहुँचे, तो उसने कहा—"देखो, बेटे की नौकरी लग गई, शादी भी हो गई, पर अभी पोते का मुँह देख लूँ, इसलिए साल भर बाद आना।" देवर्षि साल भर बाद फिर पहुँचे। पता चला वृद्ध मर गया है और घर में बैल बनकर खड़ा है। देवर्षि ने फिर कहा—"चलो, अब तो चलो।" बोला—"अरे, मैं कैसे चल सकता हूँ ? देखो, खेती सूख रही है, मैं भी नहीं रहूँगा तो बेटा दूसरा बैल कहाँ से लाएगा? इस बार फसल ठीक



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हो जाए तो फिर चलूँगा।" देवर्षि फिर गए तो पता चला कि बैल भी मर गया है। वह कुत्ता बनकर दरवाजे पर बैठा है। देवर्षि ने कहा—"अब तो चलो।" उसने भौं-भौं करते हुए कहा—"अरे, तुम मेरे पीछे क्यों पड़े हो! देखते नहीं बहू कितनी लापरवाह है? दरवाजा खोलकर चल देती है। मैं नहीं रहता तो अब तक कभी की चोरी हो जाती। जाओ, किसी और को ले जाओ। मैं तो यहीं ठीक हूँ।" देवर्षि तो चले गए, पर वह व्यक्ति मरकर सर्प बना और उसको उसके बच्चों ने ही मार डाला।

कहने का तात्पर्य यह है कि मरकर भी मोह नहीं छूटता तो सुख की आशा कैसे की जा सकती है ? सच तो यह है कि मृत्यु के बाद भी इस शरीर का मोह नहीं छूटता। एक राजा बहुत धर्मात्मा था। उसे मालूम था कि इस जन्म के कुछ दुष्कर्मों के परिणामस्वरूप उसे एक बंदर का रूप धारण करना पड़ेगा। उसने अपने पुत्र से कहा—"देखो, मृत्यु के बाद मैं बंदर के रूप में जन्म लूँगा। अभयारण्य में एक बरगद के पेड़ पर मैं बैठा रहूँगा, तुम मुझे गोली से मार देना तो मेरी मुक्ति हो जाएगी।" पुत्र पिता की मृत्यु के बाद वहाँ पहुँचा तो देखा कि एक बंदरिया बच्चे को लेकर बैठी हुई है। उसने बंदरिया को देखकर बंदूक चलाई तो डर के कारण बंदरिया तो बेहोश हो गई और बच्चा कूदकर ऊँची डाल पर चढ़ गया। बहुत प्रयत्न करने पर भी वह उसे न पा सका। साथ में जो पंडित जी थे उन्होंने कहा—"इस राजा को इस बंदर शरीर से ही मोह हो गया है, चलो वापस चलो, अब वह मरना ही नहीं चाहता।"

इसलिए हे महानुभावो! आपने जो अपने दुःख सुनाए हैं, उनका कारण आप लोगों का मोह ही है जो इस बुढ़ापे में भी नहीं छूट रहा है।



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आप लोग बच्चों के मोह को छोड़कर किसी दूसरे के लिए कुछ तो करके देखिए। इससे आपको भी शांति मिलेगी और दूसरों का भी भला होगा। इस संसार में कितने ही ऐसे अनाथ बच्चे हैं, जिन्हें सहारे की जरूरत है, आप लोग इस समय उन्हें सहारा दीजिए तो वे आपके बुढ़ापे की लाठी बनेंगे।

एक आदमी ने अपने दोस्त के बेटे श्याम को अपने साथ रख लिया। वह अपने बेटे की तरह उसको रखता था। यह देखकर उसका लड़का राम और उसकी पत्नी दोनों को ही बहुत बुरा लगता था। माँ के लाड़-प्यार ने बेटे राम को बुरी संगति में डाल दिया। वह जुआ भी खेलता था, शराब भी पीता था। दोस्त का बेटा बहुत वफादार था। वह माता-पिता की तरह ही उन दोनों की सेवा करता था। एक दिन शराब के नशे में राम ने माँ से रुपये माँगे। मना करने पर उसे धक्का दे दिया और वह गिरकर मर गई। पिता ने जब यह सब देखा तो पुलिस को फोन कर दिया। यह देखकर वह भाग गया, लेकिन पुलिस ने उसे पकड़ लिया और जेल में डाल दिया। पिता ने अपनी सारी जायदाद श्याम को सौंप दी, राम को नहीं। असल में अपने बच्चे अपना अधिकार समझते हैं, जबकि दूसरे एहसान मानते हैं। इसलिए आप लोग जितना अपने बच्चों के लिए करते हैं, उसका थोड़ा सा भी अंश दूसरों के लिए कीजिए, तभी आपका समय आराम से बीतेगा। ज्यादातर यह मोह तभी छूटता है जब कोई चोट पहुँचती है। राजा भर्तृहरि को किसी ने अमरफल दिया। राजा ने अपनी रानी को दिया। रानी एक साधु को चाहती थी। उसने जाकर साधु को दे दिया। साधु ने वेश्या को दिया, वेश्या



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ने राजा को दे दिया। राजा को जब यह सब पता चला तो उन्हें बहुत ग्लानि हुई और उन्होंने संन्यास ले लिया। सच तो यही है कि यह मोह-बंधन ही दुःख का कारण है। इससे छुटकारा पाओ।

**प्रज्ञा गीत**

दुनिया हो गई पुरानी, बदलो भैय्या।
दुनिया हो गई, पुरानी बदलो बहनो।
आके कह गए युग निर्माणी, बदलो भैय्या॥
सास-बहू करतीं हैं झगड़ा, बेटा-बाप लड़ाई।
जानी दुश्मन बना हुआ है, अपना ही यह भाई।
ये है घर-घर की कहानी, बदलो भैय्या॥
जिंदे माँ और बाप को बेटे, रोटी नहीं खिलाते।
मर जाने पर मृत्युभोज में, रसगुल्ले बनवाते।
यह है कैसी नादानी, बदलो भैय्या॥
हम बदलेंगे, युग बदलेगा, आज लगाओ नारा।
मोह और अहंकार छोड़कर, बदलो जीवन सारा।
होगी बड़ी मेहरबानी, बदलो भैय्या॥

इसके अतिरिक्त गृहस्थाश्रम की जिम्मेदारियों से निवृत्त होकर मनुष्य को बेटे की घर-गृहस्थी के कामों में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए। प्रथाएँ परिवर्तनशील हैं, नई पीढ़ी को अपनी इच्छानुसार कार्य करने की छूट दे देनी चाहिए। इस विषय में महिलाओं को विशेष रूप से परेशानी आती है। वे सोचती हैं हमने अपने सास-ससुर के साथ जैसा व्यवहार किया है, बहुएँ भी वैसा ही करें, किंतु सोचिए जमाना कितनी तेजी से बदल रहा है। आज



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लड़कियाँ कॉलेज में पढ़ने जातीं हैं। उनकी वेशभूषा, उनकी बोल-चाल, रहन-सहन ५० वर्ष पहले की तरह कैसे हो सकता है?

मान लीजिए, कोई लड़का अपनी पसंद की लड़की से शादी करना चाहता है, यदि कन्या सुयोग्य है तो उसका विरोध करके अपने लिए मुसीबत क्यों पैदा करते हो? यदि आप उसकी बात मान लेते हैं तो वे दोनों जीवन भर आपकी बात मानेंगे, सम्मान करेंगे। नहीं तो वे दोनों आपको छोड़कर भी जा सकते हैं। अतः इन परंपराओं को छोड़ देना चाहिए। दहेज, बाल-विवाह, परदाप्रथा, कन्याओं को शिक्षा न देना, उन्हें बाहर निकलने की अनुमति न देना, बहुत सी ऐसी बातें हैं जो पहले आवश्यक थीं, इस समय अनावश्यक हैं, तो उनको छोड़ना ही उचित है।

यदि बच्चे कोई अनैतिक कार्य करते हैं तो उन्हें समझाना आवश्यक है, लेकिन उनको समझाने के लिए भी प्यार का तरीका अपनाया जा सकता है। एक लड़का बहुत शरारती था। बाप के पास बहुत पैसा था। अतः माँ के लाड़-प्यार के कारण उसमें बहुत सी बुरी आदतें आ गई थीं। पिता बहुत परेशान थे। उनका एक मित्र वृद्धाश्रम में संचालक था। उस मित्र ने सलाह दी कि इसे वृद्धाश्रम में वृद्धों की सेवा करने के लिए छोड़ दो। उनकी संगति में रहकर यह सुधर जाएगा और उनकी सेवा करेगा तो कुछ पुण्यलाभ ही होगा। शुरू-शुरू में उस लड़के ने सबको बहुत परेशान किया। वह बड़ों की बात भी नहीं मानता था और कभी-कभी दुर्व्यवहार भी करता था। एक दिन उसे एक बीमार आदमी की दवा लाने भेजा, परंतु वह शाम तक लौटकर ही नहीं आया और आया भी तो दवा लेकर नहीं



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आया। रात्रि में उस वृद्ध की हालत बहुत खराब हो गई और उसकी मृत्यु हो गई। इस घटना ने उस बालक को बिलकुल बदल दिया और धीरे-धीरे वह अच्छा लड़का बन गया। एक दिन वृद्धाश्रम को चलाने वाले सेठ की मृत्यु हो गई और सेठ के लड़के ने उस बिल्डिंग को खाली करने का आदेश दिया। सभी वृद्ध परेशान थे। इस लड़के ने अपने पिता से जाकर कहा कि आप उन सबकी सहायता कीजिए। पिता बेटे के हृदय-परिवर्तन पर बहुत प्रसन्न थे। उन्होंने उस बिल्डिंग को खरीद लिया और अपने उस बेटे को ही उसकी देखभाल तथा वृद्धों की सुविधाओं का भार सौंप दिया। इस प्रकार बिगड़े हुए बच्चों को भी सुधारने का प्रयास करना चाहिए।

वृद्धों की समस्याओं में आर्थिक समस्या भी है। कुछ व्यक्ति तो जीवन भर की कमाई बच्चों की शिक्षा-दीक्षा में लगा देते हैं और जब बच्चे उनकी उपेक्षा करते हैं, तो उनका जीवन नरक बन जाता है। अतः ऐसे लोगों के लिए वृद्धाश्रम खोले जा सकते हैं। जिनके पास धन है, वे उस धन को अपने बच्चों को न देकर ऐसी संस्थाएँ खुलवा दें, जहाँ इस प्रकार के साधनहीन वृद्धजन रहकर अपनी जीवनचर्या चला सकें। प्रत्येक व्यक्ति के पास कुछ न कुछ अनुभव, कुछ न कुछ प्रतिभा होती है। अतः जिनके पास धन है, वे कोई ऐसी पाठशाला, ऐसी कार्यशाला या अस्पताल बनवा सकते हैं, जहाँ अनुभवी डॉक्टर, अध्यापक अपना समय देकर समाजसेवा करें, जिससे उनकी आर्थिक समस्या का समाधान भी हो जाए।

कभी-कभी धनी व्यक्ति भी भावावेश में आकर अपना धन सब बच्चों में बाँट देते हैं। बाद में जब बच्चों की तरफ से उपेक्षा होती है, तब पछताते



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हैं। एक सेठ की पत्नी की मृत्यु हो गई। उन्होंने अपना सारा धन अपने तीनों बेटों में बाँट दिया। थोड़े दिन तो सबने पिता की सेवा की, बाद में आपस में झगड़ा शुरू हुआ—"पिता जी हमारे पास ही क्यों रहते हैं, दूसरे भाई के पास क्यों नहीं जाते ?" उनकी यह दशा देखकर उनके एक मित्र ने उन्हें कुछ सलाह दी। एक दिन वे मित्र एक बकसा लेकर आए जिसका ताला बंद था। बकसा बहुत भारी था, उन्होंने कहा—"इस बकसे में इनका जो सामान है, वह इनकी मृत्यु के बाद उसी को मिलेगा जो इनकी सेवा करेगा।" इस तरह सभी उनकी सेवा में लग गए। अंत में उनकी मृत्यु के बाद बकसा खोला तो देखा उसमें कुछ पुस्तकें थीं। कुछ वस्त्रादि तथा कंकड़-पत्थर भी थे। उसे देखकर सबको बहुत क्षोभ हुआ, किंतु कहने का तात्पर्य यही है कि यह संपत्ति जो अनेकों को लाभ पहुँचा सकती है, उसे अपने बच्चों को ही न देकर किसी अच्छे कार्य में लगाना ही उचित है। आजकल बहुत सी समाजसेवी संस्थाएँ हैं, उनके सदस्य बनकर अपना अंशदान तथा समयदान देकर समाज का कल्याण तथा अपना कल्याण भी किया जा सकता है।

**गृहस्थान्निवृत्तेर्वानप्रस्थे प्रवृत्तिकस्य च।**
**मध्ये कर्तुं स्वभावे तु परिवर्तनमप्यथ॥**

—३/५/४४

**प्रव्रज्यायां हि योग्यत्वं सुविधाऽपि च विद्यते।**
**येषां ते तीर्थयात्रार्थं यान्तु धर्मोपदिष्टये॥**

—३/५/५२



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इसलिए उठो हे वृद्धजनो, अपनी गौरव गरिमा जानो।
सीमित बंधन को तोड़ बढ़ो, सारे जग को अपना मानो॥
अब तक अपने बुद्धिबल से, तुमने अर्जित धन-ज्ञान किया।
परिवार के बंधन में बँधकर, बस अपना ही कल्याण किया॥
अब आत्मज्ञान को धारण कर, कुछ ऐसा नव-निर्माण करो।
धरती पर स्वर्ग उतर आए, कुछ ऐसा शुभ अभियान करो॥
जागो भारत के संन्यासी, यह समय नहीं है सोने का।
भारत माँ के आँसू पोंछो, यह समय नहीं खुद रोने का॥

***भूल गए निज रूप को, अब तो लो पहचान।***
***भारत माँ के पुत्र हो, ऋषियों की संतान॥***

सभी श्रद्धा भाव से गुरुदेव का प्रवचन सुन रहे थे। शंकाओं का समाधान हो रहा था। अपनी कमियाँ समझ में आ रही थीं। गुरुदेव ने सबको संबोधित करते हुए कहा—हे श्रद्धालु साधको ! अब उठो जागो, अपनी भीतरी और सोई शक्ति को जाग्रत करो। तुम्हारे इस तरह आँसू बहाने का कारण यही है कि बचपन तथा युवावस्था में जीवन का रस असंयम के छिद्रों से बहा दिया है। जैसे छलनी में दूध दुहने से दूध बिखर जाता है और कुछ हाथ नहीं लगता, उसी प्रकार अपना अमूल्य समय खो देने से पछताना पड़ता है। जिह्वा के असंयम से भोजन पर नियंत्रण न करने से शरीर अस्वस्थ हो जाता है तो वृद्धावस्था अभिशाप बन जाती है। वाणी के असंयम से अपनों को भी पराया बनाकर पछताने के सिवाय क्या मिल सकता है ? समय का असंयम कर उसे व्यर्थ खोने वाले को आँसू ही बहाने



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पड़ते हैं, क्योंकि गया हुआ समय फिर वापस नहीं आता—**मन पछितइए अवसर बीते।**

धन संपदा को अपनी दुष्प्रवृत्तियों में गँवाकर मनुष्य को लांछित और अपमानित होना पड़ता है। विवेकशील व्यक्तियों के सामने ये समस्याएँ नहीं आतीं। भारतीय परंपरा में परलोक एवं पुनर्जन्म की धारणा ऐसी है कि यदि मनुष्य यह याद रखे कि इस जन्म के कर्मों का फल अगले जन्म में अवश्य मिलेगा तो वह दुष्कर्म कर ही नहीं सकता। फिर तो यही सोचेगा कि कुछ ऐसा कर्म करें कि अगले जन्म में हमें सुख-संपत्ति मिले। इसके लिए सबसे सरल उपाय यही है कि बैंक-बेलेंस को अगले जन्म के लिए भेज दें। आप सोचेंगे कि ऐसा कैसे करें कि इसे भगवान के बैंक में भेज दें। इसके लिए जो भगवान के भक्त हैं, जो हरिजन हैं उनकी सेवा में लगा दो, बस देखना कि कल्याण हो जाएगा। यह धन भगवान के बैंक में जमा हो जाएगा।

पुराणों में इस प्रकार की बहुत सी कथाएँ हैं। जब द्रौपदी का चीरहरण हो रहा था, तब उसने भगवान को पुकारा और भगवान ने कहा कि द्रौपदी के दान-कोश में क्या है ? पता चला एक बार भगवान कृष्ण की उँगली कट गयी थी, खून बह रहा था, उसने अपनी साड़ी फाड़कर उनकी उँगली में पट्टी बाँध दी थी। बस उसकी साड़ी का वह कपड़ा ही इतने विस्तार में फैल गया कि दस हाथियों की शक्ति रखने वाला दुःशासन जैसा महारथी थक गया। साड़ियों के ढेर लग गए, पर द्रौपदी का चीरहरण नहीं हो सका।



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

इसी प्रकार रवींद्रनाथ टैगोर की एक कविता है। झोली में गेहूँ भरकर एक व्यक्ति आ रहा था। रास्ते में किसी ने गेहूँ माँगा तो उसने एक दाना दे दिया। शाम को झोली उलटकर देखा तो उसमें एक दाना सोने का हो गया था। तब उसे यह पश्चाताप हुआ कि सारी झोली क्यों न उसी को दे दी। मेरी सारी झोली सोने के दानों से भर जाती। अतः आप दानवृत्ति अपनाएँ।

इसके अतिरिक्त आप अपनी प्रतिभा से समाजसेवा भी कर सकते हैं। आप सबके बीच में कुछ अनुभवी डॉक्टर भी होंगे, कुछ अध्यापक भी होंगे, कुछ महिलाओं का भी संगठन बनाया जा सकता है। कुछ महानुभावों के पास बड़ी-बड़ी कोठियाँ भी होंगी। नहीं तो किसी विद्यालय या मंदिर में सत्संग भवन में कुछ ऐसी व्यवस्था की जा सकती है कि गरीब बच्चों को थोड़ा पढ़ाने की व्यवस्था कर दें। जिसके पास शिक्षा है वे शिक्षा दे सकते हैं, जिनके पास ग्रामोद्योग की प्रतिभा है, वे बच्चों को उद्योग-धंधों को सिखाकर उन्हें स्वावलंबी बना सकते हैं, जो डॉक्टर हैं वे उनका उपचार कर सकते हैं। बहनों से तो अचार, मुरब्बा, पापड़, कचरी इत्यादि घरेलू चीजें ही बनवाकर उन्हें स्वावलंबी बनाया जा सकता है। आजकल अनेक समाजसेवी संस्थाएँ इन सब कार्यों में सहयोग कर रही हैं। गायत्री परिवार के परिजन इस दिशा में बहुत महत्त्वपूर्ण कार्य कर रहे हैं। विशेष रूप से महिलाएँ तो बहुत ही प्रशंसनीय कार्य कर रही हैं।

किसी भी कार्य को करने के लिए सबसे अधिक आवश्यकता संकल्प शक्ति की है। केवल आँसू बहाने से कुछ नहीं होता। आप सब संपन्न व्यक्ति हैं। ईश्वर ने आपको हाथ-पैर, आँख-कान तथा बुद्धिबल देकर



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अमूल्य संपदा दी है। उसका उपयोग करिए। स्वयं अपना सहारा बनकर दूसरों को सहारा दो। एक स्त्री के संतान नहीं थी। गरीब घर की लड़की थी। उसे प्रताड़ित करके सास-ससुर, पति ने घर से बाहर निकाल दिया। उसे कुछ नहीं सूझ रहा था। सोचा आत्महत्या कर लूँ। वह नदी में डूबने ही जा रही थी कि एक बच्चे ने उसका आँचल पकड़कर कहा—"माँ, भूख लगी है कुछ खाने को दो।" माँ शब्द सुनकर उस स्त्री का मन रोमांचित हो गया। इसी के लिए तो उसे घर से निकाला गया। उसने आत्महत्या का विचार छोड़ दिया। वह एक स्कूल की प्रिंसीपल के पास गई और काम करने के लिए कहा। प्रिंसीपल को एक नौकरानी की जरूरत थी। उसने उसे रख लिया। बच्चे को स्कूल भेजने की व्यवस्था भी कर दी। धीरे-धीरे उसने स्वयं भी पढ़ना शुरू किया। कुछ पढ़ी हुई थी। परीक्षा पास करके छोटे स्कूल में सर्विस लग गई। अब उसने एक मकान किराये पर लिया और छोटी बस्ती में जाकर गरीब बच्चों को इकट्ठा किया तथा उनके माता-पिता को भी समझाया कि वे भीख न माँगे। उसने एक स्वावलंबन केंद्र खोला। प्रिंसीपल भी समाजसेविका थी। उसने सहायता की और एक संगठन बन गया। आप सब इस प्रकार बहुत से कार्य कर सकते हैं।

लोक-निर्माण का कार्य इतना सरल नहीं है कि कोई भी व्यक्ति कर सके। उसके लिए अनुभवी, सुयोग्य, ईमानदार, लगनशील एवं प्रभावशाली कार्यकर्त्ता चाहिए। ऐसे नेतृत्व का उत्पादन आप जैसे व्यक्ति ही कर सकते हैं। यदि आप कुछ लोग मिलकर ही इस कार्य को शुरू करें तो एक से एक बढ़कर योग्य व्यक्ति निकलकर आ सकते हैं। बात यह है कि पदाधिकारी



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

व कार्यकर्त्ता में अंतर होता है। कार्यकर्त्ता को कोई प्रलोभन नहीं होता, वह निस्स्वार्थ भाव से सेवाकार्य में आगे बढ़ता है, जबकि पदाधिकारी को चाहे पद छोटा हो या बड़ा वेतन दिया जाता है और वह उसी के आधार पर कार्य करता है। यदि कार्यकर्त्ता भी पद की लिप्सा में फँस जाते हैं तो कोई कार्य समर्पित भाव से नहीं कर सकते।

इस समय तो डॉक्टर को भी यदि गाँव में भेजा जाए तो वे वहाँ जाने से कतराते हैं क्योंकि वहाँ उन्हें सुख-सुविधाएँ नहीं मिलतीं। अतः आप लोग अभियान शुरू करें और अपनी शक्ति, प्रतिभा एवं धन का सदुपयोग करके आत्मकल्याण व समाज-कल्याण की ओर अग्रसर हों। यह कार्य आप सबके द्वारा ही होगा। आदर्शों की कमी नहीं है, लोकसेवी महापुरुषों के नाम आज भी इतिहास में अमर हैं। प्राचीनकाल में ही नहीं इस समय भी राजा राममोहन राय, बाल गंगाधर तिलक, मालवीय जी, गांधी जी, अरविंद, महर्षि दयानंद, स्वामी विवेकानंद, शंकराचार्य आदि ने विवाहित अथवा अविवाहित रहकर लोकसेवा का मार्ग प्रशस्त किया है। आचार्य श्रीराम शर्मा जी ने भी आदर्श गृहस्थ जीवन के साथ-साथ वानप्रस्थ व संन्यासी जीवन का आदर्श प्रस्तुत किया है, आप भी उनका अनुकरण कर सकते हैं।

**सन्मार्गे गन्तुमेवात्र प्रेरणां सन्ततं शुभाम्।**
**सर्वेभ्यस्तु जनेभ्योऽत्र निर्विशेषं प्रदीयताम्॥**

—३/५/८३

**भेदं स्वस्य परस्यात्र न कुर्युः स्युश्च साधना।**
**स्वाध्यायः संयमः सेवा वानप्रस्थेऽच्छमद्भुतम्॥**

—३/५/८४



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वे वृद्ध पूजने योग्य नहीं, जो धर्म नीति नहीं अपनाते।
वे अपयश के भागी बनते, सबसे धिक्कारे ही जाते॥
जो कार्य अनैतिक करते हों, तुम उनका पूर्ण विरोध करो।
उसमें भी हो हितचिंतन ही, मन में कोई प्रतिशोध न हो॥
है व्यर्थ जन्म उसका जग में, जो स्वार्थ हेतु ही जीता है।
है धन्य उसी का जीवन जो, दुखियों के आँसू पीता है॥
सीता की रक्षा की खातिर, एक गिद्ध ने भी बलिदान दिया।
भगवान राम ने पिता मानकर, उसका भी सम्मान किया॥

***ऐसे योगी संत ही, पाते हैं सम्मान।***
***जो दुखियों की रक्षा हित, अर्पित कर दें प्राण॥***

महाप्राज्ञ समस्त प्रौढ़ व्यक्तियों को संबोधित करते हुए कहते हैं—"हे भद्रजनो! गृहस्थाश्रम के उत्तरदायित्व के समाप्त होने पर घर-गृहस्थी का भार पुत्र को सौंपकर धर्मप्रचार की यात्रा के लिए चल देना चाहिए। आप लोगों को जन-जन से संपर्क करना चाहिए, लोक-कल्याण का संदेश देना चाहिए। घर हो या बाहर, धर्म का पक्ष लेकर अनैतिकता का विरोध करना वृद्ध व्यक्ति का सबसे बड़ा कर्त्तव्य है। यह ठीक है कि बड़ों का सम्मान होना चाहिए, किंतु बड़ों का सम्मान तभी हो सकता है, जब वे सम्मान के योग्य हों। धर्म का पक्ष न लेकर अन्याय तथा अधर्म को बढ़ावा देने वाले वृद्ध कभी भी सम्मान के योग्य नहीं हो सकते।

**न सा सभा यत्र, न सन्ति वृद्धा।**
**न ते वृद्धा ये न वदन्ति धर्मम्॥**



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कौन से वृद्ध सम्माननीय हैं और किन वृद्धों का सम्मान नहीं होता? हम दो उदाहरण देकर समझाते हैं।

सबसे पहले रामायण युग को देखें। कल्पना कीजिए कि सीता का अपहरण रावण कर रहा है और सीता की करुण पुकार वृद्ध गिद्ध जटायु के कान में पड़ती है। वह निकल पड़ता है, देखता है कि रावण एक अबला नारी का अपहरण कर रहा है और वह अपनी रक्षा के लिए पुकार रही है। आप सोचिए कहाँ जटायु गिद्ध पक्षी, वृद्ध व शक्तिहीन, कहाँ रावण जैसा शक्तिशाली राजा, दोनों का क्या मुकाबला हो सकता था? किंतु जटायु अपने को रोक नहीं सका और सीता की रक्षा के लिए अपने प्राण दे दिए। वह जटायु गिद्ध जाति का होकर भी कितना सम्मानित हुआ? भगवान राम ने अपने पिता की दाह-क्रिया अपने हाथ से नहीं की, किंतु जटायु की दाह-क्रिया अपने हाथ से की और उसे वह सम्मान और गति मिली जो दशरथ को भी नहीं मिली थी। वह जटायु आज भी इतिहास के पृष्ठों में अमर है। आज भी सबको संबोधित करते हुए यही कहा जाता है कि यदि हनुमान नहीं बन सकते तो गिद्ध और गिलहरी बन जाओ। धर्म की रक्षा करने वाले वृद्ध सम्मान पाते हैं।

एक दृश्य महाभारत काल का देखिए। राजसभा का दृश्य जिसमें एक नहीं कई वृद्ध उपस्थित थे। धृतराष्ट्र, भीष्म पितामह, द्रोणाचार्य, कृपाचार्य, विदुर और वहाँ क्या हुआ ? आप सब जानते हैं। द्रौपदी कुलवधू थी उसी वंश की और दुर्योधन भी उसी वंश का राजकुमार था। द्रौपदी का चीरहरण हो रहा था और कौन करा रहा था? उसी वंश का राजकुमार या राजा और



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सब मौन बैठे रह गए। द्रौपदी का चीरहरण महाभारत काल के वृद्धों की अग्निपरीक्षा का समय था। चीरहरण हो रहा था, अपनी कुलवधू का और सब मौन थे। सिर झुकाए, अँगूठे से धरती खुरच रहे थे। आप सोचिए इतने लोग यहाँ बैठकर कथा सुन रहे हैं। यदि किसी अनजान नारी की भी करुण पुकार सुनाई पड़े और दुष्ट अनाचारी भी चाहे परिचित हो, चाहे अपरिचित क्या आप चुप बैठ सकते हैं ? यदि चुप बैठे हैं तो आप वृद्ध ही नहीं, बल्कि मनुष्य कहलाने के भी अधिकारी नहीं हैं, जो व्यक्ति किसी दीन-दुखी की पुकार सुनकर अपनी बलि न दे सके, जो वृद्ध किसी नारी की पुकार सुनकर चुप बैठा रहे, उसके मन में पिता की भाँति वात्सल्य न उमड़ पड़े, उस वृद्ध का सम्मान समाप्त हो जाता है। वह कभी भी सम्मान के योग्य नहीं हो सकता। नहीं तो आप ही सोचिए धर्म-अधर्म के सिद्धांतों से परिचित वृद्धजन इस अन्याय को देखकर मौन कैसे रह सकते हैं ? रावण द्वारा अपहृत सीता की आवाज सुनकर जटायु मौन नहीं रह सका। वनवास के समय वाल्मीकि ने सीता को देखा तो क्या वे मौन रह सके थे ? लेकिन हस्तिनापुर के ये वृद्ध एक गिद्ध की गरिमा को भी नहीं पहुँच सके। ऐसे वृद्धों को तो अपयश का भागी होना ही पड़ा।

भीष्म, पितामह की पदवी से सम्मानित थे, धृतराष्ट्र तो आँखों के अंधे होने के साथ-साथ पुत्र मोह में अंधे हो रहे थे, गांधारी ने आँखें होते हुए भी आँख पर पट्टी बाँधकर पतिव्रता होने का धर्म निभाया था, माता का नहीं। वे दोनों चुप थे ही, पर भीष्म पितामह भी केवल पत्थर की मूर्ति बनकर रह गए। क्या द्रौपदी के मन में उनके प्रति सम्मान की भावना हो



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सकती थी ? कदापि नहीं। तभी तो शरशय्या के समय जब भीष्म उपदेश दे रहे थे, वह हँस रही थी। कारण पूछने पर उसने यही कहा था—"पितामह! आज आप ये लंबे-चौड़े उपदेश दे रहे हैं, जिस समय मेरा चीरहरण हो रहा था उस समय आप कहाँ थे ? कहाँ गए थे ये उपदेश?" दुर्योधन उनका वंशज था। द्रौपदी उसी वंश की कुलवधू थी, क्या वे दुर्योधन को प्रताड़ित कर रोक नहीं सकते थे ? पर उन्होंने ऐसा न कर पितामह पद की गरिमा को खो दिया।

द्रोणाचार्य आचार्य थे, उन्होंने पांडवों व कौरवों को धनुर्विद्या, शस्त्रविद्या का ज्ञान कराया था, किंतु नैतिक शिक्षा कहाँ दे सके ? पांडवों को नैतिकता की शिक्षा तो उनकी माता कुंती ने दे दी थी, पर कौरवों के तो माता-पिता दोनों ही पुत्रमोह में अंधे थे। द्रोण ने अपने जीवन में गरीबी के दिन देखे थे, उनका पुत्र अश्वत्थामा जब दूध के लिए रोता था तो उसकी माँ उसे आटा पानी में घोलकर पिलाती थी। वे उस समय दुर्योधन की कृपा से राजसत्ता का सुख भोग रहे थे, वैसे भी वे जानते थे कि दुर्योधन के विरोध से उन्हें भी विदुर की भाँति शाक-पात पर ही आना पड़ेगा। ये सुख उनसे छिन जाएँगे, पांडव बेचारे खुद दर-बदर भटक रहे थे, वे उन्हें क्या देते? वैसे भी द्रौपदी के पिता द्रुपद ने उनका अपमान किया था। उन्होंने गुरुदक्षिणा में अर्जुन से यही माँगा था कि द्रुपद को बाँधकर ले आओ तो अपने अपमान का बदला लें, शत्रु की बेटी का अपमान हो तो उन्हें क्या ? वे उसके लिए कुछ भी क्यों करें ? कृपाचार्य कुलगुरु होकर भी मौन थे। उनमें भी सच कहने की क्षमता कहाँ थी और विदुर, वे तो अपनी नीति पर दृढ़ रहने की



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हठधर्मी का दंड पहले ही भुगत चुके थे। उन्हें शाक-पात पर गुजारा करना पड़ रहा था। भले ही कृष्ण ने दुर्योधन की मेवा त्यागकर उनके यहाँ शाक-पात खाकर उन्हें सम्मानित किया हो, पर उस समय दुर्योधन के द्वारा दी गई सत्ता के सुख को भोगने वाले किसी वृद्ध में इतना साहस नहीं था कि दुर्योधन के उस दुष्कृत्य के विरोध में आवाज उठा सके।

अत: मैं आप सबसे यही कहना चाहता हूँ कि सम्माननीय वृद्ध वही है, जो अपने जीवन के अनुभवों के आधार पर सही दिशा दे सके, जिसका अपना आचरण श्रेष्ठ हो, जो सच-झूठ, न्याय-अन्याय का भेद करके न्याय का पक्ष ले सके, जो नई पीढ़ी का सही निर्देशन कर सके, वही वृद्ध सम्मान का पात्र हो सकता है।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

आज आप सब अपने दु:खों का रोना रो रहे हैं, कारण स्पष्ट है, कहीं हम से कुछ भूल हुई है। धृतराष्ट्र और गांधारी की भाँति पुत्रमोह में अंधे होकर हम बच्चों को सही संस्कार नहीं दे सके। द्रोणाचार्य और कृपाचार्य की भाँति गुरु बनकर भी केवल अपनी स्वार्थसिद्धि, धन के लोभ और सत्ता-सुख भोगने में लगे रहे। उनके प्रति गुरु का कर्त्तव्य नहीं निभा सके। गुरु की गरिमा को निभाया था चाणक्य ने, सम्राट बनने के बाद चंद्रगुप्त ने कुछ मनमानी करनी चाही तो चाणक्य ने उसका विरोध किया। इस पर चंद्रगुप्त ने उन्हें अपमानित कर चले जाने का आदेश दिया तो भी उन्होंने अन्याय का समर्थन नहीं किया। वह राक्षस को मंत्री बनाकर स्वयं साधना के लिए चले गए। इसीलिए यह कहा जा सकता है कि वे वृद्ध नहीं हैं जो धर्म का पक्ष न लें। आज की मुख्य समस्या यही है कि माता-पिता-गुरु



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अपना कर्त्तव्य भूल गए हैं। अतः यदि आप सुख-शांतिमय जीवन चाहते हैं तो अपने अनुभवों के आधार पर जगह-जगह जाकर धर्मप्रचार करो, जिससे आने वाली पीढ़ी गुमराह न हो।

गुरुदेव की अमृतवाणी सबको आश्वस्त कर रही थी। अतः एक वृद्ध जिज्ञासु ने विनम्र स्वर में पूछा—"हे देव! घर से बाहर जाने के लिए धन की भी आवश्यकता होती है और शरीर को भी बाहर जाने में कष्ट होता है। अतः यदि बाहर न जा सकें तो क्या करें ? यह बताने की कृपा करें।"

**कस्मादपि च हेतोस्तु येषां वासोऽधिकं नहि।**
**बहिः सम्भव एतेऽपि निवासं स्वं तु सद्मनि॥**

—३/५/५८

**कार्यक्रमेषु तत्रैवं विधेष्वेव तथाऽऽयुषः।**
**उत्तरार्द्धं जीवनस्य व्ययीकर्त्तव्यमुत्तमैः॥**

—३/५/६२

जो बाहर नहीं जा सकते, वे घर में ही पालन धर्म करें।
जिससे हर मानव का हित हो, ऐसा कोई शुभ कर्म करें॥
जो दुष्ट और दुर्जन पर भी, अपनी करुणा बरसाते हैं।
वे संत, योगी, ज्ञानी बनते, और महापुरुष कहलाते हैं॥
यह शक्ति प्रेम की है अमोघ, जो महापुरुष हैं अपनाते।
है मानव की तो बात ही क्या, पशु-पक्षी वश में हो जाते॥
हैं जिसने जीते हृदय सबके, बस वह ही विश्व विजेता है।
जो मानवता, निर्माण करे, वही सच्चा विश्व-स्रजेता है॥

***भेदभाव को भूलकर, सबसे कर लो प्यार।***
***अपना प्यारा कुटुंब है, यह सारा संसार॥***



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

यह सुनकर गुरुदेव ने मुस्कराते हुए कहा—"हे वत्स! आप ठीक कह रहे हैं। प्राचीनकाल में ग्राम-ग्राम, नगर-नगर में मंदिर और आश्रम होते थे, जहाँ परिव्राजकों के खाने-पीने, ठहरने की व्यवस्था की जाती थी, किंतु आजकल ऐसा संभव नहीं है। जो घर से बाहर नहीं जा सकते वे घर में रहकर ही लोक-कल्याण का कोई कार्य अपना सकते हैं। इससे एक लाभ तो यह भी होगा कि इसमें आपकी पत्नी तथा बच्चे भी कुछ न कुछ सहयोग दे सकेंगे। इस समय नारी जाति की स्थिति बहुत शोचनीय है। यद्यपि इस समय उन्हें पढ़ने-लिखने, बाहर जाने, नौकरी करने की बहुत सुविधाएँ प्राप्त हैं, पर तो भी यदि गंभीरता से देखा जाए तो लड़की यदि पढ़-लिखकर योग्य बन जाती है तो विवाह करने के लिए इतना पढ़ा-लिखा लड़का नहीं मिलता। उसके लिए दहेज की समस्या आती है। इसीलिए पुत्र और पुत्री में आज भी अंतर समझा जाता है। पुत्र के होने पर खुशी तथा कन्या के जन्म पर शोक मनाया जाता है। अतः अपनी पत्नी के सहयोग से घर पर रहकर ही किसी सामाजिक संस्था से जुड़कर इन कुरीतियों को दूर करने में सहयोगी हो सकते हैं। इस समय गायत्री परिवार, आर्यसमाज, भारत सेवक समाज, भारत विकास परिषद् आदि बहुत सी संस्थाएँ हैं जो इन शुभ कार्यों में लगी हैं।"

आप अनाथालय के किसी बच्चे को गोद ले सकते हैं। इस समय न जाने कितने प्रतिभाशाली बच्चे हैं, जो धन के अभाव में उच्च शिक्षा प्राप्त करने से वंचित रह जाते हैं। उनके लिए आप अपने साथियों को इकट्ठा करो और अपने से अभियान शुरू करो। कुछ धनराशि इकट्ठी करो। अच्छे



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

काम के लिए संकल्प लेते हैं तो भगवान सहायता करता है। धनराशि इकट्ठी करके गरीब बच्चों को छात्रवृत्ति के रूप में दो। उनकी शिक्षा पूरी होने पर उनसे यह राशि वापस ली जा सकती है, वह किसी और के लिए काम में आ सकती है।

एक व्यक्ति प्रात:काल भ्रमण के लिए गया था, तो उसे एक चोर ने घेर लिया। उसने कहा—"भैय्या ! मैं सुबह घूमने निकला हूँ, पैसे लेकर थोड़े ही आया हूँ, मेरे पास एक घड़ी है, बेचकर काम चला सको तो इसे ले लो, पर तुम कुछ काम क्यों नहीं करते ?" उसने कहा—"मैं बी.ए. पास हूँ, पर काम कहाँ मिलता है ?" वह आदमी उसे अपने साथ ले आया। अपने ऑफिस में काम दे दिया और आगे पढ़ाने की व्यवस्था की। जो भी उसके यहाँ आता उससे पूछता—आपने इस आदमी को कैसे रख लिया ? पर उसने उसे पढ़ाया और बाद में वह स्कूल में शिक्षक बन गया। जब उसने अपने उन दयालु स्वामी को कुछ देना चाहा तो उसने कहा—"बस तुम गरीबों की सहायता करो, यही मेरी गुरुदक्षिणा है।" इस प्रकार छोटे-छोटे काम करके आप दूसरों की सहायता करके उन्हें अपना बना सकते हैं।

आप अपने अवकाश प्राप्त मित्रों का एक संगठन बनाइए। उन्हें साथ लेकर किसी अस्पताल में समयदान तथा अंशदान दे सकते हैं। गुरुदेव तथा महापुरुषों ने आराधना के दो अंग बताए हैं—एक समयदान, दूसरा अंशदान। अस्पताल में जाकर, जो बीमार हैं उनकी सेवा कर सकते हैं। जिसके पास कोई सेवा करने वाला नहीं है, उसे पानी दे दो, दवा पिला दो, अंशदान से गरीबों की दवा का प्रबंध कर दो, देखो मन में कितनी शांति मिलती है ? समय का सदुपयोग भी होगा और आत्मकल्याण भी होगा।



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

एक अस्पताल के पास एक मंदिर था। उसमें कुछ लोग आते थे और सुबह के समय गंगाजल तथा तुलसी की पत्ती लेकर सब मरीजों को देकर कहते थे, आज का दिन आपके लिए शुभ हो। कितनी छोटी सी बात ? कितना कम समय लगता था ? पर आप आश्चर्य करेंगे, सब मरीज उनकी प्रतीक्षा करते थे। आप लोग कुछ भी न करें, किसी को दो शब्द ही तसल्ली के कह दें तो दुखी आदमी को कितनी सांत्वना मिलेगी और उसकी खुशी में आप भी सहयोगी होंगे। संस्कृत में कहावत है—'**वचने का दरिद्रता**' बोलने में क्या कंजूसी, कहा भी है—

***तुलसी मीठे वचन तें, सुख उपजत चहुँ ओर।***
***वशीकरण एक मंत्र है, तज दे वचन कठोर॥***

वृद्धावस्था की समस्याओं पर प्रकाश डालते हुए सत्राध्यक्ष कहते हैं— "हे साधको ! जीवनयात्रा में बुढ़ापा एक आवश्यक पड़ाव है, क्योंकि शरीर में परिवर्तन होता रहता है और समय के साथ कार्यक्षमता क्षीण होने लगती है, किंतु इस समय परिस्थिति के अनुसार वृद्धजनों की मानसिकता अलग-अलग होती है। कुछ वृद्ध ऐसे होते हैं जो अंतिम समय तक शरीर से भी स्वस्थ रहते हैं और मन से भी। ऐसे व्यक्ति बचपन से ही संयमित जीवन बिताते हैं तथा अंत तक कार्यशील रहते हैं। सुकरात, प्लूटो, न्यूटन, महात्मा गांधी, मदनमोहन मालवीय, जवाहरलाल नेहरू ऐसे ही महान व्यक्ति थे।"

कुछ व्यक्ति ऐसे होते हैं जो शरीर से अस्वस्थ होने पर भी मन से इतने स्वस्थ होते हैं कि शारीरिक रोग उनका कुछ नहीं बिगाड़ सकते। अपने



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आत्मबल के आधार पर समाज का कल्याण करते हैं। स्वामी रामकृष्ण परमहंस कैंसर से पीड़ित थे, शंकराचार्य भगंदर रोग से ग्रस्त थे, किंतु उन्होंने शरीर के अस्वस्थ होने की चिंता न कर मनोबल के आधार पर अंतिम समय तक समाजसेवा की।

कुछ व्यक्ति ऐसे हैं जो शरीर से तो स्वस्थ हैं किंतु मानसिक रूप से अस्वस्थ हैं। ऐसे व्यक्तियों में वृद्ध ही नहीं, बल्कि युवावर्ग भी आता है। आजकल ऐसे लोगों की संख्या बहुत अधिक है जो स्वस्थ रहते हुए भी हमेशा कुढ़ते रहते हैं, रोते रहते हैं, कुछ उनकी परिस्थितियाँ भी उन्हें असमय ही वृद्ध बना देती हैं, जैसे—पढ़ाई पूरी करने पर सर्विस न मिलना, दहेज के कारण कन्याओं का विवाह न होना आदि। ऐसे व्यक्ति आत्मदाह तक करने में नहीं हिचकते। इसके लिए आवश्यक है कि स्वावलंबन तथा अध्यात्म की शिक्षा बचपन से दी जानी चाहिए, जिससे आने वाली परिस्थितियों का वे सामना कर सकें। राम को राज्य मिलने के स्थान पर वन जाना पड़ा, पर क्या उन्होंने आत्महत्या कर ली ? वे तो उसी तरह प्रसन्नता से वन चले गए। '**कर जोड़ कहूँ श्री मात सुनो, मुझे राज पिता जी ने वन का दिया।**'

पांडवों को जीवन भर अग्निपरीक्षा देनी पड़ी, पर क्या उन्होंने कभी इसके कारण जीवन से भागने का विचार किया ? वृद्धजनों में भी यदि आत्मबल हो तो वे रोने की अपेक्षा कुछ महान कार्य कर सकते हैं।

यह कथा है एक ऐसे ही व्यक्ति की। एक आदमी भगतजी के नाम से प्रसिद्ध था। संतों की सेवा करता और खेती करता। वृद्ध होने पर खेती



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बच्चों ने सँभाल ली। एक दिन उसने एक साधु को एक टोकरी भरकर गेहूँ दे दिया तो बहू ने व्यंग्य कसा—"पिताजी को तो लुटाना आता है। उन्हें पता नहीं कि कितनी मेहनत से अनाज के दर्शन होते हैं।" उसे वह बात लग गई। उसने बैल खोले। स्वयं खेती की और एक नहीं सब साधुओं के लिए भंडारा खोल दिया। आदमी स्वाभिमानी हो तो वह जीवन का आनंद ले सकता है।

कुछ व्यक्ति ऐसे होते हैं जो शरीर तथा मन दोनों से अस्वस्थ हैं, ऐसे व्यक्ति अपने लिए तो भार हैं ही, परिवार पर भी बोझ बन जाते हैं। यदि लंबी बीमारी के कारण उनका शरीर जर्जर हो जाता है तो उनकी स्थिति और भी शोचनीय हो जाती है। वे हर समय तनावग्रस्त रहते हैं। यदि आप सब उनकी सेवा कर उनका कष्ट दूर करने का संकल्प लें तो उनका दुःख दूर करके आप सौभाग्यशाली बन सकते हैं। महापुरुष ऐसे दीन-दुखियों में ही भगवान का दर्शन करते हैं। महात्मा गांधी ने कुष्ठाश्रम खोला था और कोढ़ियों में ही भगवान के दर्शन किए थे। आचार्य श्रीराम शर्मा जी ने एक हरिजन महिला की बीमारी में सेवा करके आशीर्वाद पाया था। माताजी हमेशा यही कहती थीं कि गुरुदेव को उस हरिजन माता का आशीर्वाद फलीभूत हुआ। ईश्वरचंद्र विद्यासागर ने एक बुढ़िया को सड़क पर मल-मूत्र से सना देखा तो वे उसे कंधे पर डालकर ले आए। उस अनाथ की सेवा तो उन्होंने जीवन भर की। एण्ड्रूज पादरी थे। उनका नाम बापू ने दीनबंधु रखा था। एक बार किसी ने उनसे पूछा—"आप भगवान को दिखा सकते हैं?" उन्होंने एक वृद्ध मेहतर को दिखाया जो अपने बूढ़े माँ-बाप की



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सेवा में लगा हुआ था। कहने का तात्पर्य यह है कि ऐसे व्यक्ति स्वयं भगवान का रूप होते हैं।

यह लोक-कल्याण का कार्य केवल पुरुष ही कर सकते हों, ऐसा नहीं है। इसमें यदि पति-पत्नी मिलकर कार्य करते हैं, तब तो सोने में सुहागा है। अधिकांश पत्नियाँ पुरुषों के मार्ग में रोड़ा नहीं बनतीं, बल्कि सहयोगी ही बनती हैं। अरविंद आश्रम में माँ के नाम से प्रसिद्ध महिला विदेशी थीं, पर उन्होंने महर्षि अरविंद को पूर्ण सहयोग दिया। महात्मा गांधी के साथ कस्तूरबा ने कंधे से कंधा मिलाकर कार्य किया। स्वतंत्रता आंदोलन में पति के जेल जाने पर घर का उत्तरदायित्व महिलाएँ ही सँभालती थीं। इतना ही नहीं, विदेश से आने वाली भगिनी निवेदिता तथा मदर टेरेसा को कौन नहीं जानता ? आज उनके त्याग व समर्पण का ही परिणाम है कि निवेदिता को भगिनी तथा टेरेसा को मदर कहकर सारा विश्व जानता है। वे समस्त संसार की बहन तथा माँ बनकर अमर हो गई हैं। अत: नारी वर्ग को भी इस कार्य में सहयोगिनी बनना चाहिए।

अंत में सभी को आश्वस्त करते हुए जीवन को नई दिशा देकर सन्मार्ग की ओर जाने की प्रेरणा देते हुए महाप्राज्ञ कहते हैं कि हे भद्रजनो ! यह वृद्धावस्था अभिशाप नहीं है। यह तो जीवन का स्वर्णिमकाल है। इसे आँसुओं से मत भिगोओ बल्कि आत्मज्ञान का दीप जलाकर स्वयं अपना मार्ग प्रशस्त करो तथा दूसरों के लिए भी दीपक बनकर जलो। एक अंधा व्यक्ति रात को दीपक जलाकर बैठ जाता था। किसी ने पूछा—"तुम यह दीपक क्यों जलाते हो ?" उसने कहा—"यह दीपक अँधेरे में भटकने वालों को रास्ता दिखाएगा। मुझे दिखाई नहीं देता तो क्या हुआ ?" अत:



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आदमी मन का दीपक जलाकर समाज को आलोकित कर सकता है। एक वृद्ध माली से किसी ने पूछा—"तुम यह पेड़ लगा रहे हो, तुम्हें तो इसके फल मिलने से रहे ?" उसने कहा—"मैं अपने बुजुर्गों के लगाए पेड़ों से फल खा रहा हूँ, इसके फल मेरी आने वाली पीढ़ियाँ खाएँगीं। इसमें हानि क्या है, यह तो लाभ का सौदा है।"

कहने का तात्पर्य यह है, जलते रहने का नाम प्रकाश है, बहते जल का नाम नदी है, चलते रहने का नाम जीवन है, चरैवेति, चरैवेति, बढ़े चलो, बढ़े चलो, यही जीवन का उद्‌देश्य है।

इस प्रकार दुखी एवं निराश वयोवृद्धों को सांत्वना देते हुए उनका मार्गदर्शन करते हुए युगऋषि कहते हैं—हे अमृत संतानो ! परमपिता परमात्मा के राजकुमार होकर तुम अपने को दीन-हीन मत समझो। जीवन जीने की कला सीखो। सर्वप्रथम आत्मनिरीक्षण कर अपनी कमियों को सुधारने का प्रयास करो। अपनी आवश्यकताओं को कम करके परिस्थितियों से समझौता करना सीखो। ब्राह्मणोचित जीवन जीने का अभ्यास करो। परिवार की जिम्मेदारियों को बेटों पर छोड़ दो। सारे संसार को अपना परिवार समझकर उनके हित-चिंतन की ओर ध्यान दो। जो अशक्त हैं, उन्हें सहारा दो। जो दुर्गुणी हैं, उनसे घृणा मत करो, उन्हें सुधारने का प्रयत्न करो। पापी कोई नहीं होता, पापों को छुड़ाकर उन्हें सुधारो, पर यह तभी संभव है जब पहले अपने को सुधार लो।

अधिक से अधिक मौन रहने का अभ्यास करो। बोलो कम, मनन-चिंतन ज्यादा करो। जो स्वस्थ हैं, धन एवं शक्ति से सक्षम हैं, वे असहाय



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दीन-दुखी का सहारा बनें और उसके बाद मृत्यु-महोत्सव की तैयारी करें। मृत्यु एक विश्राम स्थल है, उससे भयभीत मत हो।

व्यर्थ चिंतित हो रहे हो किसलिए, धो रहे मुँह आसुँओं से किसलिए।
है अमर, अविनाशी वह परमात्मा, अंश उसका जीव है यह आत्मा॥
मृत्यु से फिर डर रहे हो किसलिए, व्यर्थ चिंतित हो रहे हो किसलिए।
आयु सबकी दिन पर दिन है घट रही, गमन वेला आ रही है निकट ही॥
व्यर्थ जीवन खो रहे हो किसलिए, व्यर्थ चिंतित हो रहे हो किसलिए।
कर्म करने का तुम्हें अधिकार है, कर्म का फल तो विधि के हाथ है॥
फल की चिंता कर रहे हो किसलिए, व्यर्थ चिंतित हो रहे हो किसलिए।
कर्म अपने कर सभी अर्पित मुझे, मुक्त पापों से करूँगा मैं तुझे॥
कर्म से फिर डर रहे हो किसलिए, व्यर्थ चिंतित हो रहे हो किसलिए।

"हे अमृतपुत्रो! उठो तुम यदि सचमुच उस पूर्ण ब्रह्म की उपलब्धि चाहते हो तो अपने सुखों की आकांक्षा जड़ से समाप्त कर दो और इस प्रशस्त पुण्य पथ पर आगे बढ़ते जाओ। ईश्वर तुम्हारी सहायता करे।"

**इति श्रीमत्प्रज्ञापुराणे ब्रह्मविद्याऽऽत्मविद्ययोः, युगदर्शनयुगसाधनाप्रकटीकरणयोः,**
**श्री धौम्य ऋषि प्रतिपादिते 'वृद्धजन माहात्म्य' इति**
**प्रकरणो नाम तृतीयोध्यायः ॥ ३ ॥**

## आरती श्री प्रज्ञा पुराण की



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ॐ श्री गुरवे नमः

# प्रज्ञा पुराण कथामृतम्

## चतुर्थ दिवस

## संस्कार-पर्व माहात्म्य प्रकरण

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

### गुरु वंदना

धन्य है जिंदगी यह हमारी, नाथ पाकर सहारा तुम्हारा।
हे प्रभो ! हम समर्पित खड़े हैं, शेष जीवन है सारा तुम्हारा॥
हर तरफ था भयंकर समुन्दर, जीर्ण थी नाथ जीवन की नैया।
क्या पता यह कहाँ डूब जाती, जो न मिलता किनारा तुम्हारा॥
धन्य..................................

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

तेज तूफान में आँधियों में, पाँव ये जब कभी डगमगाएँ।
बस तभी दौड़कर तुम पकड़ना, हाथ भगवन दुबारा हमारा॥
धन्य..................................

पुत्र सा प्यार पाते रहें हम, पाँव निर्भय बढ़ाते रहें हम।
जन्म-जन्मांतरों तक रहे ये, नाथ रिश्ता हमारा तुम्हारा॥
धन्य..................................

हर तरफ जो अँधेरा घिरा हो, और कोई नहीं आसरा हो।
रास्ता तब दिखाए गगन से, ध्रुव सरीखा सितारा तुम्हारा॥
धन्य..................................

बुद्धि वह दो कि जो भी मिला है, लोकहित में उसे हम लगाएँ।
ताकि भगवन हमारे लिए हो, फिर खुला हो दुआरा तुम्हारा॥
धन्य..................................



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

(प्रज्ञा गीत, कीर्तन समय के अनुसार)

## प्रज्ञा गीत

फिर से संस्कार परिपाटी, घर-घर जाए मनाई।
गुरु ग्राम की पावन माटी, यही संदेशा लाई॥
यह वह परंपरा है जिसने, घर-घर दिए जलाए,
सोलह संस्कारों के द्वारा, वीर रत्न उपजाए।
ध्रुव, प्रह्लाद, राम, लक्ष्मण सब, इसी ज्योति के जाए,
भरत शत्रुघ्न और अभिमन्यु, इसी ज्योति से पाए।
नव निहाल बच्चों की फिर से, इस विधि करो गढ़ाई,
गुरु ग्राम की पावन माटी, यही संदेशा लाई॥
क्यों जन्मे ऐसी दुनिया में, यह मनुष्य तन पाया,
माता-पिता बांधवों तक ने, कुछ भी नहीं बताया।
ऋषियों ने था पहले से ही, ऐसा चक्र चलाया,
जन्म-मरण मरणोत्तर जीवन का, सारा रहस्य बताया।
नामकरण, यज्ञोपवीत तक, सबकी विधि बतलाई,
गुरु ग्राम की पावन माटी, यही संदेशा लाई॥
मुंडन, विद्यारंभ, अन्नप्राशन, जो नहीं कराते,
उनके बालक माटी के, माधव बनकर रह जाते।
क्यों विवाह में आखिर जुड़ते, इतने रिश्ते नाते,
यह संस्कार भाँवरों तक का, भेद सभी बतलाते।
उनको समझा नहीं गृहस्थी, नाहक मूढ़ बसाई,
गुरु ग्राम की पावन माटी, यही संदेशा लाई॥



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

यह मनुष्य तन है अमूल्य, मत समझो इसको माटी,
जिसने समझा नहीं उसे तो, निपट मौत की घाटी।
ज्ञानी सोच-समझकर काटे, मूरख रो-रो काटी,
संस्कार हँस-हँस कर, जीवन जीने की परिपाटी।
परंपरा यह अति महान है, जाए नहीं भुलाई।
युगऋषि ने उज्ज्वल भविष्य की, ज्योति अखंड जलाई॥

*(प्रथम दिवस की भाँति कथा व्यास द्वारा प्रज्ञापुराण का पूजन)*

प्रज्ञापुराण कथा में समागत भाइयो और बहनो, आज का विषय है—संस्कार तथा पर्व। आज के इस भौतिक युग में मनुष्य बहुत तेजी से उन्नति कर रहा है। वह कभी आकाश की ऊँचाइयों को छूना चाहता है और कभी समुद्र की गहराई की थाह लेना चाहता है। इन्हीं सब उलझनों में डूबता-उतराता वह अनेक समस्याओं से जूझ रहा है, इन्हीं समस्याओं में से एक समस्या है—बच्चों के उज्ज्वल भविष्य की। प्रत्येक व्यक्ति की यह इच्छा होती है कि उसकी संतान उससे अधिक सुयोग्य बनकर उससे ऊँचा पद व प्रतिष्ठा प्राप्त करे। यह स्वाभाविक भी है, किंतु प्रश्न यह है कि यह सपना कैसे पूरा हो ?

इसके लिए जब माता-पिता से पूछा जाता है, आप बच्चे को क्या बनाना चाहते हैं ? उत्तर मिलता है—डॉक्टर, इंजीनियर नहीं तो मास्टर ही बन जाए, कम से कम अपने पैरों पर खड़ा हो जाए और हमारे बुढ़ापे का सहारा बने। कहने का मतलब यह है कि उन्हें केवल धन कमाने की शिक्षा दी जाती है। कोई भी यह नहीं कहता कि वे अपने बच्चे को एक अच्छा इनसान बनाना चाहते हैं। बच्चों को नैतिक शिक्षा नहीं दी जाती जिससे वे



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

महान कार्य कर महान बन सकें। इसका दुष्परिणाम यह होता है कि जब माता-पिता हजार मुसीबतें उठाकर अपने बच्चों को सुयोग्य बना देते हैं तो बच्चे अपने माता-पिता को माता-पिता कहने में शरमाते हैं। उनके मान-सम्मान की तो बात ही क्या ? अतः विचारणीय प्रश्न यह है कि बच्चों को कैसे संस्कार दिए जाएँ? क्योंकि जब बचपन में उन्हें अच्छे संस्कार नहीं दिए जाते तो नतीजा बाद में भुगतना पड़ता है। आज की कथा में परमपूज्य गुरुदेव आचार्य श्रीराम शर्मा जी ने इसी समस्या का समाधान महर्षि कात्यायन जी के माध्यम से किया है। आइए, हम सब भी वहीं चलते हैं, जहाँ पर यह पुनीत कथा हो रही है।

देवसंस्कृति सत्र के चतुर्थ दिवस पर श्रोताओं की भीड़ उमड़ पड़ी थी। कथा सुनने का उत्साह उमंग लेकर श्रोतागण नियत समय पर यथास्थान एकत्रित हो गए। महाप्राज्ञ अपने आसन पर विराजमान हो गए। गायत्री मंत्र तथा गुरुवंदना के पश्चात एक प्रबुद्ध प्राध्यापक ने विनम्र स्वर में कहा— "हे महामते, आपने हमें देवसंस्कृति का स्वरूप तथा वर्णाश्रम धर्म के विषय में बताया है, किंतु एक शंका हमारे मन में है कि यह मनुष्य ईश्वर का राजकुमार है, प्राणियों में मुकुटमणि होने पर भी पशुवत आचरण क्यों करता है ? कृपया इस शंका का समाधान करें।"

**जिज्ञासवो नरस्त्वेष वर्तते पशुरप्यथ।**
**पिशाचोऽपि तथा देवो महामानव एव च॥**

—४/३/३

**ऋषिर्मनीषी देवात्माऽवतारो वा निगद्यते।**
**महामानव इत्येष समुदायो जनैरिह॥**

—४/३/२०



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हे भद्रजनो, मानव शरीर सब, बड़े भाग्य से पाते हैं।
है सुर दुर्लभ यह मानुष तन, सद्ग्रंथ सभी यह गाते हैं॥
पर नर तन पाकर ही कोई, नहीं कहला सकता है मानव।
है अनाचारी आतंकी जो, उनको सब कहते हैं दानव॥
गुण-कर्म-स्वभाव की दृष्टि से, मानव भी अलग-अलग होते।
कुछ नर पिशाच कहलाते हैं, कुछ देव महामानव होते॥
कामी, क्रोधी, लोभी, भोगी, जन नर पामर हैं कहलाते।
संस्कार जिन्हें अच्छे मिलते, वे देवतुल्य पूजे जाते॥

***अगर चाहते हो बने, मानव देव समान।***
***तो बचपन से ही रखो, संस्कार का ध्यान॥***

प्रश्न सुनकर महर्षि ने ज्ञानामृत बरसाते हुए कहा—"हे जिज्ञासुओ, यह ठीक है कि मनुष्य विधाता की सर्वश्रेष्ठ कृति है, किंतु विधाता ने पशुओं को भी बहुत सी शक्तियाँ दी हैं। चिड़िया पंखों से उड़ सकती हैं, हाथी, शेर, चीते, मनुष्य की अपेक्षा कहीं अधिक शक्तिशाली होते हैं, बिल्ली व उल्लू की आँखें रात में भी देख सकती हैं, हिरन मनुष्य की अपेक्षा कहीं अधिक तेज दौड़ सकता है, कुत्तों की गंधशक्ति मनुष्य की अपेक्षा कहीं अधिक है, किंतु मनुष्य व पशु में यह अंतर है कि मनुष्य के अंदर विवेकशक्ति होती है, वह सीख सकता है, वह अपने बुद्धिबल से हाथी, घोड़े, शेर पर सवारी कर सकता है, मनुष्य अच्छे संस्कार अर्जित कर महामानव बन सकता है। सद्ज्ञान, विवेकबुद्धि के बिना वह पशु के समान ही है क्योंकि आहार, निद्रा, भय तथा संतान उत्पन्न करने में मनुष्य व पशु एक जैसे ही होते हैं।"



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

असल में पूर्वजन्म के संस्कार मनुष्य को अपनी ओर खींचते हैं, इन कुसंस्कारों से छुटकारा पाने के लिए ही बचपन से अच्छे संस्कार देने की आवश्यकता है, तभी मनुष्य शुभ कर्म करके मानव, महामानव, महात्मा या संत बनता है।

संस्कार शब्द का अर्थ है—दोषों का परिमार्जन। शारीरिक या आत्मिक विकास की कमियों को दूर करना। मीमांसा सूत्र में इसका अर्थ 'चमकाना' है। तात्पर्य यह है कि संस्कार वह प्रक्रिया है, जिसके द्वारा कोई व्यक्ति या पदार्थ किसी कार्य के योग्य हो जाता है। किसी व्यक्ति को सुसंस्कारी बनाने के लिए शिक्षा, सत्संगति, वातावरण, परिस्थिति आदि का ध्यान रखना पड़ता है। कथा साहित्य का मनुष्य जीवन पर बहुत प्रभाव पड़ता है। भारतीय मनीषियों ने इस पर बहुत प्रयोग किए हैं। हितोपदेश तथा पंचतंत्र की कथाएँ इसका प्रमाण हैं।

एक राजा के सौ पुत्र थे। सभी अयोग्य और मूर्ख थे। राजा बहुत दुखी थे, तभी विष्णुशर्मा पंडित जी वहाँ आए। वे उन बच्चों को अपने साथ ले गए तथा कहानी सुना-सुनाकर उनका जीवन बदल दिया। यदि किसी बच्चे से कहो कि झूठ मत बोलो, उस पर प्रभाव नहीं पड़ेगा, किंतु यदि कहानी सुना दी जाए कि एक गड़रिया भेड़ चराने जाता था। एक दिन उसने झूठ-मूठ शोर मचा दिया—भेड़िया आया, भेड़िया आया। सब लोग भागकर पहुँच गए उसे बचाने के लिए। दूसरी बार उसने ऐसा ही किया। लोग फिर दौड़कर आए। तीसरी बार सचमुच भेड़िया आ गया। उसने बहुत शोर मचाया, किंतु तब कोई नहीं आया। उसे भेड़िये ने मार डाला। यह कहानी सुनकर बच्चे पर अवश्य प्रभाव पड़ेगा कि झूठ नहीं बोलना चाहिए।



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सत्यवादी हरिश्चंद्र नाटक को देखकर मोहनदास करमचंद गांधी महात्मा बन गए। रत्नाकर की कथा सुनकर डाकू साधु बन गया। अतः कहानियों के माध्यम से तथा अच्छी संगति में रहकर मानव का चरित्र निर्माण किया जा सकता है। भारतीय संस्कृति में इस आध्यात्मिक उपचार को ही संस्कार कहा गया है।

सत्संगति का मनुष्य जीवन पर बहुत प्रभाव पड़ता है। जब हिरण्यकशिपु वन में तपस्या करने गया तो इंद्र ने उसकी पत्नी कयाधु का अपहरण कर लिया। वह उस समय गर्भवती थी। इंद्र ने सोचा कि उसे मार डालेगा तो हिरण्यकशिपु का वंश ही नष्ट हो जाएगा। नारद जी ने उससे कहा— "कयाधु को ऋषि आश्रम में रहने दो। इससे ईश्वरभक्त संतान उत्पन्न होगी।" परिणाम वही हुआ, उस राक्षस के घर प्रह्लाद जैसे ईश्वरभक्त ने जन्म लिया। शकुंतला ने ऋषि आश्रम में रहकर भरत तथा सीता माता ने वाल्मीकि आश्रम में रहकर लव-कुश के व्यक्तित्व का निर्माण किया था। अतः सत्संगति का प्रभाव बालक पर सबसे अधिक पड़ता है।

महामनीषी के उपदेशामृत को सुनकर एक ऋषि ने पूछा—"हे देव, मनुष्य के पूर्वजन्म के संस्कार कैसे दूर किए जा सकते हैं ? यह बताने की कृपा करें।"

**दैवे तु समुदायेऽयं मनुष्योऽनेकशस्त्विह।**
**सुसंस्कारयुतो नूनं क्रियते वृद्धिकाम्यया॥**

—४/३/३२

**संस्काराणां तथा धर्मानुष्ठानानां च विद्यते।**
**उपचारविधिः सर्वमान्यो लोके महत्त्ववान्॥**

—४/३/३५



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हे भद्रजनो, यह देवसंस्कृति सोए संस्कार जगाती है।
देवत्व जगाने के कारण, यह देवसंस्कृति कहलाती है॥
शिशु जन्म से मरने तक, सोलह संस्कार किए जाते।
तप की अग्नि में पका पका, सब कल्मष दूर किए जाते॥
कच्ची मिट्टी को गढ़कर जब, एक कलश बनाया जाता है।
शीतल जल भरने की खातिर, आँवे में पकाया जाता है॥
वैसे ही अनगढ़ शिशु में भी, संस्कार जगाए जाते हैं।
आध्यात्मिक ऊर्जा दे-देकर, नर देव बनाए जाते हैं॥

***संस्कार तो बीज हैं, उनका करो विकास।***
***लघु दीपक सूरज बने, जग में करे प्रकाश॥***

महर्षि कात्यायन ने शंका समाधान करते हुए कहा—हे भद्रजनो, देवसंस्कृति में मनुष्य को उत्तम संस्कार देने के लिए सोलह संस्कार कराए जाते हैं। इनके नाम हैं—गर्भाधान, पुंसवन, जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूड़ाकर्म, कर्णवेधन, उपनयन, वेदारंभ, समावर्तन, दीक्षा, विवाह, वानप्रस्थ, अंत्येष्टि तथा मरणोत्तर। इस समय इनमें से सभी संस्कार नहीं कराए जा सकते, किंतु दस संस्कार अवश्य कराने चाहिए। पुंसवन, नामकरण, अन्नप्राशन, मुंडन, विद्यारंभ, दीक्षा, उपनयन, विवाह, वानप्रस्थ, अंत्येष्टि तथा मरणोत्तर (श्राद्ध)। सभी को जन्मदिवस तथा विवाहदिवस संस्कार भी मनाने चाहिए।

प्राचीनकाल में गर्भाधान संस्कार बहुत महत्त्वपूर्ण माना जाता था, जो इस समय संभव नहीं है। पहले पति-पत्नी संतान की इच्छा करते थे तो तपस्या करते थे, कि संतान उत्तम हो। मनु-शतरूपा ने तप करके भगवान



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

को पुत्र रूप में पाने की कामना की थी, तब राम जैसे पुत्र को पाया था। भगवान कृष्ण तथा रुकमणी ने बारह वर्ष तक केवल बेर खाकर तपस्या की थी, तब प्रद्युम्न का जन्म हुआ था। उस स्थान का नाम बद्रिकाश्रम पड़ा। कुंती ने धर्म, पवन तथा इंद्रदेव की उपासना करके युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन जैसे वीरों को प्राप्त किया था। आज के भौतिकवादी युग में यह संभव नहीं है। अतः इस समय गर्भाधान, पुंसवन तथा सीमांत तीनों को एक साथ करा सकते हैं। विद्यारंभ, उपनयन तथा समावर्तन को यज्ञोपवीत के साथ जोड़ सकते हैं। इनका मुख्य उद्देश्य तो अच्छे संस्कार देना है।

**पुंसवन संस्कार**—इन संस्कारों में सर्वप्रथम पुंसवन संस्कार आता है। यह संस्कार बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। प्राचीनकाल की पौराणिक कथाओं द्वारा यह सिद्ध होता है कि माता के आचार-विचार गर्भावस्था में जैसे होते हैं, बच्चों पर उसका प्रभाव पड़ता है। मदालसा ने अपने पुत्रों को **शुद्धोऽसि बुद्धोऽसि** की लोरी सुनाकर संन्यासी बना दिया। एक बेटे को उसने राजनीति की शिक्षा दी और वह योग्य शासक बना। अभिमन्यु ने जन्म से पूर्व ही चक्रव्यूह भेदन की प्रक्रिया सीख ली थी। वह कथा आप सबने सुनी होगी कि अर्जुन सुभद्रा को चक्रव्यूह भेदन की प्रक्रिया सुना रहे थे। सुभद्रा ने चक्रव्यूह भेदन की प्रक्रिया तो सुनी, किंतु फिर सुभद्रा को नींद आ गई। इस प्रकार अभिमन्यु ने गर्भ में ही उस चक्रभेदन को सीख लिया, परंतु निकलने का उपाय नहीं सीख सका, क्योंकि सुभद्रा सो गई। सुभद्रा की नींद अभिमन्यु की मृत्यु का कारण बन गई। जो नारी जाति सदियों से सोई हुई है, उसकी संतान सुयोग्य कैसे हो सकती है?



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इस समय आवश्यकता है कि नारी जागरण किया जाए, विशेष रूप से गर्भावस्था में खान-पान, रहन-सहन में संयमित जीवन व्यतीत करने के लिए कहा जाए। इस समय माता रात-रात भर जागकर टी.वी. देखती है। कार्टून फिल्म देखती है तो बच्चे स्वयं ही कार्टून हो रहे हैं। इस समय गायत्री परिवार की ओर से यह प्रयोग किए जा रहे हैं जो बहुत सफल हो रहे हैं। जिस बच्चे का पुंसवन संस्कार किया जाता है, वह अपने अन्य भाई-बहनों की अपेक्षा कहीं अधिक स्वस्थ, कुशाग्रबुद्धि तथा प्रतिभाशाली होता है। अतः यह संस्कार शिशु-निर्माण के लिए आवश्यक है। इस संस्कार का तात्पर्य है कि माता-पिता स्वयं अपने आचरण को संयमित रखें।

**नामकरण संस्कार**—पुंसवन के पश्चात नामकरण संस्कार आता है। बच्चों के नाम बहुत सोच-समझकर रखने चाहिए। सार्थक नाम रखकर उन्हें नाम का महत्त्व समझाना चाहिए। राम, कृष्ण, गौतम आदि नाम महापुरुषों के व्यक्तित्व से संबंधित होने के कारण बच्चों के व्यक्तित्व विकास में सहायक हो सकते हैं। इस समय रिंकू, पिंकू, टिंकू, बबली, रूबी न जाने कितने निरर्थक नाम प्यार में रख दिए जाते हैं तो बस बच्चे जीवन भर रिंकू, टिंकू ही बने रहते हैं। यज्ञीय वातावरण में सुंदर नाम रखकर बच्चों का नामकरण संस्कार कराना चाहिए। बच्चे की जिह्वा पर शहद से 'ॐ' लिखकर उसके कान में प्रणव-ध्वनि '**बुद्धोऽसि शुद्धोऽसि**' कहकर उसमें दिव्य चेतना जगाने की प्रथा आर्य परंपरा में है। इससे शिशु के व्यक्तित्व का निर्माण होता है। शिशु कन्या व पुत्र को समान समझना चाहिए क्योंकि कहा है—'**दशपुत्र समा कन्या, यस्य शीलवती सुता।**'



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

एक सुयोग्य शीलवती कन्या दस पुत्रों के समान है। कुल-कलंक पुत्र की अपेक्षा सुयोग्य कन्या का जन्म ही अधिक महत्त्वपूर्ण है। रावण के लिए कहा गया है—'**एक लख पूत सवा लाख नाती, रावण के घर दिया ना बाती**'। इसके विपरीत सीता ने अपने पिता तथा दशरथ दोनों के कुलों को ही रोशन कर दिया। झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, अहिल्याबाई, सावित्री का नाम आज भी इतिहास में अमर है। अतः पुत्र हो या पुत्री, दोनों को ही अच्छे संस्कार देने की आवश्यकता है। नाम सोच-समझकर ही रखने चाहिए।

**अन्नप्राशन संस्कार**—अन्न से ही शरीर का निर्माण होता है। तीन मास तक शिशु दूध पर ही निर्भर रहता है, इसके पश्चात उसे अन्न खिलाया जाता है, इसलिए जब शिशु को पहली बार अन्न खिलाया जाता है तो किसी विद्वान, तपस्वी, सुयोग्य महापुरुष के हाथ से खिलाया जाना चाहिए। जिससे बच्चे के संस्कार भी अच्छे बनें तथा शरीर भी स्वस्थ रहे। इसका महत्त्व इस बात से भी बढ़ जाता है कि सात्त्विक भोजन का प्रभाव भी मन पर पड़ता है। कहा भी है—जैसा होगा अन्न, वैसा होगा मन।

**मुंडन संस्कार**—जन्म के बाल जो कुसंस्कार के प्रतीक हैं, उनका मुंडन कराया जाता है। किसी तीर्थस्थान में जाकर मुंडन कराके बाल तीर्थजल में प्रवाहित कर दिए जाते हैं। पुराने संस्कार मिटाकर नए संस्कार देना ही इस संस्कार का उद्देश्य है। यह संस्कार इसलिए भी महत्त्वपूर्ण है कि मस्तिष्क सद्चिंतन का केंद्र है। अतः मस्तिष्क में सद्विद्या का विकास हो, मनुष्य अचिंत्य चिंतन छोड़कर सन्मार्गी बने, यही इसका उद्देश्य है।



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

**विद्यारंभ संस्कार**—आज के युग में यह संस्कार अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है। इस समय विद्या का स्थान शिक्षा ने ले लिया है। मनुष्य को मनुष्य बनाने वाली, मानवता का निर्माण करने वाली विद्या का आज लोप हो गया है। आज शिक्षा धनोपार्जन के लिए दी जाती है, जिससे चरित्र का निर्माण नहीं हो पाता। अतः बच्चे को स्कूल भेजने से पूर्व यह संस्कार कराके विद्या एवं शिक्षा का अंतर बतलाना चाहिए। इसमें मुख्य रूप से विद्या की देवी सरस्वती एवं सिद्धि बुद्धि विनायक श्री गणेश का पूजन कराया जाना चाहिए। यह संस्कार गायत्री मंत्र, गायत्री यज्ञ से किया जाना चाहिए तथा बच्चे को सद्गुरु के समीप भेजना चाहिए।

**उपनयन संस्कार**—गायत्री दीक्षा, यज्ञोपवीत तथा शिखा भारतीय संस्कृति के परिचायक हैं। जिस समय देश की संस्कृति पर आक्रमण हुआ, उस समय हिंदुओं को मुसलमान बनाने के लिए उनकी चोटी काटकर यज्ञोपवीत छीन लेते थे, परंतु सिखों के गुरु तेगबहादुर ने यही कहा—"हम प्राण दे सकते हैं, किंतु जनेऊ नहीं उतार सकते, चोटी नहीं कटा सकते।" यज्ञोपवीत के नौ सूत्रों के माध्यम से नौ सद्गुण तथा गायत्री के नौ शब्दों की व्याख्या की जा सकती है। इसी के साथ गायत्री दीक्षा दी जाती है, गायत्री यज्ञ के साथ दी गई दीक्षा का प्रभाव महत्त्वपूर्ण होता है।

परमपूज्य गुरुदेव की दीक्षा तथा यज्ञोपवीत, महामना मालवीय जी ने ८ वर्ष की आयु में किया था। यह संस्कार किसी संस्कारवान व्यक्ति से ही कराया जाना चाहिए। इसका प्रभाव जीवन भर पड़ता है। यह संस्कार मनुष्य को द्विज बनाता है। शास्त्रों का वचन है—'**जन्मना जायते शूद्रः**



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

**संस्कारात द्विज उच्यते।'** मनुष्य जन्म से नहीं, संस्कारों से ही द्विज बनता है। ये संस्कार तथा दीक्षा योग्य गुरु के द्वारा होनी चाहिए क्योंकि मनुष्य के चरित्र निर्माता माता-पिता तथा गुरु ही होते हैं। भारतीय संस्कृति में गुरु का स्थान ईश्वर से भी अधिक है। अतः ऋषियों द्वारा बताई गई संस्कार की विधि को अपनाकर उनके होने का संकल्प लें।

**प्रज्ञा गीत**

करना है तुमको सुधार, सुधार मेरी बहनो।
गढ़ना नया संसार, संसार मेरी बहनो॥
राग-द्वेष की होली जलाओ, प्रेम प्यार का गुलाल उड़ाओ।
दीन-दलित को गले लगाओ, आपस का सद्भाव बढ़ाओ॥
ऐसे मनाओ त्योहार, त्योहार मेरी बहनो।
गढ़ना नया संसार, संसार मेरी बहनो॥
अनाचार को दूर भगाओ, अंधमान्यताएँ बिसराओ।
जीवन से रूढ़ियाँ हटाओ, कुप्रथाओं की नींव हिलाओ॥
कर दो कुमति पर प्रहार, प्रहार मेरी बहनो।
करना है तुमको सुधार, सुधार मेरी बहनो॥
नए पर्व त्योहार रचो तुम, और नया इतिहास लिखो तुम।
जीवन को लो तुम सँवार, सँवार मेरी बहनो।
करना है तुमको सुधार, सुधार मेरी बहनो॥

**विवाह संस्कार**—यह संस्कार मानव जीवन का सबसे महत्त्वपूर्ण संस्कार है। इसमें एक समान आयु, विद्या तथा योग्यता के आधार पर दो परिवारों के सुयोग्य पुत्र तथा पुत्री मिलकर समाज के नवनिर्माण का



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

संकल्प लेते हैं। यह दो आत्माओं का मिलन है। गृहस्थाश्रम चारों आश्रमों में परम पुनीत अनुष्ठान है। इस समय इसमें दहेज, बालविवाह, बहुविवाह आदि कुरीतियों का समावेश हो गया है, इन्हें दूर करने की आवश्यकता है। इस समय बाह्य सौंदर्य को देखकर विवाह किया जाता है। इसका दुष्परिणाम यह है कि अनेक ब्यूटी पार्लर खुल गए हैं। आंतरिक गुणों का सौंदर्य छिप गया है। एक लड़की की माँ अपनी बेटी की प्रशंसा कर रही थी, उसकी चाल मोरनी सी है, उसकी आँख हिरनी सी है, उसकी आवाज कोयल सी है। लड़के की माँ ने पूछा—"बहनजी! यह बताइए कि उसमें कोई मानवीय गुण है या नहीं ?" कहने का मतलब यह है कि विवाह संस्कार—परिवार निर्माण, समाज निर्माण, राष्ट्र निर्माण की आधारशिला है। इसकी कुरीतियों को दूर करके इसे अनुष्ठान माना जाना चाहिए।

**वानप्रस्थ संस्कार**—जीवन की संध्या में घर की जिम्मेदारियों से निवृत्त होकर सेवा, स्वाध्याय, साधना का व्रत लेकर प्रत्येक व्यक्ति को अपना जीवन सफल बनाना चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति अपनी प्रतिभा, शक्ति, धन तथा समय देकर समाज तथा राष्ट्र कल्याण में सहयोगी बन सकता है।

**अंत्येष्टि संस्कार**—जीवन एक यज्ञ है। भारतीय संस्कृति यज्ञों की संस्कृति है। अतः जीवन का अवसान होने पर पंचतत्त्वों से बने इस शरीर के पुतले को पंचतत्त्वों में विलीन करने के लिए अग्नि को समर्पित कर दिया जाता है। उसे यज्ञ भगवान की गोद में सुलाकर अवशिष्ट राख को जल में विसर्जित कर देते हैं। भारतीय संस्कृति में इसे भी संस्कार माना जाता है। इसमें आत्मा की शांति की प्रार्थना की जाती है।



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

**मरणोत्तर संस्कार**—श्राद्ध तर्पण द्वारा मृतक की संपत्ति उसके नाम पर ही दान देकर उसकी आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की जाती है। यह आर्य संस्कृति का परम श्रद्धामय संस्कार है, जिसे श्राद्ध तर्पण कहा जाता है, किंतु इस समय इसमें जो मृतकभोज की कुप्रथा है, उसका विरोध करना चाहिए।

इस समय की आवश्यकता को देखते हुए जन्मदिवस तथा विवाहदिवसोत्सव संस्कार को बढ़ा दिया है, जो बहुत महत्त्वपूर्ण सिद्ध हो रहे हैं। यह सुनकर एक जिज्ञासु ने विनम्र स्वर में कहा—"गुरुदेव! जन्मदिवस तथा विवाहदिवस का महत्त्व बताने की कृपा करें।"

महाप्राज्ञ ने मुस्कराते हुए कहा—"इन संस्कारों का सबसे महत्त्वपूर्ण उद्देश्य है—व्यक्तित्त्व निर्माण। जन्मदिवस मनाने की प्रथा बहुत प्राचीन है। भारत ही नहीं समस्त देशों में अधिकांश त्योहार महापुरुषों के जन्मदिन पर आधारित हैं। कृष्ण जन्माष्टमी, रामनवमी तथा महापुरुषों की जयंतियाँ भी इसी उद्देश्य से मनाई जाती हैं, किंतु दुर्भाग्यवश इस समय पाश्चात्य परंपरा को अपनाकर केक पर नाम लिखकर केक काटने तथा मोमबत्ती बुझाकर जन्मदिन मनाने की परंपरा चल गई है। इसका विरोध किया जाना चाहिए। मोमबत्ती जलाकर बुझाना, दीपक का बुझाना, भारतीय परंपरा में एक अपशकुन ही है। जितनी उम्र है, उतने ही दीपक जलाकर इस जीवन को दीपक की भाँति प्रकाशमय बनाने का संकल्प लेना चाहिए।"

यदि उतने दीपक न भी जलें तो पाँच दीपक जलाकर दीप पूजन करना चाहिए तथा जीवन के उज्ज्वल भविष्य को प्रकाशित करने की



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शुभकामनाएँ की जानी चाहिए। इसके अतिरिक्त केक के स्थान पर मिल्क केक, हलुआ, खीर आदि बनाकर प्रसाद के रूप में बाँटनी चाहिए। केक पर नाम लिखकर उसे काटना व्यक्तित्व खंडित करने के समान है। बच्चों को नाम की सार्थकता समझाकर उन्हें अपने नाम कुरूप बनने की शिक्षा दी जाना चाहिए। तीसरी बात कोई बुराई छोड़ने का संकल्प दिलवाना चाहिए। गायत्री परिवार द्वारा ये संस्कार बिना किसी बड़े आयोजन के मनाए जा सकते हैं। इस अवसर पर कवि सम्मेलन, ईश्वरभक्ति, देशभक्ति के गीत भी गाए जा सकते हैं। कीर्तन-संकीर्तन द्वारा इसे मनोरंजन के साथ-साथ शिक्षाप्रद भी बनाया जा सकता है। बच्चों को उपहार के स्थान पर पारितोषिक देकर उन्हें प्रोत्साहित किया जा सकता है। जन्मदिवस के बधाई गीत गाकर वातावरण को आकर्षक बनाया जा सकता है।

**गीत**

चलो जन्मदिन को मनाने चलें हम।
नई योजना फिर बनाने चलें हम॥
करें याद गतवर्ष की जिंदगी को,
करें दूर गतवर्ष की गंदगी को।
सफाई करें जन्मदिन है दिवाली,
सभी वस्तु में आ जाए उजाली॥
किया क्या है लेखा बताने चलें हम।
चलो जन्मदिन...............
हमें मातृभूमि का ऋण है चुकाना,
नहीं पाँच तत्त्वों को हमें भूल जाना।



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उन्हीं तत्त्वों से देह निर्मित हमारी,
होवे न आत्मा विस्मृत हमारी॥
मनुज शक्तियों को जगाने चलें हम।
चलो जन्मदिन...............
बुराई करें दूर अच्छाई ले लें,
नवनिर्माणों का संकल्प ले लें।
नए वर्ष को नव किरण से सजाएँ,
नई जिंदगी के लिए पग बढ़ाएँ॥
हृदय बीच दीपक जलाने चलें हम।
चलो जन्मदिन...............

**विवाहदिवसोत्सव**—यह दिवस प्रत्येक नर-नारी के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है। इस दिन ब्रह्मचर्याश्रम को पूर्ण कर, दो व्यक्ति माता-पिता, गुरु द्वारा शिक्षा प्राप्त कर नवजीवन में प्रवेश करते हैं। इस दिन अपने पिछले कार्य का निरीक्षण करना चाहिए। यदि जीवन में किसी प्रकार की कोई कटुता आ गई हो एकदूसरे के प्रति या परिवार के प्रति कोई त्रुटि रह गई हो तो उसे दूर करने का संकल्प लेना चाहिए। इस शुभ दिन अतीत की स्मृतियों को पुनःस्मरण करते हुए विवाह की प्रतिज्ञाएँ दोहरानी चाहिए। ऐसा करने से नवीन प्रेरणा, स्फूर्ति एवं शक्ति मिलेगी।

इन सब संस्कारों का उल्लेख हमारे आर्षग्रंथों में है। महाकवि तुलसीदास ने रामचरित मानस में भी भगवान राम के सभी संस्कारों का उल्लेख किया है—शिशुजन्म के समय, नंदी मुख श्राद्ध, दान दक्षिणा देने की परिपाटी है।



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

*नंदीमुख श्राद्ध करि, जात करम सब कीन्ह।*
*हाट, धेनु, वसन मनि, नृप विप्रन्ह कहँ दीन्ह॥*

**नामकरण संस्कार :**

**नामकरन कर अवसर जानी, भूप बोलि पठए मुनि ग्यानी।**

नामकरण के बाद बच्चे के मस्तिष्क के विकास तथा भारतीय संस्कृति की शिखास्थापन के लिए चूड़ाकर्म (मुंडन) संस्कार किया जाता है।

**शिखा स्थापन के लिए**

**चूड़ाकरन कीन्ह गुरु जाई। विप्रन्ह पुनि दछिना बहु पाई॥**

**यज्ञोपवीत संस्कार**

**भए कुमार जबहि सब भ्राता। दीन्ह जनेऊ गुरु पितु माता॥**

**विद्यारंभ संस्कार**

**गुरु गृह गए पढ़न रघुराई, अल्पकाल विद्या सब आई॥**

**विवाह संस्कार :**

**वर कुंवरि करतल जोरि, साखी चार दोउ कुलगुरु करे।**
**भयो पाणि गृहनु विलोकि, विधि सुर मनुज मुनि आनंद भरे॥**

**वानप्रस्थ**

**वैखानस सोई सोचइ जोगू। तप विहाई जेहि भावइ भोगू॥**

मंदोदरी भी रावण को प्रेरित करती है—

**संत कहहि अस नीति दसानन। चौथेपन जाइअ नृप कानन॥**



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

**मनु द्वारा वानप्रस्थ :**

**वरबस राज सुतहि तब दीन्हा। नारि समेत गवन वन कीन्हा॥**

**श्राद्ध :**

**एहि विधि दाह क्रिया सब कीन्ही। विधिवत न्हाई तिलांजलि दीन्ही॥**

दुर्भाग्य की बात है कि इस समय ये प्रथाएँ मृतप्राय हो गई हैं। इसका दुष्परिणाम सामने है। इस समय उद्दंडता, अनुशासनहीनता तथा अनैतिकता चरम सीमा पर है। अतः आचार्य श्री ने प्रज्ञा पुराण में इनका महत्त्व कात्यायन जी के मुख से कहलाया है तथा इन संस्कारों को पुनर्जीवित करने की प्रेरणा दी है।

गुरुदेव ने इन संस्कारों का प्रचार-प्रसार भी इस तरह किया है कि प्रत्येक व्यक्ति इसे आसानी से मना सके। गायत्री परिवार के सदस्य इन संस्कारों को निःशुल्क कराते हैं, क्योंकि पंडितों की दान-दक्षिणा अधिक खरचीली होने के कारण ये प्रथाएँ प्रायः समाप्त हो गई थीं। प्रसन्नता की बात है कि इस समय पुनः चेतना जाग्रत हुई है। गायत्री यज्ञ तथा दीपयज्ञ के माध्यम से जब ये संस्कार कराए जाते हैं तो अग्निदेवता का सान्निध्य, देवताओं की साक्षी तथा समस्त परिजनों की उपस्थिति में ये कर्मकांड मन पर बहुत प्रभाव डालते हैं। आचरणशील व्यक्तियों द्वारा संपादित ये संस्कार कभी-कभी मन की दिशा बदल देते हैं। मनुष्य में देवत्व जगाने वाली इस परंपरा को पुनर्जीवित करने की बहुत आवश्यकता है। आप सब इन संस्कारों के प्रचार-प्रसार का संकल्प लेकर जाएँ।

संस्कारों का महत्त्व जानकर एक जिज्ञासु ने विनम्र निवेदन किया— "गुरुदेव! देवसंस्कृति में पर्वों का महत्त्व बताने की कृपा करें।"



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

व्यक्तिं कर्तुं सुसंस्कारयुतां ते षोडशाऽपि च।
दश वा विहिता विज्ञैरुपचारास्तथैव तु॥

—४/३/४२

लोकमानससंस्थास्ता: शक्या कर्तुं परंपरा:।
बहूनि सन्ति पर्वाणि दशमुख्यानि तेषु तु॥

—४/३/४५

जैसे देवत्त्व जगाने को, संस्कार कराए जाते हैं।
वैसे ही जनमंगल के हित, शुभपर्व मनाए जाते हैं॥
सद्पुरुषों का अनुकरण करें, कुछ पर्व हमें सिखलाते हैं।
शुभ दिन मिलकर सब यज्ञ करें, हमको यह याद दिलाते हैं॥
ऋतु परिवर्तन के अवसर पर, कुछ पर्व मनाए जाते हैं।
मिल-जुलकर सब सत्संग करें, यह भाव जगाए जाते हैं॥
ये पर्व हमारे जीवन में फिर, नई तरंग भर देते हैं।
कर दूर निराशा के तम को, जीवंत उमंग भर देते हैं॥

***मानव-मानव से करे, प्रेमपूर्ण व्यवहार।***
***मिल-जुलकर हम सब रहें, सिखलाते त्योहार॥***

त्योहार एवं पर्वों का महत्त्व बताते हुए युगऋषि कहते हैं कि महाभाग, जिस प्रकार व्यक्ति को सुनागरिक बनाने के लिए संस्कारों का महत्त्व है, उसी प्रकार सामाजिक उन्नति के लिए पर्व एवं त्योहार मनाए जाते हैं, क्योंकि इन त्योहारों के माध्यम से व्यक्ति में देशभक्ति, ईश्वरभक्ति, कर्त्तव्यनिष्ठा, ईमानदारी आदि सत्प्रवृत्तियाँ विकसित की जा सकती हैं। त्योहार विश्व के समस्त देशों में मनाए जाते हैं। साधना से व्यक्तित्व बनता



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

है तो त्योहार एवं पर्वों के द्वारा सामाजिक संगठन दृढ़ होकर मनुष्य को प्रेम एवं सहकारिता की प्रेरणा देता है।

भारत देश तो त्योहारों का देश है। 'सात वार नौ त्योहार' अर्थात सात दिन में नौ त्योहारों की कहावत प्रचलित है। व्रत-त्योहार, दिन-प्रतिदिन पर्व यह भारतीय संस्कृति की विशेषता है। सबको गले लगाना, भ्रातृभाव, वसुधैव कुटुंबकम्, सर्वेभवन्तु सुखिनः की भावना लेकर ये पर्व आते हैं, किंतु इनमें दस संस्कारों की भाँति ही दस मुख्य त्योहारों का वर्णन कात्यायन ऋषि के माध्यम से पूज्य गुरुदेव ने किया है। ये मुख्य पर्व इस प्रकार हैं— बसंतपंचमी, शिवरात्रि, होली, रामनवमी, नवसंवत्सर, नवरात्र, गायत्री जयंती, गुरुपूर्णिमा, रक्षाबंधन, जन्माष्टमी, विजयादशमी (दशहरा), दीपावली। इसके अतिरिक्त बहुत से क्षेत्रीय पर्व हैं, जो बड़ी धूमधाम से मनाए जाते हैं।

इन त्योहारों की रचना इसी दृष्टि से हुई कि महापुरुषों के प्रेरणाप्रद प्रसंगों को याद करके उनका अनुसरण किया जाए। कुछ पर्व देवताओं, अवतारों की स्मृति पर आधारित हैं। कुछ पर्व देशभक्ति की भावनाओं से ओत-प्रोत हैं। ये पर्व धर्म सम्मेलन, धर्मानुष्ठान, सामाजिक संगठन का संदेश देते हैं, क्योंकि संस्कृति को विकसित करने के ये महत्त्वपूर्ण साधन हैं। इनका उद्देश्य इस प्रकार समझा जा सकता है—

१. जनता की जाग्रति, सद्भावना, एक्य संगठन की वृद्धि।

२. विशेष यज्ञायोजन द्वारा बाह्य वातावरण तथा आंतरिक प्रवृत्तियों का परिष्कार।



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

३. ऋतु परिवर्तन पर, फसल तैयार होने पर सामाजिक समारोह। अन्न को अग्नि को समर्पित करके खाओ।

४. मनोरंजन द्वारा लोकशिक्षण।

५. युगपुरुष, अवतार, देवताओं का स्मरण, राष्ट्रीय भावना का विकास।

इन सब उद्देश्यों की पूर्ति के लिए निम्नलिखित त्योहार मनाए जाते हैं—

**नवसंवत्सर ( रामनवमी-नवरात्र )**—विश्व के प्रत्येक देश में नववर्ष दिवस मनाया जाता है। ईसाइयों में पहली जनवरी को 'न्यू ईयर्स डे' का त्योहार मनाया जाता है। फारस देश में 'जश्न नौरोज़' के नाम से इसे बड़ी धूमधाम से सूर्य के मेष राशि में प्रवेश के समय मनाते हैं। हमारे देश में नववर्ष का प्रारंभ चैत्र शुक्ला प्रतिपदा से होता है, इसे नवसंवत्सर प्रतिपदा कहते हैं।

ब्रह्मपुराण के अनुसार इसी दिन ब्रह्मा ने सृष्टि का निर्माण किया था—

**चैत्र मासि जगत ब्रह्मा ससर्ज प्रथमेऽहनि।**
**शुक्ल पक्षे समग्रंतु तदा सूर्योदये सति॥**

अर्थात चैत्र शुक्ल पक्ष के प्रथम दिन सूर्योदय के समय ब्रह्मा ने जगत की रचना की। इसी दिन भगवान मत्स्यावतार का जन्म हुआ। सतयुग का प्रारंभ भी इसी दिन हुआ तथा इसी दिन से भारत के सार्वभौम सम्राट विक्रमादित्य के संवत का प्रारंभ माना गया है। इनकी कर्त्तव्यनिष्ठा की कहानियाँ वेताल पच्चीसी तथा सिंहासन बत्तीसी में बहुत लोकप्रिय हैं। ये बहुत प्रतापी परदु:खकातर सम्राट थे। वे वेश बदलकर घूम-घूमकर देखते थे कि प्रजा में कोई दुखी तो नहीं है। इन्हीं के जन्मदिन पर विक्रम संवत



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

का प्रारंभ हुआ है। यह उत्सव राष्ट्रीय उत्सव की भाँति मनाया जाना चाहिए तथा नववर्ष व नवयुग का स्वागत करना चाहिए।

**प्रज्ञा गीत**

चलो करें स्वागत आरती सजा लो।
दीप जला लो नया युग चला आ रहा है॥

भरत राम जैसा भाई में प्यार होगा, भाई में प्यार होगा,
लखन राम जैसा भाई का साथ होगा, भाई का साथ होगा।
रामराज्य धरती पर फिर से बसा लो, दुनिया को सिखा दो॥
नया युग..........................

बिना दहेज यहाँ बिटियों का ब्याह होगा, बिटियों का ब्याह होगा,
सुख-शांति होगी, अमन-चैन होगा, अमन-चैन होगा।
कदम से हमारे कदम को मिला लो, आवाज लगा लो॥
नया युग..........................

रूढ़िवाद टूटे विवेक जागेगा, विवेक जागेगा,
भेद मिट जाएगा, धर्म जागेगा, धर्म जागेगा।
जाग उठो भैय्या सोतों को जगा लो, अपनों को जगा लो॥
नया युग..........................

एक नेक इनसान हम सबको बना लेंगे, सबको बना लेंगे,
एक नई दुनिया हम फिर से बसा लेंगे, फिर से बसा लेंगे।
हमारे कंधों से कंधा मिला लो, मशाल उठा लो॥
नया युग..........................

चलो करें स्वागत आरती सजा लो।
दीप जला लो नया युग चला आ रहा है॥



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

खेद का विषय है कि इस समय पश्चिमी सभ्यता के प्रभाव के कारण भारतवासी भी एक जनवरी से ही नववर्ष का शुभारंभ मानते हैं और अपने देश के इस संवत्सर को भूल गए हैं। यह पर्व किसी एक जाति धर्म का न होकर देश का है। हम भारतवासी अपना नववर्ष इसी दिन से मनाएँ तो राष्ट्रीय भावना बढ़ सकती है। मत-मतांतरों व संप्रदायों के समन्वय से सहायता मिल सकती है, क्योंकि जिस देश के निवासी आपस में द्वेष-भाव रखेंगे, वहाँ समाज शक्तिशाली नहीं बन सकता। अतः इसे राष्ट्रीय पर्व के रूप में मनाना चाहिए।

**नवरात्र**—चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से चैत्र शुक्ल नवमी तक का समय नवरात्र के नाम से प्रसिद्ध है। यह पर्व वर्ष में दो बार आता है। इसमें माँ दुर्गा की पूजा की जाती है जो संघशक्ति की प्रतीक है। यह नवरात्र पर्व दोनों बार बड़ी धूमधाम तथा श्रद्धा से मनाया जाता है। इसमें व्रत-जप अनुष्ठान के द्वारा आध्यात्मिक साधना की जाती है। यह पर्व सामाजिक हित की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। चैत्र तथा क्वार दोनों में ऋतु परिवर्तन के कारण व्रत उपवास का भी महत्त्व है। आज के भौतिकवादी युग में इस आध्यात्मिक साधना के द्वारा मनुष्य कल्याणमयी माता से शक्ति प्राप्त कर सकता है।

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से प्रारंभ नवमी तक नवरात्र पर्व की पूर्णाहुति रामनवमी के दिन होती है। भारतीय इतिहास में भगवान राम को आदर्श रूप में प्रस्तुत किया गया है। वे हिंदू जाति के पूज्य तथा पथ प्रदर्शक रहे हैं। बल्कि यह कहने में अतिशयोक्ति न होगी कि राम के पुण्य चरित्र ने ही हिंदू संस्कृति की रक्षा की है। उन्होंने माता-पिता तथा गुरुभक्ति का जो आदर्श



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रस्तुत किया है, वह समस्त विश्व के इतिहास में दुर्लभ है। सौतेली माता की आज्ञा मानकर राज्य छोड़कर वनगमन, गुरु विश्वामित्र की आज्ञा पाकर राक्षसों का वध, सीता जैसी कोमलांगी पत्नी को लेकर नंगे पैर वन-वन के कष्ट उठाकर उन्होंने महान आदर्श प्रस्तुत किया है। **'निशिचर हीन करहुँ महि'** की प्रतिज्ञा लेकर उन्होंने रावण जैसे राक्षस का विनाश कर रामेश्वरम तक आर्यपताका फहरा दी।

उनकी दूसरी विशेषता समाज की मर्यादा तथा अनुशासन का पालन करना था। उन्होंने इसी मर्यादा का पालन करने के लिए सीता जी का भी परित्याग कर दिया था। रामनवमी पर राम की पूजा करके नहीं, बल्कि उनके चरित्र का अनुकरण करके रामनवमी मनानी चाहिए। यह नवरात्र पर्व नवसंवत्सर से रामनवमी तक मनाया जा सकता है। इसमें श्रद्धालु भक्त एवं महिलाएँ नौ दिन उपवास कर अनुष्ठान करती हैं।

**गंगा दशहरा तथा गायत्री जयंती**—हिंदू समाज में गंगा को पापनाशिनी मानकर उन्हें गंगा माता कहकर पूजा जाता है। ये गंगा माता ज्येष्ठ शुक्ल दशमी को धरती पर अवतरित हुई थीं, इसीलिए इसे गंगा दशहरा कहते हैं। इस दिन भक्तजन गंगास्नान को बहुत महत्त्व देते हैं। इनके अवतरण की कथा पुराणों में इस प्रकार है—

राजा सगर के साठ हजार पुत्र थे। उन्होंने १००वां अश्वमेध यज्ञ पूर्ण करने हेतु घोड़ा छोड़ा। इंद्र ने सोचा कि १०० यज्ञ करके वे स्वर्ग के अधिकारी बन जाएँगे। अत: उसने घोड़ा चुराकर कपिल मुनि के आश्रम में छिपा दिया। जब घोड़े को तलाश करते हुए राजकुमार कपिल मुनि के



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आश्रम में पहुँचे तो घोड़े को वहाँ देखकर कपिल मुनि पर चोरी का आरोप लगाया। मुनि ने क्रोध में उन्हें शाप दे दिया। ६० हजार पुत्र जलकर भस्म हो गए। बहुत अनुनय करने पर उन्होंने कहा—"यदि स्वर्ग से गंगा यहाँ पर अवतरित हों तो उनके जल से ये मुक्त हो सकते हैं।" सगर वंश के प्रतापी राजा भगीरथ तपस्या तथा अथक प्रयास करके गंगा को धरती पर लाए। गंगा के वेग को शिव ही सँभाल सकते थे। अतः शिवजी ने प्रार्थना स्वीकार कर अपनी जटाओं में उनके वेग को सँभाला। इस प्रकार वे पतित पावनी गंगा आज भी मुक्तिदायिनी मानी जाती हैं। अभी भी हिंदू समाज में मान्यता है कि गंगाजल से मुक्ति हो जाती है और मृतक आत्मा का भी गंगा किनारे क्रियाकर्म करने से वे आत्माएँ मुक्त हो जाती हैं। यही सोचकर गंगा अथवा किसी नदी तट पर दाह संस्कार किया जाता है, किंतु यहाँ एक गलत धारणा अंधविश्वास के रूप में बन गई कि गंगा स्नान से ही सब पाप धुल जाते हैं। इसका निराकरण करते हुए आचार्य श्री कहते हैं कि मुक्ति के लिए गंगा के किनारे बैठकर पूजा-पाठ, जप-तप करने से शक्ति मिल सकती है, किंतु मनुष्य का मन गंगाजल की भाँति पवित्र हो तभी मनुष्य मुक्त हो सकता है।

सृष्टि के प्रारंभ में ब्रह्मा जी ने जिस शक्ति की साधना करके सृष्टि का निर्माण किया था, उन्होंने जिस शक्ति का तप किया था, उसी का नाम गायत्री है। कहते हैं सृष्टि के प्रारंभ में जब ब्रह्मा को '**एकोऽहं बहुस्याम्**' सृष्टि निर्माण की इच्छा हुई तो उन्होंने देखा चारों तरफ जल ही जल है, तब उन्हें प्रेरणा हुई कि तप करो। उन्होंने कई हजार वर्ष तक तप किया। उन्होंने



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जिस शक्ति की पूजा की थी उसी का नाम गायत्री है। गायत्री को वेदमाता, देवमाता, विश्वमाता कहा जाता है। ये ज्ञान गंगोत्री संस्कृति की जननी हैं तथा आत्मबल देने वाली हैं। यह दिन इन्हीं ज्ञान-विज्ञान की जननी माँ गायत्री का जन्मदिन है। इसी दिन गंगा माता तथा माँ गायत्री अवतरित हुई हैं। अत: जिस प्रकार स्थूल गंगा पृथ्वी को सींचती हैं, प्राणियों की प्यास मिटाती हैं, मलिनता हरकर शांति और शीतलता देती हैं, उसी प्रकार अध्यात्म क्षेत्र में माता गायत्री रूपी गंगा में स्नान करके मुक्ति एवं शांति प्राप्त की जा सकती है। माँ गायत्री के वरद पुत्र ज्ञान गंगा को धरा पर लाने वाले परमपूज्य गुरुदेव ने इसी दिन स्थूल स्वरूप का परित्याग कर सूक्ष्म सत्ता में प्रवेश किया था। यह दिन गायत्रीसाधकों के लिए बहुत ही महत्त्वपूर्ण तथा प्रेरणा देने वाला है। गायत्रीसाधक को चाहिए, जहाँ तक संभव हो सामूहिक हित का ध्यान रखकर अपने निकटवर्ती लोगों को भी प्रेरणा प्रदान करे। यही गायत्री जयंती तथा गंगा दशहरा का मुख्य उद्देश्य है।

**गीत**

ज्ञान गंगा नहा ले मन मेरे, धन्य जीवन बना ले मन मेरे।
धन्य जीवन बना ले मन मेरे, ज्ञान गंगा नहा ले मन मेरे॥
युगऋषि ने सुनो तुम्हें बुलाया, वह फिर से ज्ञान गंगा ले आया।
एक डुबकी लगा ले मन मेरे, धन्य जीवन बना ले मन मेरे॥
ज्ञान.....................................
दुनिया पापों में झुलस रही है, मानव की आत्मा तड़प रही है।
शांति चिंतन करा ले मन मेरे, धार रस की बहा ले मन मेरे॥
ज्ञान.....................................



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मन में शक्ति जगी है पूजा, ईश्वर को भाता नहीं काम दूजा।
नेह सबसे लगा ले मन मेरे, ज्योति भीतर जगा ले मन मेरे॥
ज्ञान.....................................

युगऋषि का संदेशा सबको सुना दे, घर-घर जा निष्ठा भी जगा दे।
राह सच्ची दिखा दे मन मेरे, ज्ञान गंगा नहा ले मन मेरे॥
ज्ञान.....................................

**गुरुपूर्णिमा**—श्रावण शुक्ला पूर्णिमा को रक्षाबंधन का पर्व होता है। प्राचीनकाल में ऋषि-महर्षि इस दिन से वेदपारायण प्रारंभ करते थे, जिसे (उपाकर्म) उपकर्म कहते थे। इस समय शिष्य शिखास्थापन तथा यज्ञोपवीत धारण कर द्विज बनकर वेदपाठ करने का संकल्प लेते थे और वर्षा ऋतु प्रारंभ होने के कारण एक स्थान पर रहकर वेदाध्ययन करते थे। ऋषि एवं आचार्य इसी समय वैश्य, किसान, व्यापारी तथा अन्य कार्य करने वाले गृहस्थ जनों का भी मार्गदर्शन करते थे। दुर्भाग्यवश इस युग में शिक्षित वर्ग का ध्यान भी धार्मिक तथा आध्यात्मिक अध्ययन से हट गया है। वे केवल धनोपार्जन को ही महत्त्व देने लगे हैं। आवश्यकता इस बात की है कि इस समय हम सब स्वाध्याय का नियम बनाकर अपनी अमूल्य ज्ञानराशि की अवहेलना न करें। वेद और उपनिषद् की तो बात ही क्या, हम अपने धार्मिक ग्रंथ रामायण, गीता का भी अध्ययन करते तो हैं, पर उनका अनुकरण नहीं करते। हमें उनके आदर्श ग्रहण करने चाहिए। प्राचीन परंपरा को अपनाकर गुरु इस समय विद्यार्थियों से गुरुदक्षिणा में यही माँगें कि वे जीवन भर गुरुऋण को चुकाने के लिए अपनी प्रतिभा, धन तथा समय का



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

एक अंश लोक-कल्याण में लगाएँगे। प्राचीन ऋषि अपने शिष्यों से धन-संपत्ति नहीं, बल्कि यही गुरुदक्षिणा माँगते थे कि अपनी शक्ति, बल, विद्या, तेज, धन से किसी का अनिष्ट नहीं करेंगे। यदि अनिष्ट करेंगे तो विद्या की शक्ति नष्ट हो जाएगी। गुरु वसिष्ठ व विश्वामित्र ने राम से यही माँगा था। राम ने राक्षसों का नाश करके रामराज्य की स्थापना की थी। कृष्ण ने अधर्म का विनाश तथा धर्म की स्थापना का संकल्प लिया था। इस युग में भी स्वामी विरजानंद जी ने मूलशंकर को महर्षि दयानंद बनाकर पाखंडखंडिनी पताका फहराने का आदेश दिया था। परमहंस ने नरेंद्र नामक बालक को स्वामी विवेकानंद बनाकर धर्मप्रचार कर संस्कृति के पुनरुद्धार की ही गुरुदक्षिणा माँगी थी। विश्व में ऐसे ही शिष्य तथा गुरुओं की गाथाएँ इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखी जाती हैं। आज इसी परंपरा को पुनर्जाग्रत करने की आवश्यकता है।

**रक्षाबंधन**—यह भाई-बहन के पवित्र रिश्ते तथा प्रेम के बंधन का प्रतीक है। इसका उद्देश्य है—संकल्पसूत्र बाँधकर एकदूसरे के पवित्र प्रेम के बंधन में बँधकर एकदूसरे की रक्षा करने का तथा दुःख-सुख में सहयोगी होने का संकल्प लें। इस पर्व से संबंधित कथा शास्त्रों में मिलती है कि इंद्राणी ने श्रावणी के दिन ब्राह्मणों से स्वस्तिवाचन कराके इंद्र को यह रक्षासूत्र बाँध दिया और इंद्र की पराजय विजय में बदल गई।

इसी संदर्भ में रानी कर्णवती तथा हुमायूँ की कथा इतिहास प्रसिद्ध है कि जब चित्तौड़ की रानी कर्णवती पर गुजरात के बादशाह बहादुरशाह ने चढ़ाई की तो रानी ने दिल्ली के मुगल सम्राट हुमायूँ के पास राखी भेजकर



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अपनी रक्षा की प्रार्थना की। इस राखी की लाज रखने के लिए हुमायूँ उसी समय अपनी सेना लेकर पहुँचा, यद्यपि उसके पहुँचने से पहले ही रानी कर्णवती जौहर कर चुकी थी, पर हुमायूँ ने बहादुरशाह को हराकर रानी के पुत्र को गद्दी पर बिठाया। इस प्रकार यह पर्व पवित्र प्रेम के बंधन का पर्व है, पर इस समय केवल दक्षिणा देकर ही भाई अपने कर्त्तव्य की इतिश्री समझ लेते हैं। आवश्यकता इस बात की है कि नारी का सम्मान किया जाए और उसकी रक्षा करने का संकल्प लिया जाए। इस दिन पुरुष वर्ग एकदूसरे को तिलक कर संकल्पसूत्र बाँधकर प्रेम व्यवहार तथा राष्ट्ररक्षा का संकल्प लें तो सबका कल्याण हो सकता है। इसे श्रावणी पर्व भी कहते हैं। इस दिन वेद का पूजन होता है, वृक्षारोपण किया जाता है, यज्ञोपवीत बनाए तथा बदले जाते हैं। इस दिन दस स्नान तथा हेमाद्रि संकल्प करके विगत जीवन की त्रुटियों के लिए प्रायश्चित भी किया जाता है।

**जन्माष्टमी**—यह भगवान कृष्ण की जन्मतिथि है। भाद्रपद की कृष्णपक्ष की अँधेरी रात में हिंदू जाति के उपास्य भगवान कृष्ण का जन्म जेल में हुआ। अत्याचारी कंस (जो उनका मामा था) ने अपने माता-पिता तथा अपनी बहन देवकी व उसके पति वसुदेव को जेल में बंद कर लिया था, क्योंकि भविष्यवाणी के अनुसार उसकी मृत्यु देवकी-पुत्र के हाथों से होनी थी। ऐसी भयंकर स्थिति में जब भाई, बहन को कैद कर सकता था, मगध नरेश जरासंध ने छोटे-छोटे राजाओं को कैद कर उनके राज्यों पर कब्जा कर लिया था, नरकासुर ने दुराचार के लिए असंख्य सुंदरियों को अपने महल में कैद कर लिया था, शिशुपाल गर्व के वशीभूत होकर अत्याचार कर



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

रहा था, दुर्योधन की दुष्टता तथा महत्त्वाकांक्षा इतनी बढ़ गई थी कि वह अपने माता-पिता, गुरु सबकी अवहेलना कर अनैतिक आचरण कर रहा था, उस समय धरती पर धर्म की स्थापना तथा अधर्म के विनाश के लिए भगवान कृष्ण अवतरित हुए। कृष्ण हिंदू जाति के आराध्य देव माने जाते हैं। इनका सारा जीवन ही अन्याय से प्रतिकार करने में बीत गया। इन्होंने गीता के द्वारा अर्जुन का जो मार्गदर्शन किया, वह समस्त विश्व के प्रत्येक व्यक्ति के लिए प्रेरणाप्रद है।

इस समय कर्मयोगी बनने के लिए अर्जुन की भाँति ही मोह छोड़कर अनाचार, अत्याचार के प्रति संघर्ष करने की आवश्यकता है। यद्यपि इस पर्व को हिंदू लोग बहुत ही श्रद्धा, निष्ठा से मनाते हैं, व्रत-उपवास रखते हैं, किंतु आवश्यकता रासलीला एवं श्रृंगार की नहीं, इस समय इनके उपदेश पर चलने के लिए अर्जुन बनने की है।

**विजयादशमी**—यह त्योहार आश्विन शुक्ल दशमी को मनाया जाता है। भगवान कृष्ण एवं राम हिंदू जाति के बहुत ही पूज्य देवता हैं, इन्हें भगवान का अवतार माना जाता है। चैत्र नवसंवत्सर के नवें दिन रामनवमी मनाकर भगवान राम का जन्मदिवस मनाया जाता है तो आश्विन में नवरात्र की पूर्णाहुति में माँ दुर्गा के द्वारा महिषासुर आदि राक्षसों का वध करने के कारण उनकी पूजा की जाती है तथा भगवान राम ने रावण जैसे अत्याचारी, शक्तिशाली शासक पर विजय प्राप्त कर सोने की लंका भस्म कर सीता को उसकी कैद से छुड़ाया था। अतः यह पर्व विजयादशमी के नाम से प्रसिद्ध है। इसी दिन इंद्र ने वृत्रासुर पर विजय प्राप्त की थी। वास्तव में यह दिन



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

असुरों पर देवत्व की विजय का प्रतीक है। इस समय जब घर-घर में रावण जैसे अत्याचारी दिखाई दे रहे हैं तो प्रत्येक व्यक्ति को राम बनने की आवश्यकता है, जिससे राष्ट्ररक्षा की भावना का उदय हो और राष्ट्रविरोधी दुष्टों का दमन हो। यह राष्ट्रीय पर्व है, इससे प्रेरणा लेकर राम तथा दुर्गा शक्ति का अनुकरण करना चाहिए।

**प्रज्ञा गीत**

रामायण पढ़ना ही पर्याप्त नहीं, उस साँचे में ढलना होगा।
चलें राम के पदचिह्नों पर, अब इतिहास बदलना होगा॥
रूप अनेकों बना ताड़का, ऋषि-मुनियों को सता रही है,
जाने कितनी सूर्पनखाएँ, अपना नाटक दिखा रही हैं।
कई मंथराएँ कुबुद्धि से, घर का नाश किया करती हैं,
भ्रमित हुई कितनी कैकेयी, पति के प्राण लिया करती हैं॥
हमें कहीं पथभ्रष्ट न कर दें, उनसे प्रथम निपटना होगा।
रामायण पढ़ना ही पर्याप्त नहीं, उस साँचे में ढलना होगा॥
जाने कितनी सीताओं का, अब भी यहाँ हरण होता है,
कितने परहितरत गीधों का, यूँही यहाँ मरण होता है।
जाने कितने कालनेमि, सुंदर वाने में छिपे हुए हैं,
परनारी को छलने कितने, रावण योगी बने हुए हैं॥
जो समाज के शोषक उनको, कर संकल्प कुचलना होगा।
रामायण पढ़ना ही पर्याप्त नहीं, उस साँचे में ढलना होगा॥
कितने ही बालि भाइयों के हक, प्रतिदिन ही छीना करते हैं,
कितने ही रावण भाई को, लातों से पीटा करते हैं।



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विजयादशमी पर भारत में, कागज के रावण जलते हैं,
सचमुच के रावण जिंदा हैं, हम नाटक खेला करते हैं॥
ऋषियों का आदर्श ग्रहण कर, अब हम सबको चलना होगा।
रामायण पढ़ना ही पर्याप्त नहीं, उस साँचे में ढलना होगा॥

**दीपावली**—कार्तिक अमावस्या के दिन यह पर्व मनाया जाता है। यह लक्ष्मीजी के आगमन का त्योहार माना जाता है। इस दिन लक्ष्मी-गणेश जी की पूजा की जाती है। इसका अर्थ यह है कि लक्ष्मी की प्राप्ति के साथ-साथ बुद्धि, विवेक के देवता गणेश जी की पूजा पहले करें, जिससे लक्ष्मी की प्राप्ति होने पर दुर्व्यसन से बच सकें। लक्ष्मी जी को माँ समझकर उनका सम्मान करें, उन्हें भोगविलास की वस्तु न समझें, यह दीपों का पर्व है, इसका तात्पर्य है कि स्वयं दीप बनकर अंधकार को दूर करने का प्रयास करें।

इस उत्सव के संबंध में अनेक कथाएँ प्रचलित हैं। कहते हैं कि इस दिन १४ वर्ष की अवधि समाप्त कर भगवान राम वन से अयोध्या लौटे थे। उस दिन अमावस्या की रात्रि थी। भरत ने सूर्य से प्रार्थना की कि मेरे भाई चौदह वर्ष बाद घर आ रहे हैं, तुम रात्रि में प्रकाश कर दो, पर सूर्य नियम से बँधा था। चंद्रमा से प्रार्थना की कि तुम्हीं प्रकाशित हो जाओ, पर चंद्र भी विवश था, उनकी आँखों में आँसू आ गए। तब मिट्टी गीली हो गई। गीली मिट्टी ने कहा—"भरत, रो मत गीली मिट्टी के दीपक बना और घी के दीप जलाकर भाई राम का स्वागत कर।" और कहते हैं कि उस दिन दीपों के प्रकाश को देखकर आकाश के सूर्य और चंद्र भी लज्जित हो गए। तात्पर्य



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

यह है कि घने अंधकार में जब महान पुरुष दीपक बनकर प्रकाशित होते हैं तो अज्ञान का अंधकार तिरोहित हो जाता है। इस दिन दीप जलाकर हम स्वयं दीप बनकर दीप से दीप जलाएँ तो यह दीपोत्सव सार्थक है।

इस पर्व की कई दिन पूर्व से तैयारी होती है। घर की सफाई, लिपाई, पुताई कर धनतेरस मनाई जाती है। नरकासुर का वध भगवान ने चतुर्दशी को किया था अर्थात इस दिन नरक से निकलकर स्वर्ग की स्थापना होती है, नया अन्न आता है, खील-बताशों से पूजा होती है, दीपावली पर लक्ष्मी-गणेश का पूजन होता है। अगले दिन भगवान कृष्ण ने गोवर्द्धन पर्वत उठाकर इंद्र के स्थान पर गायों की पूजा की थी, भाईदूज के दिन बहनें भाई को तिलक कर उनकी दीर्घ आयु की प्रार्थना करती हैं।

इस प्रकार यह पर्व राष्ट्र के आर्थिक उत्थान का सामूहिक पर्व है। इसी दिन भारत की तीन विभूतियाँ महावीर स्वामी, स्वामी दयानंद तथा स्वामी रामतीर्थ ने निर्वाण प्राप्त किया था। इन्होंने तिल-तिल जलकर सहस्रों मनुष्यों को जो प्रकाश दिया है, वह बुझने न पाए, इसलिए स्वयं दीप बनकर उनका अनुकरण करें।

**बसंतपंचमी**—यह पावन पर्व माघ शुक्ल पंचमी को ऋतुराज बसंत के स्वागत के रूप में मनाया जाता है। इस दिन माँ सरस्वती का पूजन कर जीवन में शुभ कार्यों को करने का संकल्प लिया जाता है। इस समय प्रकृति की अनुपम शोभा अवर्णनीय होती है। इस समय सारी धरती पीले फूलों से अपना शृंगार करती है।

इस समय पुराने पत्ते झड़ जाते हैं, गुलाबी रंग की कोपलें फूट पड़ती हैं, आम्रमंजरी की सुगंधि से कोयल मदमस्त होकर कुहु-कुहु करके मन को



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आनंदित कर देती है। इस सुहावने मौसम में विद्या की अधिष्ठात्री देवी सरस्वती की आराधना की जाती है, पीले वस्त्र पहनकर विद्यारंभ संस्कार कराया जाता है। इस समय जीव-जंतु, वनस्पतियों का भी कायाकल्प होता है और इसका प्रभाव मन पर भी पड़ता है। फूलों की तरह मुस्कराना, कलियों की तरह खिलना, भौरों की तरह गुनगुनाना यदि मनुष्य सीख ले तो जीवन धन्य हो सकता है, किंतु दुर्भाग्य की बात है कि मध्यकाल में सरस्वती पूजा के स्थान पर मदनोत्सव मनाया जाने लगा। इससे विद्या बुद्धि तो कम हो गई, भौतिक आकर्षण एवं बाह्य सौंदर्य पर अधिक ध्यान दिया जाने लगा। इस समय आवश्यकता है कि हम जीवन रूपी पुष्प को माँ सरस्वती के चरणों पर समर्पित कर फूलों की तरह ही सद्भावनाओं की सुगंधि चारों तरफ बिखेर दें तो जीवन धन्य हो जाए।

यह पर्व गायत्री परिवार के लोगों के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है। इसी दिन पूज्य गुरुदेव को खोजते हुए दादा गुरु आंवलखेड़ा की छोटी सी कोठरी में पहुँच गए थे। पूज्य गुरुदेव का यह जन्मदिन हम सबके लिए तभी शुभ हो सकता है, जब हम स्वयं भी पूज्य गुरुदेव की तरह अपने को गुरुदेव के सिद्धांतों को पूरा करने के लिए समर्पित कर दें। जीवन रूपी पुष्प उनके चरणों पर चढ़ा दें।

***हँसमुख प्रसून सिखलाते, यदि पल भर भी हँस पाओ।***
***अपने उर के सौरभ से जग का प्रांगण भर जाओ॥***

**महाशिवरात्रि**—यह परहित साधन का पुण्य पर्व है। शिव का अर्थ है—कल्याणकारी। यह व्रत फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी को होता है। शिवजी



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

का स्थान हिंदू देवताओं में बहुत ऊँचा है। वे महादेव कहे जाते हैं। समुद्रमंथन के समय समुद्र से चौदह रत्न निकले। सभी रत्न देवताओं ने बाँट लिए, किंतु विष देखकर सब घबरा गए। तब भगवान शिव ने विषपान कर उसे कंठ में रख लिया, इससे वे नीलकंठ कहलाए और महादेव बन गए। जो व्यक्ति दूसरों के दुःखों को अपने ऊपर ले लेता है, वही शिव पूजा का अधिकारी है।

शिवजी अपरिग्रही हैं। श्मशान में रहकर भस्म लगाते हैं। सभी देवता शान–शौकत से रहते हैं, किंतु औघड़दानी सब कुछ देने में ही खुश होते हैं। एक बार पार्वतीजी लक्ष्मीजी के यहाँ गईं और उनके स्वर्ण महल, स्वर्ण सिंहासन तथा वैभव को देखकर शिवजी से कहने लगीं—"मुझे भी सोने का महल चाहिए।" पहले तो शिवजी ने समझाया पर बाद में जब पार्वती जी न मानीं तो उन्होंने विश्वकर्मा को बुलाकर महल बनाने की आज्ञा दी। महल बनकर तैयार हुआ तो गृहप्रवेश के लिए वेदपाठी ब्राह्मण की आवश्यकता हुई। रावण उनका प्रिय शिष्य था। उससे ही गृहप्रवेश कराया गया। दक्षिणा माँगने को कहा तो रावण ने कहा—"मुझे तो आपका सोने का महल ही दक्षिणा में चाहिए।" बस औघड़दानी शिवजी ने वह सोने का महल (लंकापुरी) उसे दे दिया और स्वयं फिर कैलाश पर्वत पर चले गए। पार्वती जी भी उन्हीं के साथ चली गईं। इस व्रत के द्वारा अपरिग्रही बनने की शिक्षा लेनी चाहिए, किंतु दुर्भाग्यवश इस समय भाँग पीकर उनके नाम को बदनाम किया जाता है। वे धतूरे से प्रसन्न होते हैं, भाँग खाते हैं, इत्यादि भ्रम जनता में फैले हैं। सच तो यह है कि दूसरों के दुःखों को दूर करने का संकल्प ही सच्ची शिव पूजा है।



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गुरुदेव स्वयं शिव के अवतार थे। वे सारे संसार की पीड़ा का पान करके सबको सुख बाँटते थे। अपनी एक बुराई छोड़कर सन्मार्ग पर चलने का संकल्प लेकर हम गुरुदेव तथा शिव के पुजारी कहला सकते हैं।

**होली**—यह मिलन का प्रतीक है। यह फाल्गुन की पूर्णिमा को मनाया जाता है। यह रंग, गुलाल, चंदन, अबीर से तन-मन रँगने का त्योहार है। इस त्योहार के प्रारंभ में तो होलिका, हिरण्यकशिपु, प्रह्लाद की कथा आती है, जिससे एक तरफ तो यह पता चलता है कि दुष्ट का विनाश अवश्यंभावी है, भगवान अपने भक्तों की रक्षा करते हैं, दूसरी तरफ यह त्योहार प्रेम, प्यार करने तथा शत्रुता भुलाने का त्योहार है। यह पारस्परिक सौहार्द्र, सहिष्णुता, मैत्री, आत्मीयता का परिचायक है। यदि ये त्योहार इसी भावना से मनाए जाएँ तो समाज में व्याप्त कटुता की भावना छूमंतर हो सकती है। यह आपस में भाईचारे का पर्व है। यह यज्ञीय पर्व है। नई फसल पकती है, सब मिल-जुलकर खाते हैं। पहले यज्ञ को समर्पित करते हैं। यह राष्ट्रीय जागरण का पर्व है। यह वर्ण भेद को मिटाने वाला त्योहार है, इस समय भाँग पीकर कीचड़ फेंकना आदि बुराई को दूर करना चाहिए।

**उच्चस्तरा लोकशिक्षा समारोहसुयोजनैः।**
**जायते च प्रभावेण ह्येतेषां बहवस्त्विह॥**

—४/३/५१

**फुल्लन्ति कुसुमानीव येऽविकासस्थिता नराः।**
**कथानां च पुराणानां महत्त्वं घटते ततः॥**

—४/३/५२



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ये महापर्व, व्रत, अनुष्ठान, सब खुशियाँ लेकर आते हैं।
सत्संग, कथा, संकीर्तन से, सद्भाव जगाए जाते हैं॥
संतों के माध्यम से श्रोता, जब नीति कथाएँ सुनते हैं।
उनकी प्रेरणा से सुप्तभाव, अधखिली कली सम खिलते हैं॥
इन मेलों और त्योहारों पर, यज्ञादि कराए जाते हैं।
झंकृत होती मन की वीणा, दुर्भाव भगाए जाते हैं॥
घर-घर में यज्ञ कथाओं से, तुम नवयुग का निर्माण करो।
धरती पर स्वर्ग उतर आए, ऐसा प्रज्ञा अभियान करो॥

***मेलों और त्योहारों पर, करो ज्ञान का दान।***
***भव आतप से जो दुखी, उनका हो कल्याण॥***

व्रत-अनुष्ठान के साथ-साथ शुभ कार्य करने का संकल्प लेना चाहिए। यह सुनकर एक जिज्ञासु ने कहा—"हे देव, हमारे देश में व्रत तथा जयंतियों की भरमार है। ये व्रत भी स्त्रियाँ ही अधिक रखती हैं, इसका क्या कारण है?"

शंका का समाधान करने के लिए मुस्कराते हुए युगऋषि ने कहा—हे वत्स, यही प्रश्न एक बार लोकमान्य तिलक से किसी जिज्ञासु ने पूछा था। उसका उत्तर देते हुए उन्होंने जो कहा था वही सुनो—"यह भारत देश नर-रत्नों की खान है, किंतु इसका श्रेय मातृशक्ति को ही है। यहाँ माताएँ अहोई अष्टमी इत्यादि पर्व पर इसलिए व्रत रखती हैं कि बेटे ईश्वरभक्त, देशभक्त बनें। बहनें, भाइयों की सद्बुद्धि तथा दीर्घजीवन के लिए भैयादूज पर ईश्वर से प्रार्थना करती हैं तो पत्नी राम, कृष्ण, शिव स्वरूप पति को पाने



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

के लिए गौरी व्रत रखती है। यहाँ अधिकांश स्त्रियाँ मृदुभाषी, सरल तथा देवी स्वरूप होती हैं। अतः पुरुष वर्ग व्रत-अनुष्ठान की आवश्यकता नहीं समझते।''

तुमने जयंती मनाने के विषय में पूछा है तो यह याद रखो कि जयंती के रूप में महापुरुषों को याद किया जाता है। इसका सबसे बड़ा लाभ यह है कि जनसाधारण आत्मनिरीक्षण कर, महापुरुषों के जीवन का अनुकरण कर, अपने को महामानव बनाने का प्रयास करें। विश्व के समस्त देशों में अधिकांश पर्व महापुरुषों की याद में मनाए जाते हैं। क्रिसमस, ईसा मसीह की याद में मनाया जाता है, जिसे विश्व की अधिकांश जनता मनाती है। जापान देश के अधिकांश त्योहार महापुरुषों की स्मृति में मनाए जाते हैं इसलिए यह छोटा सा देश देशभक्ति में सबसे आगे है।

भारत देश तो महापुरुषों का देश है। अतः बुद्ध जयंती, महावीर जयंती, दयानंद जयंती आदि महापुरुषों के जन्मदिन मनाए जाते हैं, किंतु दुःख की बात यह है कि इनके मनाने का ढंग भी दोषपूर्ण हो गया है। इस समय केवल बड़ी-बड़ी सभाएँ करके, लंबे-चौड़े भाषण देकर, भीड़ इकट्ठी करके नारे लगा-लगाकर उन्हें श्रद्धांजलि देकर हम अपना कर्त्तव्य पूरा समझ लेते हैं, जबकि आवश्यकता इस बात की है कि हम उनके दिखाए हुए रास्ते पर चलें। उन्हीं की भाँति त्यागी, परोपकारी तथा सदाचारी बनने का संकल्प लें, तभी उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि दे सकेंगे।

महाप्राज्ञ की अमृतवाणी सुनकर सब तृप्त हो रहे थे। पर्व व त्योहारों का महत्त्व समझ में आ रहा था, किंतु इस समय मन में एक जिज्ञासा थी



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कि ये पर्व कैसे मनाए जाएँ? अत: एक जिज्ञासु ने विनम्र स्वर में पूछा—"हे देव! शास्त्रविधि के अनुसार ये पर्व किस प्रकार मनाए जाएँ? कृपया यह बताने का कष्ट करें।" यह सुनकर कात्यायन ऋषि ने कहा—

"हे महाभाग! लोक-कल्याण की दृष्टि से तुम्हारा यह प्रश्न समय के अनुरूप है। ये पर्व एवं मेले मनुष्य के जीवन को बहुत शिक्षा दे सकते हैं। इनको यदि ठीक प्रकार मनाया जाए तो इससे मनुष्य का शारीरिक एवं आत्मिक विकास हो सकता है। जिस प्रकार अनुकूल वातावरण पाकर छोटा सा बीज अंकुरित होता है और फिर उस पर पत्ते, कोंपलें, फल-फूल आदि आ जाते हैं, उसी प्रकार इन पर्व एवं व्रत अनुष्ठानों से मनुष्य जीवन को सुसंस्कृत किया जा सकता है। इसके लिए सत्संग, कथा, संकीर्तन आदि की विधि को अपनाया जा सकता है। कथाओं के सुनने-सुनाने से लोकरंजन भी होता है तथा लोक-कल्याण भी हो सकता है। कथा सुनने का तात्पर्य है, कथा सुनकर उसका अनुकरण करें। उदाहरण के लिए इस समय सत्यनारायण की कथा कही जाती है, परंतु कथा में यह पता भी नहीं चलता कि सत्यनारायण की कथा है क्या? कथा में केवल कथा का महत्त्व बताया गया है कि लकड़हारे ने कथा सुनी तो लाभ हुआ। कलावती ने प्रसाद छोड़ा तो पति अदृश्य हो गया, किंतु कथा क्या है, इसका पता ही नहीं चलता। महर्षि दयानंद तथा पूज्य गुरुदेव ने सत्यनारायण कथा में बताया है कि सत्य ही नारायण हैं। उनकी पूजा करने का तात्पर्य है कि मनुष्य सत्य को अपनाए, तभी वह महान बन सकता है। सत्य को छोड़कर अपयश व हानि उठानी पड़ती है। इसी प्रकार व्रत का तात्पर्य है—कोई शुभ



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

संकल्प धारण करना। जैसे—युधिष्ठिर ने सत्य बोलने का व्रत लिया, भीष्म पितामह ने आजीवन ब्रह्मचारी रहने का संकल्प किया, महात्मा गांधी ने इसी सत्य को अपनाने का व्रत लिया तो वे मोहनदास से विश्ववंद्य बापू बन गए। अत: व्रत करने में कोई अच्छा कार्य करने का व्रत धारण करना चाहिए, यही सत्यनारायण की पूजा है।''

एक राजा ने व्रत ले रखा था कि प्रजा में कोई दुखी न रहे। इसलिए उसने नियम बना रखा था कि बाजार में कोई वस्तु यदि न बिके या किसी बेचने वाले को धन की कमी हो तो उसकी सारी वस्तु खरीदकर उसे पर्याप्त धन दे दो। इस व्रत का वह सत्यनिष्ठा से पालन करता था। एक दिन एक कबाड़ी की दुकान पर कुछ बिक्री नहीं हुई तो रात को राजा के सेवकों ने काफी धन देकर उसका कूड़ा-करकट खरीद लिया। रात को राजा ने स्वप्न देखा कि एक सुंदर पुरुष उसके घर से निकलकर जा रहा है। उसने पूछा—''तुम कौन हो?'' उसने कहा—''मैं यश हूँ, तुमने कबाड़ खरीदकर मुझे अपमानित किया है अत: मैं जा रहा हूँ।'' राजा चुप रहे। थोड़ी देर बाद एक सुंदर स्त्री निकली। उसे देखकर राजा ने फिर पूछा—''तुम कौन हो?'' उसने कहा—''मैं लक्ष्मी हूँ, तुमने कबाड़ खरीद लिया है, जहाँ कबाड़ हो, वहाँ मैं कैसे रह सकती हूँ?'' राजा चुप रहे। थोड़ी देर बाद तेजस्वी पुरुष निकला। राजा ने कहा—''तुम कौन हो? कहाँ जा रहे हो?'' उसने कहा—''मैं सत्य हूँ, जब लक्ष्मी और यश चले गए तो मैं कैसे रह सकता हूँ?'' राजा ने उसको पकड़कर कहा—''तुम कैसे जा सकते हो? मैंने लक्ष्मी और यश की परवाह नहीं की, परंतु तुम्हें नहीं



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

छोड़ा। तुम मुझे छोड़कर नहीं जा सकते।'' सत्य को वहीं रुकना पड़ा। थोड़ी देर बाद यश व लक्ष्मी भी वापस आ गए। तभी कहा भी है—

***सत मत छोड़े बावरे, सत छोड़े पत जाय।***
***सत की बांदी लक्ष्मी, फिर मिलेगी आय॥***

इसी प्रकार कथा सुनना भी तभी सार्थक है, जब कथा श्रद्धा और निष्ठा से सुनी जाए। परीक्षित राजा ने मनोयोग से कथा सुनी तो सात दिन में मुक्ति पा गए। इस समय तो कथा सुनते हुए विमान आ जाए तो लोग उठकर भाग लें कि कथा सुनने आए थे, यह मुसीबत कहाँ से आ गई। कथा को ध्यानपूर्वक सुनकर उस पर अनुकरण करने से जीवन को बदला जा सकता है। लोकशिक्षण की दृष्टि से यह कथा पुराण शैली बहुत लाभदायक है।

इसके अतिरिक्त त्योहारों पर तथा व्रत अनुष्ठान के पश्चात यज्ञ करने से भी सामाजिक कुरीतियों को दूर किया जा सकता है। प्राचीनकाल में वातावरण को पवित्र करने के लिए भौतिक, राजनीतिक समस्याओं के समाधान के लिए राजसूय यज्ञ किए जाते थे। धार्मिक, सामाजिक उन्नति के लिए वाजपेय तथा सार्वभौम राज्य की स्थापना के लिए अश्वमेध यज्ञ किए जाते थे। साधारणतया प्रत्येक व्यक्ति अपने घर में यज्ञ करता था तथा मेलों, त्योहारों अथवा तीर्थों में यज्ञ किए जाते थे।

इस समय गायत्री परिवार के संस्थापक आचार्य श्रीराम जी ने अश्वमेधों की शृंखला चलाकर विश्व को आस्था संकट से मुक्त करने का प्रयास किया है। यज्ञों की यह परंपरा प्राचीनकाल से चली आ रही है। यज्ञों द्वारा बाह्य तथा आंतरिक वातावरण शुद्ध होता है और दुष्प्रवृत्तियों को दूर कर



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मनुष्य देवता बन जाता है। यज्ञ से जो विद्युत तरंगें फैलती हैं, वे मन के पाप, द्वेष, वासना, स्वार्थपरता, काम, क्रोध, मोह को भगाती हैं। इसीलिए ऋषि आश्रम में शेर-बकरी एक ही घाट पर पानी पीते थे। राजा, धनिक, ऋषि-मुनि प्राचीनकाल में बड़े-बड़े यज्ञ करते थे, जिससे देशव्यापी, विश्वव्यापी बुराइयाँ दूर होती थीं और समस्याओं का समाधान होता था। आज उसी परंपरा के पुनर्जागरण की आवश्यकता है। सौभाग्य की बात है कि इस समय गायत्री परिवार, आर्य समाज तथा अन्य धार्मिक संस्थाओं द्वारा यज्ञ-प्रक्रिया चल रही है। गायत्री परिवार के परिजन तो छोटे-छोटे संस्कार दीपयज्ञ के द्वारा भी करा देते हैं। इस समय देवसंस्कृति की पुनर्स्थापना करना युग की आवश्यकता है, जिसे प्रज्ञापुत्रों के प्रज्ञा अभियान तथा यज्ञ द्वारा संपन्न किया जा रहा है।

**प्रज्ञा गीत**

हे ऋत्विज होताओ, आओ, आओ यजन करो।
यशकामी श्रोताओ, आओ, आओ यजन करो॥
देवराज ने वृहस्पति संग, मिलकर यज्ञ रचाया था,
तुष्ट हो गए सभी देवगण, ऐसा यजन कराया था।
इंद्रराज को मिला यज्ञ से, बल ऐश्वर्य अकूत था,
जिसकी ऊँचाई त्रिलोक में, कहीं न कोई करता था॥
बल ऐश्वर्य बढ़ाने, आओ, आओ यजन करो।
ओ बहनो माताओ आओ, आओ यजन करो॥
यज्ञ पुरुष से ही देवों ने, दान अपरिमित पाए हैं,
प्रबल पराक्रम भरा देह में, वे अजेय कहलाए हैं।



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मिली अलौकिक वाक्‌शक्ति, अतुलित बल भरा शिराओं में,
पाई अनुपम श्रवण शक्ति, यश फैला दसों दिशाओं में॥
*प्राण पराक्रम पाने आओ, आओ यजन करो।*
*आस्थावान प्रजाओ आओ, आओ यजन करो॥*

संस्कार एवं पर्व का महत्त्व सुनकर एक जिज्ञासु ने कहा—"महामनीषी! कृपया हमें मेलों का महत्त्व बताने का कष्ट करें—इनसे क्या लाभ है?"

महाप्राज्ञ ने मेलों का महत्त्व बताते हुए कहा—"हे भद्र, भारतीय संस्कृति अनेक देशों की संस्कृति का संगम है। यहाँ अनेक संप्रदाय हैं, सैकड़ों जातियाँ हैं, सभी के अपने रीति-रिवाज हैं। भिन्न-भिन्न मान्यताएँ हैं और अलग-अलग वेशभूषा है, पूजापद्धति के नियम तथा सामाजिक चलन भी अलग-अलग हैं, फिर भी यहाँ एक सद्‌भावना है जो सबको जोड़ती है। अनेकता में एकता का दर्शन इन मेलों में स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। यहाँ के मेले प्यार तथा आस्था के प्रतीक हैं, प्यार के लहराते सागर हैं, जिनमें सभी धर्म, जाति तथा संप्रदाय के लोग समान रूप से भाग लेते हैं। तीज-त्योहार की भाँति ये मेले भी साथ-साथ मिलकर मनाए जाते हैं, सभी का अपना रूप, अपना रंग, अपना ढंग है। ये परंपराओं के रंग-बिरंगे फूलों के गुलदस्ते हैं, जिनमें सांस्कृतिक एकता के दर्शन होते हैं। इस पावन धरती को इन मेलों ने पूर्व से पश्चिम तथा उत्तर से दक्षिण तक प्यार के एकसूत्र में बाँध दिया है। इन मेलों में सभी संप्रदाय के लोग हमसफर बनते हैं और मानवता का पथ प्रशस्त करते हैं।"

भारत का एक प्रसिद्ध मेला है—कुंभ मेला, जो भारत के चार तीर्थों में होता है—हरिद्वार, प्रयाग, उज्जैन तथा नासिक। इस पर्व पर देश के प्रत्येक



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

प्रांत का प्राणी सहज एकता के सूत्र में बँधकर पुण्य सलिला गंगा में स्नान करके धन्य होता है। तब वह न पंजाबी होता है, न बंगाली, न गुजराती, न मराठी, न उड़िया और न राजस्थानी। तमिलभाषी भी जब **'हर-हर गंगे'** का उद्घोष करता है तो सारे भेदभाव मिट जाते हैं और इस पावन जल में डुबकी लगाने वाला प्रत्येक प्राणी भारतीय बन जाता है।

केदारनाथ, बद्रीनाथ, कैलाश पर्वत, मानसरोवर आदि स्थानों पर दर्शनार्थी भक्त जब इकट्ठे होकर जय जयकार करते हैं, तो वह दृश्य देखते ही बनता है। इन मेलों से पौराणिक, धार्मिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक कथाएँ जुड़ी हैं जो भक्तों को वहाँ खींचकर ले जाती हैं।

मेरठ में नौचंदी का मेला हिंदू-मुसलिम सौहार्द्र तथा एकता की झाँकी प्रस्तुत करता है। यह चैत्र की नवरात्र में लगता है। कोई इसे नौचंडी अर्थात नवदेवियों की पूजा का स्वरूप मानता है तो कोई नए चांद का अर्थ निकालता है। यहाँ चंडी देवी का पुराना मंदिर है, जहाँ नौ दिन यज्ञ व पूजा होती है। कुछ ही दूर पर सैयद सालार मसूरगाजी की मजार है, जहाँ चादर चढ़ाई जाती है। यह मेला लोगों के लिए आर्थिक दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण है। यहाँ दूर-दूर की दुकानें आती हैं। कवि सम्मेलन तथा मुशायरों के रंग जमते हैं। शुक्रताल में जो मेला लगता है, कहते हैं कि वहाँ शुकदेवजी ने राजा परीक्षित को कथा सुनाई थी।

रुड़की के पीरान कलियर मेले में भी हिंदू-मुसलिम दोनों अपनी मनौती लेकर आते हैं। बहराईच में गाजी मियाँ की मजार के मेले में भी



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हिंदू-मुसलिम दोनों ही भाग लेते हैं। जयपुर में दरगाह पर फूलों की चादर भी हिंदू-मुसलिम दोनों ही चढ़ाते हैं। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि जनजीवन से जुड़े होने के कारण इन मेलों का सामाजिक तथा आर्थिक महत्त्व भी कम नहीं है। इनमें हमारी संस्कृति व सभ्यता सुरक्षित है। ये जीवन की उमंग और राष्ट्रीय एकता के प्रतीक हैं।

महाप्राज्ञ की प्रेरणापूर्ण वाणी सभी को तृप्त कर रही थी। अंत में संस्कार, पर्व, व्रत, त्योहार, जयंती तथा मेलों के वास्तविक रूप को दरसाते हुए प्रज्ञा पुरुष गुरुदेव ने कहा—"हे प्रज्ञापुत्रो, अब वह समय आ गया है कि आप सब मिलकर इस प्रज्ञा प्रकाश को जग में फैला दो। संस्कृति न तो जमीन से खोदकर निकाली जा सकती है, न वह बादलों की तरह आकाश से बरसती है, इसे अपनी अंतरात्मा को विकसित करके ही प्राप्त किया जा सकता है। ये धर्मसम्मेलन, धर्मानुष्ठान, सामूहिक यज्ञादि इसी प्रयोजन से कराए जाते हैं कि सब संगठित होकर स्वार्थ-वृत्ति छोड़कर विश्व- कल्याण के मार्ग पर चलें। आत्मकल्याण के लिए की गई करुण पुकार पर परमात्मा द्रवित होता है, किंतु जब इसमें सैकड़ों व्यक्तियों का स्वर समा जाता है तो अनंत शक्ति प्राप्त होती है। सामूहिक प्रार्थना का रहस्य यही है कि भगवान एक की अपेक्षा अनेक लोगों की प्रार्थना पर अधिक ध्यान देते हैं, इसीलिए मंदिर, मसजिद, गुरुद्वारे, गिरिजाघर में सामूहिक प्रार्थना का प्रचलन है।"

आज की परिस्थितियों में आप जैसे प्रज्ञापुत्रों की आवश्यकता है, ऐसे अग्रदूत चाहिए जो युग परिवर्तन की प्रक्रिया में सहयोगी बनकर युग की



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पुकार सुनकर दूसरों को भी परमार्थ की नाव में बिठाकर उन्हें पार ले जाने का पुरुषार्थ कर सकें। इन मेलों व पर्वों को रचनात्मक कार्यों द्वारा मना सकते हैं। बुराइयाँ छोड़कर शिक्षा व विद्या दान के संकल्पों, स्वच्छता अभियान, योग द्वारा स्वास्थ्य-संवर्द्धन, गृह उद्योग, स्वावलंबन, नशा-निवारण अभियान, फैशनपरस्ती का विरोध, अंधविश्वास व कुरीतियों का विरोध करके तीर्थ परंपरा के पुनर्जागरण का संकल्प लें। मेलों व पर्वों पर सामूहिक भीड़ में ये सामूहिक कार्यक्रम चलाए जा सकते हैं।

अंत में महाप्राज्ञ ने कहा—"हे भारतमाता के सुपुत्रो, संस्कृति के उपासको तथा युग निर्माण के सृजन सैनिको, इस समय इस प्रक्रिया को समस्त दिशाओं में फैला दो। इस समय इन पर्व-त्योहारों एवं मेलों में जो विकृतियाँ आ गई हैं, उनका समूल नाश कर दो। दीवाली पर जुआ खेलना, पटाखे छुड़ाना, होली पर भाँग पीकर गाली बकना, कीचड़ उछालना, नवरात्र में व्रत के नाम पर केवल प्रतीक पूजा करना, तीर्थों पर जाकर केवल स्नान करके संतुष्ट होना, मृतकभोज में भोज करना आदि बुराइयों को दूर करके त्योहारों के वास्तविक उद्देश्य को समझो। इनका मुख्य उद्देश्य है श्रद्धा, निष्ठापूर्वक सबके सुख-दु:ख में सहयोगी बनना तथा दूसरों के दु:ख को दूर करने का प्रयास करना। चोर भी अपने यहाँ चोर को नौकरी पर नहीं रखता। व्यभिचारी भी अपनी बहन, पत्नी को व्यभिचारी नहीं बनने देता। बेईमान आदमी भी ईमानदार से ही संपर्क रखेगा। झूठा व्यक्ति भी झूठे को पसंद नहीं करेगा। अत: इन सब बुराइयों को छुड़ाकर सभी को



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अच्छे संकल्प दिलवाने चाहिए तथा उन्हें अच्छे संस्कार देने का प्रयास करना चाहिए।''

हे देवात्माओ, आइए आज कथा के अवसर पर हम सब मिलकर संकल्प लें—

***हमारा है यह दृढ़ संकल्प, नया संसार बसाएँगे।***
***क्षीर सागर में सोया देव, उसे झकझोर जगाएँगे॥***

ईश्वर से प्रार्थना है कि यह संकल्प पूर्ण हो।

**इति श्रीमत्प्रज्ञापुराणे ब्रह्मविद्याऽऽत्मविद्ययोः, युगदर्शनयुगसाधनाप्रकटीकरणयोः, श्री कात्यायन ऋषि प्रतिपादिते 'संस्कार-पर्व माहात्म्य' इति प्रकरणो नाम चतुर्थोऽध्याय ॥ ४॥**

## आरती श्री प्रज्ञा पुराण की



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ॐ श्री गुरवे नमः

# प्रज्ञा पुराण कथामृतम्

## पंचम दिवस

## मरणोत्तर जीवन प्रकरण

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

### गुरु वंदना

शत शत तुमको प्रणाम सद्गुरु।
शत शत................
हम आए हैं शरण तुम्हारी,
शक्ति जाग्रत करो हमारी।
परम शक्ति के धाम, सद्गुरु,
शत शत................
ज्ञान रश्मि में ज्योति जगा दो,
उर में भक्ति का दीप जला दो।
तृप्ति होय जप नाम सद्गुरु,
शत शत................
जन कल्याण हो कर्म हमारा,
मानव सेवा धर्म हो प्यारा।
सेवा हो निष्काम सद्गुरु,
शत शत................



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

माया तम को दूर भगा दो,
अंतर्ज्योति अखंड जला दो,
उर में आठों याम सद्गुरु,
शत शत.........

*(प्रथम दिवस की भाँति कथा व्यास द्वारा प्रज्ञा पुराण का पूजन)*

*(समय को देखते हुए प्रज्ञा गीत व कीर्तन किया जा सकता है)*

**प्रज्ञा गीत**

सज-धज कर जिस दिन, मौत की शहजादी आएगी।
ना सोना काम आएगा, ना चाँदी काम आएगी॥
छोटा सा तू कितने बड़े, अरमान हैं तेरे।
माटी का तू सोने के सब, सामान हैं तेरे॥
माटी की काया जिस दिन, माटी में समाएगी।
ना सोना काम आएगा, ना चाँदी काम आएगी॥
पर खोलकर पंछी तू पिंजड़ा, तोड़कर उड़ जा।
माया महल के सारे बंधन, तोड़कर उड़ जा॥
प्रभु की कर भक्ति वो ही, तेरे काम आएगी।
ना सोना काम आएगा, ना चाँदी काम आएगी॥

प्रज्ञा पुराण कथा में समागत सभी आत्मीय बंधुओ एवं बहनो! परम सौभाग्य है कि हमें यहाँ आकर कथा कहने और सुनने का सुअवसर मिला है। आज के सत्संग में हम हृदय से आप सबका स्वागत और अभिनंदन करते हैं और बहुत ही विनम्र शब्दों में मेरा निवेदन है कि आप कथा को ध्यानपूर्वक सुनें। आज कथा का पाँचवा दिन है, अभी तक आपने देवसंस्कृति



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जिज्ञासा, वर्णाश्रम धर्म, पर्व-संस्कार तथा तीर्थ देवालय के विषय में कथा सुनी है, आज का विषय बड़ा महत्त्वपूर्ण है। आज का विषय है 'मरणोत्तर जीवन' अर्थात मृत्यु क्या है? मृत्यु के बाद क्या होता है? जो व्यक्ति अभी बात कर रहा था, हँस रहा था, चल रहा था, खा-पी रहा था, वह कहाँ चला जाता है? हाथ, पैर, आँख, नाक, कान सब कुछ तो जैसा का तैसा है, पर क्या हो जाता है, कि न वह खाता है, न पीता है, न सुनता है और न बुलाने से बोलता है, शरीर सामने पड़ा है, मगर कोई उत्तर नहीं आता। क्या निकल गया शरीर से, कहाँ चली गई चेतनता? अरे दादा जी, उठिए भोजन कीजिए, अरे माता जी बोलिए तो, मगर कुछ नहीं, कहाँ गए वे प्राण? इतना ही नहीं, अपने प्रिय से प्रिय प्राणी को भी कहते हैं—"मिट्टी है जल्दी उठाओ, निकालो घर से, नहीं तो भूत-प्रेत बनकर आएगा।" तब समझ में नहीं आता क्या करें? '**काया का पिंजरा डोले रे, एक सांस का पंछी बोले।**' कहाँ गया वह पंछी, जो चहक रहा था, जाते हुए दिखाई भी तो नहीं देता।

***पानी केरा बुलबुला, अस मानस की जात।***
***देखत ही छिप जाएगा, ज्यों तारा परभात॥***

देखते ही देखते प्रभातकाल के तारे की तरह विलीन हो जाता है, यह नश्वर शरीर जो पंचतत्त्वों से बना है। पंचतत्त्वों में विलीन हो जाता है, चाहे इसे पानी में बहा दो, चाहे अग्नि में जला दो, चाहे मिट्टी में गाड़ दो, यह तो पंच तत्त्वों में मिल जाता है, पर यह पंछी जो तरह-तरह के गीत गाता था, कहाँ जाता है? इसे तो केवल वही जानता है जो उड़कर चला गया या फिर वही जानता है जो इसे उड़ाकर ले गया अर्थात वह परब्रह्म जो



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सृष्टि का निर्माता है। अतः मन में यह प्रश्न बार-बार उठता है कि मृत्यु के बाद क्या होता है? कुछ लोग कहते हैं कि मरने के बाद आत्मा किसी विशेष लोक में जाकर विश्राम करती है और बुलाने पर आ भी जाती है। कुछ कहते हैं कि मरने के बाद व्यक्ति कर्मों के अनुसार स्वर्ग या नरक में जाता है। कुछ कहते हैं कि प्राणी को चिरकाल तक प्रतीक्षा करनी पड़ती है और निर्णय दिवस पर उसका इंसाफ होता है और वह स्वर्ग या नरक में जाता है, पर असलियत क्या है? यह पता नहीं चलता, क्योंकि जहाँ वह जाता है फिर लौटकर नहीं आता और आता भी है तो कुछ याद नहीं रहता, पर इतना निश्चित है कि चेतना शक्ति का अस्तित्व शरीर से अलग है। शरीर के नष्ट होने पर आत्मा कहाँ जाती है? इस विषय पर वेद-पुराणों में ऋषियों ने अपने गहन अध्ययन के द्वारा जो ज्ञान प्राप्त किया है, उसे हमारे पूज्य गुरुदेव ने प्रज्ञा पुराण में प्रस्तुत किया है। इसे समझाना हमारे लिए बहुत कठिन है। अतः आइए, हम सब भी आश्रम में कथा सुनने चलते हैं, जहाँ प्रज्ञा पुराण की पावन कथा हो रही है।

**प्रज्ञा पुराण गीत**

प्रज्ञा पुराण सुनिए, दुःखनाशिनी कथा है।
दुःख द्वंद्व दूर होते, मिटती सभी व्यथा है॥
प्रज्ञा........................
हर ओर छा रहा है, दुर्बुद्धि का अँधेरा।
संकीर्ण अहंता ने, हर आदमी को घेरा॥
साधन बहुत बढ़े हैं, पर मन हुआ विकल है।
मन को शांति दे दे, पावन यही कथा है॥
प्रज्ञा........................



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इस पावनी कथा से, आत्मिक विकास होता।
सुख और शांति मिलती, भ्रम का विनाश होता॥
दुःख का अँधेरा छँटता, ऐसा प्रकाश होता।
संसार का कोई दुःख, मन को न सालता है॥
प्रज्ञा........................

आत्मीय परिजनो, कल्पना कीजिए उस आश्रम की, जो गंगा नदी के तट पर बसा है, चारों तरफ फूलों की सुगंध, शीतल मंद सुगंधित वायु के झोंके मन को आनंदित कर रहे हैं, शेर और बकरी एक ही घाट पर पानी पी रहे हैं। ऐसे दिव्य वातावरण में महाप्राज्ञ व्यासपीठ पर विराजमान हैं। आज आश्रम में बहुत भीड़ है, क्योंकि पहले ही घोषणा हो गई थी कि आज मरणोत्तर जीवन पर विचार-विमर्श होगा। मृत्यु, कितना भयंकर शब्द है, कैसे आ जाती है, घर-द्वार, पति-पत्नी, पुत्र-पुत्री, माता-पिता, धन-संपत्ति जिसे दिन-रात तिनका-तिनका करके जोड़ी थी, सब यहीं धरे रह जाते हैं, फिर इसे छोड़ने में कितना कष्ट होता होगा? यही सोचकर भीड़ की भीड़ चली आ रही थी। तो आइए, हम भी वहीं बैठकर महाप्राज्ञ की वाणी को सुनते हैं—

व्यासपीठ पर विराजमान महाप्राज्ञ साक्षात व्यासमूर्ति प्रतीत हो रहे थे। उन्होंने नेत्र खोलकर चारों तरफ देखा तो किसी स्त्री के सिसकने की आवाज सुनाई दी। महाप्राज्ञ के सामने बैठे एक (भृगु) ऋषि ने कहा— "महाराज! वह स्त्री बहुत देर से रो रही है, कृपया उसकी पीड़ा को शांत करें।" महाप्राज्ञ ने उसे अपने पास बुलाया। महाप्राज्ञ के निकट आकर



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उसकी हिचकियाँ बँध गईं और रोते हुए उसने कहा—"महाराज! मैंने बुढ़ापे में संतान का मुँह देखा था, मेरा इकलौता बेटा दो दिन के बुखार में ही मुझे छोड़कर चला गया। वह मेरे बुढ़ापे की लाठी था, अब मैं किसका मुँह देखकर जिऊँगी?" गुरुदेव ने उसे शांत किया, तब तक दूसरी ओर से बच्चे के रोने की आवाज आई, एक वृद्ध ने खड़े होकर कहा—"गुरुदेव! मेरे तीन महीने के नाती को छोड़कर मेरी लड़की और दामाद एक दुर्घटना में चल बसे। मैं इसे कैसे पालूँगा?" एक विधवा ने अपने पति का रोना रोया तो किसी ने पत्नी का, सभी शोकाकुल थे। सभी का एक ही प्रश्न था—"मरकर आदमी कहाँ चला जाता है?" महाप्राज्ञ ने उनके दुःख से द्रवित होकर सबको सांत्वना देते हुए कहा—

**पाययन्त्यमरत्वं वै भृशं तद्देवसंस्कृतौ।**<br>
**आस्थावतः समस्तांश्च बोधयन्त्यपि ते समे॥**

—४/५/६

**अमरत्वसुविश्वासा स्युः सज्जा जीवितुं तथा।**<br>
**अनन्तं ते विजानीयुर्मृत्युं नान्तः तु विश्रमम्॥**

—४/५/७

है धन्य देवसंस्कृति पावन अमृत का पान कराती है।<br>
भूले और भटके मानव को जीने की राह दिखाती है॥<br>
यह आत्मा शाश्वत सुंदर है, इसके स्वरूप को पहचानो।<br>
मरता है यह नश्वर शरीर, यह नियम सनातन है मानो॥<br>
जल इसको नहीं डुबा सकता, नहीं वायु इसे सुखा सकती।<br>
नहिं शस्त्र छेद सकते इसको, नहिं अग्नि इसे जला सकती॥



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

यह अगम अगोचर अक्षय है, यह अक्षत अचल सनातन है।
यह जो शरीर क्षणभंगुर है, यह तो इसका घर पावन है॥
भयभीत न हो इस मृत्यु से, यह तो सुंदर विश्रामस्थल।
मानव कुछ क्षण रुककर चलता, लेकर जीवन का नवसंबल॥

***आत्मा तो मरती नहीं, मर जाती है देह।***
***मन में तुम रखो नहीं, दुविधा या संदेह॥***

उन समस्त दुखी व्यक्तियों की पीड़ा से दुखित होकर ऋषिवर ने कहा—"हे जिज्ञासुओ! मेरी बात को ध्यान से सुनो। जिस मृत्यु से तुम भयभीत हो, दुखी हो वह इतनी भयंकर नहीं है जितनी तुम समझते हो। वास्तव में शोक में डालने वाला तो मोह है, ममता है जिससे मनुष्य दुखी होता है। भारतीय मनीषियों ने इस पर बहुत चिंतन-मनन किया है और वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि जब मनुष्य इस नश्वर शरीर व वर्तमान जीवन को ही सब कुछ मान लेता है तो उसका इस शरीर से मोह हो जाता है और वही उसके कष्ट का कारण बनता है। इससे छुटकारा पाने के लिए शरीर की नश्वरता व आत्मा की अमरता को समझना आवश्यक है। भारतीय संस्कृति की यही विशेषता है कि वह अमरता का पान कराती है। वह बताती है कि इस नश्वर शरीर के अंदर जो आत्मा है, वह परमात्मा का अंश होने के कारण अविनाशी व अनंत है। अत: उसकी अमरता को समझो और मृत्यु के भय से मुक्त हो जाओ। यह मृत्यु जीवन का अंत नहीं है। जीवन मृत्यु का जलपान है। वास्तविकता तो यह है कि मनुष्य इस जीवन में जो कर्म करता है, उसी के फल के अनुसार अगले जन्म में वह एकदूसरे का



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कर्ज चुकाता है। कभी कोई पिता बनकर अयोग्य पुत्र का कर्ज चुकाता है, कभी कोई सुयोग्य पुत्र पिता का कर्ज चुकाता है। आप सब इस संसार में देखते हैं न, कि कभी कोई पुत्र इतना सुयोग्य होता है कि अपने पिता का उत्तरदायित्व निर्वाह करने के लिए भाई-बहनों के प्रति भी कर्त्तव्य निभाता है। कभी-कभी कोई दुष्ट पुत्र पिता की संपत्ति को नष्ट कर डालता है और पिता के लिए सिरदरद हो जाता है।''

पुराणों में इस प्रकार की बहुत सी कहानियाँ हैं। भागवत पुराण में धुंधकारी की कथा आती है। पिता आत्मदेव ने बहुत तप साधना के बाद धुंधकारी पुत्र को प्राप्त किया था, किंतु वह बचपन से ही बहुत दुष्ट था। बड़े होने पर उसमें शराब, जुआ, व्यभिचार आदि सब दुर्गुण आ गए। एक बार उसने जुआ खेलने के लिए पिता से रुपये माँगे तो पिता के मना करने पर उसने पिता को जूता उठाकर मारा तो वह दुखित होकर वन में तप करने चले गए। माता से धन माँगा तो माता के मना करने पर उसका गला घोंटकर मार डाला। बताइए तो ऐसे कुपुत्र को लेकर कोई क्या करेगा? रावण, कंस, दुर्योधन जैसे पुत्रों के होने से तो न होना ही अच्छा है।

इसी प्रकार एक कथा है कि एक राजा के संतान तो होती थी, परंतु एक साल, दो साल की होकर मर जाती थी। जब उसके पाँचवे पुत्र का जन्म हुआ तो उसने ज्योतिषी को बुलाकर उसकी जन्मपत्री दिखाई। ज्योतिषी ने कहा—''महाराज! अब तक आपके जो पुत्र हुए हैं, वे सब आपसे कर्ज चुकाने आए थे, साल दो साल में अपना कर्ज लेकर चले गए, किंतु आपका यह पुत्र अपना कर्ज चुकाने आया है, इसलिए आप इसे कोई कार्य न करने



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दें, जिससे यह आपका कर्ज न चुका सके तो यह आपके साथ तब तक रहेगा, जब तक कर्ज न चुका दे।''

राजा यह सुनकर बहुत प्रसन्न हुए। वे उस पर दिल खोलकर पैसा लुटाते थे, जिससे वह और अधिक कर्जदार हो जाए। जब वह पंद्रह वर्ष का हुआ तो एक दिन राज-कर्मचारियों के साथ रथ पर बैठकर घूमने जा रहा था तो उसने देखा रास्ते में एक आदमी बेहोश पड़ा है। उसने रथ रोककर उसको उठाया। उसकी जेब से उसका पता मिल गया। राजकुमार ने उसे अपने रथ पर बिठाकर उसके घर पहुँचवाया। वह एक सेठ का बेटा था। सेठ बहुत खुश हुआ। उसने राजकुमार के गले में अपने गले से उतारकर मोतियों की माला पहना दी। राजकुमार ने बहुत मना किया, पर सेठ ने कहा—''तुमने मुझ पर जो उपकार किया है, उसका बदला तो मैं नहीं चुका सकता, पर तुम इसे स्वीकार कर लो।'' राजकुमार घर आया। वह माला अपनी माता को दी और खाना खाकर सोया तो सोता ही रह गया। घर में हाहाकार मच गया। ज्योतिषी जी को बुलाया गया। राजा ने कहा—''पंडितजी, आपकी ज्योतिष विद्या भी झूठी हो गई, क्योंकि मैंने तो इससे कोई धन नहीं लिया।'' तब तक रानी ने वह मोतियों की माला लाकर दी और बताया कि यह माला किसी सेठ ने उसे दी थी। ज्योतिषी ने कहा—''देखिए महाराज! ज्योतिष विद्या झूठी नहीं हुई बल्कि आप यह भी देखिए कि इसे आपका कर्ज तो चुकाना ही था, उस सेठ से कर्ज लेना भी था। उससे अपना कर्ज लेकर तथा आपसे कर्जमुक्त होकर वह चला गया।''



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कहने का तात्पर्य यह है कि इस संसार में यही लेन-देन चलता रहता है, केवल मनुष्य रूप में ही नहीं कभी-कभी पशु-पक्षी बनकर भी कर्ज चुकाना पड़ता है। एक सेठ यह लिखवाकर रुपया उधार दे देता था कि यदि इस जन्म में कर्ज न चुका सके तो अगले जन्म में चुका देंगे। चार चोरों ने सोचा अगला जन्म किसने देखा है? चलो रुपया लेकर कुछ दिन मौज-मस्ती करेंगे। यह सोचकर सेठ के पास गए। सेठ ने रुपये दे दिए और हस्ताक्षर करवा लिए। रात हो गई थी। चोरों ने रात को वहीं रुकने का निश्चय किया। सेठ ने उन्हें अपने बाहर के कमरे में सोने की अनुमति दे दी। वहाँ पर एक बैल और एक गाय बँधे थे। एक चोर जानवरों की बोली समझता था। रात में उसने सुना, गाय कह रही थी—"भैय्या, मेरा कर्ज तो कल सुबह समाप्त हो जाएगा, बस सुबह का दूध देकर मेरी मुक्ति हो जाएगी।" बैल ने कहा—"बहन, मुझ पर तो अभी बहुत कर्ज बाकी है। पता नहीं कब छुटकारा मिलेगा?" चोर सुबह तक रुक गए। सुबह उन्होंने देखा कि दूध देने के बाद गाय मर गई। चोर डर गए, सेठ के पास जाकर यह कहकर धन वापस कर दिया कि हम अगले जन्म के लिए कर्जदार नहीं बनना चाहते। ये कथाएँ हमें बताती हैं कि जीवन एक अनंत प्रवाह है। वह एक सहज प्रक्रिया है। जब तक मनुष्य मोह-माया में फँसकर कर्म करता रहेगा, तब तक जीवन के आवागमन का क्रम इसी प्रकार चलता रहेगा। अतः मनुष्य को यहाँ आकर निर्लिप्त भाव से कार्य करना चाहिए और गए हुए का शोक नहीं करना चाहिए। जब व्यक्ति कर्मानुसार एकदूसरे का कर्ज ही देने आता है तो इसके लिए शोक क्यों? मैं आपसे पूछता हूँ कि यदि आप



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

किसी से कर्ज लेते हैं तो उसे वापस करते हैं या नहीं ? यदि आप उसे वापस नहीं करेंगे तो जिससे आपने कर्ज लिया है, वह आपसे जबरदस्ती छीन लेगा या आप पर मुकदमा ठोंक देगा। अतः ईश्वर ने हमें जो कुछ दिया है वह उसी का है, हमें उसी को सौंपने में कष्ट नहीं होना चाहिए। '**तुभ्यमेव समर्पये।**' मेरा मुझ को कुछ नहीं जो कुछ है सब तोर' यही सोचकर उसे सब कुछ समर्पित कर देना चाहिए।

एक बात और भी है। मान लीजिए एक आदमी बैंक में कैशियर है। दिनभर में लाखों रुपये उसके पास आते हैं और जाते हैं, पर क्या उन्हें छोड़कर आते समय वह रोता है ? इसी प्रकार एक अध्यापक पाठशाला में वहाँ का सब सामान छोड़ जाता है, एक ऑफिसर सर्विस समाप्त होने पर सरकारी बंगला, कार, सब ठाठ-बाट छोड़कर आता है तो क्या रोता हुआ आता है ? यदि आप किसी से कुछ भी चीज माँगकर लाए हैं और आपको उससे मोह हो गया तो क्या होगा सोचिए ? अतः यह जीवन ईश्वर की संपत्ति है उसे ही सौंपकर प्रसन्न हों।

एक बात और भी। आप सबने जो शोक प्रकट किया है, उसमें मोह की भावना तथा स्वार्थ ही अधिक है। जो पुत्रशोक से व्याकुल है, उन्हें दुःख है कि बुढ़ापे की लाठी छिन गई, जिन्हें अनाथ बालक का दुःख है, वे इसलिए दुखी हैं कि बच्चे का पालन कौन करेगा ? पति-पत्नी को दुःख है कि जो सुख और सहारा एकदूसरे से मिलता था, वह अब नहीं मिलेगा ? आप ही बताइए ? संसार में प्रतिदिन कितने व्यक्ति मरते हैं, कितने जन्म लेते हैं ? भारत, अमेरिका, कनाडा, रूस, चीन में न जाने कहाँ-कहाँ पर, क्या हम उनके लिए रोते हैं ? नहीं न!



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सारांश यही है कि संसार के समस्त प्राणी मोह के वशीभूत होकर ही कष्ट पाते हैं। इससे मुक्त होने पर ही दुःख से छुटकारा मिल सकता है। देवसंस्कृति की यही विशेषता है कि वह आत्मा के अविनाशी होने तथा शरीर की नश्वरता का बोध कराती है। हर प्राणी को यह समझाती है कि मृत्यु एक विराम है, एक विश्राम स्थल है, जहाँ प्राणी कुछ देर रुककर कायारूपी वस्त्र को परिवर्तित कर अनंत की यात्रा पर चल देता है। जीवन-मृत्यु के रहस्य को समझाते हुए महाप्राज्ञ कहते हैं—

**जीवनस्य स्तरस्त्वेको मन्यतेऽत्राशरीरिणाम्।**
**शरीरिणां च वस्त्रस्यापरिधानस्य तस्य च॥**

—४/५/१२

**परिधानस्य मध्यस्थास्थितिरेषा तु विद्यते।**
**अमरत्वस्य चाभासो विश्वासश्चाप्यतोऽत्र तु॥**

—४/५/१३

**है मृत्यु एक सरिता जिसमें, श्रमकातर जीव नहाता है।**
वह छोड़ पुराने कपड़ों को, नूतन वस्त्रों को पाता है॥
हर दिन को नव जीवन समझो, हर रात मृत्यु है सुख वाली।
यह अंत नहीं है जीवन का, यह नवजीवन देने वाली॥
यह सुख निद्रा की देवी है, इसकी गोदी है अतिशीतल।
सुनकर इसकी मीठी लोरी, मिट जाती जीवन की हलचल॥
इसलिए करो स्वागत इसका, यह तो सुखदायी माता है।
इसकी गोदी में दीन-दुखी, सुख निद्रा में सो जाता है॥

***मृत्यु से तुम डरो नहीं, यह तो है वरदान।***
***दीन-दुखी का भी सदा, करती है कल्याण॥***



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शोकाकुल व्यक्तियों को मृत्यु के स्वरूप का दिग्दर्शन कराते हुए महर्षि कहते हैं, "हे संतो! जिस मृत्यु के नाम से सब लोग इतने भयभीत रहते हैं, वह तो केवल एक सुखद परिवर्तन है। जिस प्रकार प्राणी पुराने वस्त्र उतारकर नया वस्त्र धारण करता है, उसी प्रकार मृत्युरूपी सरिता में स्नान करके प्राणी अपने पुराने जीर्णशीर्ण कायारूपी वस्त्र को बहाकर नूतन चोला पहनकर जीवनयात्रा के लिए चल देता है। फिर इसके लिए शोक क्यों? क्या पुराना वस्त्र उतारते और नया पहनते समय कोई रोता है। गीता में भी कहा है—

**वासांसि जीर्णानि यथा विहाय, नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि।**
**तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि संयाति नवानि देही॥**

*—गीता २/२२*

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

"जैसे मनुष्य पुराने वस्त्र उतारकर नए वस्त्र धारण करता है, उसी प्रकार आत्मा पुराना शरीर छोड़कर नया शरीर धारण करती है।" हे संतो! आत्मा को न जल डुबो सकता है, न अग्नि जला सकती है, न शस्त्र छेद सकते हैं और न पवन सुखा सकती है। आपने गीता में सुना है न '**नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि**' तो इस नश्वर वस्तु के लिए शोक न कर अनश्वर का महत्त्व समझो।

सच तो यह है कि यह मृत्यु कष्टदायी नहीं, अपितु विश्रामदायिनी माता निद्रादेवी के समान है, जिसकी गोद में दिनभर का थका-हारा व्यक्ति सुख निद्रा में सो जाता है। अपने समस्त शारीरिक, मानसिक तथा भौतिक कष्टों से छुटकारा पा जाता है। जरा सोचिए, दिनभर का थका हुआ व्यक्ति घर आता है तो कहता है कि आज बहुत काम था, बहुत थक गया हूँ, खाना



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दो तो खाकर सो जाऊँ, बहुत जोर से नींद आ रही है और जब सोकर सुबह उठता है तो एकदम नवीन शक्ति लेकर उठता है। यदि नींद न आए तो, और यदि रात्रि न हो तो आदमी निश्चित ही पागल हो जाएगा। सच पूछिए तो यह मृत्यु चिरनिद्रा है, जिसकी गोद हिमानी सी शीतल है, जहाँ व्यक्ति चिरशांति पाता है।

*मृत्यु, अरी चिरनिद्रे, तेरा अंक हिमानी सा शीतल।*
*तू अनंत सुख देती है चेतन को करती जड़ निश्चल॥*

इसलिए मनुष्य को चाहिए कि वह हर दिन को नया जीवन तथा हर रात को नई मृत्यु समझे। गुरुदेव ने इस बात को बहुत महत्त्व दिया है। एक बात और मान लीजिए—एक अपाहिज व्यक्ति जिसे आँख से दिखाई न दे, कान से सुनाई न दे, उठने-बैठने में असमर्थ हो, जिसकी स्मृति भंग हो जाए, अगर वह दस-बीस वर्ष तक जीवित रहे तो क्षमा कीजिए, यह एक कटु सत्य है कि ऐसा व्यक्ति चाहे कितना ही प्रिय क्यों न हो घर के लोग भी ऊब जाते हैं। आपने सुना होगा, ऐसे व्यक्ति के लिए यही कहा जाता है कि हे भगवान! अब इसे इधर कर या उधर, अब उससे गोदान करा दो, इसके लिए एकादशी का व्रत बोल दो, शनि का दान करो, जिससे इसकी मुक्ति हो जाए तो बताइए यह सब किसलिए, इसीलिए कि भगवान उसे संकट मुक्त कर अपने पास बुला ले। ऐसे व्यक्ति के लिए केवल मृत्यु ही स्नेहमयी माता के समान है जो अपनी मीठी लोरी सुनाकर उसे हर संकट से मुक्ति दिलाती है। प्रज्ञा पुराण में गुरुदेव स्वयं लिखते हैं—"डरावनी मृत्यु आखिर है क्या? तनिक जानने की कोशिश करें, वह तनिक सी



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विश्रांति भर है। अनवरत यात्रा करते-करते जब चेतना थककर चूर-चूर हो जाती है, तब विश्राम चाहती है। नियति उसकी अभिलाषा पूर्ण करती है और विश्राम के ये क्षण मधुर और सुखद होते हैं।" मृत्यु एक वरदान है, एक स्वाभाविक प्रक्रिया है।

मनुष्य की जीने की अभिलाषा इतनी प्रबल होती है कि वह सारे कष्ट सहकर भी जीना चाहता है। एक बूढ़ा लकड़हारा जंगल में लकड़ी काटकर जीवन बिताता था। उसके बेटे उससे घृणा करते थे। एक दिन बुखार से तप रहा था। लकड़ी काटते-काटते थक गया तो कहने लगा—"हे भगवान! इससे तो अच्छा है कि मुझे मौत आ जाए।" और शायद भगवान सुन रहे थे। सामने देखा तो यमदूत खड़े थे बोले—"मुझे याद किया था चलो मेरे साथ!" तो उसने कहा—"याद तो मैंने इसलिए किया था कि यह गट्ठर बहुत भारी है, इसे उठवा दो।" इसी प्रकार एक बुढ़िया घर में अकेली रहती थी। जो मिलता उससे कहती—"मेरा तो भगवान भी रूठ गया। वह भी मुझे ले जाने की चिट्ठी नहीं भेजता।" एक दिन घर में काला साँप निकला तो डरकर चिल्ला-चिल्लाकर सबसे उसे मारने के लिए कहने लगी। लोगों ने कहा—"माताजी! डरती क्यों हैं? शायद भगवान ने इसी के रूप में चिट्ठी भेजकर आपको बुलाया है।" वह कहने लगी—"अरे, चिट्ठी तो मैं बाद में पढ़ूँगी, पहले मुझे इससे तो बचाओ।" सच तो यह है कि यदि मनुष्य मृत्यु से भयभीत न होकर उसे याद रखे तो वह गलत कर्म ही नहीं कर सकता, पर वह अपने को अमर समझता है।

कर्म की बात सुनकर एक ऋषि ने खड़े होकर विनम्र स्वर में कहा—"हे गुरुदेव! आपने कहा कि मृत्यु का भय हो तो कोई गलत कर्म नहीं कर



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सकता, परंतु कर्म करने में कैसे सावधानी रखें, क्या कर्मफल से बचने का कोई उपाय है? कृपया इस विषय पर कुछ मार्गदर्शन करें।'' यह सुनकर महाप्राज्ञ ने कहा—

**विश्वासोऽयं स्थिरस्तिष्ठेज्जीविष्यामो वयं ध्रुवम्।**
**अनन्तं संगताः कर्मफलशृंखलया वयम्॥**

—४/५/१५

**यतन्ते भृशमेवैते त्वनुगा देवसंस्कृतेः।**
**आत्मप्रगतिमुद्दिश्य यावदामरणं सदा॥**

—४/५/२६

यह जग है कर्मों की खेती, सब कर्मों के फल पाते हैं।
जो जैसा बोते बीज यहाँ, वे फसल वही पा जाते हैं॥
फल मिले देर से कर्मों का, मानव मन में घबराता है।
तत्काल दंड नहीं मिलने से, विश्वास डगमगा जाता है॥
क्या करें, कर्म शुभ करके हम, यदि दुष्ट व्यक्ति हैं सुख पाते।
हम से तो वे ही अच्छे, यह सोच-सोच नर हैं अकुलाते॥
बस इसी अनास्था के कारण, वे गलत राह हैं अपनाते।
जो रखते हैं विश्वास अडिग, वे ही आगे बढ़ते जाते॥

***जो जैसी करनी करे, वैसा ही फल पाए।***
***बोए पेड़ बबूल का, आम कहाँ से खाए॥***

जिज्ञासु ऋषि की शंका का समाधान करते हुए मनीषी ने मुस्कराते हुए कहा—''हे तत्त्व जिज्ञासुओ! कर्म संबंधी यह तुम्हारा प्रश्न बहुत ही महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि प्रत्येक मनुष्य को अपने कर्मों का फल अवश्य भोगना पड़ता है। भारतीय संस्कृति में कर्मफल प्राप्ति पर बहुत जोर दिया गया है।



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

'**बोओ और काटो**' का सिद्धांत सारी प्रकृति में देखने को मिलता है। बबूल का बीज बोकर कोई आम नहीं खा सकता, यह शाश्वत नियम है।" तुलसीदास ने भी कहा है—

***कर्मप्रधान विश्व करि राखा।***
***जो जस करहि सो तस फल चाखा।।***

यह कर्मफल कभी-कभी तो तुरंत ही इसी जन्म में मिल जाता है, परंतु कभी-कभी ऐसा भी होता है कि दुष्ट कर्म करने वाले तो सुखी और संपन्न दिखाई देते हैं तथा त्यागी-तपस्वी दुखी होते हैं तो विश्वास डगमगा जाता है। मनुष्य सोचता है, जब दुष्ट व्यक्ति आराम का जीवन जीते हैं और सज्जन कष्ट पा रहे हैं तो फिर त्याग-तपस्या का जीवन क्यों जिएँ? यह भावना मनुष्य को उद्दंड और नास्तिक बना देती है। बात असल में यह है कि विधाता ने मनुष्य को कर्म करने की छूट तो दे दी है, परंतु फल को अपने हाथ में रखा है। यदि झूठ बोलते ही मनुष्य की जीभ कटकर गिर जाती, चोरी करते ही हाथ कट जाते तो प्रत्येक व्यक्ति दुष्कर्मों से डरता, परंतु जब कर्म का फल दूसरे जन्म में मिलता है तो पापी व्यक्ति को फलता-फूलता देखकर मनुष्य आस्थाहीन हो जाता है, पर यह बात निश्चित है कि ईश्वर के यहाँ देर हो सकती है, अंधेर नहीं। एक स्त्री निःसंतान थी, किसी तांत्रिक ने उसे बताया कि यदि वह किसी बच्चे को मरवाकर जमीन में गड़वा दे तो उसके संतान होगी। उसने दूर गाँव के एक गरीब बच्चे को मरवाकर गड़वा दिया और ईश्वर की लीला देखिए उसके दो लड़के हुए। दोनों ही बहुत सुंदर, होनहार। उस स्त्री के कर्म का जिन्हें पता था, वे सब



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

यही कहते थे कि देखो इस औरत ने कितना नीच कर्म किया और भगवान ने इसको सजा देने के बदले दो-दो बेटे दे दिए। ईश्वर के यहाँ कितना अंधेर है ? बच्चे बड़े हुए। पढ़ने-लिखने में होशियार, देखने में सुंदर लेकिन एक दिन दोनों नदी में नहा रहे थे, अचानक एक का पैर फिसला। दूसरा उसे बचाने के लिए आगे बढ़ा तो वह भी सँभल नहीं सका और दोनों नदी में डूब गए। तब वह रो-रोकर यही कह रही थी कि भगवान ने मेरे पाप की सजा मुझे दे दी। अत: हे संतो ! यह सच है कि ईश्वर के यहाँ देर है, अंधेर नहीं।

इस प्रकार की अनेक कथाएँ पुराणों में हैं तथा इस जगत में भी हम प्रत्यक्ष देखते हैं कि जो जैसा करता है वैसा भरता है। ईश्वर भी इस नियम से मुक्त नहीं। भगवान राम ने बालि के छिपकर बाण मारा था। अगले जन्म में वे कृष्ण बने और बालि बहेलिया और उसने उसी प्रकार उसी बाण के द्वारा उनका वध किया। राम के पिता ने श्रवणकुमार को तीर मारा था, उसके माता-पिता की मृत्यु पुत्र-शोक में हो गई। उनके शाप के कारण दशरथ की मृत्यु भी पुत्र-वियोग में ही हुई। अभिमन्यु-वध के पश्चात जब सुभद्रा ने कृष्ण से कहा—"भैय्या, तुम कैसे भगवान हो, अपने भानजे को नहीं बचा सके।" तो उन्होंने यही कहा, "कर्मफल के नियम से सब बँधे हैं। मैंने राम रूप में बालि को मारा था, वही बाण मेरे लिए रखा हुआ है। कर्म बंधन से मैं भी मुक्त नहीं।" इसीलिए गीता में उन्होंने कहा है, '**गहना कर्मणोगति**।'

रावण, कंस, हिरण्यकशिपु, दुर्योधन आदि की कथाएँ इसका प्रमाण हैं कि दुष्ट, अहंकारी व्यक्ति का आतंक अधिक दिन तक नहीं चल सकता।



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ये कथाएँ पुरानी हैं, परंतु आज के युग में भी हिटलर, सालाजार, चंगेज खाँ, सिकंदर, नेपोलियन जैसे नरसंहारकों को किस प्रकार दुर्दिन देखने पड़े, इतिहास इसका साक्षी है। नागासाकी पर बम गिराने वाले फ्रेड ओलोवी, हिरोशिमा के खलनायक मेजर ईथराली का जो दुःखद अंत हुआ, उससे पता चलता है कि बुरे काम का नतीजा बुरा ही होता है।

यह तो इसी जमाने के प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। हमारे शास्त्रों में तो जन्म-जन्म के कर्मों के फल की कथाएँ आती हैं। एक व्यक्ति बहुत सज्जन था तथा दूसरा बहुत दुष्ट था। एक दिन दोनों घूमने जा रहे थे। दुष्ट को ठोकर लगी तो उसे जमीन में गड़ा हुआ धन का कलश मिला, दूसरे सज्जन को पैर में काँटा लगा और खून बहने लगा। जब गाँव वालों को पता लगा तो बड़ा आश्चर्य हुआ। वे एक संत के पास गए तो उन्होंने कहा—"ये पूर्वजन्मों के फल हैं। दुष्ट व्यक्ति को आज राज्य मिलना चाहिए था, किंतु उसके दुष्कर्मों के कारण उसे केवल गड़ा हुआ धन मिला और सज्जन को पिछले कर्मों के अनुसार फाँसी लगनी चाहिए थी, उसे केवल काँटा ही लगकर रह गया।" इसी प्रकार माधवाचार्य को जब बारह वर्ष तक साधना से सिद्धि न मिली तो वे भैरव की शरण में गए। भैरव ने बताया कि बारह वर्ष की साधना से उनके बारह जन्म के पाप कट गए हैं, अब साधना करें तो सफलता मिलेगी।

'जैसी करनी वैसा फल, आज नहीं तो निश्चय कल' यह सुनकर शोकाकुल श्रोताओं को कुछ तसल्ली हुई कि हमें हमारे पूर्वजन्मों के कर्मों के कारण ही यह कष्ट मिला है, किंतु मन में और भी जिज्ञासाएँ थीं। अतः



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

एक जिज्ञासु ने संकुचित होकर विनम्र स्वर में कहा—"हे महाप्राज्ञ! आपने हमारे संतप्त हृदय पर अपनी मधुर वाणी से शीतल जल की वर्षा की है। हम समझ गए कि पूर्वजन्मों के कर्मफल ही हम भुगत रहे हैं परंतु एक जिज्ञासा है कि यदि यह आत्मा अमर है तो नश्वर शरीर को छोड़कर यह कहाँ जाती है? परलोक, पुनर्जन्म और आवागमन के विषयों में हम जानना चाहते हैं, कृपया शंका समाधान करें।"

**मृत्योः पश्चादुभौ स्वर्गनरकावत उत्तरम्।**
**पुनर्जन्मेति ते व्यक्ते पूरके मान्यते त्वुभे॥**

—४/५/२७

**महामानवरूपेषु जायन्ते दिव्यतेजसः।**
**दर्शयन्ति शुभं मार्गं सर्वेषामेव ते ततः॥**

—४/५/३३

तजकर शरीर को जीवात्मा, जब नव तन है धारण करता।
तब कहते पुनर्जन्म उसको, वह कर्मों के फल है चखता॥
कर्मों का भोग भोगने को, सब स्वर्ग-नरक को हैं जाते।
दुष्कर्मों को करने वाले, तो घोर कष्ट ही हैं पाते॥
चौरासी लाख योनियों में, वे भटक-भटककर दुःख पाते।
शुभ कर्म सदा जो करते वे, अधिकार स्वर्ग का पा जाते॥
सौभाग्य उदित होता जिनका, वे ही मानव तन हैं पाते।
कल्याण जगत का जो करते, वे देवतुल्य पूजे जाते॥

***स्वार्थ सुखों को छोड़कर, कर्म करो निष्काम।***
***यही वेदों का सार है, यही गीता का ज्ञान॥***



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मुस्कराते हुए महामनीषी ने कहा—"हे जिज्ञासु श्रोताओ! तुम्हारा यह प्रश्न बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। इस विषय पर कितने ही ऋषियों ने मनन-चिंतन किया है। सच तो यह है कि यह विषय बहुत ही गूढ़ है, क्योंकि जाने वाला कहाँ जाता है? वह लौटकर आता तो है, पर उसे पूर्वजन्म की बातें याद नहीं रहतीं। देवसंस्कृति की जीवन-मरण तथा पुनर्जन्म संबंधी मान्यताएँ शास्त्रसम्मत भी हैं और विज्ञानसम्मत भी। मरणोत्तर जीवन के एवं पुनर्जन्म के बहुत से प्रसंग पुराणों में तो हैं ही पर दैनिक जीवन में भी देखे जा सकते हैं। कभी-कभी अखबारों में पढ़ने को मिलता है कि किसी बच्चे ने अपने पूर्वजन्म के विषय में कुछ बताया है और उसका विवरण सही निकला है। पर यह एक अच्छी बात है कि मानव अपने पूर्वजन्म की बातों को भूल जाता है, क्योंकि इस जीवन में ही जो समस्याएँ हैं, वे ही बहुत हैं, फिर पूर्वजन्म की बातें याद रखे तो आदमी पागल ही हो जाएगा। वैसे दिव्यपुरुष अपनी दिव्यदृष्टि से भूत, वर्तमान तथा भविष्य को देख सकते हैं, पर अधिकांश मनुष्य तो अपने दुष्कर्मों के फलस्वरूप चौरासी लाख योनि में भटकते रहते हैं। इसके विपरीत पुण्यकर्म करने वाले स्वर्ग और मुक्ति के अधिकारी होते हैं। वे स्वयं महामानव बनकर दूसरों को भी मार्ग दिखाते हैं। जिनके कर्म अच्छे होते हैं, वे मानव योनि पाते हैं। वे सत्कर्म करके जीवन को सफल बनाकर स्वर्ग एवं मुक्ति के अधिकारी हो सकते हैं। प्रमाणरूप में आप देखिए एक ही घर के दो बच्चे हैं, पर एक सुंदर, सुयोग्य, मृदुभाषी है, दूसरा कुरूप, अपंग और मूर्ख है। एक पढ़-लिखकर विद्वान-धनवान बन जाता है, दूसरा असभ्य, दुराचारी तथा दरिद्र रहता है। ऐसा



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

क्यों? कारण पूर्वजन्म के कर्म ही हैं। जीवन के कर्मों का लेखा-जोखा होता है, उसी के अनुसार योनि मिलती है।"

मृत्यु के समय मानसिक स्थिति जैसी होती है, वैसी ही योनि मिलती है। '**अंत मति सो गति**'। अजामिल महापापी और दुष्ट था, पर मरते समय उसने नारायण (अपने पुत्र) को पुकारा और वह स्वर्ग चला गया। इसके विपरीत जो व्यक्ति अतृप्त भावनाओं को लेकर मरते हैं, वे परलोक में भी भटकते ही रहते हैं। किसी व्यक्ति को धन से बहुत मोह था। वह बीमार पड़ा तो उसके पुत्र और पुत्रवधू उसके समीप आकर बैठ गए। उसने इशारे से अपनी पत्नी को बुलाकर पूछा—"राम कहाँ है?" राम ने कहा—"मैं आपके पास हूँ पिताजी।" पूछा—"श्याम कहाँ है?" श्याम ने कहा—"मैं भी आपके पास हूँ" तो गुस्से में भरकर बोला—"अरे, तुम सब यहाँ क्या कर रहे हो, दुकान पर कौन गया है?" ऐसे मोहग्रस्त व्यक्ति अधिकतर निम्न योनि ही पाते हैं।

लोभ-मोह-अहंकार के वशीभूत होकर कार्य करने वालों को भी अपने कर्म का फल मिलता है। एक कथावाचक पंडितजी बहुत अच्छी कथा कहते थे। गाँव के सभी लोग कथा सुनने आते थे। एक व्यक्ति सरल स्वभाव का था। अपने कार्य में व्यस्त रहने के कारण कथा में नहीं आ पाता था। पंडितजी से किसी ने शिकायत की—श्यामलाल बहुत घमंडी है, वह कथा में नहीं आता। एक दिन वह पंडितजी को निमंत्रण देने आया तो पंडितजी ने क्रोध प्रकट करते हुए कहा—"मैं चल सकता हूँ यदि तुम मेरी डोली को अपने कंधे पर उठाकर ले चलो तो।" श्यामलाल ने कहा—"यह तो मेरा सौभाग्य होगा।" वह उनकी डोली अपने कंधे पर उठाकर ले आया और



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उन्हें भोजन कराया। दोनों की मृत्यु हुई तो श्यामलाल तो राजा बना और पंडितजी हाथी बने। एक दिन हाथी को पूर्वजन्म की बात याद आ गई तो वह बिगड़ गया और राजा को बैठने नहीं दिया। राजा के यहाँ एक सिद्ध ज्योतिषी जी संयोग से आए और उन्होंने राजा की बात सुनी। वे हाथी के पास गए और बोले—"मूर्ख, पहला जन्म तो अहंकार में बिगाड़ लिया, अब क्या चाहता है? इस जन्म को भी बरबाद करेगा।" हाथी ठीक हो गया। इसी प्रकार एक और कहानी है कि एक व्यक्ति बहुत गरीब था। उसने अपने दो साथियों के साथ मिलकर व्यापार किया। व्यापार में बहुत लाभ हुआ। कुछ दिनों बाद उसके तथा एक साथी के मन में बेईमानी आ गई। उन दोनों ने अपने एक साथी को डॉक्टर की सहायता से दवा के बदले जहर देकर मार डाला और उसके घर के लोगों को कुछ धन देकर चुप कर दिया। ईश्वर की महिमा, कुछ दिन बाद उसके यहाँ पुत्र ने जन्म लिया। बहुत खुशियाँ मनाई गईं। पुत्र बहुत ही होनहार था। बड़े होकर उसने पिता के साथ व्यापार में सहयोग दिया। उसकी शादी भी एक सुंदर लड़की से कर दी। कुछ दिन बाद वह लड़का बीमार पड़ा और बड़े-बड़े डॉक्टरों के इलाज से भी कोई लाभ नहीं हुआ। अंत में डॉक्टरों ने कहा—"इसे कैंसर हो गया है। विदेश भेज दो तो शायद कुछ लाभ हो जाए।" बेटे के सामने पैसे की परवाह न करते हुए उसने विदेश भी भेजा, परंतु एक दिन उसकी हालत बहुत बिगड़ गई, बेहोशी में वह कुछ-कुछ बोल रहा था। उस व्यक्ति ने पूछा—"तुम होश में हो न? क्या कह रहे हो। बताओ मैं कौन हूँ?" उस लड़के ने कहा—"तुम मेरे व्यापार के साझीदार हो।" वह आदमी काँप उठा। उसने उसकी पत्नी की ओर इशारा करके कहा—"यह कौन है?"



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उस लड़के ने कहा—"वह डॉक्टर है जिसने मुझे जहर दिया था।" अब तो वह व्यक्ति घबरा गया। उसने पूछा—"तुम कौन हो?" उसने कहा—"मैं तुम्हारा वही साझीदार हूँ जिसे तुमने मरवाया था। मैंने अपने हिस्से का पैसा ले लिया है और अब मैं जा रहा हूँ।" यह कहते ही उसकी मृत्यु हो गई। कहने का तात्पर्य यह है कि काम, क्रोध, लोभ, मोह के वशीभूत होकर व्यक्ति जो दुष्कर्म करता है, उसी का फल उसे मिलता है।

पुराणों में इसके बहुत प्रमाण मिलते हैं। स्कंद पुराण में बलि की कथा आती है, वे पूर्वजन्म में जुआरी थे। एक बार शिव की पूजा करने से उनके मन में दान की प्रवृत्ति उभरी तो दानशीलता के कारण वे राजा बलि बने। पद्मपुराण में कथा आती है, सोमशर्मा नामक तपस्वी की। उसके अंतिम समय में दैत्यों की टोली हरिद्वार पहुँच गई तो उसके मन में दैत्यों की छवि अंकित हो गई। वे हिरण्यकशिपु के यहाँ प्रह्लाद बनकर जन्मे और नृसिंहावतार की कृपा से हिरण्यकशिपु का वध हुआ। दक्ष प्रजापति की कन्या सती का जन्म पार्वती के रूप में हुआ। जड़ भरत को एक हिरन से बहुत प्यार था। अंत समय में उसकी स्मृति के कारण हिरन बनकर ही उन्होंने जन्म लिया। भृगुपुत्र ने अपने अनेक जन्मों का विवरण लिखा है। इसी प्रकार की अनेक कथाओं से पुराण भरे पड़े हैं। ये कथाएँ यही बताती हैं कि मनुष्य अपने कर्मों के बल पर ही स्वर्ग-नरक का अधिकारी बनता है।

**प्रज्ञा गीत**

कर्मों के फल से न बचोगे, चलना बहुत सँभाल के।
अभी समय है, अभी बदल लो, तेवर अपनी चाल के॥



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

एक काम बस तन चमकाना, तरह-तरह के वेश बनाना,
वैसे तो तू बड़ा सयाना, पर न स्वयं को ही पहचाना।
रोएगा जब दर्शन होंगे, अपने ही कंकाल के,
अभी समय है, अभी बदल लो, तेवर अपनी चाल के॥
कभी एक क्षण दया न आई, निर्बल को पीड़ा पहुँचाई,
पटरी लेकर नाप ऊँचाई, कितनी कर ली पाप कमाई।
तड़पेगा जब खौलाएगा, काल कढ़ाही डाल के,
अभी समय है, अभी बदल लो, तेवर अपनी चाल के॥
कोई रहा कुकर्म न बाकी, खाए झूठी कसम खुदा की,
डींग मारता यहाँ-वहाँ की, नस-नस में तेरी चालाकी।
कर्मों के फल भूल न जाना, होते बड़े कमाल के,
अभी समय है, अभी बदल लो, तेवर अपनी चाल के॥

महाप्राज्ञ की वाणी सबको आनंदित कर रही थी, किंतु कुछ व्यक्तियों के मन में स्वर्ग-नरक के विषय में जानने की जिज्ञासा थी। अतः उन्होंने कुछ सकुचाते हुए पूछा—"हम स्वर्ग के विषय में जानना चाहते हैं। क्या स्वर्ग में देवता, यक्ष, गंधर्व, किन्नर केवल नृत्य संगीत सुरापान में ही डूबे रहते हैं ? क्योंकि हमने जो कुछ स्वर्ग के विषय में सुना है, यही सुना और पढ़ा है। कृपया स्वर्ग व देवताओं के विषय में कुछ बताएँ।"

ऋषिवर ने मुस्कराते हुए कहा—"हे साधको ! आपका यह प्रश्न बहुत ही महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि देवता, स्वर्ग-नरक एवं परलोक को लेकर बहुत सी भ्रांतियाँ फैली हुई हैं। वास्तव में देवता उन्हें कहते हैं जो हमेशा देते रहते



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हैं, परंतु आजकल तो धरती पर लेने वाले ही अधिक दिखाई पड़ते हैं। मनुष्य योनि के पश्चात देवयोनि उन लोगों को मिलती है जो दूसरों के प्रति दया, ममता, प्यार का व्यवहार करते हैं और दूसरों का दुःख दूर करने के लिए अपना तन-मन-धन सब कुछ न्योछावर कर देते हैं, जिनमें कामवासना नहीं होती, जिनकी ऋतंभरा प्रज्ञा जाग्रत हो जाती है, वे आदर्शवादी, महामानव, शहीद, सुधारक, संत, मनस्वी, तपस्वी समर्पित व्यक्ति देवताओं की श्रेणी में आते हैं। वे जहाँ भी रहते हैं, दिव्य वातावरण बना लेते हैं। वे दूसरों को भी सही राह दिखाते हैं। उनका व्यक्तित्व पारसमणि की भाँति होता है। देवर्षि नारद के संपर्क में आकर रत्नाकर वाल्मीकि बन गया तो महात्मा बुद्ध का आशीर्वाद पाकर अंगुलिमाल बौद्ध भिक्षु बन गया।"

एक गाँव में एक सपेरा रहता था। एक बार उसका इकलौता बेटा बीमार हुआ तो वह डॉक्टर के यहाँ दिखाने ले गया। डॉक्टर साहब उस समय क्लब जा रहे थे। सपेरे के बहुत गिड़गिड़ाने, हाथ-पैर जोड़ने पर भी उन्होंने लड़के को नहीं देखा और वह मर गया। संयोग की बात तीसरे दिन ही डॉक्टर के लड़के को साँप ने काट लिया। सबने कहा—अब तो वह सपेरा ही इसकी जान बचा सकता है। सपेरे को बुलाया तो उसकी पत्नी ने कहा—"तुम मत जाओ, मरने दो लड़के को, पता तो चलेगा बेटे का दुःख क्या होता है?" पर सपेरे ने कहा—"नहीं, इससे मेरा बेटा तो वापस नहीं आएगा। शायद मैं उसे बचा सकूँ।" यह कहकर वह गया। वहाँ जाकर उसने लड़के को देखा, कुछ प्राण बाकी थे। उसने झाड़ा और उसे पानी



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पिलाया, झाड़-फूँक की तो उलटी हुई और विष बाहर निकल गया, लड़का खतरे से बाहर हो गया। डॉक्टर ने उसे बुलाकर मुँह माँगा इनाम देने को कहा। उसने कहा—"मैं धन लेकर क्या करूँगा? डॉक्टर साहब! मेरा एक ही लड़का था, आपको दिखाने लाया था, आप क्लब जा रहे थे, आपने नहीं देखा, उसी दिन वह भगवान को प्यारा हो गया।" ओह! डॉक्टर ने कहा—"मुझे माफ कर दो। मैं तुम्हारी जीवन भर सहायता करता रहूँगा। मैं तुम्हें क्या दूँ? बोलो"। बूढ़े ने कहा—"डॉक्टर साहब, मेरा इनाम यही है कि आप कभी किसी गरीब की उपेक्षा मत करना।" यह सुनकर डॉक्टर साहब का हृदय बदल गया। ऐसे लोग धरती के देवता होते हैं।

देवताओं की विशेषता बताकर गुरुदेव ने कहा—"हे संतो! जिस प्रकार देवता तपस्वी एवं त्यागी को कहा जाता है, धनी और लालची को नहीं, उसी प्रकार स्वर्ग का सुख भी धन-दौलत में नहीं है। स्वर्गीय सुख की अनुभूति तो त्याग व तपस्या से ही की जाती है। रावण की सोने की लंका थी, वह वेदपाठी था, वेदशास्त्र उसे कंठस्थ थे, किंतु हम सब जानते हैं कि कोई भी व्यक्ति रावण का नाम लेना पसंद नहीं करता बल्कि हर वर्ष उसका पुतला बनाकर फूँकते हैं। सिकंदर खाली हाथ रोता हुआ चला गया। हिटलर, मुसोलिनी, सालाजार सभी का नाम शक्तिसंपन्न होने पर भी राक्षसों की श्रेणी में आता है, देवताओं की श्रेणी में नहीं। उसी प्रकार जिस स्थान पर त्यागी-तपस्वी रहते हैं, वहीं स्वर्ग होता है। संतोषी एवं तपस्वी के लिए जंगल में भी स्वर्ग है और लोभी, कामी, क्रोधी धन के अंबार के बीच में भी निरंतर व्यर्थ के कष्टों को झेलता रहता है।"



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

एक बार एक शिष्य ने गुरुजी से स्वर्ग की परिभाषा पूछी। गुरुजी उसे तीन स्थान पर ले गए। एक वेश्या के यहाँ उसका घृणित आचरण देखकर शिष्य वहाँ से भाग आया। दूसरे दिन एक कसाई के यहाँ गए। वहाँ खून-खराबा, पशुओं की चीत्कार सुनकर शिष्य ने कहा—"यह तो साक्षात नरक है, भागो यहाँ से।" इसके पश्चात वे एक गृहस्थ के यहाँ पहुँचे। वहाँ हँसी-खुशी तथा पारस्परिक प्यार व शांति का वातावरण देखकर शिष्य को बहुत अच्छा लगा। गुरुजी ने कहा—"यही स्वर्ग है धरती का। चांडाल का घर नरक है। स्वर्ग-नरक इस धरती पर ही देखे जा सकते हैं।"

गृहस्थ में भी अपनी समर्पित पत्नी व सुसंतान होने से घर में ही स्वर्ग है तथा दुष्ट पत्नी व कुसंतान होने से घर में ही नरक है। सत्संगति एवं सज्जनों का सान्निध्य ही स्वर्ग है तथा दुर्जनों का संपर्क ही नरक है। राम वन में गए तो जंगल में भी मंगल छा गया। पांडव वन में गए तो परस्पर प्रेम व सहृदयता के कारण वहाँ भी आनंद से रहे, पर दुर्योधन महलों में भी ईर्ष्या की अग्नि में जलता रहा। अतः स्वर्ग-नरक यहीं पर हैं।

गुरुदेव की यह अमृतवाणी सुनकर श्रोतागण हर्षित हो रहे थे। उनका उत्साह बढ़ रहा था, निराशा दूर हो रही थी और कुछ पूछने का साहस भी बढ़ रहा था। अतः एक जिज्ञासु ने विनम्रतापूर्वक कहा—"गुरुदेव! आपने तो स्वर्ग-नरक व देवताओं की परिभाषा ही बदल दी। हमने तो कथाओं में यही पढ़ा और सुना था कि देवताओं को स्वर्ग में सुरापान, अप्सराओं के नृत्य-संगीत तथा भाँति-भाँति के मनोरंजन के अतिरिक्त कुछ काम नहीं होता। इंद्रदेवता का वर्णन तो सब कथाओं में यही आता है कि वे ऋषियों की तपस्या नष्ट करने के लिए अप्सराओं को भेजते हैं, पर आज हमें पता



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

चला कि देवताओं का जीवन तो त्याग व तपस्या का होता है और स्वर्ग का निर्माण भी पृथ्वी पर ही किया जा सकता है। आप कृपया हमें मुक्ति के विषय में बताइए—"मनुष्य मुक्ति कैसे पा सकता है? मुक्ति किसे कहते हैं?"

इस शंका का समाधान करते हुए तत्त्वदर्शी महामनीषी ने कहा—हे जिज्ञासुओ! सच तो यह है कि अपने दोष-दुर्गुणों से छुटकारा पाना ही सच्ची मुक्ति है। मन के विकार कषाय-कल्मष से छुटकारा पाकर मनुष्य ईश्वरीय चेतना से ओत-प्रोत होकर सांसारिक झंझटों से मुक्ति पा जाता है। ये मुक्तात्माएँ हंस कहलाती हैं, क्योंकि वे हंस की भाँति नीर-क्षीर विवेकी बनकर मुक्ति रूपी मोती को चुग लेती हैं और संसार की मलिन वस्तुओं—काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार का परित्याग कर देती हैं। ये संत, सुधारक, मनीषा, ऋषि बनकर संसार के दूसरे व्यक्तियों को भी सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा देते हैं। इस मुक्ति को पाने के लिए गृहस्थी या घर-संसार को छोड़ने की आवश्यकता नहीं होती। राजा जनक राजा होते हुए भी विदेह कहे जाते थे। एक बार किसी के मन में शंका हुई कि राजा होकर भी कोई योगी कैसे हो सकता है? वह संदेह-निवारण के लिए जनक के पास पहुँचा तो उन्होंने कहा—"आइए, पहले भोजन कर लीजिए।" उसके सामने षट्रस व्यंजन परोस दिए गए, किंतु तभी उसने देखा कि व्यंजन तो सामने रखे हैं, पर सिर पर तलवार लटक रही है जो बहुत ही महीन धागे से बँधी है, कभी भी गिर सकती है। उसने जल्दी-जल्दी भोजन किया, परंतु भयभीत था कि तलवार सिर पर न गिर जाए। राजा ने पूछा—"भोजन



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कैसा था?" उसने कहा—"महाराज! भोजन तो अच्छा होगा, परंतु मुझे तो तलवार गिरने के भय से पता ही नहीं चला कि भोजन का स्वाद कैसा है?" राजा ने कहा—"बस यही समझिए कि मुझे हर समय मृत्यु का भय बना रहता है तो मुझे राजभोग के आनंद का पता ही नहीं चलता।" इसी प्रकार पुराणों में एक कथा है कि एक व्यक्ति को स्वर्ग की परिक्रमा करने को कहा गया। उसके हाथ में तेल से भरे दीपक को दे दिया और कहा कि यदि तेल की एक बूँद भी गिर गई तो फाँसी की सजा होगी। वह व्यक्ति बहुत ही सावधानी से चलता रहा। जब वह लौटकर आया तो उससे पूछा—"स्वर्ग का दृश्य कैसा था?" उसने कहा—"मेरा तो पूरा ध्यान दीपक की तरफ था कि तेल गिर न जाए। अत: मैंने तो कुछ देखा ही नहीं।" इस प्रकार जो व्यक्ति हर समय मृत्यु को याद रखते हैं, वे कीचड़ में खिले कमल के समान निर्लिप्त होकर कार्य करते हैं। ऐसे व्यक्ति इस संसार में रहते हुए भी मुक्त रहते हैं।

ऐसे महात्मा मुक्ति की कामना नहीं करते। वे तो दूसरे की पीड़ा दूर करने में ही स्वर्गीय सुखों की अनुभूति करते हैं। युधिष्ठिर को एक बार झूठ बोलने के कारण एक दिन के लिए नरक में जाना पड़ा। जब वे नरक में गए तो दुखी व्यक्तियों ने उनसे कहा—"धर्मराज! आप हमारे पास ही रहिए, आपको स्पर्श करके जो वायु आ रही है उससे हमें बहुत शांति मिली है।" यह सुनकर युधिष्ठिर ने कहा—"यदि मेरे यहाँ रहने से ही इन लोगों को शांति मिलती है तो मुझे स्वर्ग नहीं चाहिए।" इसी प्रकार एक संत को स्वर्ग ले जाने के लिए विमान आया। उन्होंने पूछा—"क्या वहाँ दुखी-पीड़ित



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

व्यक्ति हैं, जिनकी मैं सेवा कर सकूँ।'' देवदूतों ने कहा—''स्वर्ग में दुखी-पीड़ितों का क्या काम?'' उन्होंने कहा—''ठीक है फिर तो मुझे यहाँ पर ही रहने दो, जहाँ मैं सेवा कर सकूँ।''

इसी प्रकार जब महात्मा बुद्ध का अंतिम समय आया तो उनके शिष्यों ने कहा—''भगवन! आप तो मुक्ति धाम जा रहे हैं, हमारा क्या होगा?'' उन्होंने कहा—''जब तक संसार में एक भी व्यक्ति पीड़ित है, मैं बार-बार जन्म लेता रहूँगा। जब संसार के सब प्राणियों को मुक्ति मिलेगी तभी मैं मुक्ति पाने वाला संसार का अंतिम प्राणी हूँगा।'' अतः हे साधको! संसार के मोहमाया के बंधन से मुक्त व्यक्ति तो इस संसार में रहकर भी मुक्ति और स्वर्ग का आनंद अनुभव करते हैं। वे स्वर्ग या मुक्ति की कामना भी नहीं करते। वास्तव में मुक्ति का सही स्वरूप यही है कि बूँद की भाँति समुद्र में विलीन हो जाओ। जीवात्मा का परमात्मा से साक्षात्कार ही मुक्ति का सही स्वरूप है। इसे ही शास्त्रों में आत्मज्ञान कहा जाता है। ऐसे आत्मज्ञानी स्वयं बंधन-मुक्त होकर दूसरों को भी बंधन-मुक्त करते हैं।

पूज्य महाप्राज्ञ की वाणी सबको नवजीवन दे रही थी। सभी हर्षित हो रहे थे, परंतु मन में कुछ शंकाएँ अभी शेष थीं। एक साधक ने विनम्र स्वर में कहा—''हे देव, यद्यपि आपकी वाणी हमें नवजीवन प्रदान कर रही है, किंतु मन में कुछ नवीन शंकाएँ उत्पन्न हो रही हैं। अभी आपने कहा कि नश्वर शरीर को छोड़कर आत्मा नए वस्त्र की भाँति नवीन शरीर धारण कर लेती है, उसका पुनर्जन्म होता है, पर उसे पूर्वजन्म की कुछ याद नहीं रहती। वह अपने कर्मों के अनुसार फल भोगती है तो कृपया यह बताइए



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कि क्या मृत्यु के पश्चात अपने संबंधी पुत्र-पौत्रादि से कुछ संबंध नहीं रह जाता? शास्त्रों में तो कहा है पुत्र-पौत्रादि के द्वारा श्राद्ध किए बिना मुक्ति नहीं होती तो फिर कृपया आप हमारी शंका का समाधान करें कि पितर, भूत-प्रेत आदि क्या हैं और पुत्र द्वारा श्राद्ध तर्पण का क्या महत्त्व है?"

**पितृणां सन्ततीनां च मध्ये सम्बन्ध एष तु।**
**विद्यते स्वजनैरत्र सम्पर्कोऽपि भवत्यलम्॥**

—४/५/४०

**सम्बन्धिनो दिवं यातान्प्रति द्वारमपावृतम्।**
**विद्यते स्नेहसद्भावसहयोगं प्रदर्शितुम्॥**

—४/५/४१

गुरु, मात-पिता या बंधु-सखा, परलोक गमन जब कर जाते।
संबंध बना रहता उनसे, वे पूज्य पितर हैं कहलाते॥
नश्वर शरीर को तज कर, वे सूक्ष्म रूप में रहते हैं।
पितरों के प्रति श्रद्धा रखो, यह वेदशास्त्र सब कहते हैं॥
उनके प्रति श्रद्धा अर्पित कर, हम कर्मकांड जो भी करते,
उस श्राद्ध और तर्पण से, वे तृप्ति-तुष्टि अनुभव करते॥
धर समय-समय पर सूक्ष्म रूप, वे सही राह बतलाते हैं,
वे अपनी कृपादृष्टि से यश, बल, आयु, तेज बरसाते हैं॥
***इसलिए इन पितरों का, सदा करो सम्मान।***
***उनकी तृप्ति के लिए, करो श्राद्ध और दान॥***

साधकों की जिज्ञासा सुनकर ऋषि श्रेष्ठ ने प्रसन्न होकर कहा—हे साधको! आपका यह प्रश्न अत्यंत महत्त्वपूर्ण है क्योंकि इस विषय में बहुत



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सी भ्रांतियाँ हैं। भारतीय संस्कृति में पितर, देव, श्राद्ध-तर्पण इत्यादि का बहुत महत्त्व है। भारतीय संस्कृति की यह विशेषता है कि वह शरीर की नश्वरता तथा आत्मा की अमरता के साथ-साथ यह घोषणा भी करती है कि मृत्यु के बाद जीवन का अंत नहीं होता। मृत्यु के पश्चात जीव का संबंध अपने परिवार के लोगों से बना रहता है, उनकी सद्भावनाएँ संतान को मिलती हैं तथा संतान को श्राद्ध समर्पित करने का अवसर मिलता है, इसी को पितरों का श्राद्ध-तर्पण कहते हैं। शास्त्रों के अनुसार पितर वे हैं, जो पिछला शरीर छोड़ चुके, किंतु अगला शरीर प्राप्त नहीं कर सके। उनके प्रति श्रद्धा-समर्पण करने को ही श्राद्ध-तर्पण किया जाता है। श्राद्ध-संस्कार में देवपूजन तर्पण के साथ पंचयज्ञ पूजन का विधान है। ये पंचयज्ञ— ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, भूतयज्ञ, पितृयज्ञ एवं मनुष्ययज्ञ हैं। इनके लिए श्राद्ध, संकल्प, दान आदि किया जाता है, इससे हमारी आत्मीयता, सद्भावना तथा कृतज्ञता के भाव पूर्वजों तक पहुँचते हैं तो उन्हें सुख-शांति तथा प्रसन्नता मिलती है। पितरों को श्राद्ध समर्पित करने के लिए क्या दान करें और कैसे दान दें? इस शंका का समाधान करते हुए महामनीषी कहते हैं— श्राद्ध व्यवस्था में पितरों की मुक्ति हेतु जो दान दिया जाता है, वह अच्छे कार्यों के लिए होना चाहिए। ढोंगी साधु अथवा काम करने योग्य हट्टे-कट्टे व्यक्तियों को दान देकर उन्हें अकर्मण्य व आलसी ही बनाना है। इससे तो पितरों की मुक्ति की अपेक्षा उनका कष्ट ही बढ़ सकता है। दान हमेशा सुपात्रों को दें, जिसे आवश्यकता हो उसी को देना चाहिए। भोजन, वस्त्र, धन आदि के अतिरिक्त विद्यालय, अस्पताल खुलवाने की परंपरा का



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

यही आशय है। दान देते समय श्रद्धा भावना का होना बहुत आवश्यक है। मन में संशय रखकर किसी के कहने से, किसी को दिखाने के लिए अथवा यश की इच्छा लेकर जो दान दिया जाता है,उससे इतना लाभ नहीं हो सकता।

एक आदमी गाँव में रहता था। पढ़ा-लिखा भी नहीं था, धर्म-कर्म में श्रद्धा भी नहीं थी। पत्नी धार्मिक विचारों की थी। एक बार श्राद्ध के दिनों में पत्नी ने कहा—"सभी श्राद्ध कर रहे हैं पितरों का, आप भी पंडितजी को बुलाकर एक दिन भोजन करा दो।" उसने कहा—"चलो, तुम कहती हो तो ठीक है।" पंडित के पास गया तो पंडितजी ने कहा—"देखो, मुझे मंदिर में काम है, तुम भोजन बनवाकर ले आना तो यहीं श्राद्ध का संकल्प करा देंगे।" उसने अपनी पत्नी से कहा और खाना बनवाकर ले आया। पंडितजी ने दो आसन बिछाए। लोटे में जल व चावल रखकर कहा— "आओ बैठो और देखो जैसा मैं कहूँ, वैसा ही कहते और करते जाना।" वह आदमी पंडितजी की तरह पालथी मारकर बैठ गया। पंडितजी ने कहा—"हाथ धोकर हाथ में चावल लो।" उसने भी कहा—"हाथ धोकर हाथ में चावल लो।" पंडितजी ने कहा—"अरे मैं तुमसे कह रहा हूँ।" वह भी बोला—"अरे, मैं तुमसे कह रहा हूँ।" पंडितजी ने गुस्से से कहा—"अरे मूर्ख, श्राद्ध मेरे बाप का है या तेरे बाप का।" उसने भी वैसा ही कहा। अब तो पंडितजी को गुस्सा आया और वे उसे धक्का देकर बोले—"पागल कहीं का, जा भाग यहाँ से।" उसने भी वैसा ही कहा। पंडितजी जैसे ही गुस्से में खड़े हुए, वह भी खड़ा हो गया और दोनों



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गुत्थमगुत्था हो गए। दोनों के कपड़े फट गए। पंडितजी अपने घर की तरफ भागे तो वह भी पीछे-पीछे भागा। जब पंडितजी ने घर का दरवाजा बंद कर लिया तो घर वापस आया और बोला—"आज के बाद मुझसे श्राद्ध के लिए मत कहना। बहुत मुश्किल काम है देखती नहीं, कपड़े भी फट गए।" अब बताइए यह भी कोई श्राद्ध है।

इसी प्रकार एक सेठ के पास धन तो बहुत था पर बहुत कंजूस थे। श्राद्ध के लिए ऐसा पंडित चाहते थे जो खाना कम खाए और दक्षिणा भी कम ले। एक पंडित के पास पहुँचे—"महाराज आप क्या खाते हैं? कल श्राद्ध है, सो भोजन करना है।" पंडित भी चालाक था। कहने लगा—"मैं तो बीमार रहता हूँ, भोजन के लिए कहीं जाता ही नहीं।" सेठ जी ने कहा—"ठीक है, पर मेरे यहाँ आ जाना और जो चाहो बना लेना।" दूसरे दिन पंडितजी आए। सेठजी को कहीं जाना था, सेठानी से कहा—"पंडितजी को भोजन का सामान दे देना। बहुत कम खाते हैं, खाना वे स्वयं बनाएँगे।" सेठानी पंडितजी को सब सामान देती गई। पंडितजी ने हलवा, पूरी, खीर, चटनी सब अच्छी तरह बनाई, खाई और दक्षिणा में ५० रु. माँगे और लेकर चले गए। सेठजी आए और जब पता चला कि ५० रु. भी ले गए हैं तो बहुत गुस्सा आया। पहुँचे पंडित के घर, पंडित तो चालाक था ही। उसने पंडितानी को सिखा दिया कि सेठ आए तो रोना शुरू कर देना कहना, पता नहीं तुमने क्या खिला दिया। पंडितजी बेहोश पड़े हैं या तो डॉक्टर के लिए १०० रु. दो नहीं तो पुलिस को फोन करती हूँ। सेठजी ने घबराकर १०० रु. दिए और जान बचाकर वापस घर आ गए।



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आधुनिक श्राद्ध प्रणाली पर खेद प्रकट करते हुए महाप्राज्ञ जी कहते हैं—हिंदुओं के अन्य पर्व और संस्कारों की भाँति इस संस्कार में भी बहुत विकृति आ गई है। मृत्यु पर ब्रह्मभोज इसलिए किया जाता था, कि तेरह दिन तक घर में शोकाकुल वातावरण होने के कारण उस घर में जो लोग आते थे, वे कुछ खाते-पीते नहीं थे। अत: तेरहवें दिन वहाँ के अशुद्ध वातावरण की शुद्धि के लिए यज्ञ कराकर, ब्रह्मभोज कराकर आने वालों के लिए भी भोजन बनवाया जाता था। जिससे पुन: वातावरण ठीक हो सके, किंतु इस समय मृतकभोज के नाम से एक कष्टदायक प्रथा शुरू हो गई है कि मृतकभोज में सभी को निमंत्रण देकर भोजन कराया जाए। गाँवों में तो कई-कई गाँवों में निमंत्रण दिया जाता है तथा घर के प्रत्येक आदमी को भोजन कराया जाता है। कभी-कभी तो हजारों तक की संख्या हो जाती है। एक तो जिसके घर में मृत्यु हुई है, वह वैसे ही दुखी रहता है, पता नहीं किसी का कितना प्यारा व्यक्ति चला गया हो, दूसरे पता नहीं मृतक की बीमारी में कितना खरच हुआ हो? उस पर से यह मृतकभोज, उसके लिए दंड नहीं तो और क्या है?

कभी-कभी ऐसी दुखद स्थिति उत्पन्न होती है कि किसी के घर का चिराग बुझ जाता है। माता-पिता का जीवन असह्य, मृतकतुल्य हो जाता है, पर तब भी उसे मृतक भोज करना पड़ता है, नहीं तो लोग उसकी आलोचना करते हैं। एक सेठ के इकलौते बेटे की मृत्यु हुई तो पागल सी होकर उसकी माता ने उसके बहुमूल्य वस्त्र, सोने की चेन, घड़ी आदि सब शव के साथ रख दिए। जब उसे गंगाजी लेकर आए, तब बारह बजे थे,



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उस समय वहाँ मुरदाघाट पर पंडों की ड्यूटी बदली जाती थी। उस लड़के के वस्त्र, धन, चेन आदि देखकर दो पंडों में आपस में लड़ाई हुई और सिर फूट गए। एक कहता था इस समय मेरी ड्यूटी है, इस सामान को मैं लूँगा, दूसरा कहता मेरी ड्यूटी का समय आ गया है, इस सामान को मैं लूँगा। इस समय मनुष्य की संवेदनशीलता समाप्त हो रही है। उस संवेदना को जगाने की आवश्यकता है। आप सबको यह संकल्प लेना चाहिए कि हम मृतकभोज में शामिल नहीं होंगे। इस कुप्रथा का अंत बहुत आवश्यक है।

इस प्रकार के श्राद्ध-तर्पण से कोई लाभ नहीं। दान सत्पात्रों को श्रद्धापूर्वक दिया जाना चाहिए। सच तो यह है कि जीवित रहते ही माता-पिताजी की सेवा की जाए और वृद्धावस्था में किसी प्रकार का कष्ट या चिंता न रहने दी जाए, तभी संतान सुयोग्य कहला सकती है। यह नहीं होना चाहिए कि **'जियत पिता से दंगम दंगा, मरे पिता पहुँचाए गंगा।'** उनकी मृत्यु के पश्चात सदाचारी, त्यागी व परोपकारी बनकर उनकी संपत्ति का सदुपयोग करना चाहिए। श्राद्ध का मतलब केवल पंडित को भोजन कराना, दान देना अथवा पिंडी बनाकर पिंडदान करना अथवा जल-तर्पण ही नहीं है। यह तो कर्मकांड है। असल में तो श्रद्धा सहित पूर्वजों का संचित धन तथा अपने द्वारा उपार्जित धन भी पूर्वजों के नाम पर धर्मकार्य में खरच होना चाहिए, तभी सच्चा श्राद्ध हो सकता है। पूर्वजों के नाम पर विद्यालय,अस्पताल, अनाथालय आदि बनवाने में यही भावना रहती है। पुत्र सुयोग्य हो तो पितरों को मुक्ति मिलती है। अयोग्य पुत्र के होने पर तो उनका यह लोक और परलोक दोनों ही नष्ट हो जाते हैं।



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

इस परंपरा की प्रशंसा शाहजहाँ ने भी की थी कि हिंदू तो मृत माता-पिता के लिए इतना दान-श्राद्ध-तर्पण करते हैं और उसके पुत्र ने तो धन के लालच में जीवित पिता को ही कैद में डाल दिया। पितरों के प्रति सच्ची श्रद्धा यही है कि उनका उपार्जित धन उन्हीं के नाम पर खरच कर दें। ऐसी संतान को पाकर ही मनुष्य को सद्‌गति मिलती है।

**सदुद्देश्यसुपूर्त्यर्थं दानमेतत्तु दीयते।**
**सार्थक्यं सत्प्रवृत्तेस्तु वर्द्धनं तस्य चामृतम्॥**

—४/५/५०

**याति सम्पन्नतां श्राद्धं नैव सामर्थ्यसंयुतान्।**
**भोजयित्वा नरान् वंशवेषयोरेव निश्चितान्॥**

—४/५/५१

पितरों की मुक्ति की खातिर, जो तर्पण श्राद्ध किया जाता।
भोजन, धन, अन्न, वस्त्र आदिक, जो कुछ भी दान दिया जाता॥
यदि दिया जाए सत्पात्रों को, तो वे प्रसन्न हो जाते हैं।
पर दान कुपात्रों को देकर हम उनका रोष बढ़ाते हैं॥
पर दान दक्षिणा देने के कुछ नियम शास्त्र बतलाते हैं।
जो दान देते सत्पात्रों को, वे ही सपूत कहलाते हैं॥
जो रोगी दुखी दीनजन हैं, उनको यदि तुम कुछ दान करो।
तो पितरों का पाकर आशीष, तुम अपना भी कल्याण करो॥

***यदि चाहो परलोक में, तुम अपना कल्याण।***
***तो पितरों की संपदा, करो लोकहित दान॥***

साधकों की जिज्ञासा शांत करते हुए महाप्राज्ञ ने कहा—"हे जिज्ञासुओ! पितरों के प्रति श्रद्धाभाव रखकर उनकी प्रसन्नता के लिए मृत्युदिवस पर्व-



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

समारोहों में अथवा पितृपक्ष में जो भी श्राद्ध कर्म इत्यादि किए जाते हैं, उससे वे प्रसन्नता का अनुभव करते हैं। यह कहा जाता है कि श्राद्ध से तृप्त आत्माएँ अपने वंशधरों की परोक्ष सहायता भी करती हैं और यदि वे रुष्ट हो जाएँ तो अनिष्ट भी कर सकती हैं।''

महर्षि अरविंद के संबंध में प्रसिद्ध है कि जब वे अलीपुर जेल में थे, तब दो सप्ताह तक लगातार स्वामी विवेकानंद की आत्मा ने उनसे संपर्क किया था, इसका वर्णन उन्होंने स्वयं किया है। तुलसीदास के बारे में तो कहा जाता है कि जब-जब कोई उनका अनिष्ट करने आता था तो दो बालक उनके द्वार पर धनुष लेकर खड़े मिलते थे।

पितरों द्वारा सहायता करने की धारणा हिंदुओं में तो है ही, किंतु पश्चिमी देशों में भी इस प्रकार की घटनाएँ मिलती हैं। सेंट जार्ज की आत्मा ने मोन्स की लड़ाई जीती। नेपोलियन की मृत्यु की सूचना उसकी पितर सत्ता द्वारा मिली थी। डगलस होम की सहायता प्रेतात्माएँ करती थीं। कहने का तात्पर्य यह है कि पितर अपने स्तर के अनुरूप सदैव अपने संबंधियों की सहायता करते हैं।

पूज्य गुरुदेव का संदेश सबमें नवजीवन का संचार कर रहा था। जो लोग रोते हुए आए थे, उनके मन में शांति थी। जिज्ञासुओं का समाधान हो गया था, किंतु अब मन में केवल एक शंका शेष थी कि क्या श्राद्ध करने का अधिकार केवल पुत्र को ही है, क्योंकि भारतीय संस्कृति की परंपरा के अनुसार तो लड़की के घर पानी भी नहीं पीना चाहिए। यहाँ तक कि लड़की और दामाद का हाथ भी शव को नहीं लगना चाहिए, तो इसका



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मतलब यही हुआ कि पुत्र का होना अत्यावश्यक है, नहीं तो परलोक में मुक्ति नहीं मिलेगी। कृपया इस शंका का समाधान करें। महामनीषी ने कहा—

**पूर्णतश्च समानौ स्तः पुत्रः पुत्री च निश्चितम्।**
**कर्त्तव्यान्यधिकाराश्च समत्वेन मता इह॥**

—४/५/७९

**संबंधः सततं तिष्ठन् परिवारविशालताम्।**
**कुरुतेऽक्षुण्णरूपां तां ब्रह्माण्डपरिशायिनीम्॥**

—४/५/८९

है पुत्र और कन्या समान, दोनों श्राद्ध के अधिकारी।
मत भेदभाव रखो उनमें, यह आत्मा न नर है ना नारी॥
दोनों हैं फूल एक डाली के, घर-आंगन को महकाते हैं।
दोनों कर सकते श्राद्ध आदि, यह वेदशास्त्र बतलाते हैं॥
मातृ तर्पण, दिव्य पितृतर्पण, मानव पितरों को तर्पण दो॥
ऋषि देव दिव्य गुरुजन तर्पण कर निज श्रद्धा अर्पण कर दो।
है यही हमारा परम धर्म, हम उन सबको भी याद करें।
है यही परंपरा शास्त्रों की, हम सब उनका भी श्राद्ध करें॥

***श्राद्ध कर्म करते समय, रखो श्रद्धा भाव।***
***यश लिप्सा और अहं का, न हो कोई दुर्भाव॥***

महाप्राज्ञ ने हँसते हुए कहा—"हे संतो, यह प्रश्न लोक-कल्याण की दृष्टि से बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। भारतीय समाज में एक धारणा बन गई है कि कन्यादान के पश्चात वह पराई हो जाती है। उसके यहाँ जाना, खाना-पीना निषिद्ध है, किंतु इस धारणा ने समाज का बहुत अहित किया है।



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

शास्त्रों में तो यहाँ तक कहा गया है कि सुयोग्य कन्या दस पुत्रों के बराबर होती है। अयोग्य पुत्र होने से कुल कलंकित होता है। माता-पिता के लोक-परलोक दोनों बिगड़ जाते हैं और सुयोग्य कन्या दोनों कुलों का उद्धार करती है। रावण इतना विद्वान, इतना शक्तिशाली था, किंतु उसके दुराचरण के कारण आज कोई उसका नाम लेने वाला भी नहीं—'एक लाख पूत सवा लाख नाती, रावण के घर दीया न बाती।' बल्कि उसका पुतला बनाकर हर साल फूँकते हैं, उसके विपरीत जनकदुलारी सीता ने राम व जनक दोनों कुलों का नाम रोशन कर दिया।" इतिहास साक्षी है कि सुयोग्य कन्याओं ने अपने कुल का ही नहीं, देश का भी नाम रोशन किया है। महारानी लक्ष्मीबाई, दुर्गावती, अहिल्याबाई, कुंती, सावित्री का नाम स्वर्णिम अक्षरों में अंकित है,जिनकी प्रशंसा उनके शत्रुओं ने भी की है। मुसलिम संस्कृति में जहाँ इतना परदा है, वहाँ भी नूरजहाँ बेगम, जहाँआरा, रजियाबेगम तथा चाँदबीबी जैसी वीर महिलाओं के नाम इतिहास में प्रसिद्ध हैं। अतः यह कहा जा सकता है कि अयोग्य पुत्र की अपेक्षा सुयोग्य कन्या लाख गुना अच्छी है। इस युग में इंदिरा गाँधी ने अपने पिता व देश का नाम उज्ज्वल किया है। अतः कन्या को श्राद्ध करने का भी पूर्ण अधिकार है।

अंत में अपने प्रियजनों के वियोग में दुखी सभी परिजनों को आश्वासन देते हुए युग ऋषि कहते हैं—मृत्यु से डरो मत। यह तो ममतामयी माता है, यह तो उसी प्रकार का आयोजन है जैसे कोई दुलहन अपने पिता का घर छोड़कर जाती है तो एक ओर पिता के घर छोड़ने का कष्ट है और दूसरी ओर प्रियतम से मिलने की सुखद अनुभूति है। तभी तो कबीर जैसे संत भी कहते हैं—



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

*दुल्हन गावहु मंगलाचार।*
*हमारे घर आए राजा राम भरतार॥*

इस मृत्यु का महत्त्व बताते हुए महामनीषी कहते हैं—डरो मत, संबंध नहीं टूटेगा। वास्तव में मरण के कंधों पर बैठकर हम पड़ोस की हाट देखने भर जाते हैं और शाम तक फिर घर आ जाते हैं। हमें इसी आसमान की नीली चादर के नीचे रहना है। इसलिए हे साधको, श्मशान को देखकर कुड़कुड़ाओ मत, यह नवजीवन का उद्यान है। इसमें सोई आत्माएँ मधुर सपने सँजो रही हैं, ताकि भूत की अपेक्षा भविष्य को अधिक सुखद व समुन्नत बना सकें। डरो मत, यहाँ मरता कोई नहीं, केवल बदलते भर हैं और परिवर्तन सदा से रुचिकर माना जाता रहा है। रुचिकर के आगमन पर रुदन क्यों? अंत में एक बात अवश्य है कि मानव जीवन मिला है तो कुछ ऐसा कर जाओ कि लोग तुम्हें हमेशा याद रखें। अंत में यही कहा जा सकता है—

*पिता पुत्र में समा रहा है, यह आत्मा अक्षय है।*
*एक बीज है सौ उपजाता, स्रष्टा बड़ा सदय है॥*
*विचार लो कि मृत्यु हो, न मृत्यु से डरो कभी।*
*मरो परंतु यों मरो, जो याद भी करें सभी॥*

**इति श्रीमत्प्रज्ञापुराणे ब्रह्मविद्याऽऽत्मविद्ययोः, युगदर्शनयुगसाधनाप्रकटीकरणयोः, श्री कात्यायन ऋषि प्रतिपादिते 'मरणोत्तर जीवन' इति प्रकरणो नाम पंचमोध्यायः॥ ५॥**

## आरती प्रज्ञा पुराण की



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ॐ श्री गुरवे नमः

# प्रज्ञा पुराण कथामृतम्

## षष्ठम दिवस

## तीर्थ–देवालय प्रकरण

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

### गुरु वंदना

गुरु चरणों में आकर देखो, सब कलह-क्लेश मिट जाते हैं।
अंतर निर्मल हो जाता है, भव कष्ट कभी न सताते हैं॥
जब बीच भंवर में नाव, अलग हो जाती है पतवारों से।
तब हाथ पकड़कर गुरुवर ही, भवसागर पार कराते हैं॥
जग को, आत्मा को, ईश्वर को केवल गुरु ने ही जाना है।
हम गोविंद से पहले गुरु के चरणों में शीश झुकाते हैं॥

### प्रज्ञा गीत

किए मंत्र जप माला फेरी, पूजन आठों याम का।
रहे भाव संकीर्ण अगर तो, यह पूजन किस काम का॥
किए..............................
हर पूनौं हर पर्व नहाए, गंगा जी के नीर में।
पर मन डूब न पाया, बिलकुल किसी दुखी की पीर में॥
करते रहे सफर हम निष्ठुर, मन के चारों धाम का॥
किए..............................
ईश्वर ने जो दिया, लगाया केवल अपने वास्ते।
स्वार्थ पूर्ति हो जिनसे हमने, चुने वही सब रास्ते॥
किया पतन हर पल छिन हमने, अपने सुख आराम का॥
किए..............................



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रगति देखकर औरों की हम, भरे द्वेष और लोभ में।
पूर्ण न हो पाई इच्छा तो, भरे तीव्र विक्षोभ में॥
ध्यान रहा हर समय हमें तो, अपने ही धन-धाम का॥
किए..............................

व्यर्थ ऐंठना अहंकार में, भरकर झूठी शान से।
किंतु माँगते रहना, खुद के लिए भगवान से॥
द्वार-द्वार दौड़ना व्यर्थ में, यही सुबह और शाम का॥
किए..............................

जितना गड्ढा किया कि, उतनी मिट्टी डालो खेत में।
प्रायश्चित का सूत्र दिया यह, गुरुवर ने संकेत में॥
ध्यान न रह पाया यदि हमको, पापों के परिणाम का॥
किए..............................

*(प्रथम दिवस की भाँति कथा व्यास द्वारा प्रज्ञा पुराण का पूजन)*

आत्मीय परिजनो, माताओ, बहनो और प्यारे बच्चो! इस प्रज्ञा पुराण कथा में आपका स्वागत है। अब तक आपने देवसंस्कृति के स्वरूप, वर्णाश्रम धर्म तथा संस्कार एवं पर्व के विषय में कथा सुनी है। आज का विषय है—तीर्थ, देवालय प्रकरण, अर्थात मंदिर एवं तीर्थ का मानव जीवन में क्या महत्त्व है? हमारे पूर्वजों ने मानव-मन में भाव-संवेदनाओं की गंगोत्री बहाने के लिए बहुत प्रयास किया है। उन्हें संदेह था कि उनकी संतान कहीं भौतिक चकाचौंध से आकर्षित होकर भटक न जाए इसलिए एक व्यक्ति के लिए सोलह संस्कार, चार आश्रम बनाए फिर भी उन्हें संतुष्टि न हुई। मनुष्य में देवत्व का निर्माण करने के लिए उन्होंने देवालय



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

एवं तीर्थ स्थानों का निर्माण किया, जो मनुष्य को हर समय घंटे-घड़ियाल बजा-बजाकर अज्ञान की निद्रा से जगाकर सत्कर्म करने की प्रेरणा देते रहें और मनुष्य के हृदय में सोए देवता को जगाते रहें।

यह मानव जन्म बड़े भाग्य से मिलता है, किंतु मानव शरीर पाकर सत्कर्म करके ही इसे सार्थक बनाया जा सकता है। एक बार स्वर्ग में धर्मराज के समक्ष चार महात्मा उपस्थित किए गए। जब उनका लेखा-जोखा पूछा गया तो पता चला, एक वेदपाठी ब्राह्मण था, चारों वेद, छहों शास्त्र कंठस्थ थे। "इन्होंने जीवन भर क्या किया?" जब यह पूछा गया तो पता चला, उन्होंने जीवन भर अपने शिष्यों को वेद मंत्र रटवाए और उनसे दान-दक्षिणा लेकर अपना गुजारा किया। दूसरे के विषय में पूछा, पता चला कि तीर्थयात्राएँ की हैं चारों धाम की। चलते जाते थे और रास्ते में भिक्षा माँगकर जो मिलता था, खा-पीकर काम चलाते रहे। "क्या इन्होंने किसी के लिए कुछ उपकार किया?" पूछने पर उत्तर मिला—"किसी के लिए कहाँ से करते?" जब अपने पास ही कुछ नहीं था तो औरों को क्या देते? तीसरे के विषय में पता चला कि वे कथावाचक थे। बहुत रस ले-लेकर कथा सुनाते थे, लोगों को बहुत हँसाते थे। दान-दक्षिणा ले-लेकर अपना जीवन खूब आनंद से व्यतीत किया। चौथे के विषय में पूछताछ की, तो पता चला कि वह एक किसान था, जिसका सारा जीवन खेत बोने, जोतने तथा फसल उगाने में ही समाप्त हो गया। इसने किसी के लिए कुछ किया, यह पूछने पर पता चला कि वह व्यक्ति भूखों को भोजन कराके तब स्वयं खाता था। अपने खेत का अनाज भी गरीबों को बाँट देता था और स्वयं रूखी-



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सूखी खाकर सो जाता था। धर्मराज ने कहा—"सच्चा इनसान यही है। यही स्वर्ग का अधिकारी है।"

कहने का तात्पर्य यह है कि मनुष्य को मनुष्य बनाने के लिए तथा सत्कर्म में प्रेरित करने के लिए ही मंदिरों तथा तीर्थों को बनाया गया था, किंतु दुर्भाग्य की बात यह है कि इस समय मनुष्य अपनी गरिमा को भूलकर अपने कर्त्तव्य से विमुख हो गया है और ये मंदिर एवं तीर्थस्थान भी केवल मनोरंजन के साधन बन गए हैं। इस समय मंदिर में जाकर मनौती माँगते हैं, कि यदि नौकरी लग गई तो सत्यनारायण की कथा करा देंगे। यदि बीमारी दूर हो गई तो यज्ञ करा देंगे। यदि बेटा हुआ तो हरिद्वार जाकर पंडितों का भंडारा कर देंगे। मानो भगवान भी रिश्वत लेकर प्रसन्न हो जाएँगे। इस समय तीर्थस्थानों पर भी 'चढ़ा लो पेठा, मिलेगा बेटा' कहकर पंडे-पुजारियों ने भी अपना कर्त्तव्य भुलाकर व्यवसाय बना लिया है। जो जितना अधिक चढ़ावा चढ़ाता है, उसे उतना ही सम्मान मिलता है। मंदिरों में बोली लगती है, अभिषेक वही करेगा, जिसने सबसे अधिक धन दिया है। रथयात्रा में वही आगे चलेगा, जो सबसे धनी है। इस प्रकार आज भगवान भी सोने-चाँदी की मूर्तियों के रूप में मंदिरों में कैदी बनकर बैठ गए हैं। कहीं सोने के लालच में कोई चुराकर न ले जाए, इसलिए ताले में बंद कर दिए जाते हैं। आएदिन खबरें मिलती हैं, भगवान जी का स्वर्ण मुकुट चोरी हो गया। माखन चोरी करने वाले भगवान अब स्वयं की चोरी से भयभीत होकर मंदिर में बंद होकर रहते हैं। ऐसी स्थिति में मनुष्य की श्रद्धा भी डगमगा गई है। एक गरीब व्यक्ति जो श्रद्धा भाव लेकर नंगे पैर चलकर



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कष्ट उठाकर यात्रा करता है, उसे भगवान के दर्शन भी दुर्लभ हैं जबकि कार, हवाई जहाज में जाने वाले सेठ जी के लिए मंदिर के द्वार हर समय खुल सकते हैं। ऐसी परिस्थिति में मंदिरों और तीर्थों का क्या स्वरूप होना चाहिए? इस तथ्य का निरूपण आचार्य श्रीराम शर्मा जी ने प्रज्ञा पुराण के चतुर्थ खंड के चतुर्थ अध्याय में किया है। आचार्यश्री ने स्वयं सच्चे तीर्थ शांतिकुंज, ब्रह्मवर्चस की स्थापना हरिद्वार में की तो गायत्री तपोभूमि की स्थापना मथुरा में की। इसके अतिरिक्त मंदिरों के स्थान पर शक्तिपीठ बनवाए, जिन्हें मंदिरों का आदर्श रूप कहा जा सकता है। आचार्यश्री ने तीर्थ एवं मंदिरों के महत्त्व तथा पुजारी-पुरोहितों के कर्त्तव्य का निरूपण महर्षि कात्यायन के माध्यम से किया है। महर्षि कात्यायन के आश्रम में सप्ताह का सत्र हो रहा है, जहाँ देश-विदेश के छात्र एवं अध्यापकगण उपस्थित हैं। आइए हम भी तीर्थ एवं मंदिरों के महत्त्व को जानने के लिए वहीं चलते हैं।

**देवालयस्थापनाया महत्त्वं देवसंस्कृतौ।**
**दृश्यतेऽत्यधिकं सन्ति मन्दिराणि स्थले स्थले॥**

—४/४/३

**तन्निमित्तं किमौत्सुक्यं धर्मप्रेमिषु दृश्यते।**
**जनेषु कृपयैतच्च रहोऽस्माकं विबोध्यताम्॥**

—४/४/७

*आरण्यक में तरु तले, शुरु हुआ फिर सत्र।*
*ऋषिगण देश विदेश के, हुए वहाँ एकत्र॥*



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ऋषि कात्यायन से प्राध्यापक शांडिल्य बोले करके प्रणाम।
हे देव! यहाँ हम आए हैं मन में जिज्ञासा ले ललाम।
हैं ग्राम नगर में बने हुए, पूजा करने को देवालय।
गुरुकुल, आश्रम और आरण्यक में बने हुए हैं तीर्थालय॥
इन सबका है क्या-क्या महत्त्व, हे देव कृपा कर बतलाएँ।
क्यूँ कष्ट उठाकर जाते हैं सब, यह रहस्य कुछ समझाएँ।
इसमें होता है धन का व्यय, और समय भी व्यर्थ गँवाते हैं।
फिर भी जाते हैं सब जन क्यों? वे वहाँ पहुँच क्या पाते हैं॥

***कारण क्या? इसका प्रभो, कहिए सोच विचार।***
***जिज्ञासा यह शांत हो, मन के मिटें विकार॥***

आरण्यक में ज्ञान सत्र प्रारंभ हुआ। सभी श्रोतागण अपने-अपने स्थान पर विराजमान हो गए। व्यास पीठ पर महर्षि कात्यायन शोभायमान थे। गायत्री मंत्र एवं गुरुवंदना के पश्चात सत्र प्रारंभ हुआ तो प्राध्यापक शांडिल्य जी ने खड़े होकर हाथ जोड़कर विनम्र स्वर में सत्राध्यक्ष से प्रश्न किया—

"हे महाभाग! देवसंस्कृति में देवालयों तथा तीर्थों का बहुत महत्त्व बताया गया है। पुराण तो इन के माहात्म्य से भरे पड़े हैं। स्थान-स्थान पर मंदिर बने हैं, फिर धन खरच करके, कष्ट उठाकर भी इतने मनुष्य तीर्थ-यात्रा को क्यों जाते हैं? इस रहस्य को समझाने की कृपा करें।"

यह सुनकर महर्षि कात्यायन जी ने मुस्कराते हुए कहा—"हे महाभाग, आप स्वयं इतने विद्वान हैं, किंतु आपने जनकल्याण की भावना से यह सुंदर प्रश्न पूछा है। इस जिज्ञासा का समाधान जो भी सुनेंगे, उन सबको ही लाभ होगा। आप सावधान होकर सुनिए।"



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आपने कहा है देवसंस्कृति में देवालय तथा तीर्थों का महत्त्व है तो आप यह समझ लीजिए कि तीर्थों का महत्त्व केवल भारतीय संस्कृति में ही नहीं, सभी देशों की संस्कृतियों एवं सभी संप्रदायों में है। मंदिर, मसजिद, गुरुद्वारों, गिरिजाघरों, स्तूपों तथा विहार के रूप में ये सब देवस्थान ही तो हैं। तीर्थयात्रा का महत्त्व भी सभी संप्रदायों में है। मुसलिम भाइयों में मक्का, मदीना, ईसाइयों में यरूसलेम, बुद्धों में बौद्धगया आदि तीर्थस्थानों को बहुत पवित्र माना जाता है। यह अवश्य है कि हिंदू धर्म अनेक संस्कृतियों का संगम है, इसलिए उन लोगों के तीर्थ भी उनकी मान्यता के अनुसार बहुत अधिक हैं। चार धाम, द्वादश ज्योतिर्लिंग, शक्तिपीठ, सप्तपुरियाँ, पंचकाशी, पंचसरोवर, चतुर्दश प्रयाग, श्राद्धतीर्थ, जैनतीर्थ, बौद्धतीर्थ आदि। इसके अतिरिक्त हिंदू इतना उदार है कि वह पीर पर चादर भी चढ़ा देता है और गिरिजाघर में जाकर मोमबत्ती भी जला सकता है। बौद्ध तथा जैन तीर्थ तो उसके अपने हैं ही। हिंदुओं के लिए तो नदी के पावन तट पर, पर्वतों की चोटी पर, समुद्र के किनारे सभी स्थान तीर्थ हैं। पर्वतों पर केदारनाथ, बद्रीनाथ, गंगोत्री, यमुनोत्री, अमरनाथ, कैलाश मानसरोवर तीर्थ हैं तो दक्षिण में रामेश्वरम्, कन्याकुमारी भी तीर्थ हैं।

एक ओर पूर्व में जगन्नाथपुरी, लक्ष्मीजी का मायका, जहाँ से वे प्रकट हुई थीं तो पश्चिम में द्वारिकापुरी जहाँ भगवान कृष्ण की प्यारी नगरी लक्ष्मी जी की ससुराल है। एक ओर उत्तर में कैलाश मानसरोवर जो भगवान शिव का समाधि स्थान है तो दूसरी ओर दक्षिण में कन्याकुमारी जहाँ पार्वती जी शिव प्राप्ति के लिए पूजा कर रही हैं और ऊपर हिमालय पर गौरी शंकर की



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

चोटी, जहाँ शिव-पार्वती का निवास स्थान है। इस प्रकार चारों धाम की परिक्रमा अर्थात सारे देश की परिक्रमा, क्योंकि जब दक्षिण भारत के भक्त गंगोत्री की यात्रा करते हैं और उत्तर भारत के भक्तजन गंगोत्री का जल रामेश्वरम् पर चढ़ाते हैं, तो एक ओर तो उनमें भावनात्मक शक्ति के स्रोत उमड़ते हैं, दूसरी ओर वे राष्ट्रीय एकता के सूत्र में बँध जाते हैं। पूर्व में जगन्नाथ तथा पश्चिम में द्वारिकापुरी, चारों धाम की यात्रा अर्थात अपने प्यारे देश भारत की पूर्ण परिक्रमा। हमारे ऋषियों ने अपने तप-पुरुषार्थ द्वारा समस्त देश को एकता के सूत्र में बाँधने का सफल प्रयास किया है।

तीर्थ क्या हैं? इनका वास्तविक उद्देश्य क्या है? यह स्पष्ट करते हुए युगऋषि कहते हैं कि '**तारयितुं समर्थः इति तीर्थ**' जो तारने में समर्थ हो, वही तीर्थ है। अतः केवल चारों धाम की यात्रा करके गंगास्नान करके या मूर्तिपूजा कर फल-फूल चढ़ाकर कोई भवसागर से तर जाए, यह संभव नहीं है। इसके लिए दीन-दुखियों के प्रति संवेदना और मन की पवित्रता आवश्यक है।

भगवान उन्हें ही प्यार करते हैं, जिनके हृदय स्वच्छ हों। स्थान-स्थान पर देवालय बनाने का कारण भी यही है। देवालय अर्थात देवताओं का घर। पत्थर के देवताओं का नहीं, देवता पत्थर से नहीं बनते, उनमें भावनाओं के द्वारा प्राण-प्रतिष्ठा की जाती है। किसी भक्त ने गुरुदेव से पूछा—"देवताओं की मूर्ति पत्थर की क्यों बनाई जाती है?" उन्होंने कहा—"जाओ! भगवान पर पुष्प-बताशे चढ़ा आओ।" वह गया और पुष्प-बताशे चढ़ा दिए। आने पर गुरुदेव ने पूछा—"पूजा कर आए भगवान ने कुछ कहा?" उसने



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कहा—"नहीं।" बोले—"अच्छा? अब जाकर दो-चार गाली सुना आओ।" वह गया और दो-चार गालियाँ सुनाकर आ गया। गुरुजी ने पूछा—"भगवान ने कुछ कहा तुमसे?" वह बोला—"नहीं।" गुरुदेव ने कहा—"भगवान की मूर्ति पत्थर की इसलिए बनाई जाती है कि तुम पत्थर की मूर्ति की तरह बन जाओ। कोई तुम्हारी प्रशंसा करे या कोई तुम्हारी निंदा करे, तुम अपना कर्त्तव्य पूरा करो। स्वयं पत्थर बन जाओ और अपनी श्रद्धा, भक्ति एवं समर्पण से भगवान में प्राण-प्रतिष्ठा कर दो। जीवन की बागडोर उनके हाथ में सौंपकर उन्हें सारथी बना लो और स्वयं कठपुतली बन जाओ, फिर देखो जीवन में क्या आनंद आता है? जब भक्त समर्पण कर भगवान को मन-मंदिर में बिठा लेते हैं तो मन वृंदावन, विष्णुधाम, शिवलोक बन जाता है और सारा संसार सीता-राममय लगने लगता है।"

इन मंदिरों तथा तीर्थों को इसीलिए बनाया गया था कि दूर-दूर के संत यहाँ आकर ठहरें तथा जनता को सद्मार्ग पर ले चलें। इसके अतिरिक्त स्थान-स्थान पर देवालय इसलिए भी बनाए गए हैं कि प्रत्येक व्यक्ति के मन में पूजाभाव उदित हो। अपने घर के वातावरण में पूजा करना कठिन होता है, घर में एकांत भी नहीं मिलता, इसीलिए जब मनुष्य के पास समय हो, वह मंदिर में जाकर भगवान का ध्यान कर सकता है। इसके अतिरिक्त सामूहिक पूजा का महत्त्व भी सभी संप्रदाय मानते हैं। मंदिर में पूजा-आरती, मसजिद में नमाज, गुरुद्वारे में सबदवाणी, गिरिजाघर में भी सामूहिक प्रार्थना होती है। संतों के प्रवचन, पुराण कथाएँ आदि होती रहती हैं, जिनसे जनता का मार्गदर्शन होता है और संगठन बनता है जो बहुत आवश्यक है।



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

महाप्राज्ञ की प्रेरणामयी वाणी सुनकर एक जिज्ञासु ने कहा—"गुरुदेव, इस समय धर्मचेतना का लोप हो रहा है, फिर इस धार्मिक आधार पर मंदिर, मसजिद, गुरुद्वारे के द्वारा अथवा तीर्थयात्रा के द्वारा आप जनजागरण की बात कैसे कर रहे हैं? यह कैसे संभव है? कृपया बताने का कष्ट करें।"

**अस्ति श्रेयस्करी विद्वन्! जिज्ञासा भवतस्त्वियम्।**
**ये श्रोष्यन्ति समाधानं त्वस्य प्रश्नस्य ते जनाः॥**

—४/४/८

**सुविधा प्रददत्यत्र गृहस्था गुरुकुलस्य च।**
**आरण्यकस्य मार्गेण विरक्तास्तीर्थयात्रया॥**

—४/४/१५

यह प्रश्न तुम्हारा महाभाग, सब जग के लिए हितकारी है।
सब सुनें ध्यान देकर इसको, यह सबके लिए सुखकारी है॥
इस देवभूमि में मंदिर, मसजिद, गिरिजाघर, गुरुद्वारे हैं।
वे सब हैं मानव निर्माता, वे सब ही पूज्य हमारे हैं॥
है मानव जीवन सुरदुर्लभ, ऋषियों ने हमें बताया है।
पर मानवता के बिना मनुज, जग में पशु ही कहलाया है॥
गुरुकुल में ऋषिगण छात्रों की, प्रतिभा को प्रखर बनाते थे।
तीर्थालय में वे मानव का, सोया देवत्व जगाते थे॥

***नगर ग्राम में देवालय, बनें प्रभु के धाम।***
***हरि कीर्तन से मनुज का, मन हो प्रज्ञावान॥***

महाप्राज्ञ ने गंभीर स्वर में कहा—"हे मनीषियो, आपकी यह जिज्ञासा समय के अनुरूप है। यह ठीक है कि इस समय धर्मचेतना का लोप हो रहा



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

है, पर जन सामान्य की आस्था इस समय भी कितनी प्रबल है, यदि यह जानना चाहते हो तो मंदिरों और तीर्थस्थानों का सर्वेक्षण करो। एक बार कुंभ के मेले की भीड़ देखकर एक अँगरेज ने पूछा था—"इस भीड़ को इकट्ठा करने में आपको कितना पैसा खरच करना पड़ा?" उत्तर मिला—"केवल पंचांग में पंडितों द्वारा लिखी गई दो पंक्तियाँ कि इस तिथि में अमुक स्थान पर अमुक समय कुंभ स्नान का योग है।" बस वहाँ स्नान के लिए भीड़ इकट्ठी हो गई। सामान्य जनता तथा साधु-संत भी नियत समय पर स्नान करने के लिए कितने लालायित रहते हैं? यह देखना हो तो कुंभ के मेले अथवा अन्य पर्वों पर तीर्थस्थानों में जाकर देखो। यह सब क्या है? केवल श्रद्धा व विश्वास, कि इस समय स्नान करने से मुक्ति मिलेगी, पाप क्षय होंगे। दु:ख की बात यह है, इस समय यह श्रद्धा अंधश्रद्धा व अंधविश्वास में बदल गई है। इस श्रद्धा को पुन: जाग्रत कर जनता को उसका सही रूप समझाने की आवश्यकता है।

प्राचीन काल में ये तीर्थ सजीव होते थे, क्योंकि वहाँ ओजस्वी, तेजस्वी ऋषिगण स्वयं देवता होते थे और अपने संपर्क में आने वालों को देवता बना देते थे। निरंतर यज्ञ होने के कारण मनुष्य ही नहीं, पशु-पक्षियों की भी हिंसा की प्रवृत्ति बदल जाती थी। शेर-बकरी एक घाट पर पानी पीते थे। मोर की छाया में सर्प विश्राम करते थे, दुर्भाग्यवश ये तीर्थ अब निर्जीव हो गए हैं। वे तपस्वी अब वहाँ नहीं रहे। इतिहास साक्षी है कि तक्षशिला, नालंदा जैसे विश्वविद्यालयों ने एशिया ही नहीं, समस्त भूखंडों को नवजीवन तथा ज्ञान का प्रकाश दिया था, किंतु आज वहाँ केवल खंडहर ही शेष रह गए हैं। इस समय वहाँ जाकर प्राचीन गौरव को याद कर



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सकते हैं, उनके प्रति श्रद्धा व्यक्त कर सकते हैं, किंतु वहाँ से लाभ नहीं उठा सकते हैं, इसके लिए तीर्थों को प्राणवान बनाना पड़ेगा।

केवल अंधानुकरण से तीर्थों का लाभ नहीं उठाया जा सकता। एक व्यक्ति कहीं तीर्थयात्रा को जा रहा था। उसने सोचा कुछ धन जमीन में गाड़कर वहाँ झंडी लगा दूँ। वापस आकर झंडी से धन की पहचान हो जाएगी और मैं अपना धन निकाल लूँगा। कुछ लोगों ने उसे वहाँ गड्ढा खोदकर झंडी लगाते देखा तो सोचा तीर्थयात्रा पर जाने से पहले झंडी लगाने की प्रथा होगी। बस सबने जमीन खोदी और झंडी लगा दी। जब वह व्यक्ति तीर्थ से वापस आया तो देखा कि चारों तरफ झंडियाँ ही झंडियाँ हैं। इसी प्रकार हमारी सांस्कृतिक धरोहर इन कर्मकांड की झंडियों के बीच खो गई है, उसे खोजना होगा। माघ कवि प्रातःकाल स्नान को जाते थे, पानी गहरा था, अतः लोटा लेकर जाते थे। रोज लोटा ले जाना पड़ता था, सोचा कि एक स्थान पर इसे गाड़ दूँ तो कल आकर निकाल लूँगा। स्नान करने वालों ने देखा कि इतने बड़े कवि लोटा गाड़ रहे हैं जमीन में, इसमें अवश्य कुछ लाभ छिपा होगा। बस सब के सब अपने घर से लोटे लाए और जमीन में लोटे गाड़ दिए। इस प्रकार अंधानुकरण की परंपरा ने हमारी संस्कृति के कर्मकांड को तो जीवित रखा है, पर उसके अंदर की सजीवता एवं उसके सारतत्त्व को नष्ट कर दिया है, उसे सबको समझाने की आवश्यकता है।

इसके लिए तपस्वी, साधक तथा संतों को आगे आना पड़ेगा क्योंकि जप तथा पूजा-पाठ का प्रदर्शन करने के लिए गेरुए वस्त्र पहनकर, जटाएँ लगाकर, हाथ में माला लेकर, साधुओं का वेश धारण कर इन पाखंडी धूर्तों



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ने जनता को बहुत गुमराह किया है। इस समय ऐसे साधुओं का सम्मान करने के बजाय इनसे सावधान रहने की आवश्यकता है। एक व्यक्ति ने टोकरी में चने भरकर पानी डालकर जमीन में गाड़ दिए और ऊपर एक लक्ष्मी जी की मूर्ति रख दी। चने फूलने के कारण मूर्ति ऊपर आ गई तो शहर में ढिंढोरा पीट दिया कि तालाब के किनारे लक्ष्मी जी प्रकट हुई हैं। सभी लोग वहाँ दर्शन को आए और खूब पैसा इकट्‌ठा हो गया। इस प्रकार जनता को धोखा देने के लिए स्वार्थी मनुष्य तरह-तरह के स्वांग रचते हैं।

इस समय मनुष्य का चितंन इतना भ्रष्ट हो गया है कि वे पैसा कमाने के लिए कुछ भी कर सकते हैं। तीन ठगों ने योजना बनाई। कुछ पैसा खरच करके जटाएँ, कमंडलु तथा गेरुए वस्त्र खरीद लिए और एक गाँव में धूनी रमाकर बैठ गए। एक तो मौनी बाबा बन गया और दो ने प्रचार कर दिया कि गाँव के ऊपर बहुत बड़ा संकट आने वाला है इसलिए बहुत बड़े महात्मा जी यज्ञ करने आए हैं। गाँव के लोगों ने गेहूँ, चावल, चीनी, पैसे आदि इकट्‌ठा करना शुरू किया और उनकी बहुत आवभगत की। एक दिन एक किसान रात को देर से आया, सोचा कि मंदिर में कुछ सेवा कर आऊँ उन महात्माओं की। बस गया तो देखा तीनों शराब पीकर गालियाँ बक रहे हैं। उसने गाँव वालों को बुलाकर सबको दिखाया तो सबने उन्हें मारकर भगाया। इस प्रकार के पाखंडियों ने ही धर्मचेतना का लोप कर दिया है, इस चेतना को पुनर्जाग्रत करना होगा।

इसी प्रकार यह मान्यता बन गई है कि तीर्थ स्नान करने से सारे पाप धुल जाते हैं और मनुष्य सीधा स्वर्ग जाता है। इस भावना ने भी लोगों को दुष्कर्म



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

करने की छूट दे दी। पाप कमाओ और गंगा में स्नान करके उनसे छुटकारा पा लो। इस मान्यता का खंडन करते हुए महाप्राज्ञ कहते हैं—

"यदि इस प्रकार गंगास्नान से मुक्ति मिल जाती तो सबसे पहले मछलियाँ और मगरमच्छ ही स्वर्ग पहुँच जाते जो हर समय गंगाजल में ही रहते हैं।"

पुराणों में इस प्रकार की अनेक कथाएँ हैं। एक वृद्धा ने हज यात्रा के लिए धन एकत्रित किया। तब उसे पता चला कि उसकी एक पड़ोसिन अपनी सौतेली बेटी को वृद्ध के हाथों धन के लालच में बेच रही है। उसने अपना तीर्थयात्रा का धन उस लालची स्त्री को दे दिया और उस कन्या की शादी अपने पुत्र से कर दी और घर बैठे ही तीर्थ का पुण्य प्राप्त कर लिया। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि धर्मचेतना का पुनर्जागरण करने के लिए तीर्थयात्रा तथा देवालयों के सच्चे अर्थ को समझना होगा।

मंदिर और तीर्थों का वर्णन करते-करते महामनीषी भावुक हो उठे। उनकी प्रेरणामयी वाणी सुनकर एक जिज्ञासु ब्रह्मचारी ने पूछा—"हे महामते, आपने मंदिर और तीर्थों का महत्त्व बताया है, किंतु एक शंका मन में है, कि वेदांत में ईश्वर को निराकार व सर्वव्यापी बताया गया है और मंदिर में तो मूर्तिपूजा की जाती है तथा मूर्तियाँ भी अलग-अलग देवताओं की अलग-अलग तरह से बनाई जाती हैं, कृपया इस रहस्य को समझाइए।"

**वस्तुतो भगवानेक एव स वर्ततेऽस्ति नो।**
**सहभागोऽपि वा कश्चित्तस्य नापि सहायकः॥**

—४/४/२३



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

**परं विभिन्नताभिस्तु एताभिस्तत्त्वबोधजम्।**
**रहस्यं विविधं ज्ञातुं सुविधाः प्राप्नुवन्त्यलम्॥**

*—४/४/२७*

है निराकार प्रभु भक्त जनों के अंतःकरण में रहता है।
है वही सृजनकर्त्ता, पालक संहार स्वयं ही करता है॥
फूलों में बसी उसकी खुशबू, है रमा हुआ सब रंगों में।
पक्षी के कलरव में वह ही, वही रंग-बिरंगे विहंगों में॥
है वह ईसा, है वह मूसा, है वही राम और वही रहीम।
वह महावीर, वह गुरुनानक, वही कृष्ण और है वही करीम॥
है वही सृष्टि के कण-कण में, पर कहीं नजर नहीं आता है।
धरता है जब साकार रूप, तब सब जग को हर्षाता है॥

***व्यापक अखंड अनंत है, यद्यपि प्रभु वह एक।***
***किंतु भक्तजन देखते, उसके रूप अनेक॥***

प्रश्न सुनकर मुस्कराते हुए महामनीषी ने कहा—"वत्स, तुम्हारी यह जिज्ञासा तुम्हारी श्रद्धा की परिचायक है। ध्यानपूर्वक अपने प्रश्न का उत्तर सुनो। वह ईश्वर निराकार और सर्वव्यापी है, यह ठीक है, किंतु उस दिव्य चेतना का बोध सबको अनायास ही नहीं हो सकता। न तो निराकार का ध्यान ही हो सकता है और न उसकी पूजा-अर्चना ही की जा सकती है। उस ब्रह्म के साक्षात्कार का सुख तो गूँगे के गुड़ के समान है। जैसे गूँगा व्यक्ति गुड़ खाकर उसकी मिठास का अनुभव तो करता है, प्रसन्न होता है, परंतु वाणी से बता नहीं सकता, उसी प्रकार निराकार ब्रह्म के स्वरूप को समझाया नहीं जा सकता—'**रूप, रेख, गुन, जाति जुगति**



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

**बिन, निराकार मन चक्रत धावे'** इसीलिए भगवान के सगुण रूप की कल्पना की गई।

भगवान के अलग-अलग अनेक रूप क्यों प्रस्तुत किए गए, इसे इस प्रकार समझा जा सकता है—एक गाँव में अंधों का आश्रम था। एक दिन वहाँ एक हाथी आया, गले में बँधी हुई घंटी की आवाज आ रही थी। उन्होंने पूछा—"यह किसकी आवाज है?" जवाब मिला—"हाथी आया है।" "हाथी कैसा होता है?" यह पूछने पर उन लोगों को हाथी के पास लेकर गए। किसी ने सूँड़ छूकर कहा—"अरे यह तो साँप जैसा है।" दूसरे ने कान छूकर कहा—"नहीं, यह तो सूप जैसा है" तीसरे ने पैर छूकर कहा—"अरे नहीं, यह तो खंबे जैसा है।" अत: जिसने उसके जिस अंग का स्पर्श किया, उन्हें वैसी ही अनुभूति हुई। अत: '**जाकी रही भावना जैसी, प्रभु मूरत देखी तिन जैसी**' के अनुसार सभी दार्शनिकों ने उस भगवान को जिस रूप में देखा, उसे वैसा ही चित्रित कर दिया। इसमें कहीं कोई विरोध नहीं है। जैसे एक व्यक्ति पिता है, बच्चे उसे पिताजी कहें, फादर कहें, पापा कहें, डैडी कहें, कोई फरक नहीं पड़ता। उसी प्रकार उस परमपिता को भी राम कहें, रहीम कहें, कृष्ण कहें, करीम कहें, ईश्वर कहें, अल्लाह कहें, ईसा कहें, गुरु कहें कोई फरक नहीं पड़ता, सब उसी के रूप हैं।

धर्म और अध्यात्म को समझने के लिए देवसंस्कृति में पूजा-चिह्नों में दो शब्द प्रमुख रूप से आते हैं—प्रतिमा और प्रतीक, इन दोनों में अंतर है। प्रतिमा का अर्थ है—मूर्ति नकल, जैसे भगवान राम ने अश्वमेध यज्ञ में



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सीता की स्वर्ण प्रतिमा बनवाई थी। यह प्रतिमा थी, प्रतीक नहीं। प्रतीक में बाह्य सादृश्य को महत्त्व नहीं दिया जाता। प्रतीक का संबंध गुण सादृश्य, अर्थ या आशय से होता है, जैसे ब्रह्म के अचिंत्य रूप को 'नेति-नेति' कहकर भी समझाया नहीं जा सकता। अत: दीर्घ चिंतन के पश्चात ऋषियों ने 'ॐ' अथवा प्रणव को उसका प्रतीक बनाया। '**ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म**' कहकर उन्होंने कहा कि इस 'ॐ' को फालतू बात मत समझो। इसकी तीन मात्राओं अ+उ+म में सत्+चित्+आनंद, आदि+मध्य+अंत अथवा उत्पत्ति, स्थिति व प्रलय माना जा सकता है। अत: इसी रूप को अधिक स्पष्ट करने के लिए इन्हें ब्रह्मा, विष्णु, महेश की उपाधि से विभूषित कर प्रतीकों को आधार बनाकर चित्रित कर दिया।

इन प्रतीकों को अधिक स्पष्ट करते हुए महाप्राज्ञ कहते हैं कि ब्रह्मा की मूर्ति को देखिए। इनके चार मुख इनकी चतुर्मुखी प्रतिमा तथा चारों वेदों के ज्ञान का बोध कराते हैं। इनकी उत्पत्ति नाभि कमल से हुई है। कमल अंत:करण की प्रफुल्लता का प्रतीक है तथा इनके हाथों में पुस्तक, ज्ञान व कमंडलु पात्रता का प्रतीक है।

भगवान विष्णु की चतुर्भुजी मूर्ति बनाई जाती है। उनके एक हाथ में शंख है जागरण का प्रतीक, शंखनाद कर दो, जागो और कर्त्तव्य पथ पर अग्रसर हो, दूसरे हाथ में गदा, दुष्ट दमन के लिए तत्पर रहो, तीसरे हाथ में चक्र गतिशीलता का प्रतीक, दुष्ट दमन के लिए भी है, किंतु निरंतर चलते रहने का परिचायक है यह चक्र। एक हाथ में कमल, कमल किसके लिए ? एक बात तो यह कमल प्रतीक है पवित्रता का, कीचड़ में रहकर भी



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कीचड़ से दूर। संसार में रहकर भी सांसारिक कषाय-कल्मष से अलग रहो, दूसरी बात भगवान विष्णु स्वयं कमल की तरह हैं, मुखकमल, नेत्रकमल, करकमल, चरणकमल, कमल की तरह सुकुमार और पवित्र। हाथ में कमल किसलिए? कहीं भी कमल की भाँति पवित्र विचारों वाले भक्त संतजन मिलें तो उनके चरणों में कमल समर्पित कर दें। समस्त पुराण भगवान विष्णु की महान लीलाओं से भरे पड़े हैं। भक्तवत्सल हैं ये प्रभु, बस प्रेम के भूखे, भक्तों के वश में रहते हैं। कभी भीलनी के जूठे बेर खाते हैं, कभी विदुर के घर साग।

भगवान का तीसरा रूप है—महेश, महादेव, शिवशंकर। इनकी मूर्तियाँ तो और भी विचित्र हैं। भगवान शिव के रूप में अनेक गणों का आभास होता है। वे नीलकंठ कहलाते हैं, उन्होंने स्वयं विषपान किया है और देवताओं को अमृतपान कराया है। उनके मस्तक पर चंद्रमा शांति व शीतलता का प्रतीक है तो गंगा-ज्ञानगंगा का प्रवाह। गले की मुंडमाला-मृत्यु को हमेशा स्मरण करो, दुष्टों का दमन करो। भूत-प्रेत, दुखी-दलित वर्ग को साथ लेकर उनका कल्याण करो। सर्प की माला व कंगन, दुर्जन को वश में करो, त्रिशूल, अज्ञान, अभाव तथा अशक्ति के त्रिपुरासुर को नष्ट करने के लिए हाथ में रखो। कमर में व्याघ्रचर्म दुष्टों की चमड़ी उधेड़ने का प्रतीक है। वाहन नंदी—धर्म का, श्रमशीलता का परिचायक है। प्रज्ञा चक्षु के रूप में तीसरा नेत्र है, काम को भस्म कर दो, विवेकशील बनो। भस्म रमाकर मरघट में रहना—अपरिग्रही जीवन जियो, मृत्यु को याद रखो। शिवजी की प्रतिमा इन्हीं प्रतीकों के आधार पर बनाई गई है।



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

यहाँ एक बात और ध्यान देने योग्य है कि इन देवताओं के परस्पर संबंध बड़े मधुर हैं। शिव विष्णु के उपासक हैं तो विष्णु शिवजी के। राम शिवलिंग की स्थापना कर रामेश्वरम् में उनकी पूजा करते हैं तो शिवजी भगवान कृष्ण के बालरूप को देखने के लिए योगी का वेश बनाते हैं। **'शिवद्रोही मम दास कहावा, सो नर मोहि सपनेहु नहिं भावा'**। पुराण इन मधुर कथाओं के भंडार हैं। सच तो यह है कि इन शक्तियों को साकार रूप में चित्रित करके ही ज्ञान-कर्म-भक्ति की त्रिवेणी इस देश में प्रवाहित की गई है, जिसमें स्नान कर जनता अभी भी धर्मधारणा से बँधी है। यह प्रज्ञा पुराण कथा भी इन्हीं का एक रूप है।

इन्हीं देवताओं में एक देवता हैं—गणेशजी। शिव-पार्वती के पुत्र ऋद्धि-सिद्धि के स्वामी, सद्बुद्धि के दाता, बड़े-बड़े कान अधिक सुनने की क्षमता, लंबी नाक अक्षुण्ण गौरव का प्रतीक। ये बुद्धि के देवता हैं। सांसारिक सफलता के प्रतीक। दो सखियाँ—ऋद्धि—आत्मबल, सिद्धि—सांसारिक सफलता का प्रतीक। इनके एक हाथ में अंकुश अनुशासन का प्रतीक, दूसरे में मोदक प्रसन्नता का प्रतीक। इन्हें सबसे पहले पूजा जाता है। इनकी पूजा लक्ष्मी जी के साथ की जाती है। कारण? लक्ष्मी जी को पाकर मनुष्य विवेक खो बैठता है। अत: लक्ष्मी जी के आने से पहले विवेक की पूजा आवश्यक है।

इसी प्रकार देवियों में नवदेवियों का पूजन किया जाता है—गायत्री मंत्र के चौबीस अक्षरों में चौबीस दिव्यशक्तियों का भंडार है। उनके नाम के अनुरूप उनकी प्रतिमाएँ बनाई गई हैं। नवदेवियों में तीन देवियाँ प्रमुख हैं—महाकाली, महालक्ष्मी एवं महासरस्वती।



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

**महाकाली**—महाकाली को दुर्गा, चंडी, अंबा, शिवा तथा पार्वती भी कहते हैं। माँ दुर्गे के अवतार की कथा है कि महिषासुर, शुंभ-निशुंभ, रक्तबीज, चंड-मुंड आदि राक्षसों से परेशान होकर सब देवताओं ने अपने-अपने उपहार देकर एक महाशक्ति उत्पन्न की थी। उसने महाचंडी काली का रूप धारण कर राक्षसों का वध किया था। इससे संगठन शक्ति का पता चलता है। उनका वाहन सिंह है जो प्रचंड पराक्रम एवं हिंसा का प्रतीक है। अत: हिंसात्मक प्रवृत्तियों पर नियंत्रण, पराक्रम का सदुपयोग करने से विजय और यश मिलता है, यही सोचकर इस प्रतीक को बनाया गया है। मनुष्य को अपने जीवन में अनेक दुर्बलताओं एवं दुष्प्रवृत्तियों से जूझना पड़ता है। दुर्गा तत्त्व के उभरने पर शौर्य-साहस की प्राप्ति होती है।

**महालक्ष्मी**—ये समृद्धि की, श्री की, संपन्नता की देवी हैं। इनका अभिषेक दो हाथियों से करते हैं, जो परिश्रम और मनोयोग के प्रतीक हैं। उपार्जन में परिश्रम, नैतिकता, खरच करने में मर्यादा रखकर जनहित में लगाना। लक्ष्मी का आसन कमल है, निर्लिप्त रहना, धन पाकर अहंकार न करना। लक्ष्मी के साथ गणेश-पूजन अर्थात विवेकसम्मत खरच करो, विलासी मत बनो।

**महासरस्वती**—ये सद्विद्या की देवी हैं। इनका वाहन हंस है। इसका तात्पर्य यह है कि इनकी पूजा करने वाले हंस की भाँति नीर-क्षीर के विवेकी हो जाते हैं। संतों की समता हंस से की जाती है। हंस केवल मोती चुगता है—'**कै हंसा मोती चुगे, कै लंघन मर जाए।**' इसी प्रकार संत भी गलत बातों से समझौता नहीं करते। इसका तात्पर्य यही है कि जो माँ



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सरस्वती के हाथ में अपनी जीवनरूपी वीणा को सौंप देता है, उससे ऐसे मनोहर स्वर निकलते हैं कि सारा जग सम्मोहित हो जाता है। इनके एक हाथ में पुस्तक है ज्ञान का प्रतीक तथा दूसरे हाथ में कमंडलु पात्रता, जल की शीतलता एवं सत्संगतिरूपी तीर्थजल का प्रतीक है।

**गायत्री**—माँ गायत्री के चौबीस अक्षरों में चौबीस महाशक्तियाँ हैं। महासरस्वती उन्हीं का एक रूप हैं। उनका वाहन हंस है—हाथ में पुस्तक व कमंडलु। इनका षोडशी रूप चित्रित है अर्थात मातृभावना से पूजा की जाए। माँ-बेटे का संबंध सबसे पवित्र तथा स्नेहपूर्ण होता है। ये देवमाता हैं देवत्व का उदय करती हैं, वेदमाता ज्ञान की मूर्ति हैं, इन्हें विश्वमाता के पद पर आसीन करना है, जिससे सारे संसार में ज्ञान की अमृतवर्षा हो। तो हे साधको! यही मूर्तिपूजा का रहस्य है। भक्त जिस रूप में देखता है, उसी रूप में पूजा करता है। भगवान उस रूप में उसी की पूजा स्वीकार करते हैं।

महाप्राज्ञ की प्रज्ञा वाणी सुनकर श्रोताओं की हृदय-ग्रंथियाँ खुल रही थीं। मूर्तिपूजा का स्वरूप समझ में आ गया था, पर तो भी कुछ जिज्ञासाएँ शेष थीं। एक श्रद्धालु ब्रह्मचारी ने पूछा—"हे महामते! आपने हमें भगवान के साकार रूप की पूजा करने की विधि तथा पूजा के प्रतीक भी बताए हैं, किंतु एक शंका अभी भी शेष है। मंदिर तथा तीर्थों में पुजारी जी केवल भगवान के चरणों में फल, फूल, प्रसाद तथा दक्षिणा लेकर मूर्तिपूजा करा देते हैं, क्या हम केवल इन कर्मकांडों द्वारा भगवान को प्रसन्न कर सकते हैं? क्या माला, जप, तिलक तथा रँगे कपड़े पहनने से भगवान को रिझा सकते हैं? कृपया इस शंका का समाधान करें।"



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

**प्रत्येकस्य समीपस्थं सेवाक्षेत्रमपि त्विह।**
**यदुच्यते मण्डलं तज्जनजागृतिकारक:॥**

—४/४/३४

**यदर्थं यत्नशीलाश्च देवालयसुशासका:।**
**सदा सन्ति ददत्येते महत्त्वमुभयो: स्थितम् ॥**

—४/४/४२

जनता की चेतना जागरण को, ऋषियों ने तंत्र बनाए थे।
ग्राम-ग्राम और नगर-नगर में, वे मंदिर कहलाए थे॥
नगरों से दूर नदी तट पर, पावन आश्रम बनवाते थे।
उनमें रहते थे जनसेवक, वे संत ऋषि कहलाते थे॥
तीर्थस्थल पर आश्रम में भी, सत्संग सदा चलते रहते।
परिवार सहित जाते गृहस्थ, वहाँ धर्म लाभ करते रहते॥
सांसारिक कष्टों से व्याकुल, नर-नारी वहाँ पर जाते थे।
उन भूले भटके लोगों को, ये ऋषिगण राह दिखाते थे॥

***मंदिर हो या मसजिद हो, या हो तीर्थ स्थान।***
***है सबका उद्‌देश्य यही, जग का हो कल्याण॥***

यह प्रश्न सुनकर महामनीषी ने गंभीर स्वर में कहा—"हे तात! इस समय की परिस्थिति के अनुसार तुम्हारा यह प्रश्न बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। सच तो यह है कि इस समय पूजापद्धति को केवल कर्मकांड ही समझ लिया गया है, इसीलिए धर्म की मर्यादा समाप्त हो रही है। ऋषियों ने लोकचेतना जागरण के लिए जो व्यवस्थित तंत्र बनवाए थे, मंदिर और तीर्थ उनके संचालन केंद्र थे। हर देवालय के पास एक सेवाक्षेत्र होता था। निष्काम भाव से सेवा करके लोकसेवी वहाँ का कार्य-भार सँभालते थे।



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उन्हीं मंदिरों के साथ प्रशिक्षण स्थल भी रहते थे, जहाँ साधना तथा योगशिक्षा की व्यवस्था रहती थी। पूजाकक्ष, संचालक निवास तथा प्रशिक्षण स्थल होने पर ही मंदिरों को पूरा माना जाता था।'' त्रेतायुग में वसिष्ठ, विश्वामित्र, अत्रिमुनि, भरद्वाज आदि के आश्रम ऐसे ही थे। द्वापर युग में संदीपन ऋषि का आश्रम ऐसा ही तीर्थ था। बौद्धकाल में स्थान-स्थान पर विहार बने हुए थे, जिनमें यह प्रशिक्षण चलता रहता था। महात्मा बुद्ध के समय बौद्ध भिक्षु स्थान-स्थान पर दीक्षा देने के लिए जाते थे, किंतु मध्यकाल में इन आश्रमों का स्थान मंदिरों एवं तीर्थों ने ले लिया और परिणाम यह हुआ कि श्रद्धा-निष्ठा अंधविश्वास में बदल गई। कर्मठता कर्मकांड तक सीमित रह गई और महमूद गजनवी जैसे आक्रांताओं ने सोमनाथ जैसे मंदिर को लूट लिया और कर्मकांडी पंडे-पुजारी हाथ में माला लेकर छपे कपड़े पहन, माथे पर तिलक लगाकर भगवान को बुलाते ही रह गए। इसी प्रकार मंदिरों को तोड़ने की परंपरा चलती रही और ये पंडे-पुजारी जनता को गुमराह करते रहे। धर्म के वास्तविक रूप को भूलकर जनता भटक गई और भगवान ही सब कुछ करेंगे, यह सोचकर अकर्मण्य हो गई।

सौभाग्यवश कर्मयोग की यह परंपरा पुनर्जाग्रत हुई। भारत संतों का, ऋषियों का, वीरों का देश है। यहाँ की भूमि पर महापुरुष जन्मते ही रहते हैं। गुरुगोविंद सिंह ने गुरुद्वारों को सैनिक छावनी के रूप में परिष्कृत किया। वहाँ कीर्तन, पूजा-पाठ, सबद वाणी के साथ-साथ हर सिख के मन में यह भावना भर दी गई थी कि उन्हें अनीति के विरुद्ध संघर्ष करना



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

है। भगवान की भक्ति का रूप कर्मयोग भी है। गुरुगोविंद सिंह के 'पंचप्यारे' प्रसिद्ध हैं, जिनकी परीक्षा लेकर उन्होंने अमृत पिलाया था। हर सिख को (पंच ककार) कच्छा, कंघा, केश, कड़ा तथा कृपाण देकर गुरुभक्ति के साथ-साथ देशभक्ति का उपदेश दिया जाता है, यह परंपरा गुरुद्वारों में आज भी है।

समर्थ गुरु रामदास जी ने महाराष्ट्र में हनुमान जी के ८०० मंदिर बनवाए थे, जिनमें पवनसुत की उपासना के साथ-साथ सीतारूपी संस्कृति की रक्षा के लिए तथा रामराज्य की स्थापना के लिए संकल्प लिए जाते थे। इनमें अखाड़े भी थे, जहाँ योग-व्यायाम की शिक्षा दी जाती थी। वहीं पर शिवाजी के अभियान के लिए जनशक्ति तथा धनराशि की व्यवस्था भी होती रहती थी। हनुमान जी की पूजा का सही अर्थ यही है। यह नहीं कि हनुमान जी की मूर्ति पर लड्डू का भोग लगाया, आरती की और प्रसाद खाकर सो गए।

संत परंपरा में सच्चे संतों ने सदा अपना कर्त्तव्य निर्वाह किया है। संत अन्ना जी झाँसी में एक झोंपड़ी में रहते थे, किंतु हनुमान जी का चित्र रखकर उन्होंने श्रीलक्ष्मी व्यायाम मंदिर की स्थापना की थी। वे जनता में भक्तिभाव के साथ-साथ देशभक्ति की भावना की उमंगें भरते रहते थे। केवल मूर्तियों के सामने फल, फूल चढ़ाना सच्ची पूजा नहीं है। समस्त दुखी, दरिद्रों में भगवान के दर्शन कर उन्हें कष्टमुक्त करना ही भगवान की पूजा है।

केवल माला लेकर घुमाते रहना जप नहीं है। सच्चा जप तो भगवान के भक्तों की सेवा है। एक पंडितजी नदी किनारे बैठकर माला जप रहे थे, तभी



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उन्होंने देखा कि एक बालक डूब रहा है, किंतु वे बीच में माला छोड़कर कैसे उठते? उन्होंने इशारे से किसी को बुलाकर उसे दिखाया। उस आदमी ने कूदकर बालक को बचाया और पंडितजी से पूछा—"आप तैरना नहीं जानते?" पंडितजी ने कहा—"तैरना तो जानता हूँ, पर बीच में उठता तो जप खंडित हो जाता।" अब आप ही बताइए ऐसे जप से क्या लाभ, जो किसी की जान भी न बचा सके?

एक राजा ने अनुष्ठान किया। पंडितजी पूर्णाहुति का यज्ञ कर रहे थे। बीच में बोलना या उठना मना था। इसी समय एक ब्राह्मण चिल्लाता हुआ आया और कहने लगा—"कुछ दुष्ट व्यक्ति मेरी गायें हाँककर ले जा रहे हैं महाराज! बचाइए।" राजा यज्ञ में से उठकर खड़े हो गए। पंडितजी ने मना किया, किंतु राजा ने कहा—"ऐसे यज्ञ से क्या लाभ? यदि मैं प्रजा की रक्षा न कर सकूँ।" वह अस्त्र-शस्त्र लेकर गया और दुष्ट से ब्राह्मण की गाय वापस दिला दी। तभी अग्निदेव ने प्रकट होकर कहा—"तुम्हारा यज्ञ सफल हो गया।"

कहने का तात्पर्य यह है, भगवान की सच्ची पूजा कर्त्तव्यपूर्ति तथा दुखियों की सेवा है। यदि कोई व्यक्ति बड़े-बड़े व्रत-उपवास रखता है, पूजा-पाठ करता है या भजन-कीर्तन करता है, यज्ञ-अनुष्ठान किसी इच्छापूर्ति के लिए करता है और गरीबों का शोषण करता है तो उससे कभी भी भगवान प्रसन्न नहीं हो सकते। एक बार रामलीला खेलने के लिए दो गरीब बच्चों को चुना गया, जो देखने में सुंदर थे। उन्हें राम-लक्ष्मण बना दिया गया। सबने उनकी आरती उतारी। खूब पैसे इकट्ठे हुए। तीन दिन तक



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इसी प्रकार का कार्यक्रम चलता रहा। उन बच्चों ने सोचा था कि उन्हें कुछ पैसे मिलेंगे तो किताबें खरीद लेंगे, परंतु अंतिम दिन प्रसाद बँटा, सबने खूब मौज-मस्ती की, ठर्रा पिया, हुड़दंग मचाया, परंतु उन दोनों बच्चों को, जिन्हें राम-लक्ष्मण बनाया गया था, किसी ने खाने के लिए भी नहीं पूछा। उन बच्चों से कहा गया—"अभी पैसे नहीं मिले हैं, बाद में तुम्हें धोती-कुर्ता दे देंगे, अभी जाओ।" वे बेचारे दोनों रोते हुए चले गए। आप ही बताइए ऐसे धर्म से क्या ईश्वर को प्रसन्नता प्राप्त हो सकती है?

एक बार गुरु नानकदेव किसी खाँ साहब से मिलने गए। वे उस समय नमाज पढ़ रहे थे। गुरुजी को हँसी आ गई। नमाज से उठकर खाँ साहब ने गुरुजी से पूछा—"आप क्यों हँस रहे थे, मेरी नमाज देखकर।" उन्होंने कहा—"मैं हँस रहा था इसलिए कि तुम नमाज नहीं पढ़ रहे थे, अरब में घोड़े खरीद रहे थे।" यह सुनकर खाँ साहब शरमिंदा हो गए क्योंकि वे नमाज पढ़ते समय अरब के घोड़े खरीदने की बात सोच रहे थे। पूजा के समय कुछ ही क्षण को सही, किंतु मन की भावना भगवान को पूर्णतया समर्पित होनी चाहिए। यही पूजा का उद्देश्य है।

भगवान को फल-फूल, चंदन, प्रसाद आदि समर्पित करने का क्या उद्देश्य है? यह पूछने पर आचार्य श्री ने कहा—"हे जिज्ञासुओ, भगवान को फल-फूल, पत्र, प्रसाद जो भी समर्पित किया जाता है, उसमें भी श्रद्धाभाव ही मुख्य है।" भगवान केवल प्रेम के भूखे हैं, इसे इस प्रकार समझ सकते हैं—

**पुष्प**—उस भगवान की अनुपम कृति है। वह स्वयं खिलकर दूसरों को प्रसन्नता व सुगंधि देता है। जो उसे मसलता है उसे भी खुशबू देता है।



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हमारा जीवनरूपी पुष्प भगवान को समर्पित हो, जीवन पुष्प की भाँति हो, यही इसका उद्देश्य है।

**चंदन**—शीतलता व सुगंधि का प्रतीक है। हमारा जीवन चंदन की तरह सुगंधित रहे, शीतल रहे। जैसे चंदन घिसने पर सुगंध देता है, उसी प्रकार हमारा जीवन त्याग व परोपकार के लिए हो।

**दीपक**—प्रकाश का प्रतीक है। हम दीपक इसलिए नहीं जलाते कि भगवान अँधेरे में बैठे हैं। वे प्रकाशपुंज हैं, उनका एक अंश हममें भी है, किंतु काम, क्रोध, लोभ, मोह के काले परदों में वह ज्योति धुँधली पड़ गई है। हम दीपक जलाकर पूजा करते समय उस ज्योति को मन में जगाएँ और संकल्प लें कि हमेशा दीपक की तरह जलकर दूसरों का अंधकारमय पथ आलोकित करें।

**अक्षत**—पूर्णता का प्रतीक है। हम संकल्प पर दृढ़ रहें, अगरबत्ती की तरह जलकर सुगंध दें।

**प्रसाद**—मिष्टान्न मधुरता का प्रतीक है। प्रसाद सबको खिलाकर खाते हैं। इसका यही अर्थ है कि सबके साथ मधुर व्यवहार करो और सबको खिलाकर स्वयं खाओ। भोग लगाकर खाओ, मनुष्य को ही नहीं, पशु-पक्षियों को भी। गाय की रोटी, कुत्ते की रोटी, चिड़ियों को दाना, चींटी को आटा आदि।

सच तो यह है कि ये सब प्रतीक हैं श्रद्धाभाव के। भगवान ने स्वयं कहा है—**'पत्रं पुष्पं फलं तोयं'** जो मुझे जिस रूप में दे, श्रद्धा से दे, मैं स्वीकार करूँगा। इसलिए ये देवप्रतिमाएँ पुस्तकें हैं, जिसे अनपढ़ व्यक्ति



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

भी पढ़ सकता है। एकता के बीच अनेकता एवं अनेकता में एकता का यह पाठ मनोरंजक भी है, व्यावहारिक एवं दूरदर्शितापूर्ण भी है। चित्रकथाएँ इसलिए पसंद की जाती हैं कि वे जल्दी सबकी समझ में आ जाती हैं, इसलिए ऋषियों ने इस अगम गूढ़ रहस्य को इस प्रकार समझाया है।

महामनीषी की वाणी से सभी तृप्त हो रहे थे, किंतु मन की शंकाओं के समाधान का सुअवसर मिला था। अतः एक जिज्ञासु ने हाथ जोड़कर विनम्र स्वर में कहा—"हे देव, यद्यपि आपकी शीतल वाणी हमें नई दृष्टि प्रदान कर रही है, किंतु मन में शंकाएँ शेष हैं। हमारे घर एक दिन एक संन्यासी आए थे। माँ ने उनकी खूब आवभगत की, किंतु उन्होंने प्रसाद में न जाने क्या मिला दिया कि हम सब बेहोश हो गए और वे घर का सामान लेकर चंपत हो गए। कृपया बताइए कि सच्चे संत को कैसे पहचानें?"

**साधुभ्यस्तीर्थयात्रायास्तपः कर्तुं सदैव तु।**
**शास्त्रीयं वर्तते दिव्यं विधानं पुण्यदायकम्॥**

—४/४/५८

**येन यत्रापि वासः स्यात्प्रचारस्तत्र संभवेत्।**
**सोत्साहं मण्डले तत्र भवन्त्येव सदैव च॥**

—४/४/६१

परमार्थ हेतु चलते रहना, है साधु की पहचान यही।
सोते रहने वालों का तो, सोता रहता है भाग्य कहीं॥
आगे बढ़ते रहने वाले, नर महापुरुष कहलाते हैं।
घर-घर में अलख जगाकर, वे सोया देवत्व जगाते हैं॥
नहीं तीर्थ होते पावन जल से, नहिं देव मिट्टी से बनते हैं।



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हैं चलते-फिरते तीर्थ संत, जो नवसंदेश सुनाते हैं॥
इनके चरणों की धूलि से, बंजर भूमि में फूल खिले।
इनकी पावन वाणी सुनकर, संतप्त हृदय की कली खिले॥

***साधु संत, सत्संगति की, महिमा अपरंपार।***
***इनकी कृपा से मिटते हैं, मन के सभी विकार॥***

यह सुनकर महाप्राज्ञ करुणासिक्त वाणी में बोले—"वत्स, इस देश का यह दुर्भाग्य है कि इस समय बहुत से दुर्बुद्धिग्रस्त व्यक्ति इस प्रकार साधु-संन्यासी का वेश बना लेते हैं। नकली बाल, दाढ़ी, मूँछ, जटाएँ सब कुछ नकली मिल जाते हैं और वे जनता को धोखा देते हैं, इसीलिए साधु-संतों से लोगों का विश्वास उठ गया है। इस देश में कभी कणाद, पिप्पलाद तथा चाणक्य जैसे तपस्वी रहते थे, किंतु आज तो केवल उनकी कथाएँ रह गई हैं। कैसे संत थे इस देश में, जिनके संपर्क में आकर डाकुओं के भी हृदय बदल जाते थे। एक संत के पास एक घोड़ा था, जिसे वे बहुत प्यार करते थे। एक चोर की उस पर नजर थी। एक दिन उस चोर ने एक अपाहिज साधु का वेश बनाया और उस रास्ते पर बैठ गया, जिस रास्ते से वे संत जाते थे। उन्हें देखकर चोर ने प्रार्थना की कि वह अपाहिज है। उसे अस्पताल तक पहुँचा दें। दयालु संत ने उसे घोड़े पर बिठा लिया, परंतु थोड़ी दूर चलकर चोर ने उन्हें नीचे गिरा दिया और बोला—"अब यह घोड़ा मेरा है। तुम जाओ।" संत ने उससे क्या कहा? जानते हैं, उन्होंने कहा—"देखो, घोड़ा तुम ले जाओ, पर इस घटना को किसी को मत बताना, नहीं तो कोई किसी अपाहिज पर दया नहीं करेगा।" यह सुनकर चोर अवाक् रह गया।



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उसने उनके पैर छुए, घोड़ा वापस करके अपने कुकृत्य की क्षमा माँगी, किंतु इस समय तो रक्षक ही भक्षक बन गए हैं। बाड़ ही खेत को खाने लगे तो खेत की रक्षा कौन करेगा?

इस समय इन ठगरूपी साधुओं के कारनामे देखकर शर्म से मस्तक झुक जाता है। कहीं ये चोर-उचक्के साधुओं के वेश में गिरोह बनाकर बच्चों को उठाकर उन्हें अपंग बनाकर उनसे भीख मँगवाते हैं, कहीं हरिद्वार तथा गंगातट पर अड्डे बनाकर भगवान शिव के नाम पर चरस-गांजा पीते हैं। भोली जनता को गुमराह करते हैं। कभी ये देवीजी को बलि दिलवाते हैं तो कहीं सुंदर कन्याओं को देवदासी बनने पर विवश करते हैं। ऐसे धूर्तों को सजा देने के लिए प्रबुद्ध वर्ग को सामने आना चाहिए।

एक स्थान पर एक धूर्त पंडित का वेश बनाकर पूजा करता था, अपने साथ दो व्यक्तियों को रखता। पूजा करते-करते वे दोनों झूमने लगते, कहते—"देवीजी इनके सिर पर आ गई हैं, उनके मुख से इस समय सच बात निकलेगी।" जो अपनी परेशानी बताते तो किसी से कहते—"बकरा चढ़ाओ, किसी से मुर्गा चढ़ाने को कहते, किसी से रुपया, किसी से सोना-चाँदी।" एक दिन एक प्रबुद्ध व्यक्ति वहाँ पहुँचा और उसने पूजा शुरू होते ही झूमना शुरू कर दिया कि मेरे सिर पर देवीजी सवार हो गई हैं और उसने जाकर उस धूर्त पंडित को पकड़कर कहा कि आज तो मुझे इसकी बलि दो तभी मैं प्रसन्न हूँगी। जब सब लोगों ने उसे पकड़कर बाँधना चाहा, तब उसने सबसे क्षमा माँगी। ऐसे लोगों के लिए '**शठे शाठ्यं समाचरेत्**' की नीति अपनानी चाहिए। जनगणना के आँकड़ों के अनुसार इस देश में



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लगभग ८० लाख साधु बाबा हैं, इनमें से कुछ अपाहिजों को छोड़ भी दें तो इनकी संख्या इतनी अधिक है कि यदि ये अपने सच्चे कर्त्तव्य को निभाएँ तो देश में क्रांतिकारी परिवर्तन हो सकता है। ये रचनात्मक अभियान चलाकर योग-शिविर लगाकर स्वास्थ्य-संवर्द्धन की शिक्षा दे सकते हैं, निर्धन बच्चों को शिक्षा एवं अच्छे संस्कार दे सकते हैं, स्वावलंबन की शिक्षा दे सकते हैं, स्वच्छता अभियान चला सकते हैं। सच्चे संतों को वेश बदलने की, बाल मुँड़वाने की, जटाएँ बढ़ाने की अथवा वस्त्र रँगने की आवश्यकता नहीं है। मन को रँगने की आवश्यकता है।

महाप्राज्ञ की वाणी सबको मधुर संदेश दे रही थी। शंकाएँ छिन्न-भिन्न हो रही थीं, परंतु तो भी महर्षि शांडिल्य बोले—"हे भगवान, जो लोग धर्मप्रचारक हैं, उनकी तीर्थयात्रा की बात तो समझ में आ गई, किंतु अन्य व्यक्ति तीर्थयात्रा पर क्यों जाते हैं? इसका कारण बताने की कृपा करें।"

**विद्वांसस्तीर्थयात्राया: फलं ते प्राप्नुवन्त्यलम्।**
**सामान्या अपि ते मर्त्या: प्रत्यक्षं नात्र संशय: ॥**

—४/४/७१

**परिवर्तनमायाति सहजीवन कर्मणा।**
**भविष्यन्निर्मितेर्लाभ: कायाकल्प इवेष्यते॥**

—४/४/८३

जग में साधारण मानव भी, तीर्थयात्रा का फल पाते हैं।
जो घर बैठे नहीं मिल सकता, वह लाभ यात्री पाते हैं॥
तीर्थों में मिलते सबसे जब, तो प्रेमभाव मन में जगता।
मिटता है भेदभाव मन का, सारा जग अपना सा लगता॥



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

होती है व्यावहारिक शिक्षा और ज्ञान परस्पर बढ़ता है।
रहता है स्वस्थ सुखी मानव, जब वह देशाटन करता है॥
सान्निध्य मिले संतों का और, मन के विकार भी मिट जाते।
तन-मन की शांति पाने को, सब तीर्थ मंदिरों में जाते॥

***कल्पवृक्ष की छाया सम, हैं ये तीर्थ स्थान।***
***निर्विकारी हो जाए मन, मिले तभी निर्वाण॥***

कात्यायन ऋषि कहने लगे—"हे विद्वज्जनो, साधारणजनों को भी तीर्थयात्रा का पुण्य मिलता है, इसमें कोई संदेह नहीं। पदयात्रा करने से तप होता है, इससे धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, मानसिक तथा आर्थिक सभी प्रकार का लाभ मिलता है। व्यावहारिक ज्ञान की वृद्धि होती है, परिचय और संपर्क बढ़ता है, इस प्रकार इस तीर्थयात्रा से वह लाभ मिलता है, जो एक जगह बैठकर नहीं मिल सकता।"

ऋषियों ने तीर्थयात्रा के साथ धार्मिक भावना को जोड़कर तीर्थस्थानों के प्रति श्रद्धा जाग्रत की थी, जो अभी भी चली आ रही है। सामान्य गृहस्थ समय निकालकर तीर्थस्नान के लिए जाते हैं। वहाँ कथा-कीर्तन आदि होते रहते हैं, उससे सत्संग का लाभ पाकर जीवन को सफल बनाते हैं। कभी-कभी मन की दुष्प्रवृत्तियाँ भी छूट जाती हैं।

अधिकांश तीर्थस्थान नदी, पर्वत या समुद्र के किनारे हैं। यह मान्यता है कि इनमें स्नान करके अथवा पर्वत की कंदराओं में देवदर्शन से, पापों से छुटकारा मिल जाता है। इसमें भी यही भावना है कि जब मनुष्य पदयात्रा करता है तो तप साधना होती है। भोजन पर नियंत्रण रखता है तो शारीरिक



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्वास्थ्य भी ठीक रहता है। इसके अतिरिक्त वहाँ जाकर दान करता है तो उससे भी पुण्यफल मिलता ही है। यज्ञ के द्वारा जो तीन लाभ बताए गए हैं, देवपूजन, संगठन तथा दान; तीनों लाभ तीर्थयात्रा के रूप में मिल सकते हैं। इसमें केवल यही बात ध्यान रखने की है, यह यात्रा केवल मनोरंजन के लिए नहीं होनी चाहिए, क्योंकि इस समय आने-जाने के साधन सुलभ हैं। अतः कार, ट्रेन यहाँ तक कि हवाई जहाज से भी लोग जाते हैं और वहाँ जाकर खा-पीकर, मौज-मस्ती करके आ जाते हैं। ऐसे लोगों को तीर्थयात्रा का फल नहीं मिलता। दुर्भाग्य की बात है कि इस समय धार्मिक भावना का स्वरूप बिगड़ गया है और धर्माचार्यों ने इसे व्यवसाय बना लिया है। एक व्यक्ति तीर्थ के लिए गया तो पंडे ने कहा—"५१ ब्राह्मणों को भोजन करा दो।" उसने पूछा—"५१ ब्राह्मण कहाँ मिलेंगे?" उसने कहा—"मेरे घर में दस लोग हैं, हमें पाँच दिन का भोजन दे दो तो ५१ ब्राह्मणों का ब्रह्मभोज हो जाएगा।" इन सब कुरीतियों को सुधारने की आवश्यकता है, तभी तीर्थ का लाभ मिल सकता है।

इस यात्रा का दूसरा लाभ सांस्कृतिक एकता का प्रसार है, क्योंकि तीर्थस्थानों पर पूर्व-पश्चिम, उत्तर-दक्षिण सभी स्थानों के भक्तजन मिलते हैं तो देशप्रेम की भावना जगती है और आपस में प्रेमभाव बढ़ता है। देश राष्ट्रीय एकता के सूत्र में बँधता है।

सामाजिक दृष्टि से भी तीर्थयात्रा लाभदायक है। आत्मीयता का क्षेत्र बढ़ता है। सब अपने परिवार जैसे लगते हैं। गायत्री परिवार के नाम से जाना जाने वाला परिवार समस्त विश्व में इसी नाम से प्रसिद्ध है। तीर्थयात्रा से



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आपस में धन का व्यापार भी हो सकता है। एक जगह की वस्तु दूसरी जगह पहुँचती है तो उद्योग धंधे पनपते हैं। कई राष्ट्रों की अर्थनीति तो पर्यटन व्यवसाय पर ही टिकी है। विद्वान विद्या प्रसार के लिए, कलाकार-कलाविस्तार के लिए अभी भी लंबी व छोटी यात्राएँ करते रहते हैं। इस समय तो सेमिनार, मेले आदि भी इसी भावना से लगाए जाते हैं।

विद्या तथा पारस्परिक सद्भाव को बढ़ाने के लिए ऋषि अपने शिष्यों को दूसरे स्थानों पर भेजते रहते थे, जिसे तीर्थयात्रा ही कह सकते हैं। आज भी शांतिकुंज जैसे आश्रम से, नवयुग के सृजन सेनानी ज्ञानरथ लेकर अथवा साइकिलों से ज्ञान साहित्य बाँटने जाते हैं। ये ऋषि परंपरा के अनुयायी स्थान-स्थान पर शिविर तथा यज्ञ का आयोजन भी करते हैं, जिसे तीर्थयात्रा ही कहा जा सकता है। स्थान-स्थान पर रामायण कथा, हरि कीर्तन, भागवतपुराण की कथाएँ होती रहती हैं, जिनके माध्यम से धर्म-लाभ के साथ-साथ चरित्र-निर्माण होता है।

तीर्थों पर संस्कार भी कराए जाते हैं। अभी भी गंगातट पर मुंडन, अन्नप्राशन आदि संस्कार कराने की प्रथा है और अंतिम संस्कार तो विशेष रूप से नदी के किनारे ही कराने की परंपरा आज भी है। अस्थि प्रवाहित करने में भी यही भावना है। गंगा के पावन तट पर अस्थि-विसर्जन से मुक्ति हो जाती है, ऐसा मानते हैं।

तीर्थों में दान-पुण्य की परंपरा भी प्राचीन है। कर्ण, अहिल्याबाई, हर्षवर्द्धन, अशोक, कनिष्क, बिंबसार, प्रसेनजित, प्रद्योत, उदयन आदि राजाओं के दान की महिमा का उल्लेख इतिहासकारों ने किया है। भगवान



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

श्रीकृष्ण ने सुदामा को तीन मुट्ठी चावल के बदले सारी संपदा दान कर दी थी। जिनके पास धन नहीं है वे श्रद्धादान, समयदान देकर अपनी प्रतिभा का प्रचार-प्रसार कर जीवन धन्य बना सकते हैं। इस समय भी गुरुदेव आचार्य श्रीराम शर्मा जी ने इसी प्रकार समयदान तथा अंशदान का आह्वान किया है, किंतु दान सुपात्र को ही देना चाहिए। इसके अतिरिक्त धन देते समय यश, नाम की कामना नहीं करनी चाहिए। धन भी ईमानदारी तथा परिश्रम की कमाई का होना चाहिए।

अंत में तीर्थालय एवं देवालय का महत्त्व बताने के बाद युगऋषि सबको संबोधित करते हुए कहते हैं—"हे नवयुग के सृजन सैनिको! भारतीय संस्कृति में तीर्थ तथा मंदिरों का असाधारण महत्त्व है, क्योंकि ये जनजागरण के केंद्र हैं, किंतु यह ध्यान रखना चाहिए कि जल से तीर्थ नहीं बनते और न मिट्टी से देवता बनते हैं।"

**न देवो विद्यते काष्ठे, न पाषाणे न मृण्यमये।**
**भावे हि विद्यते देवस्तस्माद् भावो हि कारणम्॥**

**प्रज्ञा गीत**

अगर है ज्ञान को पाना, गुरु की शरण आ भाई।
जटा सिर पर रखाने से, कभी नहीं मुक्ति हो पाई॥
बने मूरत पुजारी है, तीरथ यात्रा पियारी है।
करे व्रत नेम भारी हैं भरम मन का मिटै नाही॥
कोटि सूरज शशि तारा, करें प्रकाश मिल सारा।
बिना गुरु घोर अँधियारा, न प्रभु का रूप दरसाई॥



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ईश सम जान गुरुदेवा, लगा तन मन करो सेवा।
मोक्ष पद मेवा मिले, भव बंधन कट जाई॥
अगर है ज्ञान को पाना, गुरु की शरण जा भाई।
जटा सिर............................

***सुमति गई अति लोभ से, मति गई अभिमान।***
***तिमिर गयो रवि देख के, कुमति गई गुरु ज्ञान॥***

मन की निष्ठा एवं पवित्रता से ही इनका लाभ उठाया जा सकता है। सच्चे संत के दर्शन तथा सत्संग से मन पवित्र हो जाता है, अतः तीर्थयात्रा में संतों का दर्शन ही तीर्थयात्रा का मुख्य उद्देश्य है। जिस स्थान पर सत्पुरुष रहते हैं, वही सबसे बड़ा तीर्थ है रामचरितमानस में तुलसीदास जी ने लिखा है—

***'मुद मंगलमय संत समाजू। जिमि जड़ जंगम तीरथ राजू।'***

तीर्थस्नान का फल तो अगले जन्म में मिलता है, किंतु इनके सत्संग का प्रभाव तो तुरंत ही दिखाई देता है।

***मज्जन फल देखिअ तत्काला। काक होंहि पिक बकहु मराला।***

इनकी संगति से मन की भावनाएँ बदलती हैं। काक के समान कटुभाषी भी कोयल के समान मृदुभाषी तथा बगुले के समान ढोंगी भी हंस की भाँति विवेकशील हो जाते हैं। मनुष्य की अंतःकरण की प्रवृत्ति बदलते ही कायाकल्प हो जाता है।

तुम्हारे ये विद्यामंदिर भी सच्चे तीर्थ हैं, जहाँ ज्ञान गंगा में नहाने से मन के कषाय-कल्मष दूर होते हैं। अतः आवश्यकता इस बात की है कि इस



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

समय नालंदा तथा तक्षशिला जैसे विश्वविद्यालय हों तथा चाणक्य, परमहंस, स्वामी विरजानंद जैसे सद्गुरु हों। सौभाग्य की बात है कि युगद्रष्टाओं का ध्यान इस ओर गया है। सामाजिक संस्थाएँ इस कार्य के लिए अग्रसर हैं। शांतिकुंज हरिद्वार में देवसंस्कृति विश्वविद्यालय ऐसा ही तीर्थस्थल है,जहाँ नवयुग के सृजन के सृजन सैनिकों का निर्माण किया जा रहा है। अत: हे ब्रह्मविद्या के उपासको! नवयुग के सृजन सैनिको! देवत्व का जागरण ही सच्ची देवपूजा है और मनुष्य की सेवा सबसे बड़ा धर्म। हे महाशक्ति के उपासको! यदि सच्ची पूजा व तीर्थयात्रा करना चाहते हो तो जाओ उस मंदिर में, उस युगतीर्थ में, जहाँ माँ सरस्वती व भगवती तुम्हारा कायाकल्प करना चाहती हैं। अपने स्वार्थ की बलि देकर स्वयं अपने को सुधारकर युग निर्माण का संकल्प लो, क्योंकि मनुष्य में देवत्व को जगाना ही सबसे बड़ी पूजा व तीर्थयात्रा है। इसके सही स्वरूप को समझकर इस प्रशस्त पुण्य तीर्थयात्रा पर निकल पड़ो, भगवान तुम्हारी सहायता करेगा।

***परपीड़ा से छलकें अश्रु, वे अश्रु ही गंगाजल हैं।***
***दु:ख हरने को पुलक उठे मन, यह पुलकन ही तुलसी दल है॥***
***लक्ष्यहीन को लक्ष्य दिखाने, प्रज्ञा का संदेश सुनाने।***
***जनपथ पर चल पड़े बुद्धजन, यह प्रचलन ही तीर्थाटन है॥***

**इति श्रीमत्प्रज्ञापुराणे ब्रह्मविद्याऽऽत्मविद्ययो:, युगदर्शनयुगसाधनाप्रकटीकरणयो:, श्री कात्यायन ऋषि प्रतिपादिते 'तीर्थ-देवालय' इति प्रकरणो नाम षष्ठोध्याय ॥ ६ ॥**

## आरती श्री प्रज्ञा पुराण की



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ॐ श्री गुरवे नमः

# प्रज्ञा पुराण कथामृतम्

## सप्तम दिवस

## आस्था संकट एवं प्रज्ञावतार प्रकरण

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

### गुरु वंदना

देखो नया मसीहा भारत में फिर से आया।
अज्ञान को हटाकर सोतों को फिर जगाया॥
दुःख कष्ट बढ़ रहा था, विश्वास मिट रहा था।
ऐसे तिमिर में आकर, उँगली पकड़ चलाया॥
देखो.................................
कभी आया राम बनकर, कभी आया कृष्ण बनकर।
इस युग को फिर बदलने, श्रीराम वह कहाया॥
देखो.................................
गूँजा है फिर से मधुवन, जागा है फिर से त्रिभुवन।
प्रज्ञावतार बनकर जीना हमें सिखाया॥
देखो.................................

### प्रज्ञा गीत

युग शक्ति स्वरूपा गायत्री, युग व्यापी संकट आज हरो।
जनमानस पीड़ित कलुषों से, वे कलुष अंबिके दूर करो॥
अघ पाप वृष्टियाँ पुष्ट हुए, दुगने धरती के कष्ट हुए।
जल रही भूमि त्रय तापों से, तुम अमृत की रसधार भरो॥
अब कंस विचरते गली-गली, रावण वृत्ति है पुनः पली।



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पापों का घट भर गया खूब, अवतरो न अब मत देर करो॥
उस युग का अंत करो जिसमें, मिट गईं मनुजता की रस्में।
फिर मानवता जी उठे आज, ऐसे चेतन कण बन बिखरो॥
नवयुग की एकाकार हो तुम, जग नैया की पतवार हो तुम।
देवत्व उदय हो धरती पर, जन-जन में ऐसा प्राण भरो॥
युगशक्ति स्वरूपा गायत्री, युग व्यापी संकट आज हरो।
जनमानस पीड़ित कलुषों से, वे कलुष अंबिके दूर करो॥

*(प्रथम दिवस की भाँति कथा व्यास द्वारा प्रज्ञा पुराण पूजन)*

*(समय को देखते हुए प्रज्ञा गीत व कीर्तन किया जा सकता है)*

आत्मीय परिजनो! देवतुल्य भाइयों एवं देवी स्वरूपा बहनो! आज कथा का समापन दिवस है। अब तक आपने बड़े मनोयोगपूर्वक कथा सुनी है। मानव शरीर पाकर अपनी उपासना, साधना तथा आराधना से मनुष्य किस प्रकार देवता व महात्मा बन सकता है, इसके लिए देवसंस्कृति के मूलभूत सिद्धांत, मुख्य सोपान आपको बताए गए। वर्ण, आश्रम, संस्कार, पर्व, तीर्थ, मंदिर, पुनर्जन्म, स्वर्ग-नरक की परिकल्पना ये सब ऐसे तथ्य हैं, जिनके द्वारा मनुष्य का चरित्र-निर्माण किया जा सकता है और मानव महामानव बन सकता है, फिर भी अज्ञान व अहंकार के वशीभूत होकर मनुष्य भटक जाता है, वह सत्कर्म न करके दुष्कर्मों में लिप्त हो जाता है तो पृथ्वी पर हाहाकार मच जाता है और जब संत और सुधारक भी उसे सुधारने में असमर्थ हो जाते हैं, परिस्थितियाँ मनुष्य के हाथ से बाहर चली जाती हैं, तब ऋषियों ने एक रास्ता और बताया है, वह है—'परमात्मा के प्रति पूर्ण समर्पण'। यह भारतीय संस्कृति की ऐसी विशेषता है, जिसके चमत्कार आदिकाल से लेकर अब तक निरंतर दिखाई दे रहे हैं। जब मनुष्य



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अपनी अंतरात्मा से पुकारता है—'**सुने री मैंने निर्बल के बल राम**' तथा '**गोविंद माधव हरे मुरारे, हे नाथ नारायण वासुदेवा**' तब वह असीम सत्ता साकार रूप धारण करके कभी खंभ से प्रकट होकर राक्षस का वध करती है, कभी द्रौपदी का चीर बढ़ाती है, कभी गज को ग्राह से मुक्ति दिलाती है और कभी नरसी का भात भरती है। भगवान की इन सब लीलाओं से इतिहास पुराण भरे पड़े हैं।

भारत की यह धरती प्रभु को इतनी प्यारी है कि उन्होंने गीता में स्वयं आश्वासन दिया है—

**यदा-यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारतः।**
**अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्॥**

तुलसीदास ने भी कहा है—

*जब जब होहि धरम की हानि,*
*बाढ़हिं असुर अधम अभिमानी।*
*तब तब प्रभु धरि विविध सरीरा,*
*हरहिं कृपा निधि सज्जन पीरा॥*

आज के युग में भी आचार्य श्रीराम शर्मा जी ने प्रज्ञा पुराण की रचना कर भगवान के अवतार का आश्वासन दिया है। परिस्थितियों की विषमताओं के अनुरूप वे प्रभु जन्म लेते हैं। अतः इस समय जब धरती पर आस्था संकट उपस्थित है, मनुष्य अपनी आस्था, श्रद्धा, निष्ठा को खो बैठा है। वे प्रभु महाप्रज्ञा के रूप में प्रकट होंगे, उनका नाम प्रज्ञावतार होगा और वे जन-जन में सद्बुद्धि जगाकर अनास्था रूपी संकट से मुक्ति दिलाएँगे। वे कहते हैं—



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

*अब न घबराओ, न आँसू ही बहाओ तुम।*
*और कोई हो न हो, पर मैं तुम्हारा हूँ॥*
*मैं खुशी के गीत गा-गाकर सुनाऊँगा।*
*जीवन जीने की कला तुमको सिखाऊँगा।*
*तुम सरीखे बेसहारों का मैं सहारा हूँ॥*

आज की विषम परिस्थितियों का वर्णन करते हुए गुरुदेव कहते हैं कि इस समय मनुष्य आस्थाहीन होकर अपनी गौरव गरिमा को खो बैठा है। वह आतंकवादी बन गया है। आस्थाहीन समाज की सद्गति नहीं हो सकती। इस समय जब मनुष्य की आस्था ईश्वर, कर्मफल, धर्म, परलोक, आत्मा, नैतिकता किसी पर भी नहीं, तब वह अपने कर्त्तव्य को कैसे समझ सकता है? श्रद्धा-निष्ठा ही मनुष्य की पाशविक प्रवृत्तियों पर रोक लगाती है। इतिहास साक्षी है कि मनुष्य की आस्था ही उसे कर्त्तव्यनिष्ठ, परोपकारी व महात्मा बनाती है।

भगवान की सहायता तब ही मिलती है, जब मनुष्य को भगवान पर पूर्ण विश्वास हो। महाभारत में कथा है कि दुर्योधन के व्यंग्य वाणों से दुखित भीष्म पितामह ने जब यह प्रतिज्ञा कर ली कि कल मैं पांडवों में से किसी एक को निश्चित मार डालूँगा तो पांडवों के शिविर में हलचल मच गई। भगवान कृष्ण अर्जुन को देखने गए तो देखा वह निश्िंचत होकर सो रहा है। उन्होंने अर्जुन को जगाकर पूछा—"अरे, तुम सो रहे हो, क्या तुमने पितामह की प्रतिज्ञा नहीं सुनी?" अर्जुन ने मुस्कराते हुए कहा—"प्रतिज्ञा सुनी है, परंतु मुझे उसकी क्या चिंता? मैं तो अपना पुरुषार्थ करूँगा। बाकी



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आप जानो। मेरे रक्षक तो आप हैं।" भक्त की यही निष्ठा भगवान को सहायता करने के लिए विवश करती है।

जब द्रौपदी का चीरहरण हो रहा था, द्रौपदी ने धृतराष्ट्र, भीष्म पितामह, द्रोण, कृपाचार्य सभी से सहायता की प्रार्थना की, अपने पाँचों पतियों से भी गुहार की, तब तक भगवान कृष्ण चुप बैठे रहे, किंतु जब उसने साड़ी छोड़कर दोनों हाथ ऊपर उठाकर भगवान को पुकारा तो सारी सभा देखती ही रह गई। पता ही नहीं चल रहा था कि—

***नारी बिच सारी है, कि सारी बिच नारी है।***
***सारी है कि नारी है, कि सारी की ही नारी है॥***

महात्मा गांधी से किसी विदेशी सज्जन ने पूछा—"आप बड़ी से बड़ी कठिनाई में भी निर्भय होकर आगे बढ़ जाते हैं, इसका क्या रहस्य है?" उन्होंने कहा—"मुझे भगवान पर पूर्ण विश्वास है कि परोपकारी की दुर्गति नहीं होती।"

दु:ख की बात यह है कि आज मनुष्य भौतिकवादी बनकर नास्तिक बन गया है। वह अपने को ही भगवान समझ बैठा है। अचिंत्य चिंतन के कारण वह अपने पैरों में कुल्हाड़ी मारकर आत्मघाती बन गया है। अपने लाभ से अधिक उसे इस बात की चिंता है कि पड़ोसी की हानि कैसे हो? एक व्यक्ति को भगवान शिव ने दर्शन देकर कहा—"माँग क्या माँगता है?" वह कहना चाहता था कि हम पड़ोसियों से दूने रहें, पर जल्दी में कह गया कि पड़ोसी हमसे दूने रहें।

भगवान ने कहा— "तथास्तु।" भगवान तो अंतर्धान हो गए, पर वह व्यक्ति सोचने लगा—"हाय! मैंने क्या माँग लिया?" सोचते-सोचते एक



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बात मन में आई। बोला—"भगवान! मेरा एक हाथ टूट जाए" पड़ोसियों के दोनों हाथ टूट गए। बोला—"हे भगवान, मेरी एक आँख फूट जाए तथा एक पैर टूट जाए।" पड़ोसियों के दोनों पैर टूट गए। देखने गया तो मन को बहुत तसल्ली हुई। आज मनुष्य का सोचने का ढंग ही बदल गया है। उसकी इस दुर्बुद्धि का निराकरण केवल सद्बुद्धि की अधिष्ठात्री देवी महाप्रज्ञा ऋतंभरा ही कर सकती है। अतः प्रज्ञा पुराण के प्रथम खंड के प्रथम अध्याय से ही महाप्रज्ञा की महिमा भगवान विष्णु तथा नारद-संवाद से प्रारंभ होती है, जिसमें भगवान देवर्षि से कहते हैं—इस समय अनास्था आतप से धर्मधारणा शुष्क हो गई है। अतः इसके लिए उस महाप्रज्ञा ऋतंभरा की मूसलाधार वर्षा कर दो, जिसकी तुलना कल्पवृक्ष एवं पारस से की गई है। प्रज्ञा पुराण के प्रथम खंड से प्रारंभ यह महाप्रज्ञा ऋतंभरा की गंगोत्री, द्वितीय, तृतीय एवं चतुर्थ खंड के सप्तम अध्याय तक निरंतर बह रही है और चतुर्थ खंड के सातवें अध्याय में महर्षि कात्यायन के मुख से गुरुदेव ने महाप्रज्ञा की महिमा का गुणगान कराया है। आइए हम भी वहीं चलते हैं, जहाँ प्रज्ञा पुराण की कथा हो रही है।

**प्रज्ञा गीत**

सुनो, हृदय पट खोल, सब जन यह प्रज्ञापुराण है।
यह प्रभु का संदेश है इसमें, युग ऋषि का तप प्राण है॥
सुनो............................
जब जब बढ़ी असुरता, तब तब प्रभु ने उसे मिटाया है।
प्रभु के संग-संग युग दूतों ने निज कर्त्तव्य निभाया है॥



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जाग्रत हों युग दूत जिससे, यह ऐसा अभियान है।
सुनो............................
इस युग में बनकर अनास्था, भीषण दानव छाया है।
करने दमन दुष्टता का प्रभु, प्रज्ञा बनकर आया है॥
पलट असुरता जाए जो, ऐसा प्रबल तूफान है।
सुनो............................

महर्षि कात्यायन के आश्रम में आज सत्र का अंतिम दिवस है। अब तक की कथा सुनकर यद्यपि सभी बहुत संतुष्ट थे, किंतु वर्तमान परिस्थिति से आशंकित अगस्त्य ऋषि ने सत्राध्यक्ष से पूछा—"हे देव! इस समय की भयंकर परिस्थितियों को देखकर लगता है कि प्रलय का समय ही निकट है, क्योंकि प्रकृति भी मनुष्य से रुष्ट हो गई है। कहीं अनावृष्टि, कहीं अतिवृष्टि, कहीं बाढ़, कहीं भूचाल, कहीं तूफान धरती को नष्ट करने में लगे हैं। हे देव! बताइए यह संकट किस प्रकार टलेगा?"

**चित्रितातत्वधुनैवात्र पूर्वतो या परिस्थितिः।**
**महाभाग! न सन्देहस्तस्यगंभीरता-विधौ॥**

—४/७/१४

**नियन्ता सहते नैव विनाशं कुत्रचित्प्रभुः।**
**ईदृश्याः शोभनायाः स सृष्टे सृष्टिकरः स्वयम्॥**

—४/७/१७

हे महामते, सच कहते हो, पृथ्वी पर संकट आया है।
सब ही तो हैं आकुल-व्याकुल, हर प्राणी ही घबराया है॥
है वातावरण आज दूषित, यह देख निराशा होती है।
यह सृष्टि नष्ट हो जाएगी, मन में यह शंका होती है॥



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पर बात सुनिश्चित है यह भी, यह दुनिया प्रभु को प्यारी है।
वे ही करते रक्षा इसकी, जब आता संकट भारी है॥
जब धर्म की ग्लानि होती है, और अनाचार बढ़ जाते हैं।
धरती की रक्षा करने को, वे प्रभु वसुधा पर आते हैं॥

***जब जब धरती पर बढ़े, आसुरी अत्याचार।***
***तब तब दीनदयाल हरि, लेते हैं अवतार॥***

यह सुनकर महर्षि कात्यायन ने कहा—"हे महामते! आपने जो आज की विषम परिस्थितियों का चित्रण किया है, उनकी गंभीरता में तनिक भी संदेह नहीं है, फिर भी हमें यह विश्वास करना चाहिए कि सृष्टि विधाता की सर्वोत्तम कलाकृति है, इसे वह बहुत प्यार करते हैं। अत: वे इसे आसानी से नष्ट नहीं होने देंगे। यह उन्होंने आश्वासन भी दिया है कि जब-जब धरती पर संकट आएगा, इसकी रक्षा के लिए अवतार लेंगे। उन्होंने अपना यह वचन निभाया भी है। अत: निराश होने की आवश्यकता नहीं है।"

बात असल में यह है कि जब तक पाप का घड़ा पूरी तरह नहीं भरता तब तक पापी, अत्याचारी यही समझता है कि वही भगवान है और कोई उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकता, किंतु जब पाप का घड़ा भर जाता है, तब उस अत्याचारी का अंत आ जाता है और रावण, कंस जैसे अत्याचारियों को नष्ट होने में एक क्षण भी नहीं लगता। ऐसा अनेक बार हो चुका है।

सृष्टि का निर्माण होने पर चंड-मुंड, महिषासुर जैसे राक्षस उत्पन्न हुए तो महाकाली ने अवतार लेकर उनका वध किया। जब ताड़कासुर ने त्राहि-



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

त्राहि मचा दी तो शिव-पार्वती के सुयोग्य शक्तिशाली पुत्र कार्तिकेय ने उसका वध किया। समुद्र-मंथन के पश्चात समुद्र में से अमृत निकला, जिसे देखकर देवता व असुरों में झगड़ा हो गया। उस समय भगवान ने मोहिनी रूप धारण कर राक्षसों को भ्रमित किया तथा उन्हें वारुणी देकर अमृत देवताओं को पिलाया। सच तो यह है कि यह देवासुर संग्राम सदा से चला आ रहा है। जब राक्षसीय प्रवृत्तियाँ प्रबल हो जाती हैं तो मनुष्य राक्षस बनता है, जब दिव्य प्रवृत्तियाँ उभरती हैं तो मनुष्य देवता बनता है। इस समय देवत्व को उभारने के लिए प्रज्ञावतार की आवश्यकता है।

पुराणों में वर्णित भगवान की इन लीलाओं का वर्णन सुनकर महर्षि अगस्त्य आनंदित हो रहे थे। उन्होंने कहा—"हे भगवन! आपने भगवान की इन लीलाओं का वर्णन सुनाकर उनके अवतारों के विषय में जानने की उत्कंठा पैदा कर दी है। कृपया भगवान के मुख्य अवतारों के विषय में बताकर, यह समझाएँ कि इस समय वे श्रीहरि किस रूप में अवतरित होंगे?" यह सुनकर सत्राध्यक्ष ने कहा—

**अवताराः प्रभोर्दिव्यदर्शिभिर्दशा वर्णिताः।**
**लीलोद्देश्य-स्वरूपाणि पुराणादिषु दृश्यताम्॥**

—४/७/२५

**प्रज्ञावतारो कल्किश्च निष्कलङ्कोऽपि वा पुनः।**
**दशमोऽयं च लोकेऽस्मिन्नवतारस्तु विद्यते॥**

—४/७/५३



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

महाभाग! पुराणों में कहीं पर वर्णन है दस अवतारों का।
कहीं-कहीं पुराणों में आता, वर्णन चौबीस अवतारों का॥
चौबीस अवतारों की महिमा, मानो गायत्री माता हैं।
गायत्री के चौबीस अक्षर, चौबीस शक्ति के दाता हैं॥
कभी मत्स्य बने, कभी कच्छप वे, कभी वराहावतार बनकर आए।
नरसिंह बने, कभी वामन बने, कभी परशुराम बनकर छाए॥
कभी राम, कृष्ण, गौतम बनकर, सब भक्तों के मन हरषाए।
कल्कि अवतार बने दसवें, अब प्रज्ञावतार हैं कहलाए॥

***महाप्रज्ञा अब आ रही, बन दसवाँ अवतार।***
***इनकी पूजा भक्ति से, हो जग का उद्धार॥***

जिज्ञासा शांत करते हुए सत्राध्यक्ष ने कहा—"हे महाभाग! पुराणों में कहीं दस अवतारों का वर्णन है, कहीं चौबीस का। जहाँ चौबीस अवतारों का उल्लेख है, वहाँ महाप्रज्ञा गायत्री के चौबीस अक्षरों की चौबीस शक्तियों का संकेत समझना चाहिए। बात यह है कि अब तक जितने भी अवतार हुए हैं, वे अलग-अलग परिस्थितियों के अनुरूप युग परिवर्तन और धर्म स्थापना के रूप में हुए हैं, लेकिन इस समय विशेष ध्यान देने योग्य बात यह है कि इस युग में वे सभी परिस्थितियाँ एक साथ ही उत्पन्न हो रही हैं। अतः प्रज्ञावतार समस्त अवतारों की भूमिका निभाने के लिए अपनी चौबीस कलाओं के साथ अवतरित हो रहे हैं, यह समझना चाहिए। अब से पहले जो अवतार हुए उनमें राम बारह कला तथा कृष्ण सोलह कला को धारण किए हुए थे, किंतु इस समय चौबीस कलाओं से युक्त माँ गायत्री प्रज्ञावतार रूप में अवतरित हो रही हैं।"



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आपने भगवान के मुख्य अवतारों के विषय में पूछा है तो सर्वप्रथम वे मत्स्यावतार के रूप में आए। राजा मनु स्नान के पश्चात नदी में से अंजलि भरकर सूर्यदेवता को अर्घ्य प्रदान कर रहे थे तो उन्हें आवाज आई—"राजा मेरी रक्षा करो।" राजा ने देखा तो एक छोटी सी मछली उनकी अंजलि में थी। राजा दयालु थे, उन्होंने उसे अपने कमंडलु में डाला। घर तक जाते-जाते उसका आकार बढ़ गया और फिर उन्होंने उसे जलाशय में डाल दिया। जलाशय भी छोटा हुआ तो समुद्र में पहुँचाया। वहाँ उसने राजा से कहा—"आज के सात दिन बाद प्रलय होगी। तुम एक बड़ी नौका में सृष्टि रचना के समस्त बीज रखकर बैठ जाना, तुमसे ही सृष्टि का नवनिर्माण होगा।" प्रलय आरंभ हुई तो मत्स्य ने धक्का देकर नाव को सुरक्षित स्थान पर पहुँचाया और फिर सृष्टि का नवनिर्माण हुआ।

आज का प्रज्ञावतार भी मनु जैसे दयालु परोपकारी व्यक्तियों की खोज में है। सर्वप्रथम भावनाशील व्यक्तियों के कमंडलुरूपी हृदय में बैठकर गायत्री साधना प्रारंभ की और फिर छोटे संगठन से बड़े-बड़े संगठन बनाए। वही गायत्री परिवार आज विश्व भर में फैलकर अपना विस्तार बढ़ा रहा है। आज जब सारा संसार परिवार नियोजन की माँग कर रहा है, वह प्रज्ञावतार मत्स्यावतार की भाँति अपना विस्तार बढ़ा रहा है। उन्होंने पहले एककुंडीय यज्ञ, फिर पाँचकुंडीय, फिर शतकुंडीय, फिर सहस्र-कुंडीय यज्ञ की शृंखला चलाकर अश्वमेध यज्ञ किए हैं। पहले पाँच सौ 'अखण्ड ज्योति' फिर पच्चीस हजार, फिर कई हजार तथा कई लाखों की संख्या में और कई भाषाओं में अपना विस्तार बढ़ा रही है।



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

भगवान का दूसरा अवतार कच्छप रूप में हुआ। समुद्रमंथन के समय भगवान ने मदराचल को अपनी पीठ पर सँभाला। समुद्र से चौदह रत्न निकले, जिन्हें देवताओं व असुरों ने बाँट लिया, किंतु हलाहल विष को देखकर सब भाग खड़े हुए। उस समय उस हलाहल को भगवान शिव ने ही पिया जो कच्छप के रूप में अवतरित थे। आज के युग में भी इस प्रज्ञावतार ने मनुष्यों के कष्टरूपी विषपान करने का संकल्प लिया है। सबकी बुराइयों का जहर स्वयं पीकर वे सबको सद्‌बुद्धि व सुख बाँटना चाहते हैं। आज शिव के पुजारी उनके नाम पर गाँजा-भाँग-दारू पीते हैं। हे शिव के उपासको! यदि शिव की पूजा करनी है तो दूसरों के दुःखरूपी विष को पीना सीखो। आज का प्रज्ञावतार स्वयं विषपान कर दूसरों को गायत्री महामंत्र का अमृत बाँट रहा है और प्रज्ञापुत्रों को आह्वान कर रहा है, उस महाकाल की आवाज सुनो।

**प्रज्ञा गीत**

युग धर्म निभाने को, जो भी अकुलाता है।
**उस जाग्रत आत्मा को, महाकाल बुलाता है॥**
जो राष्ट्र जाग्रति के हित, तत्पर है तन और मन से।
उन पुरोहितों को आज, महाकाल बुलाता है॥
ये देवसंस्कृति अपनी, जो घर-घर जाकर बोए।
उन श्रद्धावानों को, महाकाल बुलाता है॥
युग की पीड़ा से जो भी, दिन-रात तड़पते हैं।
उन संवेदनशीलों को, महाकाल बुलाता है॥



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जो बिगुल बजाकर, ठंढे दुश्मन के करे इरादे।
उन वीर शिवाजी को, महाकाल बुलाता है॥
जो इस दुनिया को बदलें और स्वर्ग धरा पर लाएँ।
उन अश्वमेधियों को, महाकाल बुलाता है॥
जो आज द्रौपदी का दुःख देख चीरहरण रुकवा दे।
उस देवकी नंदन को, महाकाल बुलाता है॥
यदि दृष्टिकोण न बदला, तो खतरा ही खतरा है।
फिर यह हम से नहीं कहना, यमराज बुलाता है॥
सुधाबीज बोने से पहले, कालकूट पीना होगा।
पहन मृत्यु का मुकुट विश्वहित, मर-मरकर जीना होगा॥

तीसरा अवतार वराहरूप में हुआ। स्वर्ण पर दृष्टि रखने वाले हिरण्याक्ष ने सारी संपत्ति पर अधिकार कर लिया। उसने समुद्र में उसे छिपाया तो भगवान वराह बनकर आए। उसे मारकर संपदा को जनसाधारण में वितरित कर दिया। आतंकवादी एवं पूँजीवादी भगवान के प्रकोप से नहीं बच सकते। आज के प्रज्ञावतार ने भी बीस पैसे, पचास पैसे रोज अंशदान निकालने की प्रेरणा दी तथा पूँजीपतियों से लेकर धन-संपदा का गरीबों के हित में प्रयोग किया।

नृसिंह रूप में उन्होंने श्रद्धानिष्ठा का पुनरुद्धार किया। हिरण्यकशिपु नामक असुर ने तपस्या करके यह वरदान माँगा कि मैं पशु या मनुष्य किसी से न मरूँ, न दिन में न रात में, न सुबह न शाम, न जमीन पर न पानी में, बारह मास में कभी न मरूँ और किसी शस्त्र से न मरूँ। यह वर पाकर उसने



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अपने को भगवान घोषित कर दिया। मगर ईश्वर की विचित्र महिमा है। उसी के पुत्र प्रह्लाद ने उसका विरोध किया और जब उसने प्रह्लाद को मारने की कोशिश की तो भगवान ने खंभे से नृसिंह रूप में प्रकट होकर उसे अधिमास में अपनी जांघों पर रखकर नाखूनों से मार डाला और डूबती हुई श्रद्धानिष्ठा को पुनर्स्थापित किया। आज का मानव श्रद्धाविहीन हो रहा है। आज वैज्ञानिक तथा भौतिकवादी अपने को भगवान समझ रहे हैं और भ्रमित हो रहे हैं। आज के प्रज्ञावतार ने भूले-भटके मानव को गायत्री मंत्र द्वारा श्रद्धा का पाठ पढ़ाया है।

वामनावतार के रूप में उन्होंने राजा बलि से तीन पग भूमि माँगकर तीन पद में ज्ञान, कर्म व भक्ति का संदेश दिया है। राजा बलि जब पृथ्वी एवं स्वर्ग का स्वामी बन बैठा तो वामन रूप में श्री भगवान ने सारी धरती व आकाश को तीन पद में नाप लिया और आज के प्रज्ञावतार श्रीराम शर्मा ने महत्त्वाकांक्षी व्यक्तियों की धनलोलुपता को समाप्त कर मिल-बाँटकर खाने का संदेश दिया। धनी व्यक्तियों से धन लेकर दान देने की प्रेरणा दी तथा इतना बड़ा मिशन खड़ा कर दिया। उन्होंने **'सर्वजन हिताय'** तथा **'वसुधैव कुटुंबकम्'** का पाठ पढ़ाया है।

भगवान का छठा अवतार परशुराम जी का है। उनके विषय में कहा जाता है कि उन्होंने इक्कीस बार अत्याचारी राजाओं के सिर काटकर धरती को अन्यायी राजाओं से छुटकारा दिलाया था। आज के प्रज्ञावतार ने भी सिर काटकर नहीं, बल्कि विचारक्रांति अभियान के द्वारा मन के दूषित विचारों को बदलने का संकल्प लिया है। 'युग निर्माण योजना' इसी का रूप है।



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

स्पष्ट दिखाई दे रहा है कि कितने ही दुर्व्यसनी व्यक्ति व्यसन छोड़ रहे हैं। डाकू, चोर दुष्टता छोड़ रहे हैं, मन के दुश्चिंतन को निकालकर ही धरती को स्वर्ग बनाया जा सकता है। ३२०० पुस्तकें लिखकर उन्होंने विचारक्रांति अभियान को चलाया है। उन्होंने सातवें अवतार राम की भाँति असुरता का नाश करने का संकल्प लिया है और मर्यादाओं का पालन किया है। जैसे राम ने राजा-महाराजाओं को छोड़कर रीछ-वानरों का सहारा लिया था, जैसे कृष्ण ने ग्वाल-बालों को साथी बनाया था, उसी प्रकार आज के प्रज्ञावतार ने साधारण जनता का आह्वान किया है और ऋषि परंपरा को पुनर्जीवित किया है। जिस प्रकार विश्वामित्र ने राम को बला-अतिबला विद्या देकर अजेय बना दिया था, उसी प्रकार आज के प्रज्ञावतार ने गायत्री मंत्ररूपी बला-अतिबला विद्या देकर साधकों को अजेय बनाया है, जिससे रामराज्य की स्थापना हो सके।

सोलह कलाओं से युक्त कृष्ण की भाँति गुरुदेव ने कर्मयोग की शिक्षा दी। मोहग्रस्त अर्जुन की भाँति सबको यह समझाया कि—

*अधिकार खोकर बैठ रहना, यह महादुष्कर्म है।*
*न्यायार्थ अपने बंधु को भी, दंड देना धर्म है॥*

भगवान बुद्ध के रूप में नवाँ अवतार हुआ। **बुद्धं शरणं गच्छामि, धर्मं शरणं गच्छामि, संघं शरणं गच्छामि** की घोषणा कर उन्होंने सद्‌बुद्धि, धर्म तथा संगठन की शरण में जाने का आह्वान किया। आज के प्रज्ञावतार ने भी सद्‌बुद्धि की देवी माँ गायत्री की शरण में जाने का संदेश दिया तथा जनता को गायत्री परिवार के रूप में संगठित किया, जिसका विस्तार देश-



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विदेश में देखा जा सकता है। नारी जीवन को नया मोड़ दिया तथा '**वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति**' का विरोध कर गौरक्षा आंदोलन चलाया।

आज का दसवाँ अवतार कल्कि अवतार है, जिसके लिए कहा गया है कि वह घोड़े पर सवार होकर हाथ में तलवार लेकर अत्याचारियों का वध करेगा। इस समय आज के प्रज्ञावतार की अश्वमेध प्रक्रिया में उनका यह रूप देखा जा सकता है, जिसमें तलवार की शक्ति से भी अधिक मंत्रशक्ति का प्रवाह दिखाई दे रहा है। देवसंस्कृति दिग्विजय अभियान के लिए अश्वमेध यज्ञ का घोड़ा दिग्विजय के लिए निकल पड़ा है। उसके हाथ में सांस्कृतिक ध्वज है। अश्वमेध यज्ञों के द्वारा ताप-शाप का शमन किया जा रहा है। मनुष्य शुभ कर्म की ओर अग्रसर हो रहे हैं, यह शुभ लक्षण है।

दस अवतारों के विषय में जानकर महर्षि अगस्त्य ने कहा—"हे देव! आपकी बातें मन में आशा का संचार कर रही हैं। कृपया यह बताइए कि इस कल्कि अवतार का अवतरण कब होगा और इसका क्या स्वरूप होगा?"

**अस्यावतरणस्याद्य भूमिका-काल आगतः।**
**आगते युगसन्धेश्च प्रभाते शुभपर्वणि॥**

—४/७/५४

**महाप्रज्ञेति रूपे च साद्यशक्तिरनुत्तमा।**
**गायत्री केवलं लोके युगशक्तिर्भविष्यति॥**

—४/७/५५

है एक चेतना, एक प्रवाह, अवतार तो बस एक शक्ति है।
नरपशु भी देवता बन जाएँ, यदि मन में सच्ची भक्ति है॥



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मानव खो बैठा है श्रद्धा, प्रज्ञा निष्ठा का नाम नहीं।
भटका है राजपुत्र होकर, सुख-शांति का कुछ काम नहीं॥
अवतरित हो रही महाप्रज्ञा, युगशक्ति बनेंगी सच मानो।
जन-जन में पूजी जाएँगी, इस आदिशक्ति को पहचानो॥
ये वेदमाता, ये देवमाता, जब विश्वमाता बन जाएँगी।
दुःख से पीड़ित धरती पर ये तब अमृत रस बरसाएँगी॥

***गायत्री महामंत्र है, कर लो इसका ध्यान।***
***होगा इसके जाप से, सब जग का कल्याण॥***

ऋषि के प्रश्न को सुनकर मुस्कराते हुए सत्राध्यक्ष ने कहा—"हे ऋषिवर! अवतारों को व्यक्ति नहीं शक्ति–प्रवाह समझना चाहिए। ये अवतारी सत्ताएँ प्रेरणा तथा योजना लेकर धरती पर आती हैं और जाग्रतात्माओं को अपना साथी बनाकर उन्हें श्रेय देती हैं। कल्कि अवतार का यह रूप प्रज्ञावतार के रूप में प्रकट होगा और इनके अवतरण का यही समय है, बल्कि यह कह सकते हैं कि इनका अवतरण हो चुका है और इस चेतना ने अपना कार्य शुरू कर दिया है।"

प्रज्ञावतार के रूप में आद्यशक्ति गायत्री ही अब युगशक्ति बनने जा रही हैं, इन्हें निष्कलंक अवतार कहा गया है, जिसका उद्देश्य है हजारों वर्षों की कालिमा को धोकर निष्कलंक बनाना। यह एक ऐसा प्रवाह है, जिसका प्रभाव सबको झकझोर रहा है। अपने युग का संकट आस्था संकट है और आस्थाएँ चेतना से संबंधित हैं। अत: इसका कार्य चेतना का जागरण ही होगा। गायत्री मंत्र के चौबीस अक्षरों में से प्रत्येक में एक कला किरण विद्यमान है। यह अवतार निराकार होगा और शक्ति रूप में होगा।



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इसे ऐसे समझा जा सकता है कि पिछले अवतारों की समस्याएँ व्यक्ति से संबंधित थीं। एक स्थान पर एक ही व्यक्ति था—जैसे हिरण्याक्ष, हिरण्यकशिपु, बलि, रावण अथवा कंस। उसे मारने के लिए भगवान ने वराह, नृसिंह, वामन, राम तथा कृष्ण रूप में अवतार लिया, किंतु इस समय तो अनास्था का असुर जन-जन में समाया हुआ है और विश्वव्यापी हो रहा है। अतः इस समय मनुष्य की बुद्धि को सन्मार्ग पर लाने के लिए उस सत्ता को निराकार रूप में आना ही होगा। इस गायत्री महामंत्र में मानव मन के सूक्ष्म तंतुओं को झंकृत करने की असीम क्षमता है। अतः इस समय भगवान का अवतरण इसी रूप में होगा।

प्रज्ञावतार बुद्धावतार का पूरक है। बुद्धि प्रधान युग की समस्याएँ चिंतन प्रधान ही हैं। इस समय जो महाभारत लड़ा जाएगा उसमें अपनी दुष्प्रवृत्तियों से संघर्ष करना होगा। गायत्री मंत्र में शब्दों का गुंथन इस प्रकार हुआ है कि बार-बार इसकी माला जपने से मन की ग्रंथियाँ खुलती हैं और दिव्यदृष्टि मिलती है।

गायत्री मंत्र की माला जपने की बात सुनकर एक जिज्ञासु ने पूछा— "महाप्राज्ञ! क्या गायत्री मंत्र की माला जपने से ही मन की ग्रंथियाँ खुल जाती हैं, इसके लिए कितनी माला का जप करना चाहिए?"

यह सुनकर मुस्कराते हुए महाप्राज्ञ ने कहा—"वत्स! केवल माला जपने से ही सफलता मिल जाए यह संभव नहीं है। इसके लिए गायत्री मंत्र के अर्थचिंतन की भी आवश्यकता है। हमें भगवान से प्रार्थना करनी चाहिए कि उस प्राणस्वरूप, दुःखनाशक, आनंदस्वरूप प्रभु के तेजस्वी, पापनाशक,



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

श्रेष्ठ रूप को हम हृदय में धारण करें तथा वह हमारी बुद्धि को सन्मार्ग में ले चले। जब तक हम उसका ध्यान करके तन्मय होकर प्रार्थना नहीं करेंगे, तब तक केवल माला घुमाने से कोई लाभ नहीं होगा।" कहा भी गया है—

***माला तो कर में फिरे, जीभ फिरे मुख मांहि।***
***मनुआ तो चहुँ दिसि फिरै, यह तो सुमिरन नांहि॥***

इस विषय को एक दृष्टांत देकर समझाता हूँ। एक राजा बड़ा दयालु था। मंत्री तथा अन्य सभी व्यक्ति उसकी सरलता का लाभ उठाते थे। एक बार एक व्यक्ति ने मंत्री से कहा—"मेरी कुछ आर्थिक सहायता कर दो तो कृपा होगी।" मंत्री ने कहा—"तुम राजा के लिए जप कर दो तो कुछ तुम्हें दिला देंगे।" वह आदमी माला लेकर नदी किनारे बैठ गया और कहने लगा—"मैं राजा का जप करूँ, मैं राजा का जप करूँ।" दूसरे व्यक्ति ने सोचा—यह तो आमदनी का बड़ा सरल तरीका है। वह भी मंत्री के पास गया और बोला—"कुछ मेरी भी मदद कर दो।" मंत्री ने कहा—"जाओ, जो वह करता है, वही तुम भी करो, तुम्हें भी कुछ दिला देंगे।" वह भी माला लेकर बैठ गया और कहने लगा—"जो तू करे, सो मैं करूँ, जो तू करे सो मैं करूँ।" तीसरा आदमी आया और कुछ पाने की प्रार्थना की। मंत्री ने कहा—"ऐसे कब तक निभेगा?" जाओ तुम भी माला जपो। वह जपने लगा—"ऐसे कब तक निभेगा, ऐसे कब तक निभेगा? " एक आदमी और आकर खुशामद करने लगा। मंत्री ने कहा—"भैया जब तक निभे तुम भी जप कर लो।" वह जपने लगा—"जब तक निभेगा तब तक, जब तक निभेगा तब तक।" अब चारों जप कर रहे हैं। पहला—"मैं राजा का जप



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

करूँ," दूसरा—"जो तू करे सो मैं करूँ," तीसरा—"ऐसे कब तक निभेगा" तथा चौथा—"जब तक निभेगा तब तक" जपते रहे। एक दिन राजा से किसी ने शिकायत की। राजा ने जाकर सुना तो सबको भगाया। आप भी यदि कहो कि मैं गायत्री जप करूँ, मैं गायत्री जप करूँ तो भला गायत्री माता कैसे प्रसन्न होंगी?

यह सुनकर एक श्रद्धालु महिला ने कहा—"गुरुदेव! इस मंत्र का अर्थ क्या है? हमें यह समझाने की कृपा करें।" श्रद्धालु माता की यह वाणी सुनकर महाप्राज्ञ भाव-विह्वल हो गए।

उन्होंने इस मंत्र का अर्थ बताते हुए कहा कि यद्यपि यह मंत्र पारसमणि व कल्पवृक्ष के समान महत्त्वपूर्ण है, इसके अर्थ भी गूढ़ हैं, पर मैं सरल अर्थ ही आपको बताता हूँ। इस मंत्र में चौदह अक्षर हैं और ये चौदह अक्षर समुद्रमंथन से निकले चौदह रत्न के समान हैं।

सर्वप्रथम '**ॐ**' यह परमात्मा का सर्वश्रेष्ठ नाम है। यह प्रणव अक्षर समस्त ब्रह्मांड में व्याप्त है। अ+उ+म् से मिलकर ओ३म् शब्द बनता है, जिसमें सारा विश्व समा जाता है।

'**भूर्भुवः स्वः**' ये तीन व्याहृतियाँ हैं जो भगवान के विराट रूप का बोध कराती हैं। भूः—प्राणस्वरूप, भुवः-दुःखनाशक, स्वः-आनंदस्वरूप। तत्-उस, सवितुः-तेजस्वी, प्रकाशमान, वरेण्यं—वरण करने योग्य, श्रेष्ठ, भर्गो—पापनाशक, देवस्य—दिव्यता को देने वाले को, धीमहि-धारण करें। धियो-बुद्धि, यो-जो, नः- हमारी, प्रचोदयात्-प्रेरित करे।"



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इस प्रकार इसका भावार्थ हुआ—उस प्राणस्वरूप, दुःखनाशक, सुखस्वरूप, श्रेष्ठ, तेजस्वी, पापनाशक, देवस्वरूप परमात्मा को हम अंतःकरण में धारण करें। वह परमात्मा हमारी बुद्धि को सन्मार्ग में प्रेरित करे।

इसे और सरल भाषा में इस प्रकार समझ सकते हैं कि **ॐ भूर्भुवः स्वः** का अर्थ है कि वह परमात्मा तीनों लोकों में समाया हुआ है। वह हमारे प्रत्येक कार्य को देखता है। जब हम यह समझेंगे कि वह हमें हमेशा और सब जगह देखता है तो हम गलत काम कर ही नहीं सकते। एक पिता ने अपने पुत्र को बताया—"भगवान सब जगह है, वह सब कुछ देखता है।" बच्चे ने विश्वास कर लिया। एक दिन घर में कुछ खाने को नहीं था। पिता ने बेटे से कहा—"बेटा! चलो गाँव के बाहर खेत से थोड़ा गेहूँ काटकर ले आते हैं। थोड़ा-थोड़ा काटेंगे तो किसी को कुछ पता नहीं चलेगा। तुम देखते रहना, कोई आए तो बता देना।" बेटा एक स्थान पर खड़ा होकर देखने लगा तो थोड़ी देर में चिल्लाया—"बापू, बापू!" वह आदमी घबराकर बोला—"कोई देख रहा है क्या?" उसने कहा—"हाँ बापू, वह परमात्मा देख रहा है।" उसने पुत्र को गले लगाकर कहा—"बेटे, शाबाश, आज तुमने मुझे बड़े पाप से बचा लिया। भगवान से प्रार्थना है, तुम बड़े होकर महान बनो।" गायत्री मंत्र के जप तथा अर्थ को सुनकर एक दीन-हीन सी दिखाई देने वाली महिला ने कहा—"गुरुदेव! आप तो हमें गायत्री जप करने के लिए कह रहे हैं, किंतु हमारे पंडित जी तो कहते हैं कि स्त्रियों और शूद्रों को गायत्री जप नहीं करना चाहिए।"



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

यह सुनकर महाप्राज्ञ की आँखों में आँसू भर आए। उन्होंने दुखी स्वर में कहा—"बेटी, इन धर्मांध पंडितों ने देश को बहुत हानि पहुँचाई है। मातृशक्ति को उपेक्षित कर उन्हें दीन-हीन स्थिति में पहुँचाने का दुष्परिणाम यह हुआ कि जो माताएँ राम, कृष्ण, अभिमन्यु, अर्जुन को जन्म देकर उनको वीर, सुशिक्षित और कर्मयोगी बनाती थीं, उनकी शिक्षा-दीक्षा ही जब समाप्त हो गई और जब उन्हें शूद्रों की श्रेणी में मान लिया गया तो वीर संतान कहाँ से पैदा होती? परिणाम यही हुआ कि देश रसातल को चला गया। इसी देश में कहा गया था—'**यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता।**' जहाँ नारी की पूजा होती है, वहाँ देवता निवास करते हैं। यहाँ स्त्रियाँ ऋषिकाएँ होती थीं, किंतु बाल-विवाह, बहु-विवाह, परदाप्रथा, दहेज, सती जैसी परंपराओं ने स्त्रियों को कठपुतली एवं चरणदासी बनाकर रख दिया। जरा सोचो, माता को पुत्री कितनी प्यारी होती है,माता की पूजा बेटी न करे, माता से बेटी को दूर कर दिया जाए, इसका क्या औचित्य है? मेरी प्यारी बेटियो! अब जागरण का समय है, तुम माता गायत्री की गोद में बैठकर उनकी पूजा-उपासना करो, अपने अस्तित्व को समझो और अपनी सोई शक्ति को जगाओ, तभी देश का कल्याण होगा। '**माता ही यदि है अज्ञान, कैसे योग्य बने संतान**' कहते-कहते महाप्राज्ञ का कंठ अवरुद्ध हो गया। महिलाओं की आँखों से आँसू बह रहे थे।

तभी एक क्षीणकाय वृद्ध पुरुष ने कहा—"गुरुदेव! पंडितों ने तो हम शूद्रों से भी माँ की पूजा का अधिकार छीन लिया है। हम लोग तो मंदिर में प्रवेश भी नहीं कर सकते। क्या हम गायत्री माँ की पूजा कर सकते हैं?"



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दुखी स्वर में महाप्राज्ञ ने उत्तर दिया—"वत्स! ईश्वर ने संसार के सभी मनुष्यों को एक जैसा रूप, रंग, बुद्धि-कौशल, आँखें, नाक, श्रवणशक्ति दी है। यह वर्ण-व्यवस्था प्राचीनकाल में कर्म के आधार पर होती थी। पूजापाठी, त्यागी, उत्तम आचरण करने वाले ब्रह्मनिष्ठ को ब्राह्मण कहते थे, साहसी तथा अत्याचार का विरोध करने वाले क्षत्रिय, रुपयों-पैसों का व्यापार करने वाले वैश्य तथा बुद्धिबल से हीन सेवक शूद्र समझे जाते थे, किंतु बाद में जन्म के आधार पर ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र माने जाने लगे। वेदों में कई मंत्रद्रष्टा शूद्र माता या पिता की संतान थे। देवर्षि नारद दासी-पुत्र थे, ऐतरेय इतरादासी के पुत्र थे। वाल्मीकि ऋषि डाकू थे तथा अन्य कितने ही उदाहरण हैं, जिन्होंने माता की उपासना कर सिद्धि प्राप्त की थी। विश्वामित्र ने राजर्षि के स्थान पर ब्रह्मर्षि की उपाधि प्राप्त की थी। माता की दृष्टि में उनकी सब संतान एकसी हैं। आप सब माता की गोद में बैठकर साधना करो।

गुरुदेव की अमृतवाणी से आश्वस्त होकर एक व्यक्ति ने पूछा—"महाप्राज्ञ! वेद तो अपौरुषेय हैं, फिर गायत्री मंत्र को माता तथा वेदमाता क्यों कहा गया है? कृपया इस जिज्ञासा का निवारण करें।"

**प्रज्ञावतार एषोऽत्र स्वरूपाद् व्यापको मतः।**
**सूक्ष्मं युगान्तरायाश्च चेतनायाः स्वरूपतः॥**

—४/७/५८

**प्रेरणाः संवहन्तस्तेऽसंख्याः प्रज्ञासुताः स्वतः।**
**कार्यक्षेत्रे गमिष्यन्ति तेनागन्ता सुचेतना॥**

—४/७/६०



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वेदों का ज्ञान भरा इनमें, ये वेदमाता कहलाती हैं।
सद्प्रज्ञा जगा मानव मन में, सोया देवत्व जगाती हैं॥
हो पुत्र कुपुत्र भले ही पर, माता न कुमाता होती है।
मूरख पुत्रों पर भी माँ की ममता की वर्षा होती है॥
इनकी ममता को पाकर के, नरपशु भी देवता बनता है।
अनगढ़ धातु सा गल तपकर, वह नव साँचे में ढलता है॥
दुर्जन पुत्रों पर भी इनकी, जब दयादृष्टि हो जाती है।
रत्नाकर बनते वाल्मीकि, माँ अमृत पान कराती है॥

***चौबीस अक्षर में भरा, सब वेदों का ज्ञान।***
***वेदमाता कहते इन्हें, कर लो इनका ध्यान॥***

युगद्रष्टा ने मुस्कराते हुए कहा—"वत्स! गायत्री मंत्र है, यह ठीक है, किंतु ईश्वर की पूजा करते समय ईश्वर से जो संबंध स्थापित करते हैं, उनमें सबसे पहले माता का ही नाम आता है—**'त्वमेव माता च पिता त्वमेव'** तुम्ही हो माता, पिता तुम्ही हो। कारण स्पष्ट है कि पुत्र, कुपुत्र हो सकता है, पर माता, कुमाता नहीं हो सकती। माता का वात्सल्य दीन-दुखी पुत्रों पर ज्यादा होता है। एक बात और ईश्वर की पूजा बालक की भाँति सरल चित्त से करने से भगवान जल्दी प्रसन्न होते हैं। छल-कपट से उन्हें कोई नहीं पा सकता।"

एक कहानी से तुम्हें समझाता हूँ। एक गरीब स्त्री थी। रामू नाम का उसका एक बेटा था। उसने उसे स्कूल भेजा, पर स्कूल दूर था। रास्ते में जंगल पड़ता था। बालक ने कहा—"माँ, मुझे पहुँचाने चलो। मुझे रास्ते में डर लगता है।" माँ ने कहा—"बेटा, मैं घरों में काम करने जाती हूँ, तेरे



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

साथ नहीं जा सकती। हाँ! जंगल में तो तेरा भाई गोपाल रहता है, तू उसे बुला लेना।" रामू ने जंगल में 'गोपाल भैया' को पुकारा तो कृष्ण भगवान ग्वाले के रूप में आ गए और रोज उसे स्कूल पहुँचा देते। एक दिन गुरुजी ने कहा—"कल यहाँ उत्सव है। सब बच्चे कुछ न कुछ लेकर आएँ।" रामू की माँ ने कहा—"बेटा, अपने गोपाल भैया से कुछ माँग लेना।" गोपाल भैया ने दही की एक छोटी सी मटकी दे दी। गुरुजी छोटी मटकी को देखकर गुस्सा हुए और बोले—"जा इसे उस कोने में रख दे।" संयोग की बात खाना खाते समय दही समाप्त हो गया तो गुरुजी को मटकी याद आई। उसमें से दही निकाला, तो मटकी खाली ही नहीं हो रही थी।

गुरुजी ने रामू से पूछा—"यह मटकी कहाँ से लाए हो?" उसने बताया तो गुरुजी समझ गए कि यह भगवान का ही चमत्कार है। उन्होंने कहा—"तू मुझे गोपाल भैया के दर्शन करा दे।" रामू ने गोपाल भैया को पुकारा, लेकिन आवाज आई—"मैं तेरे गुरुजी के सामने नहीं आ सकता, क्योंकि उनका मन तुम्हारे जैसा निर्मल नहीं है।" यह सुनकर गुरुजी सब कुछ छोड़कर भगवान की पूजा में लग गए। तात्पर्य यह है कि गायत्री माता, माता के समान दयालु हैं, जो बालक बनकर उनकी शरण में जाता है,वे उस पर दया करती हैं।

इन्हें वेदमाता इसलिए कहते हैं कि ये ज्ञान-विज्ञान की जननी हैं। ब्रह्माजी ने सृष्टि निर्माण से पूर्व चारों मुख से एक-एक चरण की स्तुति कर चारों वेदों को प्रकट किया था। अथर्ववेद में इनकी स्तुति वेदमाता कहकर की गई है—'**ॐ स्तुता मया वरदा वेदमाता प्रचोदयन्ताम्**'।



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ये नरपशु में भी देवत्व जगा देती हैं। अतः इन्हें देवमाता कहा गया है। इनकी आराधना कर जब सब मनुष्य देवत्व को धारण करेंगे तो ये विश्वमाता के पद पर आसीन होंगी और पृथ्वी स्वर्ग बन जाएगी। महर्षि वसिष्ठ ने इन्हीं की उपासना कर विशिष्ट पद प्राप्त किया था तथा विश्वामित्र राजर्षि से ब्रह्मर्षि बन गए थे। अतः इस समय इनकी पूजा की आवश्यकता है। महर्षि वसिष्ठ एवं विश्वामित्र का नाम सुनकर एक व्यक्ति ने पूछा— "गुरुदेव! हमने सुना है कि गायत्री को ब्रह्मा, वसिष्ठ तथा विश्वामित्र तीनों ने शाप देकर कीलित कर दिया है। क्या यह सच है?"

हँसते हुए गुरुदेव ने कहा—"वत्स, पौराणिक कथाओं के अनुसार गायत्री ब्रह्माजी की महान शक्ति हैं, इन्हीं के बल पर उन्होंने सृष्टि निर्मित की थी। वसिष्ठ जी ने सवा करोड़ गायत्री जप करके विशिष्ट पद प्राप्त किया था। विश्वामित्र इन्हीं की साधना में ब्रह्मर्षि बने, वे भला इन्हें शाप क्या देंगे?" इस विषय में इतना ही कहा जा सकता है कि इस मंत्र की महान शक्ति को जानकर, इन तीनों ने सोचा होगा कि इस महाशक्ति का कोई दुरुपयोग न करे, इसके अधिकारी वही बनें जो सृष्टि के निर्माण तथा लोक-कल्याण में सहयोगी हों, विनाश में नहीं। अतः उन्होंने यही सोचकर इसे कीलित कर दिया होगा। इसे गुरुमंत्र कहा गया है। अतः किसी वसिष्ठ, विश्वामित्र जैसे सद्गुरु के मार्गदर्शन में ही यह साधना करनी चाहिए, तभी इसका पूर्ण लाभ होगा। कीलित का यही अर्थ समझना चाहिए कि वाममार्गी साधना करके इसका दुरुपयोग नहीं करना चाहिए। क्योंकि कहा है—



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

***जाका गुरु भी अंधला, चेला खरा निरंध।***
***अंधा, अंधे ठेलिया दोनों कूप पड़ंत॥***

तांत्रिक साधना में हानि का भय रहता है। एक तांत्रिक ने एक राजकुमारी को पाने के लिए श्मशान साधना करके भैरव को सिद्ध किया। राजकुमारी गायत्री साधक थी। अत: भैरव का उस पर वश नहीं चला, तो उसने तांत्रिक का ही सिर फोड़ दिया। अत: वाममार्गी साधना से बचना चाहिए। यह साधना आत्मकल्याण तथा विश्वकल्याण के लिए की जाए तो इसके परिणाम बहुत अच्छे होते हैं। इस युग में मदनमोहन मालवीय जी, महर्षि अरविंद, ऋषि दयानंद, आनंद स्वामी आदि ने इस मंत्र की उपासना करके जीवन सफल बनाया है। महात्मा गांधी ने इसका एक चरण—'**सबको सन्मति दे भगवान अर्थात धियो यो न: प्रचोदयात्**' कहकर सारे देश को जगा दिया।

पूज्य गुरुदेव ने इन्हीं की साधना करके सारे विश्व में गायत्री परिवार खड़ा कर दिया है तथा युग निर्माण का संकल्प कर इन्हें विश्वमाता के पद पर आसीन करने का निश्चय किया है। अत: व्यर्थ के भ्रमजाल में न पड़कर साधना कीजिए। पवित्र मन से की गई साधना निष्फल नहीं जाती।

**मातृ वंदना**

ऐसी कृपा करो जग जननी, जीवन गायत्रीमय हो।
सद्चिंतन सद्भाव जगे, सद्कर्मों की जग में जय हो॥
कण-कण में अणु-अणु में माता, रूप तुम्हारा पाएँ हम।
अपना ही परिवार मिले माँ, जहाँ कहीं भी जाएँ हम॥



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

धूप खिले नयनों में उजली, मन में नव सूर्योदय हो।
सद्चिंतन................................
जीवनलक्ष्य सुझाया तुमने, कभी न उसको भूलें हम।
धन साधन सम्मान मिले लो, जरा न मद में फूलें हम॥
कभी न हों पग डग-मग डग-मग, पलभर भी न कभी भय हो।
सद्चिंतन................................
कितने ही दानी बन जाएँ, अथवा हों बलिदानी हम।
किंतु किसी पल भी तो मन में, हो न सकें अभिमानी हम॥
हर चिंतन हर कर्म हमारा, माता तुम में ही लय हो।
सद्चिंतन................................
ऐसा अंतःकरण करो हे माता! जैसे मानसरोवर हो।
वाणी हो वेदों सी पावन, कर्म सुमन से सुंदर हो॥
कृपा तुम्हारी पाकर माता, मन पावन देवालय हो।
सद्चिंतन सद्भाव जगे, सद्कर्मों की जग में जय हो॥

पूज्यश्री की मधुर वाणी सुनकर सभी की शंकाएँ समाप्त हो रही थीं। सभी प्रसन्न थे, किंतु फिर भी कुछ जिज्ञासु कुछ और पूछना चाहते थे। एक नवयुवक ने साहस करके विनम्र स्वर में कहा—"महामते! मेरे पूज्य दादाश्री आर्यसमाज के प्रबल समर्थक हैं। अतः वे मेरी माताजी को पूजाघर में चित्र नहीं रखने देते। क्या चित्र रखना आवश्यक है? कृपया चित्र का महत्त्व समझाइए।"

प्रश्न की गंभीरता को देखते हुए महाप्राज्ञ ने कहा—"हे सौम्य! तुमने समय के अनुरूप बहुत सुंदर प्रश्न पूछा है। बात यह है कि मानव मन बहुत



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

चंचल है, यदि कोई उपकरण सामने होता है, तो उसका ध्यान करना सरल होता है। यदि कोई प्रतिरूप सामने नहीं होता तो मन भटकता रहता है। इसे इस प्रकार समझ सकते हैं, जैसे वर्णमाला का ज्ञान कराने के लिए बच्चों के सामने 'अ' से अनार तथा 'आ' से आम का चित्र बना देते हैं और उसे अक्षरज्ञान कराते हैं, उसी प्रकार प्रारंभिक अवस्था में ही इन चित्रों की आवश्यकता है। यदि साधक नेत्र बंद करते ही समाधिस्थ हो जाए तो इन उपकरणों की आवश्यकता नहीं रहती।

एक बात यह भी है कि गायत्री माता के चित्र में जो प्रतीक बताए गए हैं, उससे साधक को साधना करने में सहायता मिलती है, जैसे माँ गायत्री हंसवाहिनी हैं अर्थात मनुष्य को हंस की भाँति नीर-क्षीर विवेकी होना चाहिए। उनके एक हाथ में पात्र तथा एक में वेदज्ञान पुस्तिका है, मनुष्य को अमृत पाने के लिए पात्रता की आवश्यकता है तथा आत्मज्ञान के लिए स्वाध्याय की। अतः ये चित्र पूजा करने में सहायक होते हैं।

दूसरी बात यह भी है कि जब इन चित्रों में श्रद्धानिष्ठा द्वारा प्राण-प्रतिष्ठा कर दी जाती है, तब ये मृण्मयी मूर्तियाँ चिन्मयी होकर सजीव हो जाती हैं। इसी के आधार पर प्रह्लाद की भक्ति से प्रसन्न नृसिंह भगवान खंभे से प्रकट हुए थे। गिरधर मीरा के साथ नाचते थे। परमहंस के साथ काली भोजन करती थीं। इसके अतिरिक्त यह बताओ, तुम्हारे दादाजी या पिताजी के फोटो को कोई पैरों से कुचले तो क्या तुम्हें अच्छा लगेगा? नहीं न, क्योंकि तुम्हारी निष्ठा उसमें है। अतः यही बात मूर्तिपूजा के विषय में भी समझनी चाहिए।



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

श्रोतागण मंत्रमुग्ध होकर यह सब सुन रहे थे। तभी एक श्रद्धालु ने पूछा—"हे देव! मेरे मन में एक जिज्ञासा और है। जब हम गायत्री साधना करते हैं, तभी कुछ न कुछ गड़बड़ी हो जाती है। हम घबरा जाते हैं, ऐसा क्यों होता है। क्या हमसे कुछ भूल हो जाती है?" यह प्रश्न सुनकर जिज्ञासा शांत करते हुए महाप्राज्ञ ने कहा—"वत्स, यह तुम्हारा भ्रम है। गायत्री उपासना के कर्मकांड में कमी रहने से अनिष्ट नहीं होता। गायत्री पूजा सौम्य स्तर की उपासना है, उसे मातृशक्ति के समान समझना चाहिए। यह ठीक है कि माता के प्रति लोकाचार में त्रुटि नहीं करनी चाहिए, पर केवल क्रियाकृत्य में कोई त्रुटि रहने से माता के वात्सल्य में कुछ कमी आ जाएगी, यह धारणा गलत है। गीता के अनुसार सौम्य उपासना में उलटा परिणाम कभी नहीं हो सकता। उसका थोड़ा सा सहारा भी अनिष्ट से रक्षा करता है। बच्चा माँ से तुतलाकर भी बोलता है तो माँ उसकी बात समझ लेती है और उसकी इच्छापूर्ति करती है। माँ तो भावना देखती हैं, बाह्य कर्मकांड नहीं।"

आप सब जानते हैं कि वाल्मीकि ऋषि ने राम का उलटा नाम जपा था—'**उलटा नाम जपत जग जाना, वाल्मीकि भए ब्रह्म समाना**' यह विधि-विधान में पूर्ण त्रुटि ही थी, पर उनकी भक्तिभावना को देखकर ही भगवान ने उन्हें सिद्धि प्रदान की। इस विषय में एक सच्ची घटना सुनाता हूँ, जिसे सुनकर तुम्हारा भ्रम दूर हो जाएगा।

'**माधव निदानम्**' ग्रंथ के निर्माता माधवाचार्य, माँ गायत्री के उपासक थे। उन्होंने बारह वर्ष तक वृंदावन में रहकर गायत्री साधना की, तो भी उन्हें



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सिद्धि नहीं मिली। तब वे काशी चले गए। वहाँ उन्होंने भैरव की उपासना की। एक वर्ष बाद भैरव ने कहा—"मैं आपसे प्रसन्न हूँ माँगो, क्या माँगते हो।" उन्होंने कहा—"पहले आप मेरे सामने आइए, तब वरदान देना।" भैरव ने कहा—"आप गायत्री साधक हो, मैं आपके सामने नहीं आ सकता।" भैरव का यह उत्तर सुनकर वे आश्चर्यचकित हो गए। उन्होंने कहा—"जब आप मेरे सामने ही नहीं आ सकते तो वरदान क्या देंगे? कृपया मुझे इतना बता दें कि मेरी बारह वर्ष की साधना सफल क्यों नहीं हुई?" भैरव ने कहा—"बारह वर्ष की साधना से आपके पिछले जन्मों के पाप कर्म जलकर भस्म हो गए हैं। अब यदि आप साधना करेंगे तो आपको सफलता मिलेगी।" यह कहकर भैरव ने उन्हें पिछले जन्मों के दर्शन कराए। यह देखकर वे फिर वृंदावन चले गए, वहाँ जाकर उन्होंने गायत्री साधना की और गायत्री माता के दर्शन कर उनका आशीर्वाद पाकर '**माधव निदानम्**' नामक ग्रंथ की रचना की।

अत: यह कहा जा सकता है कि गायत्री साधना शुरू करते ही पूर्वजन्म के पाप कटने लगते हैं, अत: उसके परिणाम में देरी हो जाती है। हाँ तांत्रिक साधना क्योंकि भौतिक वस्तुओं की प्राप्ति के लिए होती है, उसका उद्देश्य **बहुजन हिताय** नहीं होता। अत: तांत्रिक साधना में त्रुटि होने पर हानि हो सकती है।

महाप्राज्ञ की वाणी अमृत के समान सभी के मन में नवजीवन की नई उमंगें भर रही थी। प्रज्ञावतार के अवतरण एवं प्रज्ञायुग के आगमन की आशा से सभी के हृदय में नव-उल्लास भर रहा था। एक जिज्ञासु ने



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विनम्र स्वर में पूछा—"हे देव! कृपया यह बताएँ कि यह प्रज्ञायुग कैसा होगा?"

**सत्राध्यक्ष उवाच—**

**यथा प्राभातिके जाते ऋषयोऽत्रारुणोदये।**
**अन्धकारोऽथ संव्याप्तोऽपैति दूरं तथैव तु॥**

—४/७/६३

**समस्यास्ताः विकाराश्च विपदो वा विभीषिकाः।**
**समाहिता स्वतः स्युस्ताः प्रज्ञावतरणे भुवि॥**

—४/७/६४

सूरज के उगते ही जैसे, सब अंधकार मिट जाता है।
सद्ज्ञान जागते ही मन में, निर्मल प्रकाश छा जाता है॥
प्रज्ञावतार के आते ही, सब विभीषिका मिट जाएगी।
भव आतप पीड़ित धरती को, ये माँ फिर से सरसाएगी॥
स्वागत को तुम तैयार रहो, सतयुग धरती पर आएगा।
यह प्यारा देश हमारा ही, फिर जगद्गुरु कहलाएगा॥
अब शंखनाद कर दो जग में, महाप्रज्ञा का सम्मान करो।
अब जाओ सृजन सैनिको तुम, नूतन प्रज्ञा अभियान करो॥

***कष्ट-कंटकों में खिले, जीवन सुमन समान।***
***आत्मतुष्टि हरि कृपा मिले, जग में हो सम्मान॥***

सत्र की सफलता से सभी आनंदित थे। महाप्राज्ञ ने सबके हृदय में नवीन आशा का संचार करते हुए कहा—"हे महाभाग! जैसे प्रभात काल में सूर्य के उदित होते ही सारा अंधकार दूर हो जाता है, उसी प्रकार प्रज्ञावतार के आते ही सब समस्याओं का समाधान हो जाएगा। सब



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आपत्तियाँ, सब दुष्प्रवृत्तियाँ तथा विभीषिकाएँ समाप्त हो जाएँगी। यह युग रामराज्य की भाँति होगा। इस युग में प्रत्येक व्यक्ति समाज के हित का चिंतन करेगा। मनुष्य की महानता धनबल के आधार पर नहीं, अपितु उसके चरित्र के आधार पर होगी। मर्यादाओं को महत्त्व दिया जाएगा तथा परिवार संस्कारवान होंगे। माता-पिता, गुरुजनों का सम्मान किया जाएगा। आपस में सब मिल-जुलकर रहेंगे।''

हे भद्रजनो! इस पर अविश्वास करने की आवश्यकता नहीं, क्योंकि आने वाले समय में प्रज्ञावतार का प्रभाव जन-जन के मन में सोए हुए उल्लास को जगाएगा, कार्यक्षमता को बढ़ा देगा, सद्चिंतन को बढ़ावा देगा। अवतार प्रक्रिया असंभव को भी संभव बना सकती है।

इस समय की परिस्थितियों को देखकर अवश्य लगता है कि पता नहीं क्या होगा? किंतु सभी भविष्यद्रष्टाओं की भविष्यवाणी संकेत कर रही है कि प्रज्ञावतार का अवतरण हो चुका है। जिस प्रकार सुबह होने से पहले मुर्गा बाँग देता है, चिड़ियाँ चहचहा उठती हैं, कोई विश्वास करे न करे, परंतु विज्ञजन समझ लेते हैं कि भोर हो गई है, उसी प्रकार अनेक भविष्यद्रष्टा प्रज्ञायुग के शुभागमन की सूचना दे चुके हैं। महर्षि अरविंद का कथन है—''मेरे अंतःकरण में देवी स्फुरणाएँ हिलोरें भर रही हैं और कह रही हैं कि भारत का अभ्युदय बहुत निकट है। मेरा विश्वास है कि निकट भविष्य में भारत में एक अभियान प्रारंभ होगा जो असुरता को नष्ट करके देश की प्रतिष्ठा और गौरव को बढ़ाएगा। यह आंदोलन फिर से सतयुग लाएगा।''



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

हे अमृत संतानो ! जागो सब, अब माँ की करुण पुकार सुनो।
है कराह रही संस्कृति अपनी, अब तुम उसका उद्धार करो॥
संस्कृति सीता की रक्षा को, हनुमान वीर तुम बन जाओ।
द्रौपदी का चीर बढ़ाने को, तुम कृष्ण कन्हैया बन आओ॥
हनुमान, कृष्ण नहीं बन सकते, तो गिद्ध गिलहरी बन जाओ।
गोवर्द्धन गिरि उठाने को, तुम बाल ग्वाल बनकर आओ॥

***दे दो सारे विश्व को, सुख-शांति का दान।***
***गूँजे धरती गगन में, मानवता का गान॥***

समस्त शंकाओं का समाधान करने के पश्चात महाप्राज्ञ ने सबको उद्‌बोधन करते हुए कहा—हे श्रद्धालु जिज्ञासुओ ! आज पृथ्वी पर जो भी संकट आया है, वह मनुष्य की दुष्प्रवृत्तियों का ही दुष्परिणाम है। दुष्प्रवृत्तियों का उन्मूलन तथा सत्प्रवृत्तियों का संवर्द्धन ही इस युग की सबसे बड़ी पुकार है। समय ही महाकाल है—वह पुकारता है, वह बोलता है, जब-जब आवश्यकता होती है,उसे पुकारना ही पड़ता है, परंतु सुनती हैं, जाग्रत आत्माएँ। जो आलसी, कर्महीन होते हैं, जिन्हें निराशा घेरे रहती है, वे अपने दुर्भाग्य का रोना रोते रहते हैं, पर वास्तविकता यह है कि ईश्वर अपनी कृपा से किसी को वंचित नहीं करता, मनुष्य समय की पुकार न सुनकर ईशकृपा से वंचित हो जाता है।

महाकाल की पुकार पर जो जाग पड़ते हैं, जो चल पड़ते हैं, उनका जीवन धन्य हो जाता है। राम की पुकार पर दौड़े रीछ-वानर, द्वापर में भगवान कृष्ण की सहायता को आए ग्वाल-बाल, बुद्ध की पुकार पर निकल पड़े भिक्षु-परिव्राजक इतिहास में अमर हो गए। महात्मा गांधी की



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पुकार पर उत्सर्ग कर देने वाले बलिदानी स्वतंत्रता सेनानियों को युग-युग तक याद किया जाएगा। आज भी महाकाल पुकार रहा है, जो इसके सहयोगी बनेंगे, वे सदा-सदा के लिए अमर हो जाएँगे। इसलिए इस पुकार को सुनो और आगे बढ़ो।

एक बात और याद रखो, तुम आगे बढ़ो या न बढ़ो, वे भगवान तो धूलिकण से हजारों कर्मनिष्ठों को खड़ा कर सकते हैं। वे रीछ-वानरों से समुद्र पर पत्थर तैराकर पुल बनवा सकते हैं, वे ग्वाल-बालों की लाठी की टेक से गोवर्द्धन उठवा सकते हैं, वे भिक्षु-परिव्राजकों द्वारा देश-विदेश में धर्म और संघ का संगठन खड़ा करवा सकते हैं, किंतु इस समय वे हम सबको श्रेय देना चाहते हैं। जरा सोचो, क्या वानरों और रीछों के हाथों से पत्थर जल पर तैर सकते थे? क्या लाठी की टेक से गोवर्द्धन पहाड़ उठ सकता था? क्या नंगे पैर चलने वाले भिक्षु विदेशों तक धर्मध्वजा फहरा सकते थे? वह महान सत्ता असंभव को भी संभव बना सकने में समर्थ है। इसलिए हे प्रज्ञापुत्रो! उठो, जागो और आत्मविश्लेषण करो, ऐसा समय हमेशा नहीं आता। यदि तुम उस प्रज्ञावतार के सहयोगी बनना चाहते हो, तो लो प्रज्ञा की लाल मशाल और घर-घर को प्रज्ञा की ज्योति से आलोकित कर दो। जाओ, उन लोगों के पास जो इस समय भ्रमित हो रहे हैं, जाओ उनके पास जो अचिंत्य चिंतन से ग्रसित हैं और अपने आप ही अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मार रहे हैं और सृष्टि का विनाश करने पर तुले हैं।

कुछ देर मौन रहकर महर्षि ने कहा—"हे महाशक्ति के उपासको! नवयुग के सृजन सेनानियो! माँ गायत्री के वरद् पुत्रो! शक्ति स्वरूपा बहनो



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

और देवस्वरूप भाइयो! देश के निर्माता नवयुवक विद्यार्थियो! आज सत्र का अंतिम दिवस है। आज विदाई का अवसर आ गया है। आज हमारी स्थिति उस माता के समान हो रही है,जो अपने पुत्र-पुत्रियों को विदा करते समय भावविह्वल हो जाती है। हमारे हृदय में आज ममता का ज्वार उमड़ रहा है। आप सबने इतने दिन हमारी बात को ध्यानपूर्वक सुना है, उसके लिए हम आपका धन्यवाद करते हैं, किंतु यदि इस कथा में कुछ भी अच्छा लगा हो, तो हमारा आप सबसे अनुरोध है कि नवयुग के निर्माण के लिए हमने जो यह अखंड दीप जलाया है, उसकी ज्योति को घर-घर में फैला दो। वह लाल मशाल हम आपके हाथ में दे रहे हैं। इस दीपक को, इस मशाल को हमने अपने अंतर के स्नेह से जलाया है। अब यह आपकी जिम्मेदारी है कि आप इसे कहाँ तक किस प्रकार पहुँचा सकते हैं? आप इसकी ज्योति को, इसके प्रकाश को मेरी कल्पना से भी अधिक ऊँचाई पर ले जाओ, तभी इसकी सार्थकता है।"

हमने उज्ज्वल भविष्य एवं प्रज्ञायुग की सूचना दे दी है। उसका दिग्दर्शन करा दिया है। अब आपकी जिम्मेदारी है कि आप इसे लाने में कहाँ तक सहयोगी बन सकते हैं? मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप सबके सहयोग से वह शक्ति प्रकट होगी जो धरती पर स्वर्ग का अवतरण करेगी। हे अमृत संतानो! अब तुम अपनी शक्ति को पहचानो, माँ की करुण पुकार सुनो, संस्कृति की सीता कराह रही है, तुम उसकी रक्षा के लिए हनुमान व जटायु बन जाओ। द्रौपदी का चीरहरण हो रहा है, कृष्ण की भाँति उसकी लाज बचाओ, गिद्ध और गिलहरी बनकर ही अपना कर्त्तव्य निभाओ।



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जाओ और समस्त विश्व को सुख-शांति का दान देकर मानवता का जयघोष कर दो।

हे अमृत संतानो! जब तुम महाप्रज्ञा की शरण में जाकर संगठित होकर धर्मधारणा का प्रसार करके अनास्था संकट का निवारण करोगे तो विश्वास करो कि वही प्रभु तुम्हारी सहायता करेंगे, जिन्होंने रीछ-वानरों की सहायता से रावण का वध किया था, जिन्होंने अर्जुन का सारथी बनकर धर्म की स्थापना की थी, जिन्होंने मोहग्रस्त अर्जुन को कर्मयोग में तत्पर करने का आश्वासन दिया था, कि मेरी शरण में आ, मैं तुझे सब पापों से छुटकारा दिलाऊँगा। वे ही आज भी आश्वासन दे रहे हैं।

*यह न समझना चला गया मैं, हूँ सर्वदा तुम्हारे पास।*
*है विश्वास कि पूर्ण करोगे, तुम सब परिजन मेरी आस॥*
*तुम रहना निश्चिंत ही पग में, ठोकर न लगने दूँगा।*
*अब भी मैं तत्पर हूँ, तुमको देने को निर्मल मृदुहास॥*

आओ उनका सहारा लेकर आगे बढ़ो और '**करिष्ये वचनं तव**' का संकल्प लेकर अर्जुन की भाँति उन्हें वचन देकर कर्त्तव्य क्षेत्र में पदार्पण करो, वे तुम्हारे सहायक होंगे। मार्ग तुम्हारा मंगलमय हो।

**इति श्रीमत्प्रज्ञापुराणे ब्रह्मविद्याऽऽत्मविद्ययोः, युगदर्शनयुगसाधनाप्रकटीकरणयोः, श्री कात्यायन ऋषि प्रतिपादिते 'प्रज्ञावतार' इति प्रकरणो नाम सप्तमोऽध्यायः॥ ७॥**

## आरती श्री प्रज्ञा पुराण की

मुद्रक : युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा (उ.प्र.)

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

# : युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य- संक्षिप्त परिचय :

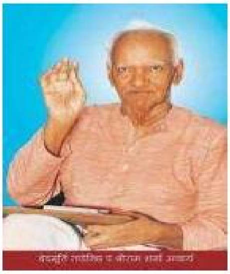

ज्यादा जानकारी यहाँ से प्राप्त करें : http://hindi.awgp.org/about_us

- **विचारक्रान्ति अभियान के प्रणेता :** विचारों को परिस्कृत और ऊँचा उथाने मे समर्थ 3000 से भी अधिक पुस्तकों के लेखन के माध्यम से विश्वव्यापी विचार क्रान्ति अभियान की शरुआत की ।
- **वेद, पुराण, उपनिषद के प्रसिद्ध भाष्यकार :** जिन्हों ने चारों वेद, 108 उपनिषद, षड दर्शन, 20 स्मृतियाँ एवं 18 पुराणों का युगानुकूल भाष्य किया, साथ ही 19 वाँ प्रज्ञा पुराण की रचना भी की ।
- **3000 से अधिक पुस्तकों के लेखक :** मनुष्य को देवता समान, घर-परिवार को स्वर्ग, समाज को सभ्य और समग्र विश्वराष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने मे समर्थ हजारों पुस्तकें लिखकर समयानुकूल समर्थ मार्गदर्शन प्रदान किया ।
- **युग-निर्माण योजना के सूत्रधार :** जिन्होंने शतसूत्री युग निर्माण योजना बनाकर नये युग की आधार शिला रखी ।
- **वैज्ञानिक-अध्यात्मवाद के प्रणेता** : जिन्हों ने धर्म और विज्ञान के समन्वय की प्रथम प्रयोगशाला 'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान' स्थापित कर सिद्ध किया कि "धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं, पुरक है "।
- **'२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' के उद्घोषक** : जिन्हों ने '२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' का नारा दिया तथा युग विभीषिकाओं से भयग्रस्त मनुष्यता को नये युग के आगमन का संदेश दिया ।
- **स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ सैनानी** : जिन्हों ने महात्मा गाँधी, मदन मोहन मालवीय, गुरुवर रविन्द्रनाथ टैगोर के साथ राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी "श्रीराम मत्त" के रुप में प्रख्यात हुए ।
- **गायत्री के सिद्ध साधक** : जिन्हों ने गायत्री और यज्ञ को रुढियों और पाखण्ड से मुक्त कर जन-जन की उपासना का आधार तथा सद्‌बुद्धि एवं सतकर्म जागरण का माध्यम बनाया ।
- **तपस्वी** : जिन्होंने गायत्री की कठोरतम साधना कर २४-२४ लाख के २४ महापुरश्चरण २४ वर्षो में सम्पन्न किया । प्रकृति प्रकोप को शांत कर अनिष्टों को टाला, सृजन सम्भावनाओं को साकार किया ।
- **अखिल विश्व गायत्री परिवार के जनक** : जिन्हों ने अपने जीवनकाल में ही अपने साथ करोडों लोगों को आत्मियता के सूत्र में बाँधकर विश्व व्यापी 'युग निर्माण परिवार' - 'गायत्री परिवार' का गठन किया ।
- **समाज सुधारक** : जिन्हों ने नारी जागरण, व्यसन मुक्ति, आदर्श विवाह, जाति-पाँति प्रथा तथा परंपरागत रुढियों की समाप्ति हेतु अद्‌भूत प्रयास किए एवं एक आदर्श स्वरुप समाज में प्रस्तुत किया ।
- **ऋषि परम्परा के उद्धारक** : जिन्हों ने इस युग में महान ऋषियों की महान परंपराओं की पुनर्स्थापना की । लुप्तप्राय संस्कार परंपरा को पुनर्जीवित कर जन-जन को अवगत कराया ।
- **अवतारी चेतना** : जिन्होंने "धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के जागरण" की अवतारी घोषणा को अपना जीवन लक्ष्य बनाया और चेतना का ऐसा प्रवाह चलाया कि करोंडों व्यक्ति उस ओर चल पड़े ।

**गायत्री परिवार** जीवन जीने कि कला के, संस्कृति के आदर्श सिद्धांतों के आधार पर परिवार,समाज,राष्ट्र युग निर्माण करने वाले व्यक्तियों का संघ है। **वसुधैवकुटुम्बकम्** की मान्यता के आदर्श का अनुकरण करते हुये हमारी प्राचीन ऋषि परम्परा का विस्तार करने वाला समूह है गायत्री परिवार। एक संत, सुधारक, लेखक, दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और दूरदर्शी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा स्थापित यह मिशन युग के परिवर्तन के लिए एक जन आंदोलन के रूप में उभरा है।

**Free Download Complete Work Of Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya, Founder of All World Gayatri Pariwar Books, Magazines, Articles, Stories, Poems, Great Personalities and many more at**

www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org